१ - भविष्य को कैसे जाने

1

भूतकाल का एक स्वप्न वर्तमान से कहता है

2

एक दिन एक भुलक्कड़ व्यक्ति रेलगाड़ी से सफर कर रहा था। वह अपनी पुस्तक को पढ़ने में मग्न था। तब वहाँ रेलवे कन्डेक्टर आया और उसने उससे टिकट मांगा। उस व्यक्ति ने अपनी सारी जेबों को टटोला मगर टिकट नहीं मिला। फिर वह दोबारा घबराकर टिकट को ढूंढ़ने लगा। इस पर रेलवे कन्डेक्टर ने बहुत नम्रतापूर्वक कहा, "कोई बात नहीं, श्रीमान, जब आप को वह टिकट मिल जाए तब उसे डाक से कम्पनी को भेज देना। मुझे पूरा विश्वास है वह आप के पास है।" वह व्यक्ति परेशान हो गया और बोला, "आप नहीं जानते, वह टिकट मुझे अभी ढूंढ़ना होगा!" मुझे उस टिकट की इसलिए आवश्यकता है कि उससे मुझे यह पता चलेगा कि मुझे उतरना कहाँ है! आज रात दुनिया के लाखों लोग यह पूछ रहे हैं कि इस दुनिया में हम किस ओर जा रहे हैं। यह भविष्य अनिश्चित दिखाई दे रहा है। वे यह सोच रहें हैं कि हमारा संसार कहाँ जा रहा है। अब हमें सोचने की और आवश्यकता नहीं है। पच्चीस वर्ष पूर्व एक प्राचीन राजा के स्वप्न ने हमारे इतिहास की और आने वाले भविष्य की झलक दिखाई थी।

१ - भविष्य को कैसे जाने

3

(दृश्य)

वैज्ञानिकों का कहना है कि हम सब प्रत्येक रात को अनेक बार प्रायः स्वप्न देखते हैं परन्तु हम अपने अधिकतर स्वप्न याद नहीं रखते।

4

तब भी सबसे अधिक अद्‌भुत स्वप्न जिसको सम्पूर्ण इतिहास में कभी लेखाबद्ध किया गया था, वह बाबुल के प्राचीन राज्य में २,६०० वर्ष पूर्व एक रात को दिखा था। इस स्वप्न की कहानी को अच्छी तरह से लेखाबद्ध किया गया है। यह उस व्यक्ति द्वारा लिखा गया था जिसने उसे अनुभव किया था।

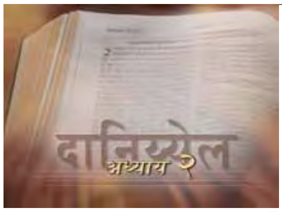

5

बाइबिल में दानिय्येल की पुस्तक का दूसरा अध्याय यह कहानी बताता है।

शक्तिशाली राजा नबूकदनेस्सर को याद नहीं था कि उसने क्या स्वप्न देखा था। उसे यह ज्ञात था कि यह साधारण स्वप्न नहीं था। उसे यह भी ज्ञात था कि उस अद्‌भुत स्वप्न का कोई महत्वपूर्ण अर्थ था।

और वास्तव में, यह सही था।

१ -□ भविष्य को कैसे जाने

6

परमेश्वर ने उसे यह स्वप्न दिखा कर, ...हमारे लिए इस संसार के इतिहास को रेखांकित किया ...... विशेषकर यूरोप और मध्य पश्चिम का यह इतिहास राजा नबूकदनेस्सर के समय से अन्त के समय तक था।

7

परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमें बताया कि भविष्य में क्या होगा।
दुनिया का प्रथम साम्राज्य बाबुल, उस समय के सभ्य संसार का सबसे बड़ा, धनी, और
प्रभावशाली राज्य था। उसका राजा भी संसार का शक्तिशाली राजा था। मनुष्यों के इस नेता ने एक के बाद एक अपने दुश्मनों को अपने सैनिक बल द्वारा मात देनी आरम्भ कर दी जब तक बाबुल संसार का सर्वोत्तम राज्य न बन गया।

8

अपने शासन के दूसरे वर्ष में एक रात राजा नबूकदनेस्सर अपने शासन की चिंता करता सो गया। वह भी दूसरे शासकों की तरह अपने राज्य का भविष्य जानना चाहता था।
उस रात परमेश्वर ने स्वर्ग से नीचे देखा और इस कृपालु शासक को स्वप्न में भविष्य दिखाया।

१ - भविष्य को कैसे जाने

9

जब वह राजा बेचैन हो जल्दी उठ गया,
वह जानता था कि तब वह परेशान था, उसे एक स्वप्न आया था, पर उसे स्पष्ट रुप से अपना स्वप्न याद नहीं था।
बाबुल के रहने वाले स्वप्नों को बहुत महत्त्व देते थे और राजा उस स्वप्न और उसके अर्थ को जानना चाहता था।

10

यह सच है कि उसके पास ज्योतिषी, जादूगर, मंत्रमुग्ध करने वाले और टोना करने वाले थे। भोर होने से पहले ही उन्हें राजभवन में बुलाया गया।
जब वे अन्दर आए और राजा के सम्मुख खड़े हुए तब उसने उनसे कहा,

11

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : ३)
"... मैने एक स्वप्न देखा है,
और मेरा मन व्याकुल है
कि स्वप्न को कैसे समझूं।"
दानिय्येल २ : ३

१ - भविष्य को कैसे जाने

12

ये पुरुष भविष्य की बातें जानने और बताने का झूठा दावा करते थे।

वे स्वप्नों के अर्थ का अनुमान कर सकते थे, परन्तु सचमुच वे स्वप्नों के अर्थ को नहीं जानते थे। वे समय नष्ट कर रहे थे। अन्त में उन्होंने कहा,

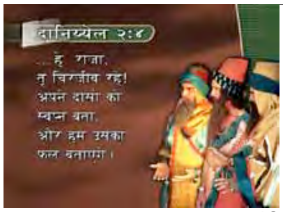

13

(मूलपाठः दानिय्येल २:४)

"... हे राजा, तू चिरंजीव रहे!   अपने दासों को स्वप्न बता, और हम उसका फल बताएंगे।"

परन्तु उनका आत्मविश्वास शीघ्र ही समाप्त हो गया, जब उस घमंडी राजा ने उनकी व्यर्थ की बातें सुनकर कहा,

14

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : ५,६)

"राजा ने कसदियों को उत्तर दिया, मैं यह आज्ञा दे चुका हूं :

15

यदि तुम फल समेत स्वप्न को न बताओगे तो तुम टुकड़े -टुकड़े किए जाओगे,

16

और तुम्हारे घर फुंकवा दिए जाएंगे।

१ -□ भविष्य को कैसे जाने

17

"और यदि तुम फल समेत स्वप्न को बता दो तो मुझसे भांति भांति के इनाम,

18

दान, और भारी प्रतिष्ठा पाओगे।

इसलिए तुम मुझे फल समेत स्वप्न को बताओ।" पद ४ -□६।

19

उन्होंने फिर से राजा से स्वप्न बताने के लिये कहा।

राजा अब जान गया था कि वे झूठे हैं।

उसने फिर से धमकाया और अंत में उन्होंने अपनी गलती स्वीकार कर ली,

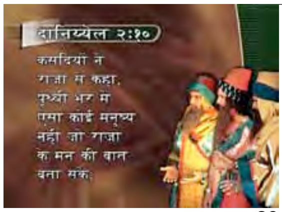

20

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : १०, ११)

"कसदियों ने राजा से कहा, पृथ्वी भर में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो राजा के मन की बात बता सके;

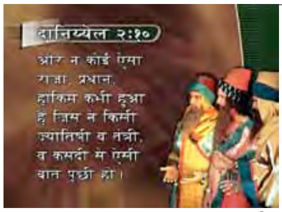

21

और न कोई ऐसा राजा, प्रधान, हाकिम कभी हुआ है जिस ने किसी ज्योतिषी व तंत्री, व कसदी से ऐसी बात पूछी हो

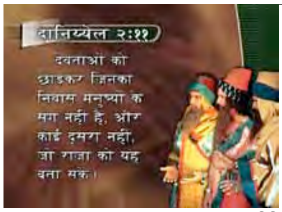

22

...... देवताओं को छोड़कर जिनका निवास मनुष्यों के संग नहीं है, और कोई दूसरा नहीं, जो राजा को यह बता सके।"

दानिय्येल २ : १०, ११

१ - भविष्य को कैसे जाने

23

बाइबिल कहती है कि राजा क्रोधित हो गया और उसने अपने सिपाहियों को सब पंडितों को नाश करने की आज्ञा दे दी।

24

दुर्भाग्य से, दानिय्येल और उसके साथ जो तीन जवान पुरुष थे जिन्हे पंडितों में गिना जाता था वहां उन पंडितों के साथ उपस्थित नहीं थे। जब राजा ने अपने स्वप्न का अर्थ जानने की मांग की।

जब सिपाही दानिय्येल को सजा देने के लिए ले जाने आए, तब वह आश्चर्यचकित हुआ। उसने कुछ समय मांगा ताकि वह परमेश्वर से जो स्वर्ग में रहता है, पूछ सके। और बुद्धि मांगे ताकि वह राजा के स्वप्न को जान सके।

पद १२ -१५

25

क्योंकि राजा उस ईमानदार जवान पुरुष का आदर करता था, इसलिए उसने दानिय्येल को अपने सृष्टि करने वाले परमेश्वर से बात करने का समय दिया।

दानिय्येल के कंधों पर कितनी बड़ी जिम्मेदारी थी। उसके और उसके तीन मित्रों का ही नहीं परन्तु बाबुल के सारे पंडितों का जीवन दांव पर लगा था।

दानिय्येल अपने घर लौटा और सारा हाल अपने मित्रों को बताया।

१ - भविष्य को कैसे जाने

१ - भविष्य को कैसे जाने

26

उन्होंने इस रहस्य को जानने के लिए स्वर्गीय परमेश्वर से दया की प्रार्थना की ताकि उन्हें बाबुल के शेष पंडितों के साथ नाश ना किया जाए। वह कितनी अच्छी प्रार्थना सभा हुई होगी चार इब्री जवान परमेश्वर से यह प्रार्थना कर रहे थे कि वह उस मूर्तिपूजक राजा के स्वप्न को उनकी मृत्यु होने से पहले बता दे। पद १६ -१८।

27

बाइबिल यह कहती है कि दानिय्येल के परमेश्वर ने उसी रात दर्शन के द्वारा उस स्वप्न के भेद को उसे बता दिया।

स्वर्ग के परमेश्वर ने उन प्रार्थनाओं को सुनने और आदर करने में देर नहीं की!

इसलिए दानिय्येल ने स्वर्ग के परमेश्वर का यह कह कर धन्यवाद दिया,

28

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : २३)

"हे मेरे पूर्वजों के परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद और स्तुति करता हूं, क्योंकि तू ने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है"

29

और जिस भेद का खुलना हम लोगों ने तुझ से मांगा था, उसे तू ने मुझ पर प्रगट किया है, तू ने हम को राजा की बात बताई है। पद २३ दानिय्येल और उसके तीन इब्री मित्रों के हृदयों में कितना उल्लास आ गया होगा। जब दानिय्येल राजा के हाकिम अर्योक के पास गया, जैसाकि बाईबिल बताती है।

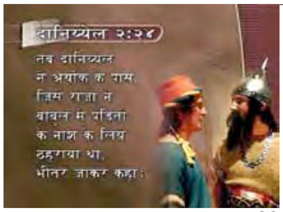

30

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : २४)

"तब दानिय्येल ने अर्योक के पास, जिसे राजा ने बाबुल मे पंड़ितों के नाश के लिये ठहराया था, भीतर जाकर कहा :

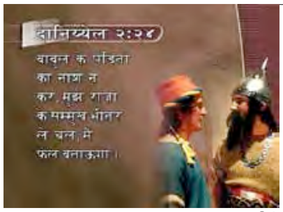

31

बाबुल के पंड़ितों का नाश न कर, मुझे राजा के सम्मुख भीतर ले चल, मैं फल बताऊंगा।" दानिय्येल २ : २४

32

जब दानिय्येल राजा के सम्मुख आया, तब नबूकदनेस्सर ने उस से पूछा कि क्या वह राजा के स्वप्न को जो उसने देखा है उसके फल सहित बताने में समर्थ है। आइए देखते हैं कि किस प्रकार दानिय्येल ने राजा को उत्तर दिया:

१ -□ भविष्य को कैसे जाने

१ - भविष्य को कैसे जाने

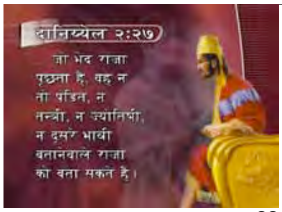

33

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : २७,२८)

"जो भेद राजा पूछता है, वह न तो पंडित, न तन्त्री, न ज्योतिषी, न दूसरे भावी बतानेवाले राजा को बता सकते हैं।

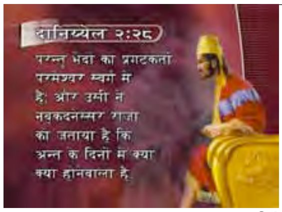

34

परन्तु भेदों का प्रगटकर्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को जताया है कि अन्त के दिनों में क्या क्या होनेवाला है...." पद २७,२८

35

ध्यान दीजिए कि दानिय्येल ने इस ज्ञान का श्रेय अपने ऊपर नहीं लिया है।

उसे पता था कि केवल परमेश्वर ही भविष्य को बता सकता है।

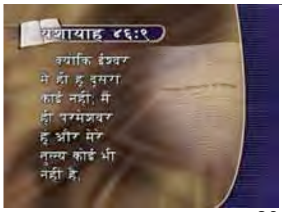

36

(मूलपाठ : यशायाह ४६ : ९, १०)

इसमें कोई सदेंह नहीं कि उसने यशायाह के अध्याय ४६ के ९ और १० पदों का अध्ययन किया था : –

"क्योंकि ईश्वर मैं ही हूँ दूसरा कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है,

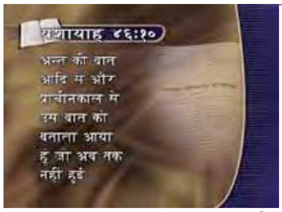

37

अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई......"

१ - भविष्य को कैसे जाने

38

यह ज्ञान परमेश्वर की ओर से आया था, जिसने राजा नबूकदनेस्सर और हमको इस संसार के इतिहास के २,६०० वर्षों की रुपरेखा बताई। सबसे पहले दानिय्येल ने उस स्वप्न की रुपरेखा बताई जिसे राजा ने देखा था:

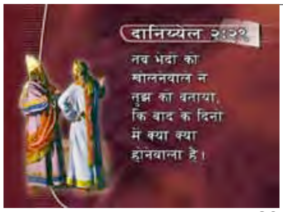

39

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : २९)
"तेरे लिए यह है, हे राजा, जब तुझ को पलंग पर यह विचार हुआ कि भविष्य में क्या क्या होनेवाला है;

40

तब भेदों को खोलनेवाले ने तुझ को बताया, कि बाद के दिनो में क्या क्या होनेवाला है।" दानिय्येल २ : २९

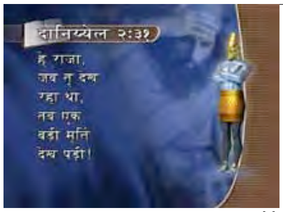

41

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : ३१)
दूसरा दानिय्येल ने स्वप्न के विषय में कहा
"हे राजा, जब तू देख रहा था, तब एक बड़ी मूर्ति देख पड़ी!

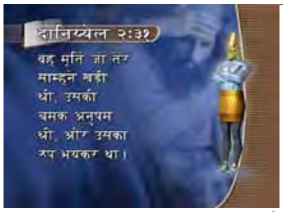

42

वह मूर्ति जो तेरे साम्हने खड़ी थी, उसकी चमक अनुपम थी, और उसका रुप भयंकर था।"
पद ३१।

१ - भविष्य को कैसे जाने

43

(दृश्य)

क्या आप उस राजा को जोश में यह कहते हुए नहीं सुन सकते कि हाँ, हाँ यह वही है!

एक भयंकर मूर्ति, जो सब वस्तुओं के ऊपर शिरोमणि थी!

दानिय्येल ने उस स्वप्न का इतना अच्छा वर्णन किया कि नबूकदनेस्सर को कोई सन्देह नहीं हुआ कि यह वही स्वप्न है जो उसने देखा था।

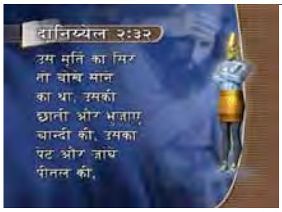

44

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : ३२, ३३)

तब दानिय्येल ने जारी रखा –

"उस मूर्ति का सिर तो चोखे सोने का था, उसकी छाती और भुजाएं चान्दी की, उसका पेट और जांघें पीतल की,

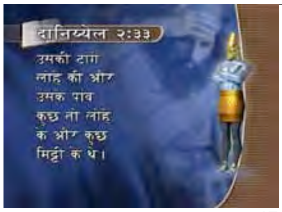

45

उसकी टांगें लोहे की और उसके पांव कुछ तो लोहे के और कुछ मिट्टी के थे।

१ - भविष्य को कैसे जाने

46

(दृश्य)

आश्चर्यचकित, नबूकदनेस्सर ने दानिय्येल को सुना जब वह उस मूर्ति के प्रत्येक तत्व को जिस से वह बनी थी ठीक उसी प्रकार बता रहा था जैसा उसने स्वप्न में देखा था।

उसका "उस मूर्ति का सिर तो चोखे सोने का था, उसकी छाती और भुजाएँ चान्दी की,

उसका पेट और जांघे पीतल की; उसकी टांगे लोहे की थी और उसके पांव कुछ लोहे के और कुछ मिट्टी के थे।

47

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : ३४)

तूने क्या देखा, कि एक पत्थर ने बिना किसी के खोदे,

48

उस मूर्ति के पांवों पर लगकर जो लोहे और मिट्टी के थे, उनको चूर चूर कर डाला।

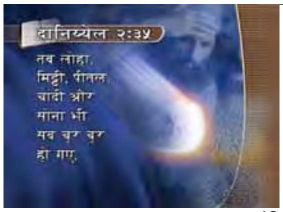

49

तब लोहा, मिट्टी, पीतल, चांदी और सोना भी सब चूर चूर हो गए,

50

और धूपकाल में खलिहानों के भूसे की नाई हवा से ऐसे उड़ गए कि उनका कहीं पता न रहा।

१ - भविष्य को कैसे जाने

51

(दृश्य)

फिर राजा यह देखकर चकित हो गया कि एक पत्थर जो अति वेग के साथ अपने आप आया, और आश्चर्यजनक रुप से उसी मूर्ति के पांव से टकराया, और उन्हे चूर चूर कर दिया, और फिर

प्रचण्डता से उस सम्पूर्ण मूर्ति को चूर चूर कर डाला कि वे हवा से ऐसे उड़ गए कि उनका कहीं पता न रहा।

52

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : ३५)

और वह पत्थर जो मूर्ति पर लगा था, वह बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैल गया।"

दानिय्येल २ : २९ - ३५

53

(दृश्य)

"हाँ दानिय्येल, "राजा ने ऐसा कहा होगा," एक पत्थर ने, बिना किसी के खोदे, उस मूर्ति को चूर चूर कर दिया और वह एक बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैल गया।"

वह सम्पूर्ण स्वप्न बिल्कुल वैसा ही था जैसा राजा ने देखा था। कल्पना कीजिए नबूकदनेस्सर कितना हैरान हुआ होगा जब उस जवान पुरुष ने उसके स्वप्न का सटीक वर्णन किया होगा!

१ - भविष्य को कैसे जाने

54

राजा को एक बात निश्चित हो गई होगी कि इस तरह कोई भी पुरुष किसी के देखे हुए स्वप्न को नहीं बता सकता! वह केवल किसी स्वर्गीय शक्ति के द्वारा ही बताया जा सकता था।

55

उस राजा ने यह सोचा होगा कि इस स्वप्न का उससे क्या संबंध है। हमारे पास भी ऐसे ही विचार हो सकते हैं। नबूकदनेस्सर का स्वप्न, पृथ्वी के दस प्रमुख राज्यों के उदय होने और गिरने की भविष्यवाणी करता है। उसके स्वप्न में जिन राज्यों का वर्णन किया गया है उन्होंने किसी न किसी प्रकार दुनिया के सभी राज्यों को प्रभावित किया है विशेष करके आधुनिक काल में।

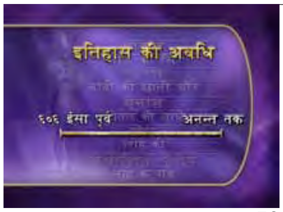

56

परमेश्वर ने कुछ ही शब्दों में इतिहास के प्रमुख विषय का चित्र प्रस्तुत कर दिया यह चित्र बाबुल के समय से लेकर जो ईसा से ६०० वर्ष पूर्व था और पृथ्वी के इतिहास के अंत तक का है। अंत में, दानिय्येल ने स्वप्न का मूल अर्थ बताया।

१ - भविष्य को कैसे जाने

57

(मूलपाठ: दानिय्येल २:३८)

राजा की ओर टकटकी लगाकर देखते हुए दानिय्येल ने कहा: "यह सोने का सिर तू ही है।"

पद ३८

बाबुल सिर था --एक शुद्ध सोने का राज्य। जैसे ही राजा ने उन शब्दों को सुना उसके चेहरे पर संतोषजनक मुस्कुराहट आ गई।

58

बाबुल के सैनिक विजय और वैभवशाली भवन निर्माण विद्या सबसे बढ़ चढ़ कर थे। इतिहास के जानने वाले इस बात का समर्थन करते हैं कि सोना बाबुल के राज्य को प्रस्तुत करने के लिए एकदम सही प्रतीक था।

59

बाबुल की इमारतों को सजाने के लिए सोना अपरिमित रुप से व्यय किया गया था। इतिहास के एक ज्ञाता के द्वारा उस महान शहर के वर्णन पर ध्यान दीजिए:

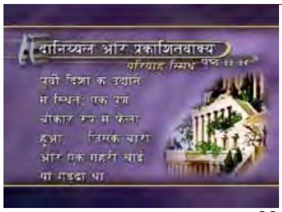

60

"पूर्वी दिशा के उद्यान में स्थित; एक पूर्ण चौकोर रूप में फैला हुआ, ...जिसके चारों ओर एक गहरी खाई या गड्ढा था ...

१ - भविष्य को कैसे जाने

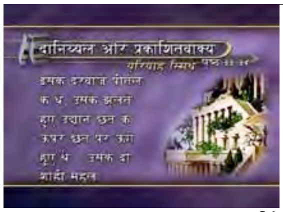
61

इसके दरवाजे पीतल के थे, उसके झूलते हुए उद्यान छत के ऊपर छत पर ऊगे हुए थे ... उसके दो शाही महल ...

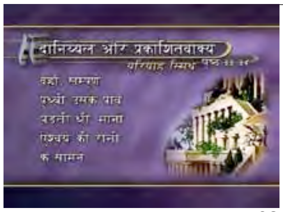
62

वहाँ, सम्पूर्ण पृथ्वी उसके पांव पड़ती थी, मानो ऐश्वर्य की रानी के सामने...

63

यह शहर, उस राज्य की राजधानी के लिए उपयुक्त था जो सोने के सिर द्वारा दर्शाया गया था।"

यूरियाह स्मिथ, दी प्रॉफेसीज् आफ दानिय्येल एण्ड रेवेलेशन, पृष्ठ ३३, ३४

64

बाबुल के झूलते हुए बनावटी बगीचे प्राचीन दुनिया के सात आश्चर्यो में से एक थे!

65

यदि दानिय्येल ने बाबुल में अपना नाम कमाने के लिए एक होशियार राजनीतिज्ञ बनने का प्रयास किया होता, तो वह उसी समय उसके स्वप्न का अर्थ बताना तुरन्त बन्द कर देता।

परन्तु दानिय्येल के पास एक संदेश था जिसे परमेश्वर दुनिया को देना चाहता था - एक संदेश जो केवल उसके समय के लिए ही नहीं था, परन्तु पृथ्वी के इतिहास के अंत तक उपयुक्त हो सकता है।

१ - भविष्य को कैसे जाने

१ -󰀀 भविष्य को कैसे जाने

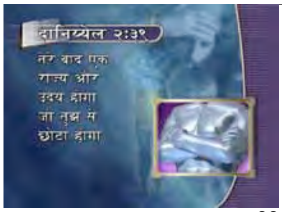

66

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : ३९)

तब दानिय्येल ने बड़ी नम्रतापूर्वक परन्तु हिम्मत से स्पष्ट किया :

"तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा ----"

दानिय्येल २ : ३९

67

जैसे ही दानिय्येल के द्वारा कहे गए उन शब्दों को राजा ने सुना वैसे ही उसकी मुस्कुराहट तुरंत फीकी पड़ गई। बाबुल के घमंडी राजा ने संभवतः इस बात को कभी भी नहीं सोचा था कि कोई अन्य राज्य भी दुनिया के ऊपर शासन कर सकता है।

68

वास्तव में, खुदाई करके मिट्टी की वे तख्तियाँ मिलीं जिन पर नबूकदनेस्सर के द्वारा इन शब्दों को लिखा गया था :

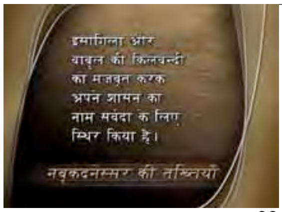

69

"इसागिला और बाबुल की किलेबन्दी को मजबूत करके अपने शासन का नाम सर्वदा के लिए स्थिर किया है।"

70

(मूलपाठ : दानिय्येल ४ : ३०)

क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है,

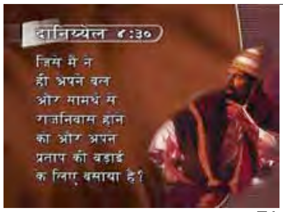

71

जिसे मैं ने ही अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिए बसाया है?"

दानिय्येल ४ : ३०

तब भी, परमेश्वर ने कहा कि बाबुल के सोना रूपी राज्य के बाद एक दूसरी शक्ति उठेगी जो उस पर राज्य करेगी।

और दानिय्येल इसे देखने के लिए जीवित रहा।

72

(दृश्य)

बेलशेस्सर के शासन में, जो नबूकदनेस्सर का घमंडी पोता था, फारस के राजा कुस्रू ने बाबुल के चारों ओर घेरा डाला।

73

१३ अक्टूबर, ५३९ ईसा पूर्व को, बाबुल के सोने के राज्य का अपमानजनक अन्त हो गया!

74

ध्यान दीजिए कि परमेश्वर ने बिलकुल ठीक भविष्यवाणी की थी कि कौन और कब उस शहर पर राज्य करेगा। यह बाबुल के नाश होने के लगभग २०० वर्ष पूर्व किया गया था,

१ - भविष्य को कैसे जाने

75

(मूलपाठ : यशायाह ४५ : १)
परमेश्वर ने यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा यह कहा :
"यहोवा अपने अभिषिक्त कुस्रू के विषय यों कहता है, मैं ने उसके दहिने हाथ को इसलिये थाम लिया है कि उसके साम्हने जातियों को दबा दूं

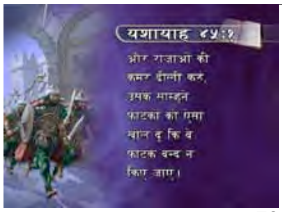

76

और राजाओं की कमर ढीली करुं, उसके साम्हने फाटकों को ऐसा खोल दूं कि वे फाटक बन्द न किए जाएं।"
यशायाह ४५ : १

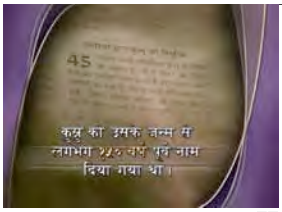

77

परमेश्वर ने कुस्रू के जन्म से १५० वर्ष पहले यह भी बताया कि किसके द्वारा ऐसा होगा।

78

(दृश्य)

कुस्रू दीवारों को नहीं तोड़ सकता था, क्योंकि वे अत्यधिक ऊँची और मोटी भी थीं, इसलिए उसने दूसरी योजना बनाई :

उसने नदी का रुख बदल दिया जो कि नगर के मध्य से गुजरती थी, और उसकी सेना नदी के नहर से होकर नगर के भीतर चली गई।

किसी ने लापरवाही से या देशद्रोह के कारण भीतर के विशाल पीतल के फाटक अरक्षित और खुले छोड़ दिए थे!

79

कुस्रु के सैनिक नगर के भीतर प्रवेश हो गए और राजा और उसके सज्जनो को मार डाला जब वे राजा नबूकदनेस्सर के द्वारा लाए गए सोने के पात्रों में शराब पी रहे थे। नबूकदनेस्सर उन पात्रों को सुलेमान के मंदिर में से बहुत वर्षों पहले लूट कर लाया था।

80

दानिय्येल ने यह भविष्यवाणी की थी कि बाबुल के सोने के राज्य के बाद, बाबुल से छोटा एक दूसरा राज्य, जो कि चांदी से बनी छाती और भुजाओं द्वारा प्रदर्शित किया गया था, शासन करेगा।

१ -􏰀 भविष्य को कैसे जाने

१ - भविष्य को कैसे जाने

81

मादी और फारस की संयुक्त सरकार सचमुच बाबुल के महान राज्य से छोटी थी, परन्तु उसने मध्य पूर्वी क्षेत्र पर दो सदियों तक शासन किया।

दानिय्येल ने यह भविष्यवाणी की थी कि चांदी के राज्य की सीमाएं भी होंगीः

82

(मूलपाठः दानिय्येल २:३९)

"... फिर एक और तीसरा पीतल का सा राज्य होगा जो सारी पृथ्वी पर राज्य करेगा।"

दानिय्येल २:३९

83

उस धातु से बनी मूर्ति के पीतल के पेट और पीतल की जांघों की भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब उस जवान जनरल सिकन्दर महान ने फारस के राजा दारा तृतीय को अरबेला के युद्ध में ३३१ ईसापूर्व में हराया। दुनिया का तीसरा राज्य यूनानी था।

84

जवानी के २५वें साल में सिकन्दर दुनिया के सब से अधिक विस्तृत राज्यों में से एक राज्य का शासक बना। वह देश यूनान था।

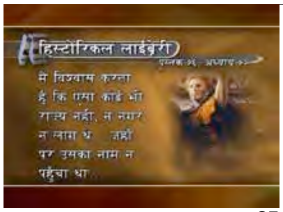

85

यूनानी इतिहासकर आर्यन एलिक्जेंडर के विषय में लिखते हुए कहते हैं :

"मैं विश्वास करता हूँ कि ऐसा कोई भी राज्य नही, न नगर, न लोग थे ... जहाँ पर उसका नाम न पहुँचा था ...

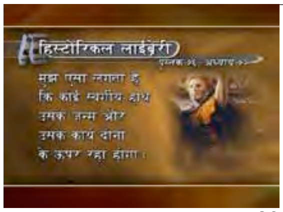

86

मुझे ऐसा लगता है कि कोई स्वर्गीय हाथ उसके जन्म और उसके कार्य दोनो के ऊपर रहा होगा।"

हिस्टोरिकल लाईब्रेरी, पुस्तक १६, अध्याय १२

87

यूनान के पैदल सैनिकों की पोशाक पीतल से बनी हुई थी, जो नबूकदनेस्सर के स्वप्न का तीसरा धातु था।

88

सिकन्दर अपने ३३ वें जन्मदिन से पूर्व ज्वर से मर गया। उसकी मृत्यु के बाद उसका राज्य कमजोर हो गया और कई भागों में बट गया और अंत में,

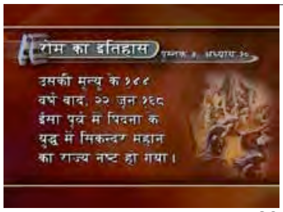

89

"उसकी मृत्यु के १४४ वर्ष बाद, २२ जून १६८ ईसा पूर्व में पिदना के युद्ध में सिकन्दर महान का राज्य नष्ट हो गया।"

हिस्ट्री आफ रोम, पुस्तक ३, अध्याय १०

१ - भविष्य को कैसे जाने

90

प्राचीन राज्यों के सबसे अधिक भयंकर राज्य अब आता हैं। आपको याद है कि परमेश्वर ने यह भविष्यवाणी की थी कि दुनिया के चार राज्य एक के बाद एक होंगे।

91

सचमुच लोहे के पैर दुनिया के चौथे राज्य की निर्दयतापूर्वक नाश करने वाली शक्ति का बहुत अच्छी तरह से वर्णन करते हैं। इस प्रकार दानिय्येल ने राजा से उसका वर्णन किया था :

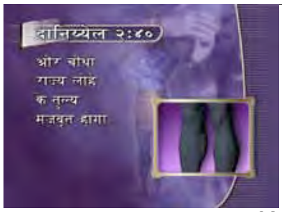

92

(मूलपाठः दानिय्येल २:४०)

"और चौथा राज्य लोहे के तुल्य मजबूत होगा ..."

दानिय्येल २:४०

93

उसके राज्य के कैसर अपने आप को देवता कहते थे और सारे लोगों से कहना मानने और उनकी उपासना करने को कहते थे।

इस रोमी शासन के समय में दो महत्वपूर्ण घटनाऐं घटीं।

१ -□ भविष्य को कैसे जाने

94

१. यीशु बैतलहेम में पैदा हुए थे। उस रोम के शासक ने यह आज्ञा निकाली थी कि बैतलेहम में जितने भी दो वर्ष के या उससे छोटे नर बच्चे हैं उन को मार डाला जाए।

वह यीशु को मारने की आशा करता था, और

95

२. रोमी अधिकार के अन्दर यीशु को यहूदा में क्रूस पर चढ़ाया गया था। एक रोमी शासक ने यीशु के मारे जाने की अनुमति दी। रोमी सिपाहियों के द्वारा यीशु को क्रूस पर कीलों से ठोका गया था, और यीशु की कब्र के ऊपर रोमी मुहर लगा दी गई थी ताकि उसे वहाँ से न निकाला जा सके। पर अब भविष्यवाणी का तरीका बदल गया था। अब रोम के बाद कोई भी अकेली शक्ति दुनिया पर राज्य नहीं करेगी।

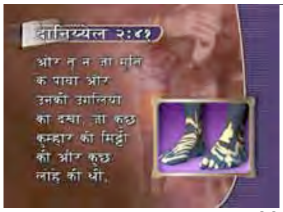

96

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : ४१, ४३)

दानिय्येल ने लिखा "और तू ने जो मूर्ति के पावों और उनकी उंगलियों को देखा, जो कुछ कुम्हार की मिट्टी की और कुछ लोहे की थीं,

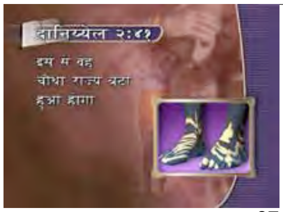

97

इस से वह चौथा राज्य बटा हुआ होगा ---

१ - भविष्य को कैसे जाने

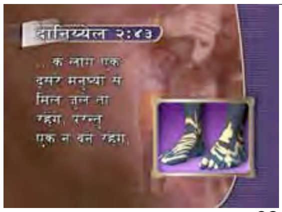

98

... उसके लोग एक दूसरे मनुष्यों से मिले जुले तो रहेंगे, परन्तु एक न बने रहेंगे,

99

कुछ तो लोहा मिट्टी के साथ मिला होगा।"
दानिय्येल २:४१,४३

100

दूसरे शब्दों में, भविष्यवक्ताओं ने यह भविष्यवाणी की थी, कि दुनिया का पांचवा राज्य उदय नहीं होगा, परन्तु रोम के राजा के द्वारा शासित लोहे के राज्य के भाग हो जाऐंगे।

101

(दृश्य)
रोम कई राज्यों में बट जाएगा।

102

रोम का यह विशाल राज्य जिसने लगभग ६०० वर्ष तक राज्य किया था लोहे के भागों में विभाजित हो गया।

103

भोग विलास, राजनैतिक भ्रष्टाचार और नैतिक पतन को प्राप्त होने के कारण, रोम ने अपनी शक्ति को खो दिया, और वह असभ्य जातियों के लिए एक आसान शिकार बन गया। यह जातियाँ उस राज्य पर ३५१ ईसवी और ४७६ ईसवी के बीच आक्रमण करती रही।

104

राजा अगस्तुस को पदच्युत कर दिया गया और रोम को कई भागों में बांट दिया गया - भाग जो उस मूर्ति के लोहे और मिट्टी के बने पांव और उंगलियों से दर्शाये गये थे।

105

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : ४३)

"और तू ने जो लोहे को कुम्हार की मिट्टी के संग मिला हुआ देखा, इसका अर्थ यह है कि उस राज्य के लोग एक दूसरे मनुष्यों से मिले जुले तो रहेंगे;

106

परन्तु जैसे लोहा मिट्टी के साथ मेल नहीं खाता, वैसे ही वे भी एक न बने रहेंगे।"

दानिय्येल २ : ४३

रोम की असभ्य जातियों के आक्रमण से वह राज्य बंट गया। इन भागों ने यूरोप के वर्त्तमान राज्यों की नींव ड़ाली।

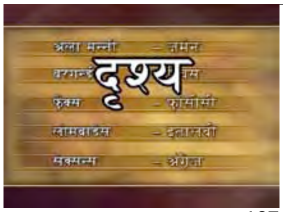

107

(दृश्य)

इतिहासकारों ने इन दस असभ्य जातियों की एक सूची दर्ज की है जो इस प्रकार हैः– अला मन्नी - जर्मन, बरगनडियसं – स्विस, फ्रेंक्स –फ्रांसीसी, लोमबार्डस–इतालवी, सेक्सन्स – अंग्रेज

१ - भविष्य को कैसे जाने

१ - भविष्य को कैसे जाने

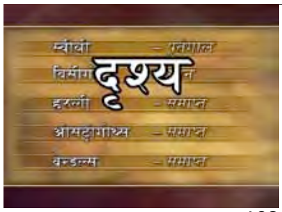

108

(दृश्य)
स्वीवी -पुर्तगाल, विसीगोथ्स - स्पेन, हरुली, ओसट्रोगोथ्स, वेन्डल्स –थे या तो -लुप्त हो गए या अपने चारों ओर के राज्यों के साथ मिल गए हैं।

109

परमेश्वर की यह भविष्यवाणी कि ये राज्य कभी भी एक साम्राज्य में फिर से नहीं मिलेंगे इन राज्यों के कामों को सीमित करती है।

110

यूरोप अब भी बटा हुआ रहेगा। वे एक साथ नहीं रहेंगे! यूरोपियन बाजार और मुद्रा सामान्य होने पर भी, वे विभाजित रहेंगे।

111

परमेश्वर ने कहा कि वे मनुष्य के बीज के साथ घुलमिल जाएंगे। दूसरे शब्दों में, वे राज्य परिवारों के सदस्यों के साथ अर्न्तविवाह करेंगे।

112

डेनमार्क के एक महल में, युरोप के राज घराने की वंशावली का चित्र लगा हुआ है। वे सारे परिवार एक दुसरे से सम्बंधित व सब रिश्तेदार थे! वे यह आशा करते थे कि इस से किसी प्रकार का युद्ध नहीं होगा। पर ऐसा नहीं हुआ।

113

उन की आपस में नहीं बन सकी इसलिए यूरोप में होने वाले युद्धों में बहुत से पारिवारिक युद्ध थे!

परमेश्वर ने यह भविष्यवाणी की थी कि वे आपस में मिलकर नहीं रह सकेंगे।

उन्होंने यह प्रयत्न किया कि रोमी राज्य को फिर से मिला लिया जाए, परन्तु यह कभी भी नहीं हो सका, क्योंकि लोहा और मिट्टी एक साथ मिलकर नहीं रह सकते!

114

यूरोप के राज्य को फिर से मिलाने के लिए किए गए प्रयत्नो के विषय में सोचिए।

दुनिया के होनेवाले नेतागण जो एक होने का प्रयास कर रहे थे उनका क्या हुआ?

115

शार्लीमेन - पराजित हुआ, चार्ल्सपंचम पराजित हुआ, लुई चौदवां - पराजित हुआ, नेपोलियन पराजित हुआ, कैसर विल्हेम पराजित हुआ, हिटलर- पराजित हुआ।

१८०० की आरम्भ के वर्षो में एल्बा के टापू पर देश निष्कासित फ्रांस के उस शक्तिशाली योद्धा नेपोलियन को यह मानना पड़ा कि परमेश्वर उन सबसे महान था!

१ -□ भविष्य को कैसे जाने

१ - भविष्य को कैसे जाने

116

परमेश्वर ने यह कहा कि " वे एक दूसरे से मिल कर नहीं रह सकेंगे!"

ये दुनिया के होने वाले उन शासकों की समाधि के लिए सही लेख थे!

फिर भी, ये यूरोपीय देश एक साथ मिलने का प्रयत्न करते रहते हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार परमेश्वर ने कहा था कि वे एक साथ हो तो सकते हैं!

परन्तु वे साथ मिल कर नहीं रह सकते।

117

(दृश्य)

नबूकदनेस्सर भविष्यवाणी के इस मोड के कारण व्याकुल हो गया था।

परमेश्वर ने दुनिया के चार महान राज्यों के दुर्भाग्य की भविष्यवाणी की थी। उसने यह भविष्यवाणी की थी कि ये राज्य रोम के ऊपर सफलता प्राप्त करेंगे, आज उनमें से सात देश पश्चिमी यूरोप में हैं - कुछ शक्तिशाली हैं, कुछ कमजोर हैं, परन्तु निराशाजनक स्थिति में विभाजित हैं।

१ - भविष्य को कैसे जाने

118

इसके बाद क्या होगा?

स्पष्ट दिखाई देने वाले आनन्द और विश्वास के साथ, दानिय्येल अब धातु से बनी उस महान मूर्ति के स्वप्न के अर्थ को बताते हुए विस्मित करने वाली चरम सीमा में पहुँच गया था। उसने लिखाः

119

(मूलपाठ दानिय्येल २ : ४४,४५)

उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर, एक ऐसा राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा,

120

न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जाएगा। वरन वह उन सब राज्यों को चूर - चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा, और वह सदा स्थिर रहेगा। "

121

"यह उस पत्थर के दर्शन का अर्थ है जो एक पहाड़ से कटा था, परन्तु वह मनुष्य के हाथों द्वारा बनाया हुआ नहीं था

122

एक पत्थर जिसने लोहे, पीतल, मिट्टी, चान्दी और सोने को चूर-चूर किया।

१ - भविष्य को कैसे जाने

123

महान् परमेश्वर ने राजा को जताया है कि इसके बाद क्या क्या होने वाला है। न स्वप्न में और न उसके फल में कुछ सन्देह है।"

दानिय्येल २ : ४४, ४५

124

मनुष्य के इतिहास की दूसरी महान घटना यीशु का दूसरा आगमन और उनके राज्य की स्थापना होगी, जिसे उस पत्थर से दर्शाया गया है " जो बिना किसी हाथों के काटा गया।"

उनका राज्य, मनुष्यों के हाथों से नहीं, अपितु परमेश्वर के शक्तिशाली हाथों के द्वारा स्थापित किया जाएगा -एक ऐसा राज्य जो पूरी पृथ्वी पर छा जाएगा।

125

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ११ : १५)

"---इस जगत का राज्य हमारे प्रभु का राज्य हो गया, और उसके मसीह का हो गया ---और वह युगानुयुग राज्य करेगा --- "

प्रकाशितवाक्य ११ : १५

126

दानिय्येल की पुस्तक में इस भविष्यवाणी के द्वारा पूरी हुई अन्तिम घटनाओं पर ध्यान दीजिए :

१ - भविष्य को कैसे जाने

127

यीशु का दूसरा आगमन

128

दुनिया के राज्यों का अंत हो जाएगा।

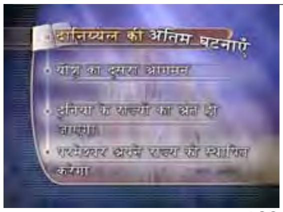

129

परमेश्वर अपने राज्य को स्थापित करेगा।

130

यह राज्य हमेशा रहेगा।

131

यीशु का राजाओं के राजा के रुप में अभिषेक किया जाएगा।

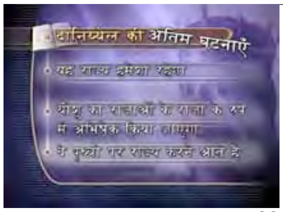

132

वे इस पृथ्वी पर एक अनन्त राज्य स्थापित करने आते हैं।

१ - भविष्य को कैसे जाने

१ - भविष्य को कैसे जाने

133

जब दानिय्येल ने राजा को उसके सनसनीपूर्ण दर्शन और परमेश्वर का विस्मित करने वाला अर्थ बताया, तब राजा नबूकदनेस्सर अपने सिंहासन से उठ खड़ा हुआ। दानिय्येल के सम्मुख उसने नम्रतापूर्वक साष्टांग दण्डवत किया उसने ऐसा दानिय्येल के परमेश्वर को सम्मान देने के लिए किया, जिनकी बुद्धि और शक्ति का उसने इतना प्रभावशाली नमूना देखा था।

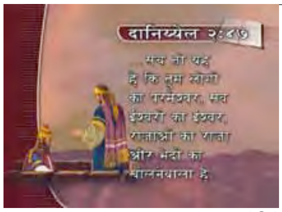

134

(मूलपाठ : दानिय्येल २ : ४७)

राजा ने दानिय्येल से कहा :–

"..... सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलनेवाला है ...."

135

इस धातु से बनी मूर्ति के द्वारा, जो नबूकदनेस्सर ने अपने स्वप्न में मसीह के जन्म से ६०० वर्ष पूर्व देखी थी, परमेश्वर ने आने वाले रहस्य को खोला!

136

हाँ मित्र, "यह स्वप्न वास्तविक है, और उसका अर्थ सच्चा है! "

यह यात्रा लगभग समाप्त हो गई है!

मसीह का बादलों में आकर अपने अनंत राज्य को स्थापित करना अगली घटना है!

१ - भविष्य को कैसे जाने

137

(दृश्य)

सोने, चांदी, पीतल और लोहे को दर्शाने वाले राज्य इतिहास में बीत चुके हैं।

और अगली महिमामय घटना है हमारे प्रभु के शीघ्र आने की!

138

उसने आने वाले सुन्दर कल की सुन्दर योजना बनाई है जो कल्वरी पर खून से रंगे हुए क्रूस के द्वारा सम्भव हुआ है।

थोड़े समय के बाद ही ये सारी बातें पूरी हो जाएंगी।

अभी परमेश्वर अपने राज्य को बना रहा है और उन्हें भी जो इस राज्य के सदस्य होंगे।

१ - भविष्य को कैसे जाने

139

(दृश्य)

हम इस बात से निश्चित हो सकते हैं कि हम उस के राज्य के सदस्य होंगे, यदि हम केवल विश्वास से वह करें जो उस क्रूस पर चढे डाकू ने किया था।

जब वह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच यीशु की बगल में लटका था तब वह यीशु के समीप न जा सका।

परन्तु वह जानता था कि वह पापी है और उसे अपने पापों से छुटकारे की आवश्यकता थी। उसने दुनिया के उद्धारकर्ता को देखा कि उसके चेहरे और माथे पर कांटों के चुभने से खून बह रहा था और यह बात उसके हृदय को छू गई। उसने अपने पापों को स्वीकार किया और चिल्लाकर कहा,

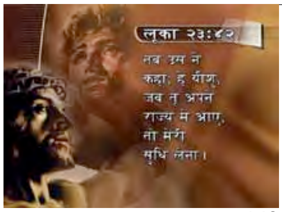

140

(मूलपाठः लूका २३ : ४२)

"तब उस ने कहा; हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना

लूका २३ : ४२

और यीशु ने उसे आश्वासन दिया कि वह उसके साथ उस राज्य में होगा।

141

आप भी यह प्रार्थना कर सकते हैं और वही आश्वासन पा सकते हैं कि मसीह के साथ आप उस राज्य में होंगे जो जल्दी ही इस पृथ्वी पर स्थापित किया जा रहा है।

१ - भविष्य को कैसे जाने

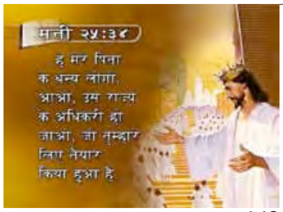

142

(मूलपाठ : मत्ती २५ : ३४)

तब आप मसीह के वापिस आने पर उसके ओंठो से इस निमंत्रण को सुनेंगे :

".....हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है........"

मत्ती २५ : ३४

143

यह संसार मनुष्य के हाथों में नहीं है।

यह परमेश्वर के हाथ में है। हम भविष्य का बड़े आत्मविश्वास के साथ सामना कर सकते हैं। मसीह जल्द आने वाले हैं ।

वह चटटान जो बिना हाथों के काटी गयी थी वह उस मूर्ति को काट देगी। इस पृथ्वी के राज्य चकनाचूर हो जाएंगे।

परमेश्वर अपना अनन्त राज्य ले आयेगा।

१ - भविष्य को कैसे जाने

144

आप इस परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं। आप इस परमेश्वर में विश्वास कर सकते हैं। आप उस के हाथों में सुरक्षित रह कर आराम कर सकते हैं। वह आप को आज पुकार रहा है। वह आपको आज आने का निमंत्रण दे रहा है। वह आपके हृदय में प्रवेश करना चाहता है। क्या आप यह कहना चाहेंगे, "हाँ, प्रभु, मैं तुझ पर पूर्णरूप से विश्वास करुंगा। मैं आज प्रार्थना के समय अपना जीवन समर्पित करता हूँ?"

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

1

भविष्य का बिना डर के सामना कीजिए

2

एक सुन्दर गर्मी के दिन, एक पिता और उसकी नौ साल की पुत्री महासागर में तैर रहे थे। कुछ समय तक वे लहरों पर छपकते रहे। अचानक बहुत तेजी से ज्वार आया और वह जल्दी से उस छोटी लड़की को थोड़ी दूर ले गया। उसका पिता उसके पास नहीं पहुँच सकता था। किनारे तक पहुँचने के लिए उसे मदद की जरूरत थी। भाग्यवश, डर की बजाय पिता ने उससे कहा, "डरो मत पानी के ऊपर आकर आराम से तैरो। मैं तुम्हें लेने आ रहा हूँ।" तब वह जल्दी से एक नाव ढूंढने के लिए गया ।जब वह पिता उस स्थान पर एक नाव और कुछ बचाने वालों के साथ लौटा तब उसका दिल डूबने लगा। उसकी लड़की वहां नहीं थी। वह समुद्र में दूर तक बह चुकी थी। परन्तु अंत में जब वे उसके पास पहुँचे, तब वह लड़की चुपचाप पानी के ऊपर तैर रही थी जैसा कि उसके पिता ने उसे आज्ञा दी थी।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

3

बाद में उससे पूछा गया कि किस प्रकार उसने अपने आपको दूर महासागर में इतना चुपचाप सम्भाले रखा। उसने उत्तर दिया, "मैनें वही किया जो मेरे पिता ने मुझे करने को कहा था। मुझे मालूम था कि वे वापिस आएँगे, और मैं नहीं डर रही थी। उस साहसी छोटी लड़की की आशा ने उसे जिन्दा रखा था; जिसने उसे बचाने और छुड़ाने की सहायता की। यह महान आशा जो हमारे विश्वास को ईसाईयों के रूप में रखती है वह आशा यह है कि हमारा स्वर्गीय पिता इस ग्रह को जो नाश होने वाला है उसे बचाने के लिए तैयार है।

4

(दृश्य)

हाल ही में एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने डरकर कहा कि यह दुनिया एक हजार साल तक ही रहेगी। वह यह कहता है कि इस पृथ्वी के वातावरण में मनुष्य के द्वारा बनाया गया प्रदूषण दुनिया के तापमान को बढ़ाने का कारण होगा।

5

और वह पृथ्वी पर मृत्युकारी गर्म हवाओं को उत्पन्न करेगा। जब ध्रुवी बर्फ की चोटियाँ पिघल जाएंगी तब महाद्वीपों में बाढ़ आ जाएगी। परन्तु दूसरे यह सोचते है कि दुनिया का अन्त दूसरे प्रकार से होगा।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

6

(दृश्य)

कुछ कहते हैं कि हम न्यूक्लियर युद्ध में नाश हो जाएंगे।

7

दूसरे कहते है कि यदि दुनिया की जनसंख्या इसी प्रकार बढ़ती रही तो खाने और दूसरी चीजों की कमी के कारण हमारा अन्त हो जाएगा।

8

और दूसरे यह कहते है कि जैसे ही एक बड़ा पुच्छलतारा या तारा टकराएगा तब हम मिट जाएंगे।

9

और तब वे लोग यह कहते है कि कुछ परदेशी दूसरे ग्रह से उतरेंगे और हम सबको नष्ट कर देंगे। हममें से, सचमुच कितने बहुत- सी दूसरी चीजों के लिए परेशान हैं।

10

हम केवल रहने के किए, या दूसरों के साथ घुल मिल जाने के लिए, या बीमारी, दुःख और मृत्यु के साथ संघर्ष करने की कोशिश कर रहे हैं।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

11

हम में से कितनों के लिए, या फिर बहुतों के लिए, जीवन आसान नहीं है। यह कितना कठिन हो जाता है कि हम बहुधा यह इच्छा करने लगते हैं कि इस संसार का अन्त हो जाए। सचमुच जीवन को दर्द से, भूख और थकान और तनाव से इतना भरा हुआ नहीं बनाया गया था। हम एक अच्छी दुनिया चाहते हैं!

12

तो, मेरे म्रित्र, आपके लिए अच्छा समाचार है! एक और इससे उत्तम संसार आने वाला है!

13

हम सब यह जानना चाहते हैं कि कब और कैसे इस दुनिया का अंत होगा।

क्या इसका अन्त हमारे जीवित रहते होगा?

भविष्यवाणी करने वाले भविष्यवक्ताओं की कमी नहीं है?

14

और इसके विषय में कौन सही है कि कैसा इसका अन्त होगा?

भविष्यवाणी करने वाले भविष्यवक्ताओं की कमी नहीं है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

15

परन्तु समस्या यह है कि एकदम सच्ची भविष्यवाणी करने वाले भविष्यवक्ताओं को कहाँ ढूंढे - भविष्यवक्ता जिनकी भविष्यवाणियाँ सही निकलती हैं!

16

(दृश्य)

परन्तु क्या आप जानते है कि कोई है जिसकी भविष्यवाणियाँ सब सच्ची निकली हैं।

कोई है जो हमे बिल्कुल सही रूप में यह बता सकता है कि दुनिया का अंत किस प्रकार होने वाला है - और क्या उसका अंत जल्दी हो जाएगा या यह हजारों वर्षो से भी अधिक रहेगा?

यह जानना कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जिसने इस संसार को बनाया उसी को यह भी मालूम है कि इसका अन्त कब होगा।

और मित्रों, प्रभु यीशु, सृष्टिकर्ता परमेश्वर, अपने वचन के द्वारा, हमें भविष्य में ले जा सकते हैं। वे एक विश्वासयोग्य मार्गदर्शक हैं।

जिसने इसका आरम्भ किया उसकी अपेक्षा इस दुनिया के अन्त के विषय में और कौन अधिक जान सकता है?

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

17

बाइबिल यीशु मसीह के जीवन में होने वाली दिलचस्प घटना के विषय में बताती है।

एक दिन उसके चेले उसे अलग ले गए, और उन्होंने उसे एक मन्दिर की इमारत दिखाई, जो कि रोमन सरकार के द्वारा पुनः निर्मित की गई थी।

18

रोमन राज्य की समस्त इमारतों में से वह एक मंहगी, सुन्दर और देखने योग्य इमारत थी!

इस इमारत को देखने के पश्चात, यीशु ने अपने चेलों से एक चौंकानेवाला कथन बयान किया। उसने कहा,

19

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २)

"....क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ,

20

यहाँ पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।"

मत्ती २४ : २

21

यह यहूदी राष्ट्र की श्रेष्ठ इमारत थी, और यीशु ने यह भविष्यवाणी की थी कि यह पूर्णरूप से नष्ट हो जाएगी।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

22

चेले आश्चर्यचकित हो गए थे। और जब वे जैतून पहाड़ पर गये, तब उन्होंने यीशु से वह प्रश्न पूछा जो हम सब ने पूछा होता।

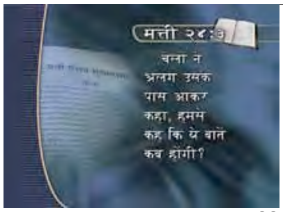

23

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ३)
"...चेलों ने अलग उसके पास आकर कहा, हमसे कह कि ये बातें कब होंगी?

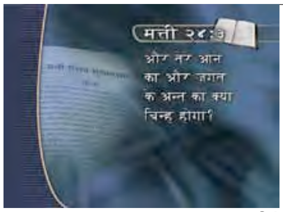

24

और तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?"
मत्ती २४ : ३

25

आप देखिए, चेलों को यह महसूस हुआ कि यदि यह इमारत नष्ट हो जाएगी, तो इसका संबंध मसीह के आने और दुनिया के अन्त के साथ जरूर है।

26

परन्तु मती की किताब के २४ वें अध्याय में हमें यह मालूम होता है कि यीशु ने दो अलग-अलग घटनाओं के विषय में कहा था।

27

उनमें से एक यीशु के दूसरे आगमन का था -- उनका इस पृथ्वी पर महिमा के साथ लौटना और इस पृथ्वी पर अनन्त राज्य की स्थापना करना था।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

28

(दृश्य)

और दूसरा, यह था जिसे बहुत से लोग उस समय तक जो जीवित रहेंगे वे उन्हें देखेंगे।

यह यरूशलेम शहर और मन्दिर के विनाश का होगा।

अब यीशु चेलों को आगे यह कहते हैं कि मन्दिर का क्या होने वाला है।

29

(मूलपाठ : मत्ती २४ : १५ - १६)

मत्ती २४ : १५,१६ में उसने कहा, "सो जब तुम उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यवक्ता के द्वारा हुई थी,

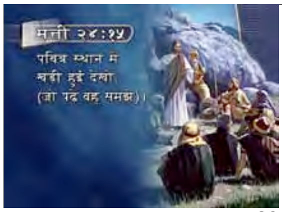

30

पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो' (जो पढ़े वह समझे)।

31

तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं।"

32

दानिय्येल की भविष्यवाणियाँ थीं कि यरूशलेम का नाश हो जाएगा।

परन्तु अब यीशु अपने चेलों को यह याद दिलाते हैं कि दानिय्येल भविष्यवक्ता की चितौनियाँ शीघ्र ही पूर्ण होंगी।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

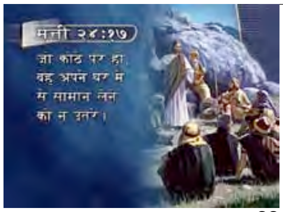

33

(मूलपाठ : मत्ती २४ : १७ - १८)

मत्ती २४ : १७ - १८ में उसने कहा, "जो कोठे पर हों, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे।

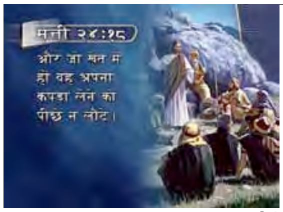

34

और जो खेत में हों वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे।"

35

दूसरे शब्दों में, उसने उनको कहा कि अपनी जान बचाने के किए भाग जाओ, क्योंकि जब उन्होंने यह देखा कि सेनाओं ने यरूशलेम शहर को चारो ओर से घेर लिया है तो उसका विनाश निकट है।

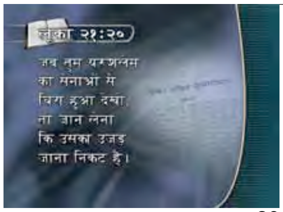

36

(मूलपाठ : लूका २१ : २०)

लूका २१ : २० मे, यीशु ने कहा : "परन्तु जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है।"

तब वह उनसे यह कहने के लिए गया कि जब वे उन सेनाओं को देखें तो वे जहाँ कहीं भी हों, उन्हें भाग जाना चाहिए।

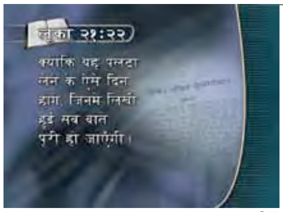

37

(मूलपाठ : लूका २१ : २२ - २४)

"क्योंकि यह पलटा लेने के ऐसे दिन होंगे, जिनमें लिखी हुई सब बातें पूरी हो जाएंगी।"

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

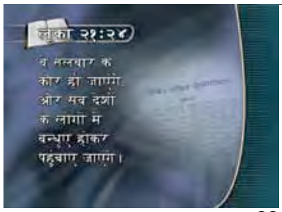

38

"वे तलवार के कौर हो जाएंगे, और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुंचाए जाएंगे।

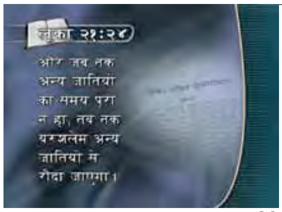

39

और जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौदां जाएगा।"
लूका २१ : २२, २४

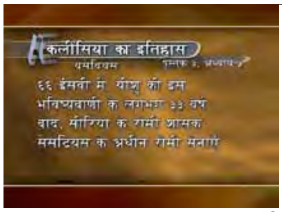

40

"६६ ईसवी में, यीशु की इस भविष्यवाणी के लगभग ३३ वर्ष बाद, सीरिया के रोमी शासक सेसटियस के अधीन रोमी सेनाएँ

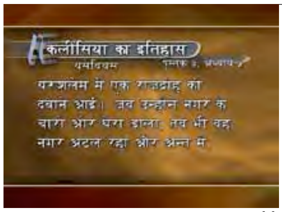

41

यरूशलेम में एक राजद्रोह को दबाने आई। जब उन्होंने नगर के चारों ओर घेरा डाला, तब भी वह नगर अटल रहा और अन्त में,

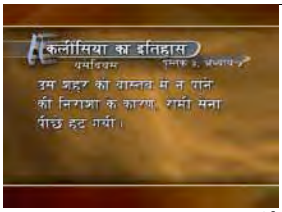

42

उस शहर को वास्तव में न पाने की निराशा के कारण, रोमी सेना पीछे हट गयी।"
(देखिए यूसेबियस, चर्च हिस्ट्री, पुस्तक ३, अध्याय ५)

43

(दृश्य)
जिन लोगों ने यीशु के आदेश का पालन किया वह यरूशलेम नगर के विनाश से बच गए, और जब रोमी सेना ने उस नगर को हथिया लिया तब वे नहीं मरे।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

44

इस भयंकर हमले में लगभग १,१००,००० लोग मारे गये। जब ६६ ईसवी में रोमी सेना पीछे हट गयी तब यीशु के उस शहर से भागने के आदेश का पालन करने में वे लोग असफल रहे। यहाँ भविष्यवाणियों के अध्ययन का महत्व और समय के चिन्हों का ध्यान रखने की शिक्षा मिलती है। जिन लोगों ने मसीह पर विश्वास किया, और उसके पहले से ही बता देने वाले चिन्हों को देखा तो वे बच गए, जबकि अविश्वासी नाश हो गए। इसी प्रकार दुनिया के अन्त में भी यह होगा कि सावधान रहने वाले विश्वासी बचा लिए जाएंगे, जबकि असावधान और अविश्वासी नाश हो जाएंगे।

45

(दृश्य)

ऐश्वर्यशाली मन्दिर का क्या हुआ? तीतुस, रोमी सेनापति जो यरूशलेम शहर का अधिकारी था, जिसने मन्दिर को बचाने की आज्ञा दी परन्तु उसके एक सिपाही ने एक जलती हुई मशाल दरवाजे के अदंर फेंक दी,

46

और वह मंदिर जलकर राख बन गया। एक भी पत्थर दूसरे पत्थर पर न रहा।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

47

यीशु ने यरूशलेम के विनाश की जो भविष्यवाणियाँ अपने चेलों से ४० वर्ष पूर्व की थीं वे वैसी ही पूरी हुई। क्या हम उन चिन्हों को अनदेखा कर देंगे जो यीशु ने हमें दुनिया के अन्त के संबंध में दिया था, या हम उन चितौनियाँ के पूरा होने तक इन्तजार करेंगे और आगे क्या होने वाला है उसके लिए तैयार हो जाएंगे?

हम कैसे और कब जानेगें कि दुनिया का अन्त बहुत निकट है।

यीशु हमें साफ चिन्ह देता है।

48

आइए हम अपने समय के कुछ चिन्हों के बारे में देखते हैं। मत्ती २४ : ७, मसीह ने कहा,

49

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ७)

"क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा।

50

और जगह-जगह अकाल पड़ेंगे, और भुईडोल होंगे।"
मत्ती २४ : ७

मनुष्य के इतिहास में २०वीं सदी सबसे खून से भरी सदी थी।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

51

(दृश्य)

प्रथम विश्व युद्ध ने दो करोड़ लोगों को युद्ध की वेदी पर बलिदान होते देखा। द्वितीय विश्व युद्ध ने पाँच करोड़ लोगों का विनाश होते देखा। यधपि सब यह सोचते थे कि अहिंसा और घृणा का अन्त हो जाएगा, परन्तु युद्ध अभी भी होते हैं। ऐसा लगता है कि दुनिया पागल हो गई है। यह समयों के चिन्हों में से एक है।

52

राज्य शांति की बातें तो कहते हैं परन्तु युद्ध की तैयारियाँ करते हैं।

शांति और तैयारी के संबंध में बाइबिल की अन्य भविष्यवाणी यह हैः

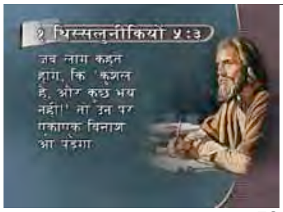

53

(मूलपाठ : १ थिस्सलुनीकियों ५ : ३)

"जब लोग कहते होंगे, कि ' कुशल है, और कुछ भय नहीं! ' तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा..."

१ थिस्सलुनीकियों ५ : ३

हम शांति की बातें कहते हैं, परन्तु शांति नहीं है!

सब ही शांति चाहते हैं!

परन्तु सिर्फ यह बात है!

54

बाईबिल यह कहती है कि पृथ्वी के अन्त के क्षणों में, मनुष्य के पास पृथ्वी को नाश करने की योग्यता होगी।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

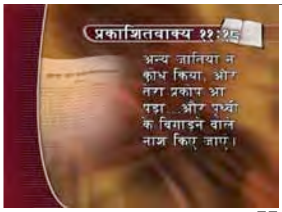

55

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ११ : १८)

"अन्य जातियों ने क्रोध किया, और तेरा प्रकोप आ पड़ा....और पृथ्वी के बिगाड़ने वाले नाश किए जाएं।"

प्रकाशितवाक्य ११ : १८

पृथ्वी जिन वास्तविक चीजों से बनी है उसको नाश करने की क्षमता मनुष्यों के पास इससे पहले कभी भी नहीं थी।

56

अणुबम के आविष्कार के बाद अब मनुष्य के पास पृथ्वी को नाश करने की योग्यता है।

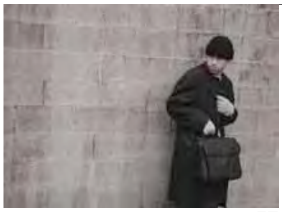

57

आतंकवादियों ने अब इन अणु हथियारों को, जो अब तक सुरक्षित थे, खरीदने या चुराने का रास्ता ढूंढ़ लिया है। इनमें से कुछ खतरनाक हथियार पहले ही खो गए हैं और उनके हाथ लग गये है जो उन्हें बेचने या प्रयोग करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

58

एक सम्मानित पत्रिका में यह लिखा था कि एक अणु बम को बनाने की सूचना दुनिया के बहुत से महान पुस्तकालयों में उपलब्ध है।

यह कम्प्यूटर का बटन दबाने जितना आसान है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

59

(दृश्य)

वे किसके पास हैं और वे जल्द ही इन दिनों में क्या करने वाले हैं?

ये एक सूटकेस से बड़े नहीं हैं। उन्हें कहीं भी लगाया जा सकता है, और उनमें से एक ही दुनिया के एक बड़े शहर को नाश कर सकता है।

60

प्रभु ने यह कहा है कि अन्त के दिनों में हर प्रकार की आपत्तियाँ आएंगी।

61

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ७)

".......अकाल पड़ेंगे......"

मत्ती २४ : ७

62

और पृथ्वी के कितने भागों में अकाल पड़ते हैं।

63

यह अनुमान लगाया गया है कि इस एक वर्ष में पाँच करोड़ सत्तर लाख लोग भूखे मरेंगे। जिसका अर्थ है कि, १५६ हजार लोग भूख से हर दिन मरेंगे।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

64

इस पृथ्वी के करोड़ों लोगों में से ६० प्रतिशत कुपोषित है, और २० प्रतिशत भूख से मरेंगे।

यीशु ने कहा कि अकाल भी होंगे और यह एक अन्त का चिन्ह है।

65

(दृश्य)

सूचित स्रोत हमें यह बताते हैं कि जब आबादी भोजन के उत्पादन से अधिक हो जाएगी, तब पूरे विश्व में अकाल, भूखमरी, संक्रामक रोग, और भोजन के युद्व को कोई नहीं रोक सकेगा। हम किस प्रकार और बढ़ने वाले करोड़ों लोगों का पेट भरेगें, जबकि संसार की दो तिहाई आबादी अभी भूखी है?

66

(मूलपाठ : लूका २१ : २५)

यीशु पृथ्वी के अन्तिम समय की स्थिति का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि उस समय क्या होगा "....पृथ्वी पर, देश-देश के लोगों को संकट होगा....."

लूका २१ : २५

67

यीशु ने कहा संक्रामक रोग होगाः

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

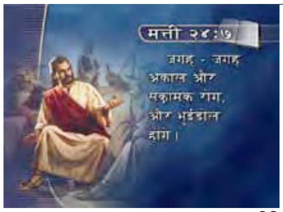

68

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ७)

"....जगह-जगह अकाल और सक्रांमक रोग, और भुईडोल होंगे।"

शब्दकोष के अनुसार, आधुनिक युग में संक्रामक शब्द का अर्थ, प्लेग के समान या अद्भुत बीमारी है।

69

आधुनिक दवाइयों के पश्चात भी बहुत से प्लेग फैल रहे हैं।

70

एड्स, मलेरिया, निमोनिया, टी॰ बी॰ , इबोला रोग, आतशक, सूजाक, और हैजा।

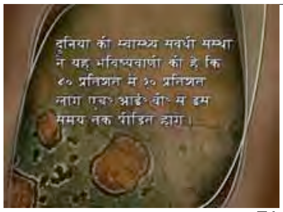
71

दुनिया की स्वास्थ्य संबधी संस्था अब यह अनुमान लगाती है कि हमारे पास चार करोड़ एच॰ आई॰ वी॰ से पीड़ित लोग हैं। यदि इसको रोकने के लिए कुछ न किया गया तो सारे राष्ट्र मिट जाएंगे।

72

समय के चिन्हों में वातावरण प्रदूषण भी एक अन्य चिन्ह पाया जाता है।

बाइबिल ने यह भविष्यवाणी की है कि यह ससांर पुराना हो जाएगा।

यशायाह ५१ : ६ में परमेश्वर ने कहा,

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

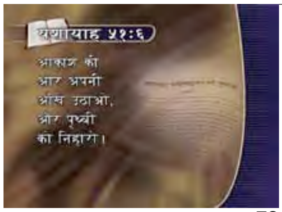

73

(मूलपाठ : यशायाह ५१ : ६)

"आकाश की ओर अपनी आँखें उठाओ, और पृथ्वी को निहारो।

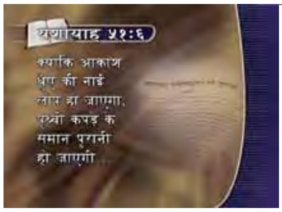

74

क्योंकि आकाश धुँए की नाई लोप हो जाएगा, पृथ्वी कपड़े के समान पुरानी हो जाएगी।"

इस आकाश और इस पृथ्वी के लिए इससे अधिक अच्छा विवरण क्या हो सकता है जब वे अन्त की ओर लुढ़क रहे हों !

75

हमारे बड़े शहरों के ऊपर जो आकाश है वह जहरीले पदार्थों से भरा हुआ है जिसमें हम अपने फेफड़ों के द्वारा श्वास लेते हैं।

76

बहुत से शहरों में चिपकाए गए विज्ञापन हमें दूषित हवा की हानि के बारे में चेतावनी देते हैं।

77

(दृश्य)

बहुत-सी जगहों पर पानी पीना बिल्कुल सुरक्षित नहीं, क्योंकि उसमें जहरीले पदार्थ पाए जाते हैं।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

78

अणुगंद को समाप्त करना एक भारी समस्या बन गई है।

एक बड़े अणु-चालित कारखाने के क्षेत्र में जहर से पीड़ित कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति राशि दी जा रही है।

79

हमें ऊर्जा, स्वच्छ जल और हवा कहाँ से मिलेगी? हमें भोजन कहाँ मिलेगा?

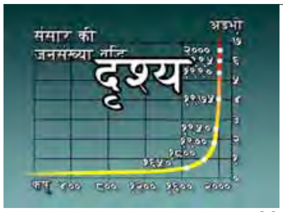

80

(दृश्य)

संसार की तेजी से बढ़ती हुई आबादी के कारण, मनुष्य को इस पृथ्वी पर जीने के लिए भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है !

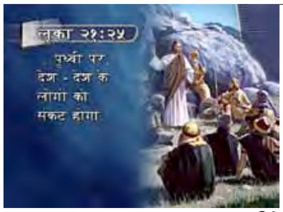

81

(मूलपाठ : लूका २१ : २५)

".....पृथ्वी पर, देश-देश के लोगों को संकट होगा..."

लूका २१ : २५

82

बाइबिल भूकम्प की बढ़ती हुई संख्या के विषय में भी कहती है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

83

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ७)

"और जगह-जगह...भुईडोल होंगे।"

मत्ती २४ : ७

बहुत तीव्र गति से भुईडोल की बढ़ती हुई संख्या को हमने देखा है।

84

इस पृथ्वी पर हर साल ६,००० बड़े भुईडोल आते हैं।

85

(दृश्य)

पिछले केवल १० वर्षो में इन भंयकर दुर्घटनाओं में पन्द्रह लाख लोगों की मृत्यु हो गयी।

86

पिछले थोड़े समय में, हमने देखा कि भुईडोल ने एक बड़े गर्जन के साथ २०,००० से ३०,००० जानें ले लीं। आप में से कितनों को बहुत-से देशों में हाल ही में हुए भुईडोल याद आएंगे।

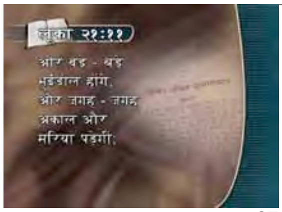

87

(मूलपाठ : लूका २१ : ११,२५)

बाइबिल कहती है, "और बड़े-बड़े भुईडोल होंगे, और जगह-जगह अकाल और मरियां पड़ेगीं;

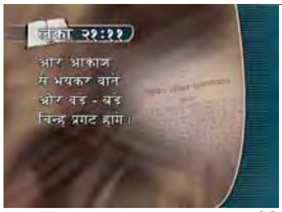

88

और आकाश से भंयकर बातें और बड़े-बड़े चिन्ह प्रगट होंगे.......

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

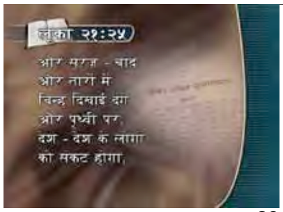

89

और सूरज और चांद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे;

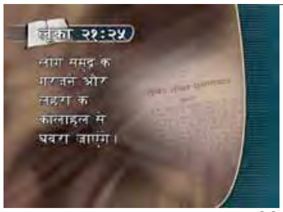

90

और पृथ्वी पर, देश-देश के लोगों को संकट होगा, क्योंकि समुद्र के गरजने और लहरों के कोलाहल से घबरा जाएंगे।"

लूका २१ : ११, २५

91

(दृश्य)

ध्यान दीजिए कि यहाँ लिखा है कि हवा गरजेगी और लहरों में कोलाहल होगा।

पूरे संसार में हमने असामान्य मौसम को देखा है। बंवडर, जो ज्वारभाटे की लहरों में उठते हैं; आंधियाँ; भयंकर तूफान; ज्वालामुखी -- ये सब विपतियाँ सम्पति और जीवन का एक भयंकर रूप से अन्त कर रही हैं।

92

बाईबिल हमें एक और चिन्ह देती है। अन्त के समय की नैतिक स्थितियाँ। यीशु पृथ्वी पर अन्त के दिनों की स्थितियाँ का तुलना सदोम और अमोरा, जो सबसे अधिक पाप से भरे दो शहर थे, के साथ करते हैं। परमेश्वर ने अन्त में स्वर्ग से आग बरसाकर उन दोनों शहरों का नाश कर दिया।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

93

(मूलपाठ : लूका १७ : २८, ३०)

"और जैसा लूत के दिनों में हुआ था;

94

........मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा।"

लूका १७ : २८ - ३०

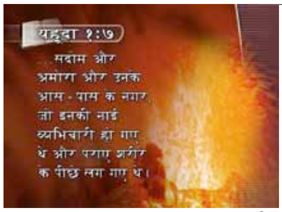

95

(मूलपाठ : यहूदा की पत्री १ : ७)

यहूदा ने लिखा कि, ".....सदोम और अमोरा और उनके आस - पास के नगर, जो इनकी नाई व्यभिचारी हो गए थे और पराए शरीर के पीछे लग गए थे।"

यहूदा की पत्री १ : ७

96

पौलुस नैतिक स्थितियों को बताता है जो कि इन शहरों के चरित्र की विशेषता को दर्शाता है। उसने कहा,

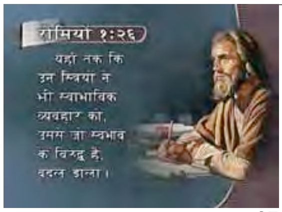

97

"......यहाँ तक कि उन स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उससे जो स्वभाव के विरुद्ध हैं, बदल डाला।"

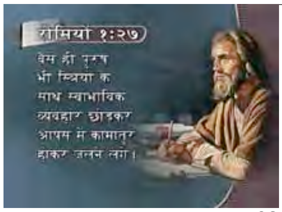

98

वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

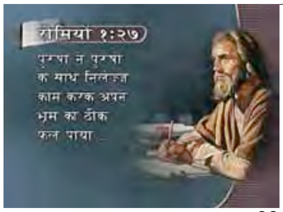

99

पुरूषों ने पुरूषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया...."

रोमियों १ : २६, २७

100

(मूलपाठ : २ तीमुथियुस ३ : २-५)

"क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता - पिता की आज्ञा टालनेवाला, कृतघ्न, अपवित्र,

101

मायारहित, क्षमारहित, दोष लगाने वाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी,

102

विश्वासघाती, ढीठ, घमण्ड़ी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे-

103

वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे।"

२ तीमुथियुस ३ : २ -५

104

(मूलपाठ : २ तीमुथियुस ३ : १३)

क्या यह स्थिति और बिगड़ सकती है? जी हाँ। लिखा है: "...दुष्ट और बहकानेवाले धोखा देते हुए, और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएंगे।"

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

105

एक सबसे अधिक महत्वपूर्ण चिन्ह जो यीशु ने दिया वह झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता के आने का था। मसीह ने इन झूठे मसीहों और झूठे भविष्यवक्ताओं से हमें सावधान किया जो इस संसार को धोखा देने के लिए आएंगे।

106

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २३ - २४)

"यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहाँ है! या वहाँ है! तो प्रतीति न करना!"

107

क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे

108

यदि हो सके, तो चुने हुओं को भी भरमा दें।" मत्ती २४:२३-२४

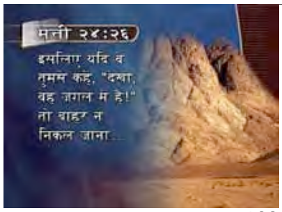

109

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २६)

"इसलिए यदि वे तुमसे कहें, "देखो, वह जंगल में है! " तो बाहर न निकल जाना..."

मत्ती २४ : २६

कहीं भी जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि यीशु ने कहा,

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

110

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २७)
"क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है,

111

वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।"
पद २७।

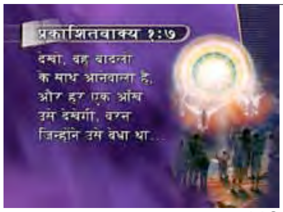

112

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १ : ७)
फिर से, हमने कहा था, "देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी, वरन जिन्होंने उसे बेधा था....."
प्रकाशितवाक्य १ : ७

113

जब वह आएंगे तब हम उसे देखेंगे !
किसी को हमें यह बताने की आवश्यकता नहीं होगी कि यीशु कब अपने पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आएंगे!

114

सबसे अन्तिम और सबसे बड़ा चिन्ह जो यीशु ने दिया था वह यह था कि समस्त संसार को सुसमाचार देना सब चिन्ह में केवल वही चिन्ह अभी पूरा नहीं हुआ है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

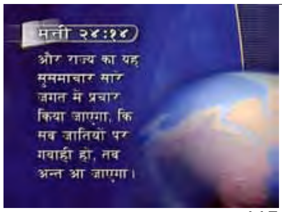

115

(मूलपाठ : मत्ती २४ : १४)

मत्ती २४ : १४

यीशु ने कहा, "और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएंगे।"

116

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, हम यह पाते हैं कि परमेश्वर ने इस महान भविष्यवाणी को पहले से ही बता दिया।

117

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : ६)

"तब मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा,

118

जिसके पास पृथ्वी पर के रहने वालों को सुनाने के लिए सनातन सुसमाचार था।

119

हर एक जाति, और कुल, और भाषा और लोगों को।"

प्रकाशितवाक्य १४ : ६

क्या आप को ऐसा नहीं लगता कि आप इस भविष्यवाणी को आज रात इस सभा में पूरा होते देख रहे हैं? यह प्रत्येक प्राणी को प्रचार करने वाला अनन्त सुसमाचार का एक भाग है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

120

यह सुसमाचार पूरी पृथ्वी पर टी॰ वी॰ , रेडियो, सुसमाचार प्रचार की सभाएँ, इन्टरनेट, व्यक्तिगत रूप से दिया गया बाइबिल अध्ययन, और पत्र व्यवहार द्वारा दिए गए पाठयक्रम के द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

121

दानिय्येल ने यह कहा है कि, "ज्ञान बढ़ जाएगा।" पृथ्वी के इतिहास के इन कठिन अंतिम दिनों में, दानिय्येल की पुस्तक से मुहर हटाई गई है, और इससे वैज्ञानिक संसार के साथ-साथ पृथ्वी के लिए परमेश्वर की योजना के विषय में ज्ञान बढ़ जाएगा।

122

समय निकला जा रहा है!
नूह के समय में पाप के कारण दुनिया का नाश हुआ था और वह पाप अब भी जीवित है।

123

होने वाली बातें इस बात का सबूत हैं, कि मनुष्य अपने नाश के लिए स्वयं जिम्मेदार है। यीशु ने हमारे दिन की तुलना नूह के दिनों से की है।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

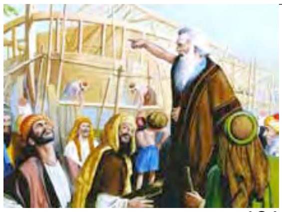
124

नूह के समय में जो लोग रहते थे वे अपने जीवन को चलाने में और अपनी दिनचर्या के कार्यो में व्यस्त थे और उनके पास धार्मिक बातों के लिए अधिक समय नहीं था।

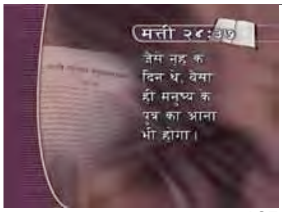
125

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ३७ - ३९)
मत्ती २४ : ३७ - ३९ में यीशु ने कहा : "जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।

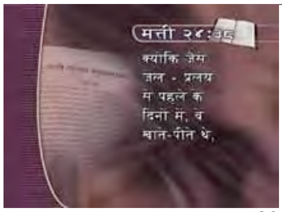
126

क्योंकि जैसे जल -प्रलय से पहले के दिनों में, वे खाते-पीते थे,

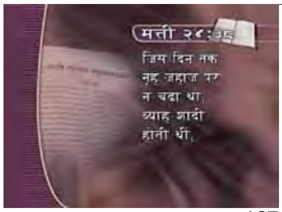
127

जिस दिन तक नूह जहाज पर न चढ़ा था, ब्याह शादी होती थीं,

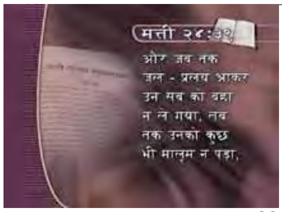
128

और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा,

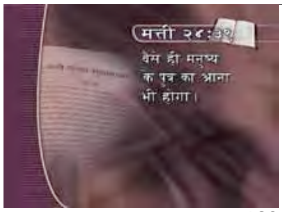
129

वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।"

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

130

यीशु ने कहा है कि उसके दूसरे आगमन में भी वही होगा जो नूह के समय में हुआ था।
लोग मौज-मस्ती कर रहे होंगे, लेकिन उनके पास परमेश्वर के लिए समय नहीं होगा।
वे परमेश्वर से ज्यादा सांसारिक सुखों से प्यार करेंगे।

131

समय बीतता जा रहा है।
जल्दी ही परमेश्वर का पुत्र बादलों पर सवार होकर अनगिनत स्वर्गदूतों के साथ आने वाला है।
परमेश्वर उस दिन का बेसब्री से इन्तजार कर रहा है, इसलिए नहीं कि वह दुनिया को नाश करेगा, परन्तु इसलिए कि वह अपने लोगों को अपने घर ले जा सके।
वह घर इन्तजार कर रहा है। वह तैयार है।

132

जब हम इस दुनिया में आज होने वाले चिन्हों को देखते हैं, तो हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यीशु का आगमन कितना निकट है।
आज भी चीजें उसी प्रकार हैं जैसे कि उस समय थी जब यीशु पहली बार इस पृथ्वी पर आया था।
उस समय भी लोगों को यह बताने के लिए कि किस समय यीशु इस पृथ्वी पर आएगा, उसने बहुत से चिन्ह दिखाए।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

133

(दृश्य)

घड़ी ४,००० वर्षो के लिए चली, और परमेश्वर ने स्वर्गदूतों और ज्योतिषियों को उसके आने के विषय में बताने के लिए भेजा था।

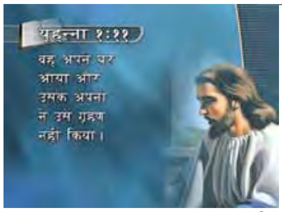

134

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : ११)

परन्तु दुःख का विषय है कि "वह अपने घर आया, और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। वे उसके लिए तैयार नहीं थे।

135

दोस्तो, उसने हमें ये सारे चिन्ह दिए हैं जो हमें यह बताते हैं कि वह जल्दी आनेवाला है। यीशु ने कहा,

136

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ३३ - ३४)

"इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो, कि वह निकट है, वरन द्वार ही पर है।

137

मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।"

मत्ती २४ : ३३, ३४

138

क्या हम उनके लिए इस बार तैयार होंगे -- या फिर से उन्हें एक बार निराश करेंगे? समय हो चला है और खतरा भी बहुत है। हम एक क्षण भी नहीं गवां सकते।

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

139

न्यूयार्क के बन्दरगाह से सेन्ट्रल -अमेरिका नामक जहाज अटलांटिक में दक्षिण दिशा में पनामा कनाल की ओर जा रहा था तब अचानक उसमें छेद हो गया और पानी भरने लगा। दूसरे जहाज ने उसकी विपत्ति के संकेत को देखा और तुंरत मदद के लिए आ पहुँचा। बचाने वाले जहाज के कप्तान ने यह सदेंश भेजा कि, "क्या बात हो गई है?" तो वहाँ से जवाब आया: "हम अपने जहाज की मरम्मत कर रहे हैं और हमारा जहाज डूब रहा है। सुबह तक की प्रतीक्षा करते हैं। बचाने वाले ने उस वाष्प जहाज को डूबता देखकर यह जवाब दिया, "कि अपने जहाज के यात्रियों को मेरे जहाज में आने दो।" परन्तु बहुत रात हो चुकी थी, और सेन्ट्रल -अमेरिका के कप्तान को यात्रियों को दूसरे जहाज पर ले जाने में खतरा महसूस हो रहा था। उसने जवाब दिया, "सुबह तक प्रतीक्षा करते हैं।" दूसरे कप्तान ने एक और संदेश भेजा और उन्हें जोर दिया कि यह काम अभी हो जाना चाहिए परन्तु उसने इन्कार कर दिया। उसे उस रात के बीत जाने की प्रतीक्षा थी। उसके कर्मचारियों को सेन्ट्रल -अमेरिका की बबियाँ लहरों में बुझती हुई नजर आ रहीं थीं। और उन्होंने लगभग ड़ेढ़ घण्टे बाद, उन बत्तियों को बिल्कुल बुझते हुए देखा। वह जहाज डूब चुका था, और उस पर सवार

२ - चिन्ह जिनकी आप उपेक्षा नहीं कर सकते!

सभी लोग भी डूब गए थे।

140

प्रतीक्षा करने का अर्थ है हमेशा के लिए खो जाना। कितनी बार आपको तुरंत निर्णय लेना पड़ता है। सेन्ट्रल -अमेरिका जहाज का कप्तान यह सोचता था कि सुबह तक प्रतीक्षा करने में कोई हानि नहीं। वह गलत सोचता था । बाइबिल यह कहती है, "मुक्ति पाने का दिन आज है। "प्रतीक्षा मत कीजिए। हिचकिचाइए मत। देर मत करिए। आप मसीह के लिए अपना फैसला अभी क्यों नहीं करते? क्या आप अभी अपने दिलों को खोलकर परमेश्वर से मसीह के आगमन के लिए अपने आपको तैयार करने की मदद नहीं मांगेगे? क्या आपके जीवन में ऐसी कोई चीज है जो आप को मसीह के आगमन के किए तैयार रहने को रोकती है? क्यों न आज आप इसी समय जब हम प्रार्थना करेंगे तब उस चीज को त्याग दे? यदि आप मसीह को सच्चे मन से ग्रहण करते हैं, " हाँ, प्रभु, जब आप दुबारा आएंगे तो मैं आपसे मिलने के लिए तैयार होना चाहता हूँ।

३ - एक महान बचाव

1

जिस दिन आप अमरता में कदम रखें

2

मरियम थक गई थी। उसके लिए वह सप्ताह बहुत व्यस्त था। उसका जीवन ऐसा हो गया था मानो लगातार कार्यो का चक्रवात हो। जब वह गोदाम से घर कार से आ रही थी तब उसने अपनी कार मुख्य सड़क के सकरे रास्ते पर मोड़ दी जो उसके घर की ओर जाती थी।

3

अचानक तारों के टूटने से, अंधेरा आसमान चमक उठा।
टूटते हुए तारों ने चमकीलेपन से आसमानों को प्रकाशित कर दिया।

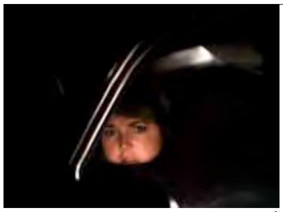
4

तारों के इस प्रकार के दिखाई देने की वह आदि नहीं थी, उसने उत्सुकतावश ऐक्सीलेटर दबा दिया उसने तुरन्त सोचा कि "इस संसार का अंत है! मसीह आ रहे है! मुझे केवल यही चाहिए कि मैं घर पहूँच जाऊं और अपने पुत्र के साथ रहूँ।"
बाद में इस अनुभव पर आलोचना करते हुए , मरियम ने कहा "जब मैंने आसमानो को इतना चमकता हुआ देखा, मैंने सोचा कि यीशु इसी क्षण आ रहे हैं।"

३ - एक महान बचाव

5

क्या आप ने कभी यह सोचा है कि इस संसार का किसी दिन अंत हो जाएगा?
यदि आपने यह सोचा है, तो सम्भवतः आपने यह सोचा होगा कि इसका अन्त कैसे होगा? क्या कुछ विशाल तारों का गिरना अन्त का चिन्ह होगा?

6

(दृश्य)
कुछ लोग यह सोचते हैं कि न्युक्लियर युद्ध से दुनिया का अन्त होगा -और मनुष्य प्राणी अपने आप को और पृथ्वी के समस्त जीवन का नाश कर देंगे।

7

दूसरे यह सोचते हैं कि दुनिया की जनसंख्या इतनी बढ़ जाएगी कि यह पृथ्वी इतने सारे लोगों को सहारा देने में असमर्थ होगी और बहुत से लोग भूखे रहेंगे।

8

तब भी दूसरे यह चिन्ता करते हैं कि हो सकता है कि किसी दिन एक तारा या पुच्छलतारा पृथ्वी से टकराकर इसे नष्ट कर देगा।

३ - एक महान बचाव

9

(दृश्य)

परन्तु क्या आप जानते हैं कि बहुत पहले, बाइबिल ने यह भविष्यवाणी की थी कि वास्तव में इस दुनिया का अन्त कैसे होगा?

और मित्रों, अच्छा समाचार यह है कि मनुष्य जाति का अन्त न युद्ध न भुखमरी न अंतरिक्ष में किसी वस्तु के टकराने से होगा।

10

इसके बदले बाइबिल यह कहती है कि दुनिया का अन्त यीशु मसीह के इस पृथ्वी पर विजयी होकर वापिस लौटने से होगा। वह इसी पृथ्वी पर वापिस आएगें जिसे वह लगभग २,००० साल पहले छोड़ गये थे। वह इस समय का अन्त करने और अनन्त जीवन से परिचय कराने के लिए आएगें।

11

यह बात बहुत दिलचस्प है जब हम यह खोज करते हैं कि लोग क्या सोचते हैं कि क्या होगा जब उनसे यह पूछा जाता है कि वे क्या सोचते हैं कि यीशु की वापसी कैसे होगी।

३ - एक महान बचाव

12

हाँ मित्रों, यीशु राजा जल्दी आ रहे हैं और इसमें कोई शक नहीं कि इस संसार की समस्याएँ मानवता की मदद से बाहर हैं केवल मसीह और उनके पिता ही मनुष्य और उसकी समस्याओं को हल करने में समर्थ है!

जब वह राजा वापिस आएगें तो कितनी आशीष होगी!

13

जब पौलुस प्रेरित अंधेरी गीली मैमरटाइन जेल में, एक कैदी था और अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था, उसने लिखा कि वह ......

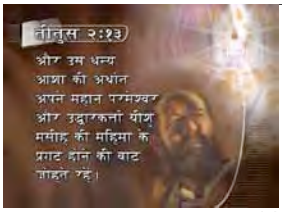

14

(मूलपाठ : तीतुस २ : १३)

"और उस धन्य आशा की अर्थात अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें।"

तीतुस २ : १३

पौलुस ने यह प्रोत्साहन पत्र तीतुस को जो, "विश्वास में उसका सच्चा पुत्र" है, को परमेश्वर के महिमामय आगमन को स्मरण दिलाने के लिए लिखा।

३ - एक महान बचाव

15

यदि आप यह पाते हैं कि आप का जीवन निराशाजनक परिस्थितियों की अंधेरी रातों से घिरा है, तो आप ऊपर की ओर देखिए और स्मरण कीजिए उस "आशीष से भरी हुई आशा" को जो मसीह का इस पृथ्वी पर दूसरा आगमन है। यह सब कुछ ठीक कर देगा !

16

नये नियम में सबसे अधिक चर्चित घटना मसीह के दूसरे आगमन की है। लगभग प्रत्येक २५ पदों में से एक पद उस घटना से संबंधित है।

नये नियम में मसीह ने अधिकतम समय किसी दूसरे विषय से अधिक उस घटना के विषय में बात करने में बिताया है।

नये नियम में दो ऐसे पद हैं जिन्हे प्रत्येक बाइबिल विश्वासी व्यक्ति को जानना चाहिए।

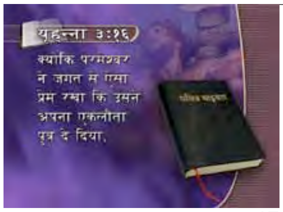

17

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : १६)

सम्भवत यह पद तो अधिकतर लोग अच्छी तरह से जानते है "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,

३ - एक महान बचाव

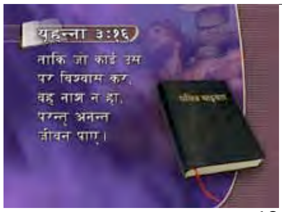

18

ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

दूसरा पद एक प्रतिज्ञा है जो यीशु ने अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने और स्वर्ग जाने से पूर्व की थी:

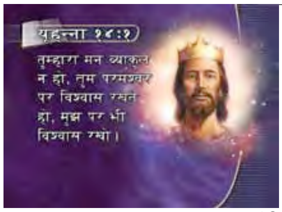

19

(मूलपाठ : यूहन्ना १४ : १ -३)

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो।

20

मेरे पिता के घर में बहुत -से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं।

21

और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो मैं फिर आऊँगा,

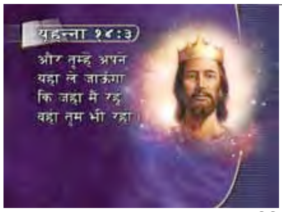

22

और तुम्हें अपने यहां ले जाऊँगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।"

यूहन्ना १४ : १ -३

23

सदियों से जब भी मसीह के मानने वालों को निराशा, कठिनाईयाँ या मृत्यु ने डराया है,

३ - एक महान बचाव

24

तो इस आशा के सितारे ने -उसकी वापसी की प्रतिज्ञा ने -उन्हें साहस और सहन करने की शक्ति दी है। यीशु के मानने वालों ने हमेशा इस प्रतिज्ञा के पूरे होने की उत्सुकता से प्रतिक्षा की है।

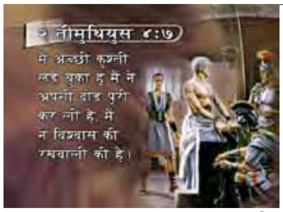

25

(मूलपद : २ तीमुथियुस ४ : ७, ८)
बाद में, जब जल्लाद कुछ ही दूरी पर खड़ा होता है पौलुस विजयी होकर घोषणा करता है;
"मै अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ मै ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है मैंने विश्वास की रखवाली की है।

26

भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है,

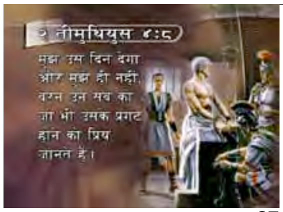

27

मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को जो भी उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।"
२ तिमुथियुस ४ : ७,८

28

पौलुस उस निर्णायक दिन में मारने वाले की तलवार का सामना कर सकता है।
क्योंकि उसे मसीह के वापस आने की प्रतिज्ञा में विश्वास था!

३ - एक महान बचाव

29

जी हां, यीशु वापस आएगें!

और मित्रों, यीशु की प्रतिज्ञा जो उसने अपने चेलों से की थी हम सब के लिए है।

यीशु वापस आएगें!

30

जब चेलों ने पूछा कि उसके आने के और इस दुनिया के अन्त का क्या चिन्ह होगा, तो यीशु ने उन घटनाओं का विस्तारपूर्वक लेखा दिया जो उसके आने के पहले होंगी।

31

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ४,५)

यीशु ने कहा, "----सावधान रहो कोई तुम्हें न भरमाने पाए।

32

क्योंकि बहुत से मेरे नाम से आकर, कहेंगे, कि मै मसीह हूं : और बहुतों को भरमाएंगे।"

मत्ती २४ : ४,५

पद २४ अध्याय में, यीशु ने इस विषय को स्पष्ट किया है।

33

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २४)

"क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह, और अदभुत काम दिखाएंगे,

३ - एक महान बचाव

34

कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें।"

35

यदि हम अन्तर बताना नहीं जानते हैं किस
प्रकार एक धोखादेने वाले को पहचाना जाए तो हम एक
छली व्यक्ति के साथ जुड़ सकते हैं यह सोच कर कि
वह मसीह है!
यीशु ने पहले से ही यह चेतावनी दी कि यह हो सकता
है!
और वह कुछ मामूली धोखों के विषय में बात नहीं कर
रहा था

36

प्रत्यक्ष रूप से वह अविश्वसनीय भेष बदले हुओं के
विषय में बोल रहा था, जिनकी इतनी सावधानी से
योजना बनाई गई और कार्यान्वित की गई कि लगभग
सम्पूर्ण दुनिया को धोखा दिया जाए!
आप देखिए ये छली लोग अदभुत कार्य करेंगे बीमारों
को चंगा करेंगे और अलौकिक नमूने देंगे ताकि वे अपने
दावों को प्रमाणित कर सके!

३ - एक महान बचाव

37

हम मसीह के सच्चे आगमन को पहचानने में गलती नहीं करेंगे! कोई भी ऐसा नहीं करेगा परन्तु हम मसीह के भेष में धोखा देने वालों से प्रभावित हो सकते हैं। और मसीह के आगमन से पहले मूर्ख बन सकते हैं! इस बारे में सोचिए।

38

शैतान झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ताओं का प्रयोग करके लोगों को दूसरे आगमन के बारे में भरमाने का प्रयत्न करेगा।

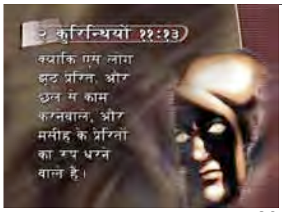

39

(मूलपाठ : २ कुरिन्थियों ११ : १३, १४)
"क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरने वाले हैं।

40

"और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं!   क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।"
२ कुरिन्थियों ११ : १३, १४
यहाँ तक कि शैतान स्वयं को बदल लेगा और यीशु के दूसरे आगमन की नकल करेगा।

३ - एक महान बचाव

41

(दृश्य)

अक्सर कुछ लोग मसीह होने का दावा करते हैं। वे वैसे ही वस्त्र पहन सकते हैं जैसे लोग सोचते हैं कि मसीह ने पहने होंगे। वे नम्र और मधुर आवाज में बोलते हैं। वे बाईबिल में से बहुत से उदाहरण देते हैं। वे बहुत बुद्धिमान लगते हैं। उनमें से कुछ उन लोगों को अपने पीछे आने के लिए आकर्षित करते हैं जिनका मानना है कि मसीह पृथ्वी पर लौट आएँ हैं। परन्तु इनमें से एक भी मसीह नहीं है। हम यह पूर्ण सच्चाई के साथ कह सकते हैं। और क्यों? ऐसा इन्सान वैसा ही दिख सकता है जैसी आप आशा करते हैं कि यीशु भी ऐसे ही दिखते होगें। वह वैसा ही बोल सकता है जैसा आप आशा करते हैं कि यीशु भी ऐसे ही बोलते होगें।

42

वह लोगों को चंगा कर सकता है वह लोगों को अद्भुत चिन्ह दिखा सकता है और आश्चर्यजनक कार्य कर सकता है यहाँ तक कि बाईबिल की सच्चाईयों पर सन्देह हो सकता है। और परीक्षा इतनी बड़ी संख्या में हो सकती है कि बाईबिल क्या कहती है उस पर सन्देह किया जा सके। परन्तु हमें अपनी इन्द्रियों पर विश्वास नहीं करना है कि जो कुछ हम देखते, सुनते या अनुभव करते हैं वह सही हो!

३ - एक महान बचाव

43

केवल एक ही सुरक्षित मार्गदर्शक है जो यह निश्चित करती है कि कौन असली है –और कौन धोखेबाज - वह है बाइबिल।

44

आइए कुछ ऐसे चिन्हों और विशेषताओं को देखें जो मसीह के दूसरे आगमन को अद्धितीय बनाते हैं ताकि हम धोखा न खाएँ!

45

मसीह का दूसरा आगमन ऐसा होगा कि सब उसे आते हुए देखेंगे

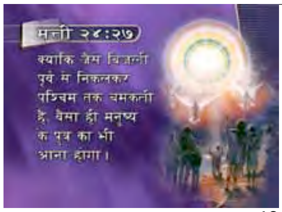

46

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २७)

"क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।"

मत्ती २४ : २७

वास्तव में प्रकाशितवाक्य १ : ७ में हम पढ़ते हैं,

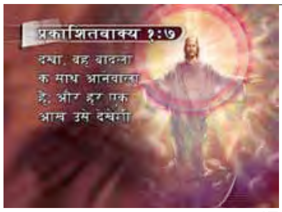

47

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १ : ७)

"देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है; और हर एक आंख उसे देखेगी.."

३ - एक महान बचाव

48

बनावटी लोग इधर -उधर दिखाई देंगे, परन्तु कोई भी धोखेबाज व्यक्ति आसमान के बादलों पर नहीं आ सकता कि हर आँख उसे देख सके।

49

जब यीशु ने इस पृथ्वी पर अपना कार्य समाप्त कर लिया, तब वह स्वर्ग में जाने के लिए लगभग तैयार थे।

50

वह अपने घनिष्ट अनुगामियों को जैतून के पहाड़ पर ले गया, और अपने शिष्यों को निर्देश देने के बाद, वह यकायक स्वर्ग में उठा लिया गया।

51

ध्यान दीजिए की बाइबिल इस घटना के बारे में क्या कहती है।

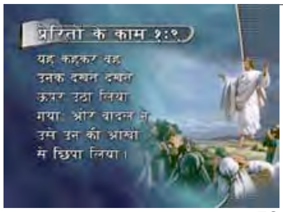

52

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १ : ९ -११)

"यह कहकर वह उनके देखते -देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उन की आखों से छिपा लिया।

53

और उस के जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए

३ - एक महान बचाव

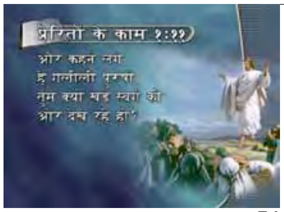

54

और कहने लगे, 'हे गलीली पुरुषों', तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो?

55

यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।"

प्रेरितों के काम १ : ९, ११

56

परमेश्वर की ओर से दो स्वर्गदूत -शिष्यों को यह आश्वासन देने आए थे कि यीशु ने जो प्रतिज्ञा उनसे की थी वह पूरी होगी।

यीशु ने साफ–साफ कहा था कि वे क्या देखेंगे:

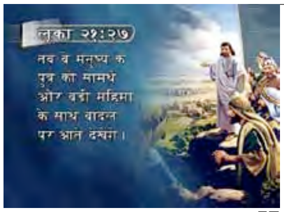

57

(मूलपाठ : लूका २१ : २७)

"तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे।"

लूका २१ : २७

३ - एक महान बचाव

58

आपको किसी को भी यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि यीशु कब आएगें। आप उन्हें बादलों में आते हुए देखेंगे परन्तु कुछ ऐसे चिन्ह हैं जिनकी नकल शैतान नहीं कर सकता।

मसीह किसी दूर जगह में अचानक प्रगट नहीं होंगे और ना ही अंतरिक्ष विमान से उतरेंगे।

59

यीशु अकेले वापिस नहीं आ रहे हैं! यह घटना महिमायुक्त होगी!

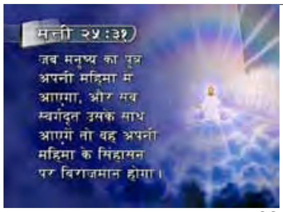

60

(मूलपाठ : मत्ती २५ : ३१)

यीशु कहते हैं, "जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएगें तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा।"

मत्ती २५ : ३१

61

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ३१)

क्यों यीशु दूतों को अपने साथ ला रहे हैं?

वह उत्तर देते हैं :

"और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा,

३ - एक महान बचाव

62

और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे।"
मत्ती २४ : ३१

63

हाँ, यीशु समस्त पवित्र स्वर्गदूतों के साथ आएगा -आकाश अवर्णननीय महिमा से भर जाएगा। अब आप जान गए हैं कि क्यों ये लोग जो मसीह होने का दावा करते हैं संभवतः ऐसे नहीं हो सकते!

यीशु के वापिस आने की नकल का प्रयत्न करना उन के लिए असंभव होगा!

कोई नहीं कर सकता !

परन्तु यीशु के आने के साथ बहुत सी घटनाएँ संबंधित हैं!

64

यह एक सुनाई देने वाला आगमन होगा -और मृत धर्मी लोग जीवित हो जाएंगे।

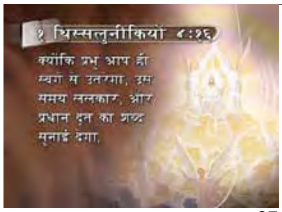

65

(मूलपाठ : १ थिस्सलुनीकियों ४ : १६)
"क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा,

३ - एक महान बचाव

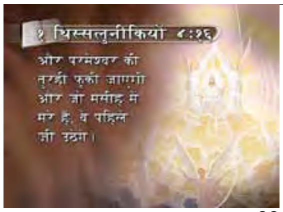

66

और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी , और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे।"
१ थिस्सलुनीकियों ४ : १६

67

इस प्रकार आप देखते हैं कि मसीह का आगमन केवल दिखाई ही नहीं देगा, परन्तु सुनाई भी देगा। परमेश्वर की पुकार और तुरही की आवाज इतनी मर्मभेदी होगी कि मसीह में जो मरे हैं वे जीवित हो जाएंगे और अपनी कब्रों में से बाहर आ जाएंगे।

68

क्या आप उस खुशी की कल्पना कर सकते हैं जब क़बें खुल जाएंगी और परिवार के लोग फिर से मिल जाएंगे?

69

क्या आप देखते हैं कि शैतान के लिए मसीह के असली आगमन की नकल करना कितना असंभव होगा?

70

अब भी और शुभ सन्देश बाकी है!
ध्यान दीजिए की मसीह के दूसरे आगमन के समय जीवित धर्मी लोगों का क्या होगा :

३ - एक महान बचाव

३ - एक महान बचाव

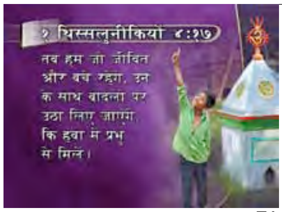

71

(मूलपाठ : १ थिस्सलुनीकियों ४ : १७)

"तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें।

72

और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।"

१ थिस्सलुनीकियों ४ : १७

73

(दृश्य)

यीशु के सच्चे अनुयायी मृतकों में से जी उठेंगे और प्रभु से हवा में मिलने के लिए उठा लिए जाएंगे।

और बहुत से परिवारों के फिर से मिलने की यह क्या ही खुशी की बात होगी।

74

पौलुस हमें और अधिक विस्तार पूर्वक बताता है कि यीशु के वापिस आने पर क्या होगा :

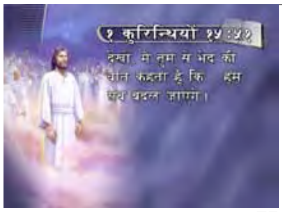
75

(मूलपाठ : १ कुरिन्थियों १५ : ५१ -५७)

"देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ कि ---हम सब बदल जाएंगे,

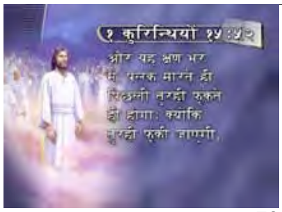
76

और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा : क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी,

३ - एक महान बचाव

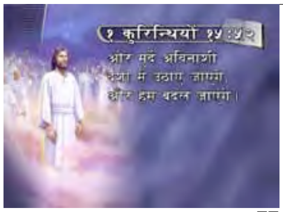

77

और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे।

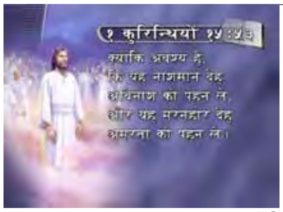

78

क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहन ले।"
१ कुरिन्थियों १५ : ५१ -५३

79

यीशु के प्रत्येक अनुयायी को परमेश्वर अपने प्रेम का दान देगें -अनन्त जीवन।

अनन्त जीवन के दान के बिना अन्य सभी दानो का कोई अर्थ नहीं है।

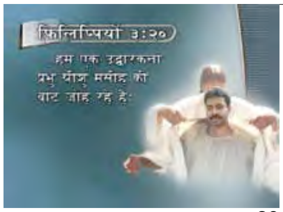

80

(मूलपाठ : फिलिप्पियों ३ : २०, २१)

इसके अतिरिक्त कुछ और भी है जिसे परमेश्वर अपने लोगों को देगा:

"------हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह की बाट जोह रहे हैं :

३ - एक महान बचाव

81

हमारी दीन -हीन देह का रूप बदल कर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा ---"

फिलिप्पियों ३ : २०, २१

एक शरीर मसीह की तरह। न कोई तकलीफ या दर्द या बीमारी। इससे अधिक आनन्द का समाचार और क्या होगा?

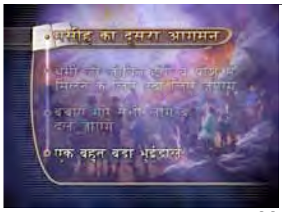

82

एक दूसरे वर्ग के लोग हैं। इन लोगों के लिए दूसरे आगमन का समाचार सुखद नहीं है। सुनिए, इतिहास के अंतिम समय की पृथ्वी हिलाने वाली घटनाओं का वर्णन बाईबिल किस प्रकार करती है।

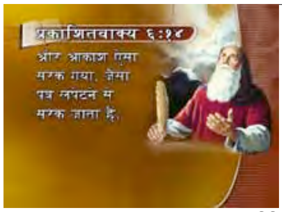

83

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ६ : १४ –१७)

"और आकाश ऐसा सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है;

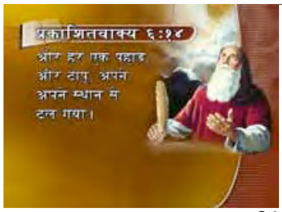

84

और हर एक पहाड़ और टापू अपने अपने स्थान से टल गया।

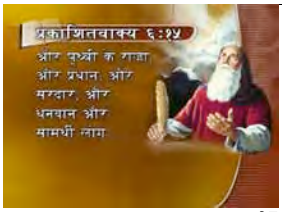

85

"और पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोगों ने--

३ - एक महान बचाव

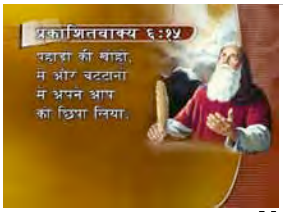

86

पहाड़ों की खोहों में और चट्टानों में अपने आप को छिपा लिया;

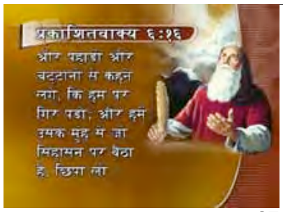

87

और पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पडो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है, छिपा लो ------

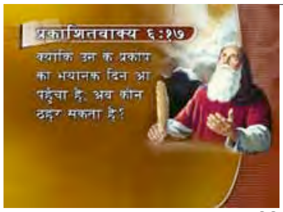

88

क्योंकि उन के प्रकोप का भयानक दिन आ पहुँचा है; अब कौन ठहर सकता है?"

प्रकाशित वाक्य ६ : १४ -१७

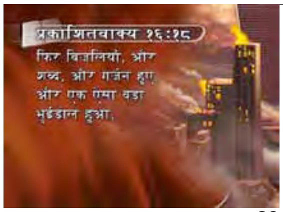

89

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १६ : १८)

"फिर बिजलियाँ, और शब्द, और गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भुईड़ोल हुआ,

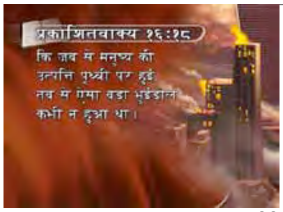

90

कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भुईडोल कभी न हुआ था।"

प्रकाशितवाक्य १६ : १८

91

यह भुईड़ोल पृथ्वी के शहरों को गिरा देगा।

कोई भी व्यक्ति ऐसे भुईड़ोल से सम्भवत: बच नहीं सकता जो मसीह का आगमन कराएगा!

३ - एक महान बचाव

92

यीशु ने यह चेतावनी दी थी कि उसका आगमन ऐसे समय में ही होगा जब कोई भी उसकी आशा नहीं कर रहा होगा।

उन्होंने यह भी कहा था कि लोग अपने जीवन को मूर्खतापूर्ण आनन्दमय कार्यो में व्यर्थ व्यतीत करने में व्यस्त होंगे।

93

(मूलपाठ : मत्ती २४ : ३०)

मत्ती २४ : ३० में, हमसे कहा गया है कि जब यीशु वापस आएगें,

"----- पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे -----"

94

यही बात है जो यीशु ने कही थी कि उन लोगों का जो उस दिन के लिए तैयार नहीं हैं यह परिणाम होगा!

वे खो गए हैं और वे यह जानते है!

कितनी दुःखी तस्वीर है, जब कि यह बहुत अलग हो सकती थी।

मित्रों, वह दिन वास्तविक होगा!

उस दिन कोई भी जागकर नहीं कहेगा कि यह केवल एक स्वप्न था!

३ - एक महान बचाव

95

यीशु जब आएंगें तब उनसे मिलने के लिए तैयार रहने के अतिरिक्त पृथ्वी पर इससे अधिक महत्वपूर्ण बात और कोई नहीं है। ये पृथ्वी के खजाने जिन्हें हम इतना अधिक बहुमूल्य मानते हैं कितने कमजोर हैं! एक भुईड़ोल और सब कुछ समाप्त हो जाएगा!

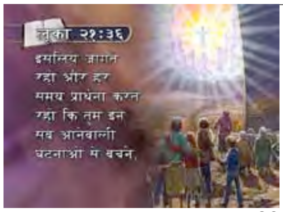

96

(मूलपाठ : लूका २१ : ३६)

"इसलिये जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने,

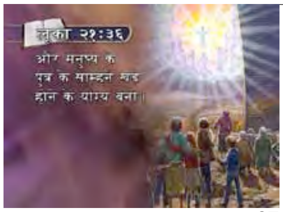

97

और मनुष्य के पुत्र के साम्हने खड़े होने के योग्य बनो।" लूका २१ : ३६

98

आईये जब हम बाईबिल का अध्ययन एक साथ कर रहे थे तो हमने अब तक बाईबिल से क्या सीखा है, उसे दोहराएँ :

99

झूठे भविष्यवक्ता और झूठे मसीह प्रत्येक को भरमाने का प्रयत्न करेंगे।

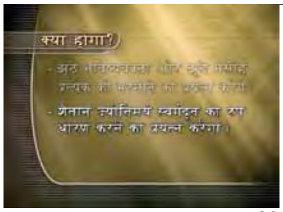

100

शैतान ज्योतिमर्य स्वर्गदूत की तरह दिखाई देगा।

३ - एक महान बचाव

३ - एक महान बचाव

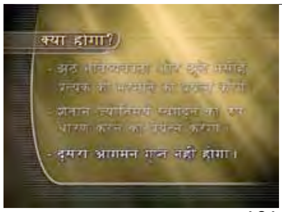

101

दूसरा आगमन गुप्त नहीं होगा।

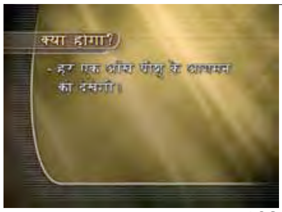

102

हर एक आँख यीशु के आगमन को देखेगी।

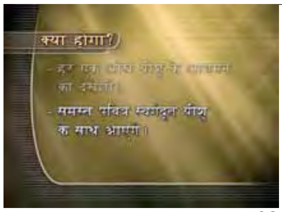

103

समस्त पवित्र स्वर्गदूत यीशु के साथ आएगें।

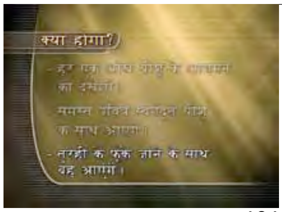

104

तुरही के फूंके जाने के साथ यीशु आएंगे।

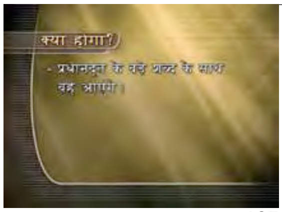

105

प्रधानदूत के बड़े शब्द के साथ वह आएंगे।

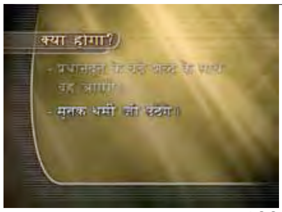

106

मृतक धर्मी जी उठेंगे।

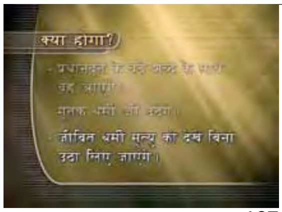

107

जीवित धर्मी मृत्यु को देखे बिना उठा लिए जाएंगे।

108

समस्त धर्मियों को अमरता प्रदान की जाएगी।

३ - एक महान बचाव

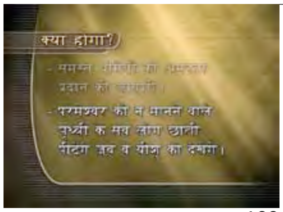

109

परमेश्वर को न मानने वाले पृथ्वी के सब लोग छाती पीटेंगे जब वे यीशु को देखेंगे।

110

एक बहुत बड़ा भुईड़ोल पृथ्वी को नष्ट कर देगा।

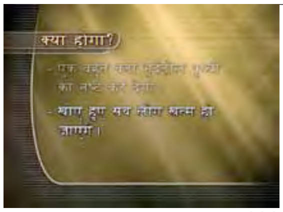

111

खोए हुए सब लोग खत्म हो जाएंगें।

112

मसीह के प्रताप और महिमा के साथ दूसरे आगमन का आधा वर्णन भी नहीं किया जा सकता। न तो मानव प्राणी की कलम उसका चित्र बना सकती है, न ही मानवीय मस्तिष्क कल्पना कर सकता है! परन्तु हम आप के साथ इस भव्य दृश्य को बांटना चाहेंगे कि किस प्रकार लेखकों और चित्रकारों ने यीशु के आगमन को दर्शाने का प्रयत्न किया है। वह किस प्रकार का होगा और किस प्रकार उनके मस्तिष्क उनका चित्रण करते हैं जैसा कि बाइबिल में वर्णन किया गया है।

३ - एक महान बचाव

113

"उस समय जब कोई भी उसकी आशा नहीं कर रहा होगा, यीशु वापस आएगें।
परमेश्वर की आवाज, गर्जन के समान, पूरी पृथ्वी पर गूंजेगी और अपने बेटे के आगमन के समय और दिन की घोषणा कर रही होगी।

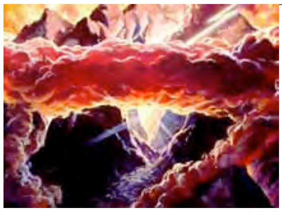
114

"आसमान एक कागज की तरह लपेटा जाएगा, पृथ्वी उसके समक्ष कांपेगी, और प्रत्येक पहाड़ और टापू अपनी जगह से हिल जाएगें।

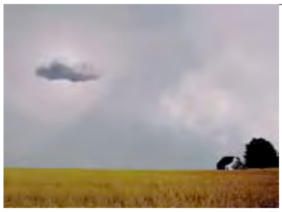
115

"जल्द ही पूर्व दिशा में एक छोटा काला बादल दिखाई दिया, जो माप में मनुष्य के हाथ से आधा था।

116

जैसे -जैसे वह बादल पृथ्वी के समीप आया वह उज्जवल और उज्जवल बनता गया और वह और भी प्रतापी हो गया जब तक वह एक विशाल बादल नहीं बन गया जिसके ऊपर इन्द्रधनुष था। शान्ति से परमेश्वर के लोग उस दृश्य को टकटकी लगाकर देख रहे थे, और वे एकदम चुप हो गए थे। यह दृश्य दिल दहला देने वाला था!

३ - एक महान बचाव

117

आसमान चमकदार आकृतियों से भर गया था। अनगिनत स्वर्गदूतों ने यीशु के सिंहासन को घेरा हुआ था!

118

"उसके तेज ने स्वर्ग को ढक दिया था और जैसे वे पृथ्वी के समीप आते गए, हर एक आँख ने उस राजा को आते हुए देखा!
उस पवित्र सिर पर काँटों का ताज नहीं पर ईश्वरीय महिमा का ताज था। उसकी पोशाक और उसकी जांघ पर उसका नाम लिखा था, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।

119

"और पृथ्वी के राजा, और ऊँचे लोग, और धनवान आदमी, और शक्तिशाली आदमी, और प्रत्येक कैदी, और प्रत्येक स्वतंत्र आदमियों ने, पत्थरों और पहाड़ियों से चिल्लाकर कहा कि वे उनके ऊपर गिर जाएं और उस मेम्ने की उपस्थिति से उन्हें छिपा लें।

३ - एक महान बचाव

120

"उन लोगों ने जिन्होंने परमेश्वर के लोगों पर अत्याचार किया था और उनका कत्ल किया था और जिन लोगों ने मसीह को ठटठों में उड़ाया था और इन्कार किया था कि वह परमेशवर का पुत्र नहीं है, जिन लोगों ने चिल्लाकर कहा था,' उसे क्रूस पर चढ़ाओ!
उन लोगों को जिलाया गया कि वे यीशु के समक्ष खड़े हों। उनके हृदय पिघल गए, उनके घुटने आपस में टकराने लगे, और भयंकर निराशाजनक विलाप के साथ उन्होंने कहा,

121

वह परमेश्वर का पुत्र है। वह सच्चा मसीह है।

122

अब, वे उसे उसकी सम्पूर्ण महिमा में देख रहे थे, और उन्हें उसको शक्ति के दाहिने हाथ बैठे देखना अभी शेष था।

123

जिन्होंने उसके परमेश्वर के पुत्र होने के दावे की हँसी उड़ायी थी, वे वाकहीन है। वहाँ वह घमण्डी हेरोदेस है जिसने उनके शाही नाम का ठट्ठा किया था और उन उपहास करने वाले सैनिकों को यीशु को राजा का ताज पहनाने के लिए आदेश दिया था।

३ - एक महान बचाव

124

वहाँ वे आदमी भी थे जिन्होंने अपने पापी हाथों से उसे बैंगनी पोशाक पहनाई थी, और उसके पवित्र माथे पर काटों का ताज पहनाया था, और उसके हाथ में नकली राजदण्ड देकर उसे ठट्‌ठे में झुककर प्रणाम किया था।

125

"वे पुरुष जिन्होंने उस जीवन के राजकुमार को थप्पड़ मारे और उन पर थूका था वे अब उनके चुभने वाले तेज से मुड़े और उसकी उपस्थिति के शक्तिशाली प्रताप से भागने के लिए जगह ढूंढ़ने लगे।

126

वे सब जिन्होंने उनके हाथों और पावों को कीलों से ठोका था, वह सैनिक जिसने उनकी छाती को भेदा था, उन्होंने इन चिन्हों को भय और पश्चात्ताप से देखा। याजकों और शासकों ने स्पष्ट रूप से कलवरी की घटनाओं को पुनः याद किया। उन्होंने भय से कांपते हुए डर के साथ याद किया कि किस प्रकार वे शैतानी सफलता में प्रसन्न होकर अपने सिरों को हिलाते हुए जोर से बोल रहे थे : 'उसने दूसरों को बचाया अपने आप को नहीं बचा सकता।'

३ - एक महान बचाव

127

यदि वह इस्राएलियों का राजा है, तो वह अभी क्रूस से उतर आए, और हम उस पर विश्वास करेंगे। वह परमेश्वर पर विश्वास करता था, अब उसका परमेश्वर उसे बचा ले।"

128

"वे जिन्होंने मसीह और उसके विश्वासी लोगों को मारा होगा अब उस महिमा को देखते हैं जो अब उनके ऊपर ठहरी हुई है। वे भय के बीच सन्तों की आवाजों को सुनते हैं जो आनन्द के साथ जोर से कह रहे हैं;

129

(मूलपाठ : यशायाह २५ : ९)
"----देखो, हमारा परमेश्वर यही है; हम इसी की बाट जोहते आए हैं, कि वह हमारा उद्धार करे-----"

130

(दृश्य)
"पृथ्वी के लपेटने, बिजली के चमकने, और बादल के गरजने के बीच, परमेश्वर के पुत्र की आवाज सोए हुए संतो को पुकारती है। वह धर्मियों की कब्रों के ऊपर देखता है, फिर अपने हाथों को स्वर्ग की ओर उठाते हुए वह चिल्लाता है जागो, जागो, जागो, और तुम जो मिट्टी में सोए हुए हो उठो!

३ - एक महान बचाव

131

सम्पूर्ण पृथ्वी के चारों ओर मरे हुए उसकी आवाज सुनेंगे, और जो उसे सुनेंगे जीवित हो जाएंगे। और समस्त पृथ्वी प्रत्येक राष्ट्, परिवार, भाषा और लोगों की बहुत बड़ी सेना के चलने की आवाज से गूंजने लगेगी।

132

"वे मृत्यु के जेल रूपी घर से, अमर महिमा का वस्त्र पहन कर आते हैं और चिल्लाकर कहते हैं, 'ओ मृत्यु तेरा डंक कहाँ गया?
ओ कब्र तेरी विजय कहाँ गयी?
और जीवित धर्मी और जिलाए गए संत अपनी आवाजों को एक लम्बी आनन्द की चीख के साथ जीत के लिए मिलते हैं।
समस्त दोष और कुरुपता कब्र में छूट गई है। ओह, आश्चर्यजनक मुक्ति जिसकी बहुत चर्चा हुई, बहुत आशा की गई, उत्सुक आशा के साथ विचार किया गया परन्तु कभी भी पूरी तरह समझी न गई।

133

"जीवित धर्मी एक क्षण में, 'पलक झपकते ही' बदल जाएंगे परमेश्वर की आवाज से वे महिमायुक्त हो गए; अब उन्हें अमर बना दिया गया और जिलाए गए संतों के साथ प्रभु को हवा में मिलने के लिए उन्हें उठा लिया गया।

३ - एक महान बचाव

134

स्वर्गदूत उन लोगों को जिन्हें उसने चारों दिशाओं से चुना, स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक एकत्रित करते हैं।

छोटे बच्चे पवित्र स्वर्गदूतों के द्वारा उठा कर उनकी माताओं की बाहों में दे दिए गए।

135

मित्र जो मृत्यु के कारण बहुत देर तक बिछड़ गए थे वे कभी अलग न होने के लिए एक हो गए, और आनन्द के गीतों के साथ परमेश्वर के नगर में एक साथ ऊपर उठने लगे।

136

"और जैसे जैसे वे स्वर्ग की ओर ऊपर उठने लगे वैसे -वैसे स्वर्गदूतों का समूह चिल्लाया,'पवित्र, पवित्र, पवित्र, सर्व शक्तिमान प्रभु परमेश्वर।

और मुक्ति पाई हुई आवाज आई हेलीलुइय्या जैसे वे पवित्र नगर की ओर बढ़ने लगे।

३ - एक महान बचाव

137

'पवित्र नगर में प्रवेश करने से पहले उद्धारकर्ता ने अपने अनुयायियों को विजय के चिन्ह दिए और उनके शाही राज्य के सम्मान के पट्टे उन को दिए। मुक्ति से युक्त अनगिनत स्वर्गदूतों का दल चारों ओर है, किन्तु प्रत्येक आँख उसी पर टिकी हुई है, हर एक आँख उसकी महिमा और उसका स्वरूप जो मनुष्य के पुत्रों से भी अधिक था उसे देखती है।

138

"विजयी लोगों के सिरों के ऊपर, यीशु अपने दाहिने हाथ से महिमा का ताज पहनाते हैं।
प्रत्येक के लिए एक ताज है जिस पर उनका 'नया नाम और यह सूचना पत्र है 'प्रभु के लिए पवित्रता'।
प्रत्येक के हृदय अवर्णनीय खुशी से भर गए, और प्रत्येक आवाज महान प्रशंसा में ऊपर उठी।

३ - एक महान बचाव

139

"कैद से मुक्त भीड़ के समक्ष, वह पवित्र नगर है। यीशु मोती के द्वारों को पूरा खोलता है और वे जातियाँ जिन्होंने नियमों का पालन किया था और यीशु में धीरज रखा था अन्दर प्रवेश करती हैं।

वहाँ उन्होंने परमेश्वर का स्वर्ग देखा, जो आदम के पाप करने से पहले उसका घर था। "तब वह आवाज जो किसी भी संगीत से तेज थी जो कि अमर कानों में कभी पड़ी थी, सुनी गई वह यह कह रही थी आप की लड़ाई समाप्त हुई।"

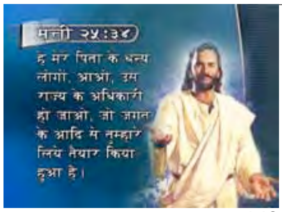

140

(मूलपाठ : मत्ती २५ : ३४)

"हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।"

मत्ती २५ : ३४

३ - एक महान बचाव

141

यह हमारी आशा है। यह हमारा भाग्य है, यह हमारा भविष्य है।

हम मसीह के साथ स्वर्ग में हमेशा के लिए रह सकते हैं। यदि हम अनन्तता को खो देते हैं, तो हमने सब कुछ खो दिया।

यदि हमने स्वर्ग को खो दिया, तो हम ने सब कुछ खो दिया।

यदि हम मसीह के शीघ्र लौटने के लिए तैयार नहीं है तो हम इतिहास के युगों में पाई जाने वाली सबसे अधिक महान घटना को खो देंगे।

यीशु कहते है आओ---- क्षमा पाने के लिए आओ, दया पाने के लिए आओ। अपने पापों पर शक्ति प्राप्त करने के लिए आओ। अनन्तता को प्राप्त करने के लिए आओ। आओ मेरे राज्य में प्रवेश करो।

क्या आप इसी समय उसकी प्रार्थना को स्वीकार करने के लिए हाँ कहेंगे?

यदि आप उसके राज्य में हमेशा के लिए रहने के लिए इच्छुक हैं तो जैसे हम प्रार्थना करते हैं आप उसी वक्त खड़े हो जाइए।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

1

जीवन के रहस्यों की खोज

2

मान लीजिए कि आप समुद्र के किनारे रहते हैं। एक सुबह आप जल्दी उठ कर समुद्र के रेतीले किनारे पर चलने का विचार करते हैं।

यह एक अत्यन्त ही भव्य दृश्य है। उगते हुए सूर्य की किरणें जल पर नृत्य कर रही हैं।

समुद्र की लहरें तट पर आकर टकरा रही हैं।

3

और जब आप समुद्र के किनारे चुपचाप चल रहें हैं तब आप अपने समक्ष रेत पर बने हुए एक जोड़े पदचिन्हों की ओर ध्यान देते हैं।

फिर आप दूसरे और तीसरे जोड़े पदचिन्हों को देखते हैं। जितनी दूर तक आप की नजर जाती है उतने दूर तक आप को तट पर कोई भी दिखाई नहीं देता है।

ये सारे पदचिन्ह आप को क्या बताते हैं? ये साधारण रुप से यह कहते हैं-- यद्यपि आप किसी को नहीं देख सके, फिर भी आपसे पहले कोई इस तट पर चल कर गया है।

मैं आप से एक अन्य प्रश्न करता हूँः

४ - संयोग से अथवा योजना से?

4

यदि आप द्वार के बाहर खड़े होकर चारों ओर देखते हैं, तो आप को क्या दिखाई देता है?

घास, पेड़, पहाड़ियाँ, फूल, झरने, झील का पानी, या फिर जानवर।

5

और जब आप वहाँ पर खड़े हैं, तब आप किस पर खड़े है?

जी हाँ, आप पृथ्वी के उपर धरती पर खड़े हैं।

6

ऊपर देखिए, और आप को क्या दिखाई देता है?

7

दिन के समय, आप को या तो सूर्य, आकाश, या फिर बादल दिखाई देगें।

8

रात के समय, आप को या तो हज़ारों तारागण दिखाई देंगे- या फिर चन्द्रमा।

9

यह सब यहाँ कैसे आया?

आप यहाँ तक कैसे पहुँचे?

आप को किसने बनाया?

४ - संयोग से अथवा योजना से?

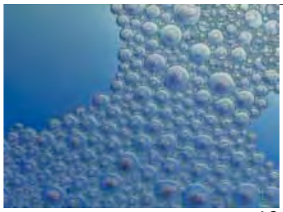

10

कुछ लोग यह कहते हैं कि जीवन का आरम्भ सिर्फ समुद्र की साधारण कोषिकाओं से हुआ है। वे कोष जो कि विभिन्न कोषिकाओं से बने थे, छोटे- छोटे जीवित प्राणी बन गए।

फिर वे छोटे जीवित तत्व लाखों वर्षो के उपरान्त छोटे प्राणियों में बदल गए जो कि समुद्र से धरती पर चल सकते थे। यहाँ पर उनके पैर बढ़ने लगे।

11

किन्तु लाखों लोग बहुत समय से विश्व, पृथ्वी और सम्पूर्ण जीवित जगत की उत्पति के विषय एकदम अलग ही विश्वास रखते हैं। वे विश्वास करते हैं कि एक सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने इन सब की रचना की। परन्तु किस परमेश्वर ने?

12

लोग विभिन्न ईश्वरों की उपासना करते हैं: जैसे- बुद्ध, मोहम्मद, शिन्तो, हिन्दुओं के ईश्वर और अन्य भगवान।

इन ईश्वरों के मानने वाले यह दावा करते हैं कि उनका ईश्वर सर्वोच्च है।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

४ - संयोग से अथवा योजना से?

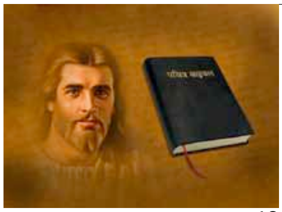

13

परन्तु क्या आप यह जानते हैं कि संसार के इन समस्त ईश्वरों में से केवल एक ही ने प्रत्येक वस्तु के सृष्टिकर्त्ता होने का दावा किया था?

और वह परमेश्वर पवित्र बाइबिल का परमेश्वर है। इसलिए हम बाइबिल से समस्त पृथ्वी के सृष्टिकर्ता के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

14

यदि आप एक मकान को देखते हैं तो क्या आप यह मान लेते हैं कि किसी प्रकार यह मकान अपने आप निर्मित हो गया?

नहीं। आप यह जानते हैं कि किसी ने उस मकान का निर्माण किया हैं।

15

यदि आप एक सड़क को देखते हैं, तो क्या आप यह सोचते हैं कि वह सड़क अपने आप बन गई - या कि उसे किसी ने बनाया है? और सड़कें और मकान को बनाना समस्त संसार और मनुष्यों को बनाने से सरल है। सो जब आप लोगों, जानवरों, और तारागणों को देखते हैं, तो क्या आप इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचते है कि किसी ने इन सब को बनाया हैं?

किसी ने इन चीज़ों को आकार दिया हैं या योजना बना कर इनकी सृष्टि की है।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

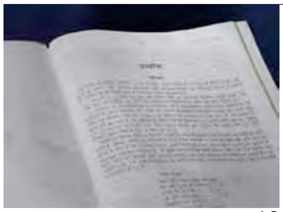
16

अब हम उस परमेश्वर के विषय में सीखना आरम्भ करेंगे जिसने समस्त वस्तुओं की योजना बनाने और सृजन करने का दावा किया हैं। अब हम यह जानने की आरम्भ करते हैं कि समस्त विश्व और इस पृथ्वी को बनाने में उसका क्या कार्य हैं इस विषय में उसकी पुस्तक, बाईबिल क्या कहती हैं। सबसे पहले हम यह देखते हैं कि पहले दिन क्या हुआ था।

17

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : १)

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।"

उत्पत्ति १ : १

18

(मूलपाठ : उत्पत्ति १:३)

"तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो : तो उजियाला हो गया।"

उत्पत्ति १:३

19

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ४, ५)

"और परमेश्वर ने उजियाले को देखा, कि वह अच्छा है, और परमेश्वर ने उजियाले को अन्धियारे से अलग किया।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

20

"तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहिला दिन हो गया।"

उत्पत्ति १:५

सप्ताह के पहले दिन परमेश्वर ने इस पृथ्वी को बनाया। उसने उजियाला बनाया और इस प्रकार दिनों और रातों का कालचक्र आरंभ हुआ।

21

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ६) दूसरा दिन

"फिर परमश्वर ने कहा, "जल के बीच एक ऐसा अन्तर हो कि जल दो भाग हो जाए। एक अन्तर करके उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया।"

उत्पत्ति १ : ६

22

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ७)

"---और वैसे ही हो गया।"

उत्पत्ति १ : ७

४ - संयोग से अथवा योजना से?

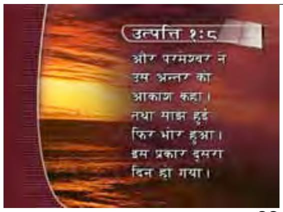

23

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ८)

"और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार दूसरा दिन हो गया।"

उत्पत्ति १ : ६

दूसरे दिन, परमेश्वर ने हमारे उपर आकाश को बनाया, और पृथ्वी के जल से आकाश और बादलों के जल को अलग किया।

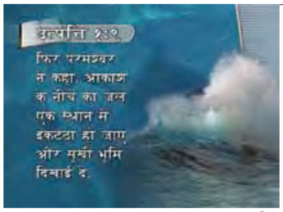

24

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ९) तीसरा दिन

"फिर परमेश्वर ने कहा, आकाश के नीचे का जल एक स्थान में इकट्ठा हो जाए और सूखी भूमि दिखाई दे,"

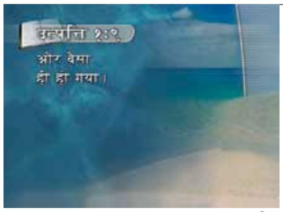

25

और वैसा ही हो गया

उत्पत्ति १ : ९

26

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ११)

"फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, तथा बीजवाले छोटे - छोटे पेड़, जिनके बीज उन्हीं में होते हैं पृथ्वी पर उगें,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

27

"और फलदाई वृक्ष जिनके बीज एक- एक की जाति के अनुसार होते हैं उगें : और वैसा ही हो गया।"

उत्पत्ति १ : ११

28

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : १३)

"तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार तीसरा दिन हो गया।"

उत्पत्ति १ : १३

तीसरे दिन परमेश्वर ने कहा, "दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के अन्तर में ज्योतियाँ हों;

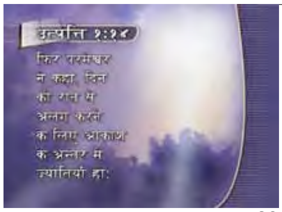

29

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : १४) चौथा दिन

"फिर परमेश्वर ने कहा, दिन को रात से अलग करने के लिए आकाश के अन्तर में ज्योतियाँ हों;

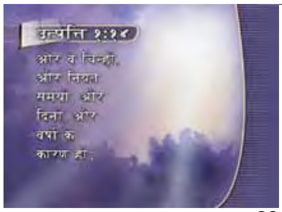

30

और वे चिन्हों, और नियत समयों, और दिनों, और वर्षो के कारण हों;

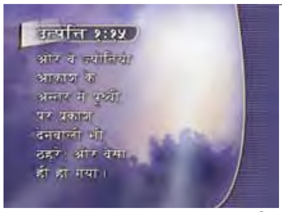

31

और वे ज्योतियां आकाश के अन्तर में पृथ्वी पर प्रकाश देनेवाली भी ठहरें;

और वैसा ही हो गया।"

उत्पत्ति १ : १४, १५

४ - संयोग से अथवा योजना से?

32

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : १८, १९)

"और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।"

33

"तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ।

इस प्रकार चौथा दिन हो गया।"

उत्पत्ति १ : १९

चौथे दिन परमेश्वर ने आकाश में सूर्य, चन्द्रमा और तारागण को भी बनाया।

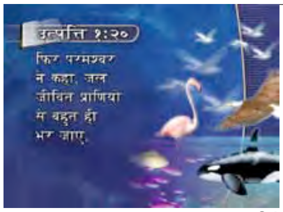

34

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : २०) पाँचवा दिन

पाँचवे दिन परमेश्वर ने क्या बनाया ?

"फिर परमेश्वर ने कहा, "जल जीवित प्राणियों से बहुत ही भर जाए,

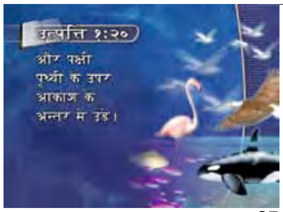

35

और पक्षी पृथ्वी के उपर आकाश के अन्तर में उड़ें।"

उत्पत्ति १ : २०

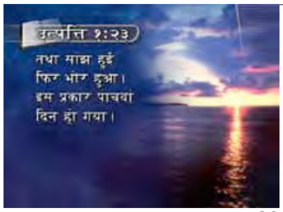

36

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : २३)

तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पांचवां दिन हो गया।"

उत्पत्ति १ : २३

बाइबिल यह कहती है कि पाँचवे दिन परमेश्वर ने पक्षियों, मछलियों और समुद्र के जन्तुओं को बनाया।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

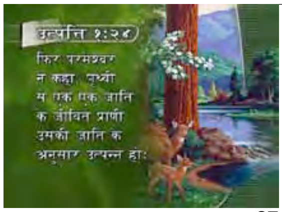

37

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : २४) छठवां दिन
सृष्टि का छठवां दिन अत्यन्त महत्वपूर्ण थाः
"फिर परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी से एक - एक जाति के जीवित प्राणी उसके जाति के अनुसार उत्पन्न हों :

38

घरेलू पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया।"

उत्पत्ति १ : २४

39

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : २६, २७)
"फिर परमेश्वर ने कहा, " हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं;

40

और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं पर अधिकार रखें,

41

सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं।"

उत्पत्ति १ : २६

42

तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया; अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया;

४ - संयोग से अथवा योजना से?

43

नर और नारी करके उस ने मनुष्यों की सृष्टि की।"

44

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : ३१)

"तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा हैं।

45

तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया।"

उत्पत्ति १ : ३१

छठवें दिन --जिस दिन परमेश्वर ने जानवरों को बनाया -- उस दिन उसने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना की और मनुष्य को बनाया।

46

आदम और हव्वा यूं ही विकसित नहीं हुए या फिर स्वयं हो गए। बाईबिल यह कहती है कि परमेश्वर ने उनके शरीरों को अपने स्वरुप में आकार दिया।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

४ - संयोग से अथवा योजना से?

47

वह एक महान अभियंता है - एक महान बुद्धिमान आकृति देनेवाला --जिसने हमें जीवित प्राणी बनाया। सातवें दिन - सातवें दिन परमेश्वर की सृष्टि की रचना का कार्य समाप्त हुआ, इसलिए उसने विश्राम किया। और उसने उस सातवें दिन को सब्त का विश्राम दिन ठहराया।

48

(मूलपाठ : उत्पत्ति २ : १,२)
"यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।

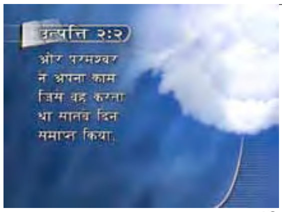

49

और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया,

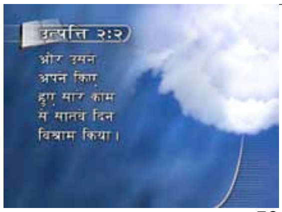

50

और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया।"
उत्पत्ति २ : १, २

४ - संयोग से अथवा योजना से?

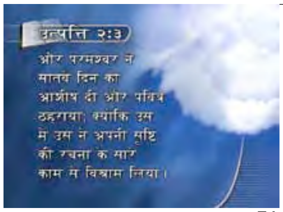

51

"और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उस में उस ने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया।"

हम सातवें दिन के सब्त के विश्राम दिन के विषय में, जिसे परमेश्वर ने बनाया, विस्तारपूर्वक बाद में बात करेंगें।

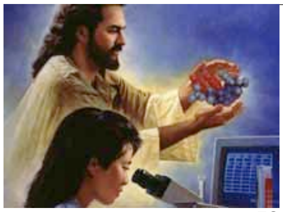

52

इस प्रकार संक्षेप में हमने यह देखा कि परमेश्वर ने कैसे इस पृथ्वी और जो कुछ इस में है, और मनुष्यों की भी सृष्टि की।

53

अब हम निकट से उस आश्चर्यजनक आकृति देने वाले और सृष्टिकर्त्ता को देखेंगे।

54

मनुष्य का शरीर हमें एक आकृति और आकृति देनेवाले का अनोखा प्रमाण देता हैं।

55

मनुष्य के एक अंग पर ही विचार करिए -- उसकी आँखें:

४ - संयोग से अथवा योजना से?

56

(दृश्य)

वैज्ञानिक हमें यह बतलाते हैं कि आँख की पुतली की कोमल आकृति और लैंस की तुलना में पृथ्वी के आधुनिकतम कैमरे एक बच्चे के खिलौने से लगते हैं।

57

आँख प्रकाश को संदेश में बदल देती है और मस्तिष्क उसे किस प्रकार से समझता है इसकी नकल पृथ्वी की सब से उन्नत प्रयोगशाला भी नहीं कर सकती।

मस्तिक की कोषिकाएँ इन संदेशों को आश्चर्यजनक दृष्टि में बदल देती हैं। इसके अतिरिक्त पृथ्वी पर इस प्रकार का कार्य कोई अन्य नहीं कर सकता।

58

मनुष्य की आँख प्यारे सृष्टिकर्त्ता की गवाही देती है जो यह चाहता है कि हम समस्त विश्व में उसके द्वारा बनाई गई सुन्दरता को देखें।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भजनसंहिता का लेखक यह लिखता है:

59

(मूलपाठ : भजनसंहिता १३९: १४)

"मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं;

४ - संयोग से अथवा योजना से?

60

तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूं।"

भजनसंहिता १३९ : १४

मनुष्य का शरीर और मस्तिष्क अत्यंत जटिल है और केवल एक अत्यंत बुद्धिमान आकृति देने वाला ही उसे आकृति दे सकता था।

61

परन्तु शेष विश्व के विषय में क्या कहना है? हमारे पास क्या प्रमाण है कि आकृति देने वाले परमेश्वर ने ही समस्त विश्व की सृष्टि की?

62

सुसमाचार देने वाला यशायाह हमें चुनौती देता है कि हम अपनी आंखें अपने चारों ओर होने वाली छोटी-छोटी बातों से हटाएँ और परमेश्वर ने आकाश में जो किया है उस ओर लगाएँ।

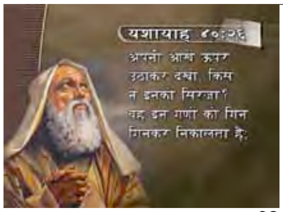

63

(मूलपाठ : यशायाह ४० : २६)

"अपनी आंखें ऊपर उठाकर देखो, किस ने इनको सिरजा? वह इन गणों को गिन गिनकर निकालता है;

64

वह उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बली है;

४ - संयोग से अथवा योजना से?

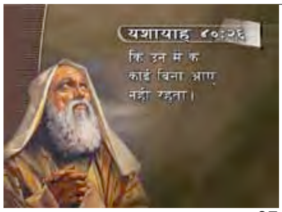

65

कि उन में के कोई बिना आए नहीं रहता।" यशायाह ४० : २६

66

क्या आप ने कभी आँखे उठाकर आसमान में अनगिनित तारों को देखा है? कभी आपने यह सोचा है कि वे कहाँ से आए और इस बात से आपको आश्चर्य हुआ कि वे कितने हैं?

67

परमेश्वर ने हमें उसकी असीमितता को समझाने के लिए एक उदाहरण का प्रयोग किया।
एक बार वह अरब और यहूदी जाति के पिता इब्राहिम को बाहर ले गया और उसको यह चुनौती दी कि वह तारों को गिनकर बताए।

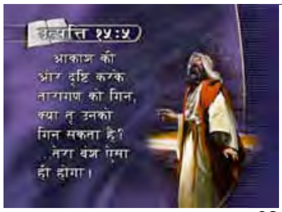
68

(मूलपाठ : उत्पत्ति १५ : ५)
"आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है? तेरा वंश ऐसा ही होगा।"
उत्पत्ति १५ : ५

४ - संयोग से अथवा योजना से?

69

हाल ही में नक्षत्रविद्या के ज्ञाता ने यह कहा है कि यदि आप संसार के समुद्री तट के रेत के कणों को गिन सकते है, तो आपको यह मालूम हो जायगा कि उन तारों की संख्या लगभग उतनी ही होगी जितनी की रेत के कणों की।

70

अगली बार जब आप समुद्री तट पर जाएँ, तो एक बाल्टी रेत को गिनने का प्रयत्न करें।
थोड़ा समय अवश्य लगाएं! इसी कारण राजा दाऊद ने कहा,

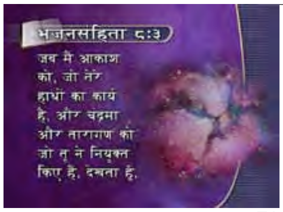

71

(मूलपाठ : भजनसंहिता ८ : ३,४)
"जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ,

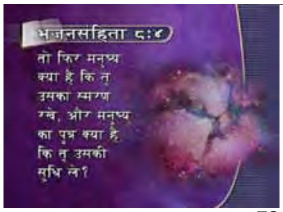

72

तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उसकी सुधि ले?"
भजनसंहिता ८ : ३,४

४ - संयोग से अथवा योजना से?

73

(दृश्य)

क्या आप ने कभी यह सोचा है कि एक सामर्थी परमेश्वर जो विशाल विश्व पर शासन और उसका पालन - पोषण करता है वह वास्तव में हमारी चिंता करता है और इस संसार में हमारी कठिनाईयों में हमारा साथ देता है?

यीशु ने यह कहा कि परमेश्वर की इच्छा के बिना एक गौरैया भी भूमि पर नहीं गिरती।

74

(मूलपाठ : मत्ती १० : ३१)

"इसलिए डरो नहीं, तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो।"

परमेश्वर के प्रेम और उसकी देखभाल करने पर जोर देने के लिए, यीशु ने कहा,

75

(मूलपाठः मत्ती १० : ३०)

"परन्तु तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं।"

मत्ती १० : ३०

कैसा परमेश्वर है!

४ - संयोग से अथवा योजना से?

76

बाइबिल के परमेश्वर के पास क्या अधिकार है कि वह प्रत्येक से यह दावा करता है कि उन्हें केवल उस की ही उपासना करनी चाहिए? बाइबिल का परमेश्वर और मसीहियत यह दावा करती है कि वह हमारी उपासना और भक्ति का अधिकारी है क्योंकि वह सृष्टिकर्त्ता - परमेश्वर है।

77

यदि वह है जो वह दावा करता है, और वह सृष्टिकर्त्ता है, तब वह हमारी उपासना का अधिकारी है। क्या आप इस बात से सहमत नहीं हैं?

78

यीशु के चेलों में से एक और बाइबिल की अंतिम पुस्तक प्रकाशितवाक्य का लेखक यूहन्ना, जब पटमुस नामक टापू में था तो उसे दर्शन मिला। उसे स्वर्गीय सिंहासन के कमरे का दृश्य दिखाया गया। ध्यान दिजिए कि उसने क्या देखाः

79

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ४ : १०, ११)
"तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठनेवाले के साम्हने गिर पड़ेंगे और उसकी उपासना करेंगे और उसे जो

80

युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और अपने-अपने मुकुट सिंहासन के साम्हने यह कहते हुए डाल देंगेः

४ - संयोग से अथवा योजना से?

81

'कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है;

82

क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं।"

प्रकाशितवाक्य ४ : १०, ११

83

ये प्राचीन परमेश्वर के सिंहासन के सामने उसकी महिमा और उपासना करते रहते हैं क्योंकि वह सृष्टिकर्त्ता है। यही एक कारण है कि हमें भी स्वर्गीय परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए।

84

केवल वही एक है जिसने संसार और हम सब को बनाया है। परन्तु, आप यह पूछ सकते हैं कि इसके अतिरिक्त हमारे पास और दूसरा क्या सबूत है कि परमेश्वर ही सृष्टिकर्त्ता है? परमेश्वर स्वयं हम से कहता है कि हमारे चारों ओर यह सबूत है कि वही हमारा सृजनहार है।

85

(मूलपाठ : रोमियों १ : २०)

"उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

86

यहां तक कि वे उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व।"

रोमियों १:२०

उत्पत्ति से ही, समस्त बनाई गई वस्तुओं में यह सबूत पाया जाता है कि परमेश्वर ही इनका बनानेवाला है।

87

रेत पर पास जाने वाले पदचिन्हों की तरह। हमें मालूम था कि वहाँ पर कोई था जबकि हमने उसे कभी नहीं देखा।

88

और जब आप अपने चारो ओर बनाई गई वस्तुओं को देखते है जिन्हें किसी ने तो बनाया है, वे वस्तुएँ उन पदचिन्हों की तरह हैं जो कि यह बताती हैं कि कोई तो अवश्य होगा जिसने इन्हें बनाया होगा।

89

परमेश्वर पिता, जैसा कि बाइबिल उसे पुकारती है, उसने अकेले ही इस सृष्टि को नहीं बनाया।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

90

(मूलपाठः उत्पत्ति १ : २६)

उत्पत्ति में यह कहा गया

"फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं ..."

यूहन्ना का सुसमाचार इसे और विस्तारपूर्वक बतलाता है।

91

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : १ - ३)

"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।"

92

यही आदि में परमेश्वर के साथ था।

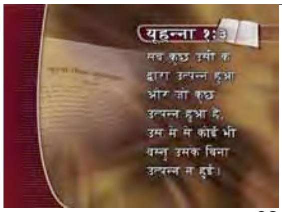
93

सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।"

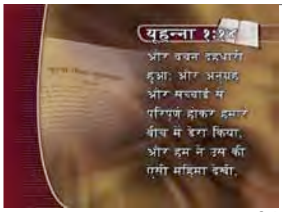
94

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : १४)

और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उस की ऐसी महिमा देखी,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

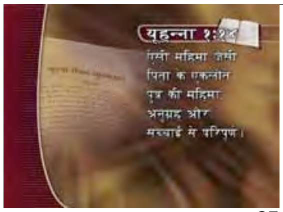

95

ऐसी महिमा जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा,
अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण।"
यूहन्ना १ : १४

96

बाइबिल उस परमेश्वर के विषय में कहती है:
परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा।

परमेश्वरत्व अपने में तीन व्यक्तियों को समाविष्ट करता है, जो एक समान सोचते हैं, फिर भी वे अलग हैं।

97

यीशु ने पिता के साथ प्रत्येक वस्तु की सृष्टि में सहयोग दिया।

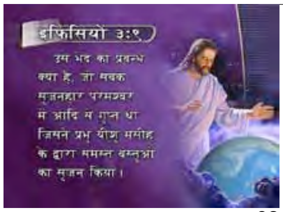

98

(मूलपाठ : इफिसियों ३ : ९)
"उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सबके सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था जिसने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा समस्त वस्तुओं का सृजन किया।"

प्रत्येक अच्छा और सिद्ध वरदान जो मनुष्य के पास है या कभी था या कभी होगा ये तब ही आया जब सृष्टिकर्त्ता ने मनुष्य जाति को सारी आशीषें दी।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

99

न केवल परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया और रहने के लिए सुन्दर विश्व दिया, परन्तु वह मनुष्य की आवश्यकताओं के लिए सजग है।

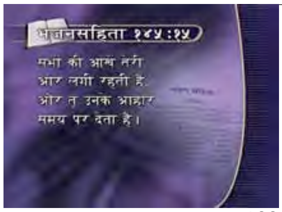

100

(मूलपाठ: भजनसंहिता १४५ : १५, १६)
"सभों की आंखें तेरी ओर लगी रहती है, और तू उनके आहार समय पर देता है।

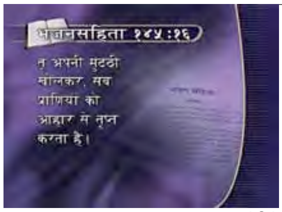

101

तू अपनी मुटठी खोलकर, सब प्राणियों को आहार से तृप्त करता है।"
भजनसंहिता १४५ : १५, १६

102

आइए अब हम देखते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर अपने बनाए गए प्राणियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है। जो पानी आप पीते हैं उसे लिजिए। वह पिरामिड्स से भी पुराना है - पहाड़ियों सा पुराना।

103

पानी रासायनिक पदार्थो या कूड़े करकट से प्रदूषित किया जा सकता है, परन्तु जब सूर्य उसे भाप बनाकर उड़ा देता है या उसे वायुमंडल के ऊपर ले जाता है,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

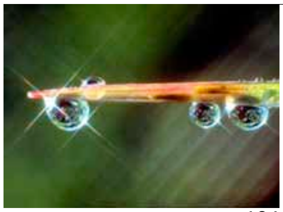
104

और तब वह फिर से शुद्ध और उपयोगी बन जाता है और फिर, वर्षा, ओस या बर्फ में विभाजित हो जाता है।

कितने अदभुत रूप से परमेश्वर ने पानी की प्रणाली को बनाया है!

105

और आकाश में परमेश्वर की महान शक्ति सूर्य के रूप में स्थिर यंत्र है!

एक क्षण के लिए सोचिए:

106

यदि यह सूर्य थोड़ा - सा बड़ा होता या पृथ्वी के थोड़े निकट होता, तो हमारे सागर उबल कर वाष्प बनकर उड़ गए होते।

107

यदि यह सूर्य थोड़ा- सा छोटा या थोड़ा- सा दूर होता तो हमारा वायुमंडल बर्फ बनकर जम जाता। या फिर पृथ्वी पर जीवन नहीं होता। परन्तु परमेश्वर ने केवल सारी वस्तुएँ ही नहीं सृजी बल्कि उनका पोषण भी करता है!

जो श्वास हम लेते हैं वह परमेश्वर का वरदान है:

बाइबिल यह कहती है,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

108

(मूलपाठ : अय्यूब १२ : १०)

"उसके हाथ में एक-एक जीवधारी का प्राण, और एक-एक देहधारी मनुष्य की आत्मा भी रहती है ?"

अय्यूब १२ : १०

109

परमेश्वर ने विश्व का आकार बनाया और वह श्वास लेने की सही विधि जानता था जो पृथ्वी पर हमारे जीवन और स्वास्थ्य का पोषण करती है।

110

वह नाइट्रोजन की, ऑक्सीजन, आर्गन और कार्बन डायक्साइड की सही मात्रा जानता था जो वायुमंडल में घुलमिल सके।

निःसंदेह यह अपने - आप नहीं हो सकता था!

111

हमारी प्राकृतिक दुनिया में आश्चर्यों का कोई अन्त नहीं है - परमेश्वर का अपने प्राणियों की देखभाल का कोई अन्त नहीं है। पक्षियों के स्थानांतरित होने के विषय में सोचिए। प्रकृति का यह एक जटिल प्रश्न है।

112

कैसे एक पक्षी जिसका वजन एक आउंस से भी कम होता है वह हज़ारों मील समुद्री रास्ते से बिना रुके एक ऐसी मंज़िल तक जाता है जिसे उसने कभी नहीं देखा?

४ - संयोग से अथवा योजना से?

113

कैसे मछलियाँ झरनों की खोज करती हैं जहाँ उनके जीवन की शुरुआत हुई, बिना समुद्री नक्शे के वे कैसे १२०० मील पार करती हैं? उन्होंने यह कैसे सीखा कि उन्हें कब और कहाँ जाना है?

114

मधुमक्खी को मधु का छत्ता बनाना किसने सिखाया जो कि एक आश्चर्यजनक निर्माण कला है, और उनका मस्तिष्क पिन के सिरे के बराबर ही बड़ा है?
इसके पीछे किसका अदभुत मस्तिष्क है?
अय्यूब हमें बताता हैः

115

(मूलपाठ : अय्यूब १२ : ७ - ९)
"पशुओं से तो पूछ और वे तुझे दिखाएंगे; और आकाश के पक्षियों से, और वे तुझे बता देंगे;

116

पृथ्वी पर ध्यान दें, तब उस से तुझे शिक्षा मिलेगी; और समुद्र की मछलियां भी तुझ से वर्णन करेंगी।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

117

कौन इन बातों को नहीं जानता, कि यहोवा ही ने अपने हाथ से इस संसार को बनाया है"

अय्यूब १२ : ७ - ९

हाँ, परमेश्वर ने ही यह सब किया है!

वास्तव में, परमेश्वर की उपासना करने के लिए हमारा कर्त्तव्य और मौका इस सत्य पर आधारित है कि वह हमारा सृष्टिकर्त्ता है और समस्त प्राणी अपने अस्तित्व के लिए उसके कर्जदार हैं।

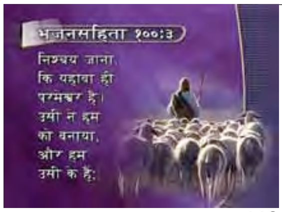

118

(मूलपाठ : भजनसंहिता १०० : ३)

"निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं;

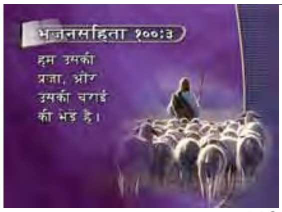

119

हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं।"

भजनसंहिता १०० : ३

परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को जानता है, और उन आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता रखता है!

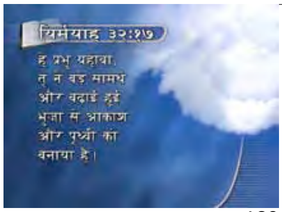

120

(मूलपाठ : यिर्मयाह ३२ : १७)

यिर्मयाह कहता है, "हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़े सामर्थ और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

121

तेरे लिए कोई काम कठिन नहीं है।"

122

क्या आप को यह जानकर शांति नहीं मिलती कि परमेश्वर इस विश्व में पाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु को और आपके व्यक्तिगत जीवन को सम्भाल सकता है? कोई भी समस्या इतनी छोटी नहीं कि तारों के समूह के परमेश्वर के समक्ष लाई ना जा सके। परमेश्वर सब कुछ जानता है - यहाँ तक कि वह समय से पहले ही सब कुछ जानता है।

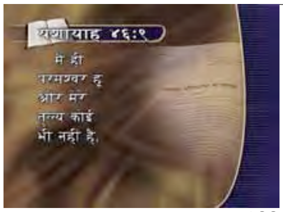

123

(मूलपाठ : यशायाह ४६ : ९)
वह कहता है, ". . . मैं ही परमेश्वर हूं और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है,

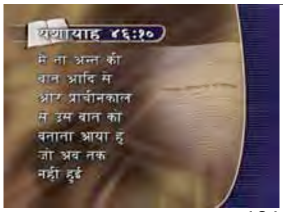

124

मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई।"
यशायाह ४६ : १०

125

कितनी शान्ति और विश्वास हम प्राप्त कर सकते हैं यह जानकर कि हमारी कोई भी समस्या परमेश्वर के लिए कठिन नहीं है। परन्तु सबसे उतम बात तो यह है कि,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

126

(मूलपाठः १ यूहन्ना ४ : ८)

"परमेश्वर प्रेम है। "

यीशु ने कहाः

127

(मूलपाठः यूहन्ना १६:२७)

"पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है . . ."

128

(दृश्य)

क्या आप को इस बात से आश्चर्य होता है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर जिसने एक विशाल, और सम्पूर्ण विश्व की सृष्टि की और उसका पालन पोषण करता है, वह आपके बारे में चिंतित होगा? परमेश्वर की असीमित शक्ति मानने से, उसकी महान बुद्धि, उसकी हर जगह उपस्थिति की क्षमता से हम विचलित हो जाते हैं। परन्तु प्रेम एक ऐसी वस्तु है जिसे हम समझ सकते हैं और पूरे विश्व में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सके।

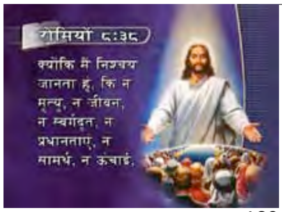

129

(मूलपाठ : रोमियों ८ : ३८, ३९)

"क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न सामर्थ, न ऊंचाई,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

130

न कोई वर्तमान न कोई भविष्य,

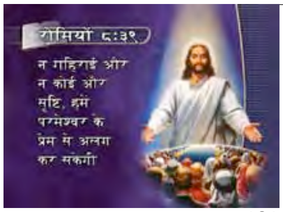

131

न गहिराई और न कोई और सृष्टि,
हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकेगी

132

जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है।"
रोमियों ८ : ३८, ३९

133

परमेश्वर हमें प्यार करता है जब हम प्यार के योग्य हैं - परन्तु वह हमें तब भी प्यार करता है जब हम प्यार के योग्य नहीं होते हैं। क्या आप इसे अनुभव करते है? वह हमें प्यार करता है चाहे हम काले हों या गोरे, पुरुष हों या स्त्री, सुन्दर हों या कुरूप। उसके सदृश्य कोई भी नहीं है!
परन्तु सब से मुख्य बात यह है कि वह हमें सदा प्यार करता रहेगा!

134

(मूलपाठः यिर्मयाह ३१:३)
"हां, मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूं।"

४ - संयोग से अथवा योजना से?

135

(मूलपाठः भजनसंहिता १००:५)

दाऊद ने लिखाः "क्योंकि यहोवा भला है, और उसकी करुणा सदा के लिये . . ."

भजनसंहिता १०० : ५

परमेश्वर हमें कभी नहीं छोड़ता है !

वह हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण में हमारे साथ है और हमें कभी नहीं छोड़ेगा !

और फिर भी यदि हमारे मस्तिष्क में उसके प्यार के विषय में कोई शंका अब भी शेष है, तो परमेश्वर इसे साधारण रूप से हमें समझाता है जिसे हम आसानी से समझ सकते हैं :

136

(मूलपाठ : यशायाह ४९:१५, १६)

"क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपिउवे बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे?

137

सचमुच वह भूल सकती हैं, परन्तु मैं तुम्हें नहीं भूल सकता।

138

देख, मैं ने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है. . ."

यशायाह ४९ : १६

४ - संयोग से अथवा योजना से?

139

परमेश्वर ने मनुष्य पर अपने प्रेम को व्यक्त करने का प्रयत्न किया, परन्तु भविष्यवक्ताओं और स्वर्गदूतों द्वारा भेजे गए वचन और संदेश पर्याप्त नहीं थे। हमें संदेश नहीं मिला।

140

इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा। यीशु अपने पिता के व्यक्तित्व और चरित्र को पूर्णरूप से प्रकाशित करता है।

141

(मूलपाठ : यूहन्ना १४:९)
उसने कहा, "जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है।"

142

यदि हम वास्तव में यह जानना चाहते हैं कि परमेश्वर कैसा है और वह हमारे बारे में क्या अनुभव करता है, तो हमें यीशु के जीवन का अध्ययन करने की आवश्यकता है। उन्होंने हमारे स्वभाव को ग्रहण किया, ताकि वे हमारी आवश्यकताओं तक पहुँच सकें। उन्होंने गरीबों को उद्धार के सुसमाचार का संदेश दिया। उन्होंने टूटे हुए दिलों को जोड़ा और अंधों को आँखें दी।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

143

उन्होंने भूखों को भोजन दिया और लोगों के साथ उनके घरों में भोजन किया।

उन्होंने उनके अपराधों को क्षमा किया और भविष्य के लिए उन्हें आशा दी।

144

उनका चेहरा सब से प्रथम चेहरा था जिसे बहुतों ने देखा। उनकी आवाज़ पहली आवाज़ थी जिसे बहुतों ने सुनी।

उन्होंने पूरे गाँवों और शहरों में, जहाँ कहीं वे गए, जीवन और खुशी को फैलाया।

उनका जीवन अपने त्याग का और दूसरों की चिन्ता करने वाला था।

145

जब हम देखते है शर्म, अपमान और तिरस्कार जो उन्होंने सहन किया, उनकी कलवरी पर मृत्यु और उनका दुख से टूटा हुआ दिल, तब हम परमेश्वर का अपने बच्चों के प्रति उसके प्रेम को समझना आरम्भ करते हैं।

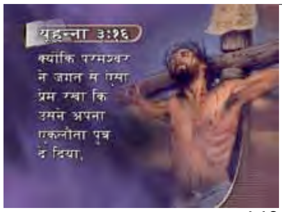

146

(मूलपाठ : यूहन्ना ३:१६)

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,

४ - संयोग से अथवा योजना से?

147

ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो,

परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यूहन्ना ३:१६

148

इस विश्व का परमेश्वर कौन है?

वह एक शक्तिशाली सृष्टिकर्त्ता है।

वह एक अदभुत पोषक है।

वह एक अनोखा चित्रकार है।

वह एक प्रेमी पिता है।

४ - संयोग से अथवा योजना से?

149

बहुत वर्षों पहले एक छोटे से लड़के की एक बहुत बुरी दुर्घटना हुई। उसे बहुत बुरी हालत में अस्पताल ले जाया गया।

उस लड़के को तुरंत रक्त चढ़ाने की आवश्यकता हुई। रक्तदान करने वाला कोई नहीं मिला। उसके पिता के पास भी उसी रक्त का प्रकार था और वह रक्त दान के लिए तैयार हो गया।

डॉक्टर ने पिता की बाजू से पुत्र को सीधे रक्त चढ़ाना शुरु कर दिया और जब उसकी बांह से एक प्लास्टिक नली द्वारा उसके पुत्र के स्थिर शरीर में सीधे रक्त प्रवाहित किया जा रहा था, तब उसने डॉक्टर की ओर देखा और आँसुओं में डूबी आवाज से कहा, " डॉक्टर यदि आपको आवश्यकता है तो मेरा सारा रक्त ले लीजिये।

डॉक्टर मैं अपने पुत्र को अपना सारा रक्त देने को तैयार हूँ।"

४ - संयोग से अथवा योजना से?

150

हमारे स्वर्गीय पिता ने अपनी बनाई हुई दुनिया को पाप में डूबा हुआ देखा।

वह समस्त जो स्वर्ग दे सकता था उसने अपने बेटे के रूप में हमें दे दिया। यीशु कहते हैं: "पिता, यदि तुझे आवश्यकता है तो यह सब ले ले। मेरे पुत्र, मेरी पुत्री, और मेरे मित्र को बचाने के लिए मेरे रक्त की एक - एक बूंद ले लो।"

151

आप कैसे इस प्रकार के प्रेम से दूर भाग सकते हैं?

एक सर्वशक्तिमान, प्यारे परमेश्वर ने आप को बनाया है। जब मनुष्य ने पाप किया, तब उसने उसके लिए अपना सब कुछ दे दिया।

आप उसके लिए बहुमूल्य हैं। वह एक अनोखे प्रेम से आप को प्यार करता है।

इस प्रकार आज जब हम अपने सिरों को प्रार्थना में झुकाते हैं, तो क्या आप अपना हाथ उपर उठाकर यह कहना चाहेंगे, "प्रभु, मैं इसी वक्त अपने दिल को तेरे प्यार के लिए खोलता हूँ।

मुझे बनाने और बचाने के लिए तेरा धन्यवाद हो, मैं इसी समय अपना जीवन तुझे देता हूँ।"

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

1

आज उनका आपके लिए क्या महत्त्व है

2

कुछ वर्ष पहले मिस्टर मार्श को यह पता चला कि उसकी आन्टी मर गई है और उसके नाम वसीयत कर गई है। उस वसीयतनामे में लिखा था : मेरे प्रिय स्टीवन मार्श के लिए मैं अपनी खानदानी बाईबिल और जो कुछ उसमें है, छोड़कर जा रही हूँ, और मेरी बाकी की भूसम्पति भी उसके नाम कर रही हूँ।" सारे कर्जे चुकाने के बाद केवल कुछ सौ डालर की भू - सम्पति बची। वे रुपये भी जल्दी खत्म हो गए, और मिस्टर मार्श के पास केवल वह खानदानी बाईबिल बची, जिसे उन्होंने एक बक्से में डालकर अपने घर के सबसे ऊपर के एक छोटे से हवादार कमरे में रख दिया। जब स्टीवन मार्श ने अपनी नौकरी छोड़ दी तब उन्हें थोड़ा-सा निवृत्ति वेतन मिलता था। वे करीब तीस साल तक गरीबी में रहे।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

3

(दृश्य)

अन्त में, जब वे नब्बे वर्ष के हो गए, तब उन्होंने अपने बेटे के घर में जाने की सोची। जब वे अपना सामान बांध रहे थे, तब उन्हें उनकी आन्टी की बाइबिल मिली और वे उसके पन्ने पलटने लगे। श्री मार्श उन पन्नों मे बैंक के नोटों को देखकर चकित रह गए। जब उन्होंने उनकी गिनती की तो वे पांच हजार ड़ालर निकले, उस समय यह पैसा बहुत ज्यादा हुआ करता था। उस मनुष्य ने अपना सारा जीवन गरीबी में बिता दिया जबकि वह अमीर बन सकता था। खजाना उसकी अंगुलियों में था, परमेश्वर के वचन में। शायद हमारे पास भी अद्‌भुत खजाना हमारी अंगुलियों में हो? हजारों लोग यह विश्वास करते हैं कि यह बाईबिल पुस्तक है। वे इस बात से सहमत हैं कि बाईबिल परमेश्वर के द्वारा प्रेरित है और हमें अनन्त जीवन पाने के लिए साफ शिक्षा देती है। प्रत्येक जाति के लोग, अलग- अलग भाषा बोलने वाले समूह, और प्राचीन मानव जाति ने परमेश्वर के वचनों को एक जीवन परिवर्तन करने वाले बहुमूल्य खजाने के रूप में अपना लिया है और दूसरे लोगों को बहुत-सी शंकाएँ हैं। उनके पास बहुत सारे प्रश्न हैं।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

4

दुनिया की सबसे श्रेष्ठ बिकने वाली पुस्तक, पवित्र बाइबिल, के विषय में आपके क्या विचार हैं?
क्या इस पर विश्वास किया जा सकता है? क्या यह सच्चाई बताती है?
क्या इसमें कोई गलती नहीं है?
कुछ लोग यह कहते हैं कि आप बिना कोई शंका के बाइबिल पर विश्वास कर सकते हैं। जबकि दूसरे यह कहते हैं कि तुम ऐसा नहीं कर सकते। कौन सही है?

5

और इसका उत्तर महत्वपूर्ण है, क्योंकि यदि बाईबिल सच्ची है, तो आपका उस पर विश्वास करना या न करना जीवन और मृत्यु का प्रश्न बन जाता है। यदि बाईबिल सच्ची है तो, आप का सम्पूर्ण अनंत भाग्य इस पर निर्भर है कि आप उस पर विश्वास करते हैं और उसे मानते हैं। आप जैसा बाईबिल पर विश्वास करते हैं वैसा ही आप परमेश्वर पर भी विश्वास करते हैं। केवल एक ही जगह है जहाँ पर आपको परमेश्वर की सही तस्वीर मिलेगी, और यही एक कारण है कि बाईबिल हमें दी गई है।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

6

यह हमें उस अदृश्य परमेश्वर के बारे में बताती है जिसके बारे में हम उन संदेशों को पढ़कर जानते हैं जो उसने अपने भविष्यवक्ताओं और अपने पुत्र के द्वारा भेजे थे ताकि वह हमें अपने बारे में बता सके।

7

तो आइए हम सब इस महान पुस्तक, बाईबिल, जिसे परमेश्वर का वचन भी कहा गया है पढ़ते हैं, और यह ढूढ़ंते है कि क्या यह हमें यह सबूत देती है कि यह सच्ची है या नहीं, या फिर इस पर विश्वास किया जा सकता है या नहीं।

8

(दृश्य)

बाईबिल केवल एक पुस्तक नहीं है। यह अनेक पुस्तकों का सकंलन है। बाईबिल में ६६ पुस्तकें हैं जो कि अलग-अलग समयों पर, अलग-अलग लेखकों के द्वारा १६०० वर्षो में लिखी गई हैं। पुराने नियम में ३९ पुस्तकें हैं और नये नियम में २७ पुस्तकें हैं।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

9

पैतांलिस अलग-अलग व्यक्तियों ने इन पुस्तकों को लिखा हैं, परन्तु उनमें एक अद्‌भुत समानता पाई जाती है जो इस बात को बताती हैं कि इन पुस्तकों का एक ही स्रोत है।

इन पुस्तकों के बहुत-से लेखकों ने आपस में एक-दूसरे को कभी नहीं देखा फिर भी इनमें सम्पूर्ण समानता पायी जाती है।

10

वे विभिन्न काम धन्धों से आए थे। कुछ मछुवारे थे, कुछ चरवाहे, कुछ राजा, कुछ सरकारी नेतागण, कुछ किसान, कुछ उपदेशक, कुछ आम आदमी, एक चिकित्सक-हर प्रकार के काम करने वाले आदमी थे।

11

(दृश्य)

फिर भी उनकी पुस्तकों में पूर्ण एकता और तालमेल था। वास्तव में, आश्चर्यजनक! इस समानता को केवल यही बात समझा सकती है कि परमेश्वर ने हमें यह पुस्तक दी है ताकि वह हमें अपनी इच्छा को बता सके।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

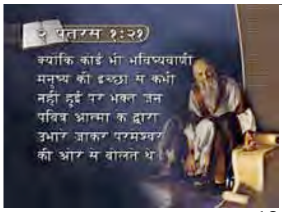

12

(मूलपाठ : २ पतरस १ : २१)

पतरस ने लिखा : "क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।"

२ पतरस १ : २१

13

(मूलपाठ : २ तीमुथियुस ३ : १६ - १७)

पौलुस प्रेरित ने लिखा : "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक हैं,

14

और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए भी लाभदायक है

15

ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

२ तीमुथियुस ३ : १६ - १७

परमेश्वर ने हमसे वार्तालाप करने के लिए इस माध्यम को इसलिए चुना-जो यह था-कि हमसे लिखित रूप से बातें करना-क्योंकि वह माध्यम जहाँ वह हमसे आमने सामने बातें करता था पाप के कारण खत्म हो गया था।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

16

जब परमेश्वर और मनुष्य अदन की वाटिका में एक साथ चलते-फिरते और बातें किया करते थे, तब एक भविष्यवक्ता की कोई आवश्यकता नहीं थी कि वह मनुष्य को परमेश्वर की बातें बताए।

17

जब आदम ने पाप किया, तब वह परमेश्वर से छिप गया, क्योंकि वह अपने किए पर भयभीत और दोषी था।

जब परमेश्वर ने आदम से पूछा कि तू कहाँ था, तब आदम ने उत्तर दिया,

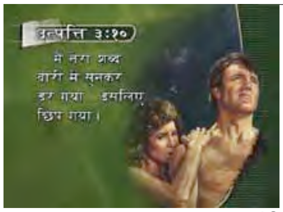

18

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १०)

"...मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया.......इसलिए छिप गया।"

उत्पत्ति ३ : १०

19

इसके बाद परमेश्वर मनुष्य से आमने-सामने कभी बात न कर सका। उसने भविष्यवक्ताओं को हमें अपनी इच्छा बताने के लिए चुना, और बाद में उसने अपने बेटे के द्वारा हमें बताया कि वह क्या चाहता है।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

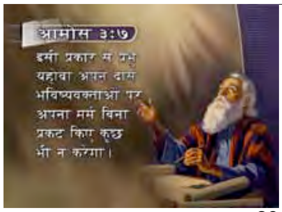

20

(मूलपाठ : आमोस ३ : ७)
"इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यवक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रकट किए कुछ भी न करेगा।"
आमोस ३ : ७

21

परमेश्वर ने मूसा को अय्यूब की पुस्तक और पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकें, जो मिलकर "नियम" कहलाती है, लिखने के लिए प्रेरित किया। यह लगभग १५०० बी० सी० का था।

22

इस समय इस्राएल एक महान राष्ट्र बन चुका था जिसकी आबादी सैंकड़ों लोगों की हो गई थी और परमेश्वर को लिखित रूप में अपनी इच्छा को बताने की आवश्यकता हुई।
उस समय से ही चित्रमय लिखावट की अपेक्षा लिखित अक्षरों का अविष्कार हुआ।

23

अब लोग उन दस आज्ञाओं को पढ़ सकते थे जो परमेश्वर ने अपनी अंगुलियों से लिखे थे।
और नियम की पुस्तक भी जो मूसा ने परमेश्वर के लिए लिखी थी।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

24

परन्तु अब भी प्रश्न वही उठता है: कि क्या बाईबिल अब भी एकदम सही और भरोसे के योग्य है, उसी तरह जिस तरह परमेश्वर ने उसे दिया था? सन् १९४७ तक, पुराने नियम की जो प्रथम हस्तलिपियाँ हमारे पास थीं वे लगभग १०० ए० डी ० की प्रतिलिपियाँ थीं।

25

वहाँ मिलने वाली यशायाह की पुस्तक १२५ इसा पूर्व लिखी गई थी। उस समय तक मिलने वाली हस्तलिपियों से एक हजार वर्ष पूर्व उस पुस्तक की नकल बनायी गई थी।

उसमें यशायाह की समस्त पुस्तक थी।

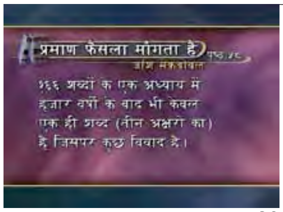

26

सर फ्रेडरिक केनयन, एक सबसे अधिक शिक्षित विशेषज्ञ और पुरातत्व विज्ञान के ब्रिटिश स्कूल के प्रधानाचार्य ने यह कहा कि :

"१६६ शब्दों के एक अध्याय में हजार सालों के समाचार भेजने के बाद केवल एक ही शब्द (तीन अक्षरों का) है जो एक प्रश्न है।

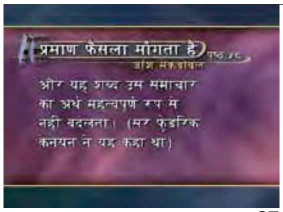

27

और यह शब्द उस समाचार का अर्थ महत्वपूर्ण रूप से नहीं बदलता।"

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

28

सर फ़ेडरिक केनयन इस प्रकार कहते हैः

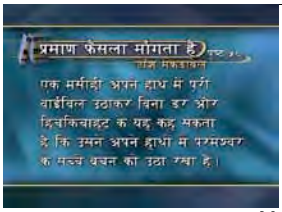

29

"एक ईसाई अपने हाथ में पूरी बाइबिल उठाकर बिना डर और हिचकिचाहट के यह कह सकता है कि उसने अपने हाथों में परमेश्वर के सच्चे वचन को उठा रखा है,

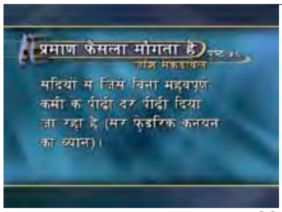

30

सदियों से जिसे बिना महवपूर्ण कमी के पीढ़ी दर पीढ़ी दिया जा रहा है।"

31

सर केनयन ने यह बात अपना पूरा जीवन इस सबूत की जांच पड़ताल करने के बाद कि किस प्रकार बाइबिल का

प्रसारण किया गया था और इस प्रसारण से इस पुस्तक के संदेश में क्या प्रभाव पड़ा था, कहीं थी।

32

सदियों पहले बाइबिल की गलतियाँ निकालने वालों को बहुत से आधार मिल गए थे जिनसे बाइबिल पर शंका की जा सके, परन्तु इनमें से कितनी गलतियाँ पुरातत्ववेत्ता के फावड़े ने शांत कर दिया।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

33

उन्नीसवीं सदी तक, केवल बाइबिल उसके बारे में जो कहती थी उसे छोड़कर प्राचीन भूतकाल के विषय में थोड़ा ही पता था।

34

प्राचीन इतिहास मिस्र की उन अद्‌भूत चित्रमय लिखावट के पीछे हमेशा के लिए बन्द लग रहा था। क्योंकि मिस्र देश का, या पूरी दुनिया का कोई भी, उसको नहीं पढ़ सका।

35

सन् १७९८, नेपोलियन अपनी सेना को मिस्र देश में छान-बीन करने के लिए ले गया। अपने ३८,००० सैनिकों के साथ, नेपोलियन सौ चित्रकारों, भाषा के ज्ञानियों, और वैज्ञानिकों को उस गुप्त भूमि के इतिहास को और अधिक समझने में मदद के लिए ले गया।

36

प्रत्येक जगह उन्होंने भूतकाल के चिन्हों को देखा -- ऐसे लेख मिले जिन्हें पढ़ा न जा सका, तथा सजे हुए स्तम्भ और मंदिर की दीवारें। नेपोलियन और उसके विद्वान इस सोच में पड़ गए कि इन चित्रमय लिखावट में क्या गुप्त संदेश था।

37

एक वर्ष बाद, १७९९ में, उस समय की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण खोज हुई।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

38

नेपोलियन के एक सैनिक ने एक पत्थर को खोदकर निकाला जो रोसेटा पत्थर के नाम से जाना गया -- १२२ सेंटीमीटर लम्बा और ७६ सेंटीमीटर चौड़ा (चार फुट लम्बा और ढाई फुट चौड़ा) एक काला पत्थर जो सदियों पुरानी चित्रमय लिखावट के रहस्य को खोल सकता था।

39

वह रोसेटा पत्थर अब ब्रिट्रिश संग्रहालय में रखा हुआ है।

40

यह पत्थर की शिला, जो रोसेटा शहर की नदी के मुहाने पर पाई गई थी, उस पर प्राचीन राजाज्ञा की तीन अलग-अलग हस्तलिपियाँ थी :

41

चित्रमय लिखावट (चित्रों द्वारा लिखी गई लिखावट), मिश्री, और यूनानी भाषा में। वास्तव में, विद्वान यूनानी मूलपाठ का आसानी से अनुवाद कर सकते थे, परन्तु चित्रमय लिखावट कुछ और थी।

42

और बीस वर्ष बाद, १८२२ में, जान फ्रानकोए शैम्पोलियन नामक फ्रांस के एक बुद्धिमान नवयुवक ने इस दुनिया को रोसेटा पत्थर पर की गई चित्रमय लिखावट को पढ़कर चकित कर दिया।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

43

इस प्रकार मिश्र के प्राचीन भूतकाल के बहुत बड़े खजाने को दुनिया के विद्वानों के समक्ष खोला गया।

44

परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि, मिश्र देश के प्राचीन भूले हुए इतिहास ने पवित्रशास्त्र की सच्चाई को पक्का कर दिया।

वह पत्थर चिल्ला कर कह रहे थे कि जो बाइबिल ने कहा था वह सच है।

45

जैसे-जैसे पुरातत्ववेत्ता खोदते गए, उन्हें बाइबिल के इतिहास की प्राचीन सभ्यता के ऐतिहासिक रिकार्ड के साथ पक्के सबूत मिलते गए।

46

टेलमारदुक की आधुनिक खोज ने, पुरातत्व की दुनिया में जान डाल दी।

इस शहर को सीरिया में एबला के नाम से जाना जाता था-और कभी यह अमीर और लगभग ३००,००० लोगों का सभ्य समाज था।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

47

' मृत सागर' के पवित्रशास्त्र (स्क्रोल) की खोज के बाद नहीं अपितु पहले से ही इस विषय में अध्ययन करने वाले विद्वान इस खोज के लिए उत्सुक थे! परन्तु यह बाइबिल का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए और अधिक उत्सुकता का विषय है।

48

शहर के महल के निकट एक प्राचीन पाठशाला में, खोदकर लिखी गई १४,००० तख्तियाँ और उनके टूटे हुए अंश पाए गए, जो कम से कम २३०० ईसा पूर्व पुराने थे।
दुनिया की सबसे प्राचीन खोज की गई सरकार के अभिलेख रक्षालय ने एक सदी से भी अधिक एबला राज्य के सरकारी रिकार्ड रखे हैं।

49

कुछ ऐतिहासिक लेखकों ने यह प्रश्न किया कि क्या ये इब्रानी लोग मूसा के समय तक लिखने की कला का विकास कर पाए थे। उन्नीसवीं सदी तक, एक भी ऐतिहासिक सबूत इस बात का प्रमाण नहीं दे सका।

50

तथापि, एबला की ये तख्तियाँ और दूसरी खोजें मूसा के जीवनकाल से बहुत पहले की हैं। पुरातत्ववेत्ताओं को पुरे-पुरे पुस्तकालय मिले हैं जो मूसा से सदियों पहले के हैं।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

51

एबला की तख्तियों में सृष्टि और जल -प्रलय के बारे में लिखा है।
उसमें ऐसे नाम और जगह भी दिये गये हैं जो बाइबिल के नामों से मिलते थे, जैसे इसाव, इब्राहिम, इस्राएल, सीनै, और यरूशलेम।

52

परन्तु असली आश्चर्यजनक बात यह है कि उनमें उन दो "पापी शहरों" -- सदोम और अमोरा का नाम है। इन तख्तियों की खोज के पूर्व इन शहरों का एक भी ऐतिहासिक सन्दर्भ बाईबिल के अतिरिक्त और कहीं नहीं मिला था। इसलिए ये पहले केवल काल्पनिक जगहें ही मानी जाती थीं।

53

बहुत-सी पुस्तकों को दुबारा लिखा जाना चाहिए, क्योंकि ये खोजें उस समय के बहुत से भौगोलिक नामों का प्रमाण देती हैं।

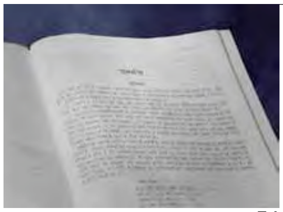
54

कुछ लेखकों को यह मानना पड़ेगा कि उत्पत्ति की पुस्तक केवल प्राचीन चरवाहों के गानों और प्रचलित कथाओं से भी अधिक है। एबला पर और दूसरी जगहों पर की गई खोज ने बाईबिल की सच्चाई को पक्का किया है।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

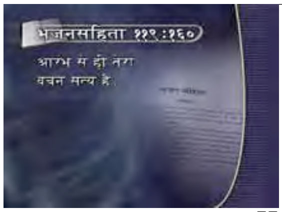

55

(मूलपाठ : भजनसंहिता ११९ : १६०)

दाऊद ने कहा, "आरंभ से ही तेरा वचन सत्य है .....।
"

भजनसंहिता ११९ : १६०

56

(मूलपाठ : यशायाह ४५ : १९)

यशायाह ४५ : १९ में, परमेश्वर कहता हूँ, ".......मैं, यहोवा सत्य ही कहता हूँ, मै उचित बातें ही बताता आया हूँ।"

57

वे कहते हैं कि मृतक कहानियाँ नहीं बताते, परन्तु यह सच नहीं है।

काल्पनिक कथाओं से अधिक रोमाचंकारी कहानियाँ हैं। प्राचीन मृत संस्कृतियाँ धूल भरी कब्रों से बोल रही हैं और परमेश्वर के वचन की यर्थाथता और विश्वस्तता को निश्चित कर रही हैं।

58

उन्नीसवीं सदी तक, कुछ विद्वान ये विश्वास करते थे कि बाबुल को रानी सेमीरामिस ने बनाया था।

परन्तु बाइबिल में दानिय्येल ने यह लिखा है कि राजा नबूकदनेस्सर ने ऐसा कहा,

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

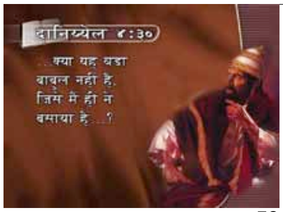

59

(मूलपाठ : दानिय्येल ४ : ३०)

"...क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैं ही ने बसाया है? "

दानिय्येल ४ : ३०

कौन सही था?

60

१८९९ में रार्बट कोल्देवे ने बाबुल की पुरानी नष्ट हो गई चीजों को खोदना आरंभ किया और भट्टी में पकी हुई हजारों ईंटों को निकाला। उन सब पर राजा नबूकदनेस्सर की मुहर थी। वे सभी शहर और मंदिरों की दीवारों से ली गई थीं!

61

एक चित्रदार तख्ती भी मिली जो नबूकदनेस्सर की वीरता के कार्यो का वर्णन करती है।

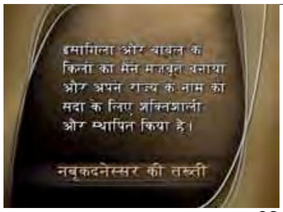

62

उस पर, राजा ने कहा, "इसागिला और बाबुल के किलों को मैंने मजबूत बनाया और अपने राज्य के नाम को सदा के लिए शक्तिशाली और स्थापित किया है।"

63

(मूलपाठ : दानिय्येल ४ : ३०)

बाइबिल यह बताती है कि घमंडी नबूकदनेस्सर ने "कहा, "क्या यह बड़ा बाबुल नहीं है,

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

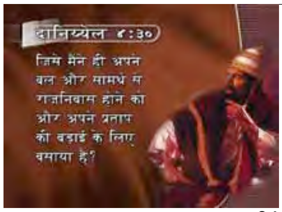

64

जिसे मैंने ही अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिए बसाया है?" दानिय्येल ४ : ३०

65

ईस्ट इण्डिया हाऊस शिलालेख पर, जो अब लंदन में है, नबूकदनेस्सर का विशाल भवन निर्माण योजना का वर्णन बाबुल की लिखाई में छः कालमों में किया गया है। खुदाई करने के कारण पुनः यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर का वचन सत्य है।

66

एक और रहस्य बेलशस्सर का बाबुल के शासक के रूप में इतिहास में न होना था। बाईबिल बेलशस्सर को बाबुल का शासक बताती है जिसने भोजघर की दीवार पर लिखावट को देखा। क्या वह केवल दानिय्येल के मस्तिष्क की उपज था? बिल्कुल नहीं।

67

महान नबूकदनेस्सर के एक उतराधिकारी नबोनिडस ने उन दस वर्षो के लिये अपने बेटे बेलशस्सर को राजगद्दी सौंप दी थी जब वह स्वयं अरब में तीमा नामक स्थान में था।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

68

पुरातत्ववेत्ता द्वारा खोजी गई तख्तियाँ यह बताती हैं कि वास्तव में राजकुमार के रूप में बेलशस्सर को राज्य सौंपा गया था। जो लिखा गया था वह यह है :

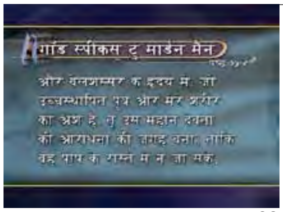

69

"और बेलशस्सर के हृदय में, जो उच्चस्थापित पुत्र और मेरे शरीर का अंश है, तू उस महान देवता की आराधना की जगह बना; ताकि वह पाप के रास्ते में न जा सके;

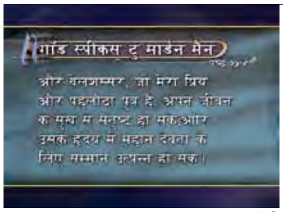

70

और बेलशस्सर, जो मेरा प्रिय और पहलौठा पुत्र है, अपने जीवन के सुख से संतुष्ट हो सके; और उसके हृदय में महान देवता के लिए सम्मान उत्पन्न हो सके,।"

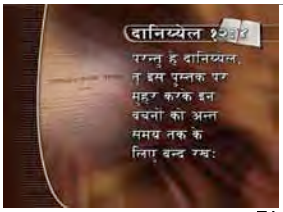

71

(मूलपाठ : दानिय्येल १२ : ४)

क्या यह दिलचस्प बात नहीं कि हम दानिय्येल के अन्तिम अध्याय में पढ़ते हैं: "परन्तु हे दानिय्येल, तू इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को अन्त समय तक के लिए बन्द रख:

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

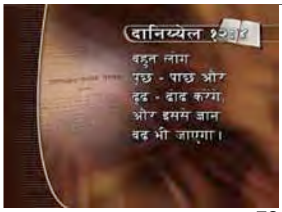

72

बहुत लोग पूछ- पाछ और ढूंढ -ढांढ करेंगे, और इससे ज्ञान बढ़ भी जाएगा।"

दानिय्येल १२ : ४

ज्ञान केवल वैज्ञानिक दुनिया में ही नहीं बढ़ जाएगा। ज्ञान परमेश्वर के वचन की यथार्थता के रूप में भी बढ़ जाएगा।

73

ईंटें और सिलैण्डर्स, तख्तियाँ और हस्तलिपियाँ- जो पुरातत्ववेत्ताओं के द्वारा खोदी गई-वे यह प्रमाणित करती हैं कि जो बाइबिल कहती है वह सच है!

74

बाईबिल परमेश्वर के द्वारा प्रेरित वचन है इस बात का एक ठोस प्रमाण यह है कि वह भविष्य की बातों को सही रूप में बताने की क्षमता रखती है।

75

(मूलपाठ : यशायाह ४६ : ९ - १०)

"मैं ही परमेश्वर हूँ और मेरे तुल्य कोई भी नहीं है,

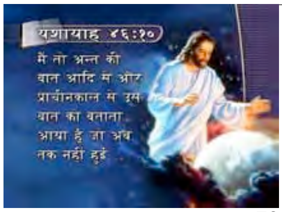

76

मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई।"

यशायाह ४६ : ९, १०

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

77

जी हाँ, हमें भविष्य की झलक दिखाने के लिए परमेश्वर समय के परदे को खोलता है और संसार को यह प्रदर्शित करता है कि बाइबिल केवल एक पुस्तक नहीं है।

यह उसकी पुस्तक है।

78

बाबुल के अपनी शक्ति और महिमा की ऊचाँई तक पहुँचने से पहले ही परमेश्वर की पुस्तक ने इसके पतन की भविष्यवाणी की थीः

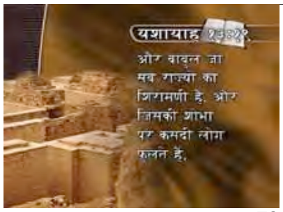

79

(मूलपाठ : यशायाह १३ : १९)

"और बाबुल जो सब राज्यों का शिरोमणी है, और जिसकी शोभा पर कसदी लोग फूलते हैं,

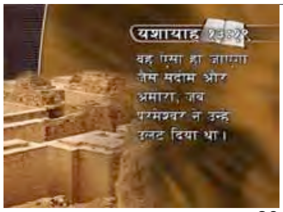

80

वह ऐसा हो जाएगा जैसे सदोम और अमोरा, जब परमेश्वर ने उन्हें उलट दिया था।"

यशायाह १३ : १९

यहाँ तक कि बाइबिल ने उस महान शक्ति की भी भविष्यवाणी की थी जो कि इस महान राज्य को उलट देगी।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

81

(मूलपाठ : यिर्मयाह ५१ : ११)
"यहोवा ने मादी राजाओं के मन को उभारा है; उसने बाबुल को नाश करने की कल्पना की है।"
यिर्मयाह ५१ : ११ ।

82

उसके जन्म के १५० वर्ष पूर्व उस आदमी के नाम की भविष्यवाणी हो गई थी जो बाबुल के विरुद्ध सेनाओं की अगुवाई करेगा, और वह किस
प्रकार उसे ऐसा ही करेगा।

83

(मूलपाठः यशायाह ४५ :१)
"यहोवा अपने अभिशिक्त कुस्रू के विषय यों कहता है ...मैं उसके सामने दो फाटकों को खोल दूंगा ..."
यशायाह ४५ :१
क्या बाईबिल की भविष्यवाणियाँ पूरी हुई थीं? एक -एक शब्द पूरा हुआ।

84

ब्रिटिश संग्रहालय के फारस हॉल में कुस्रु का सिलैण्डर रखा है जो बाबुल की खुदाई में पाया गया था।
इस मिटट्ी के सिलैण्डर पर कुस्रू ने अपने विषय में कहा है। उसका वर्णन एकदम सही है!

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

85

बाइबिल केवल बाबुल के नष्ट होने की भविष्यवाणी नहीं करती, परन्तु वह आगे यह कहती हैः

86

(मूलपाठः यिर्मयाह ५१:३७)

"और बाबुल खण्डहर होगा..."

यिर्मयाह ५१ : ३७

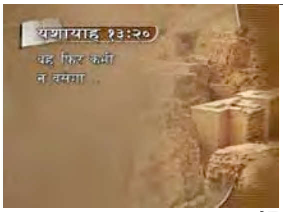

87

(मूलपाठः यशायाह १३:२० -२१)

यशायाह ने लिखाः

"वह फिर कभी न बसेगा..."

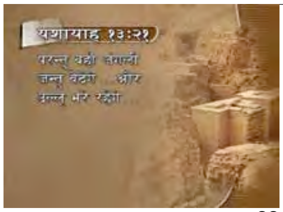

88

"परन्तु वहाँ जंगली जन्तु बैठेंगे .....और उल्लू भरे रहेंगे......"

यशायाह १३ : २०, २१

89

केवल परमेश्वर ही भविष्य को देख सकता था और उस महान बाबुल के भाग्य की एकदम सही रूप में भविष्यवाणी कर सकता था।

खोजकर्त्ता आसटेन एच॰ लेयार्ड प्राचीन बाबुल की जगह का वर्णन करता हैः

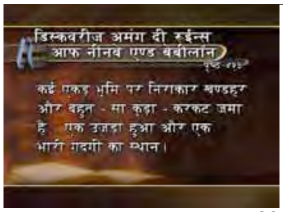

90

कई एकड़ भूमि पर निराकार खण्डहर और बहुत -सा कूड़ा - करकट जमा है ...एक उजड़ा हुआ और एक भारी गंदगी का स्थान।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

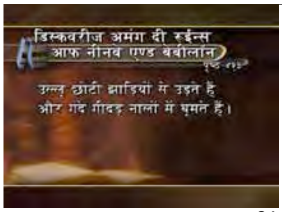

91

उल्लू छोटी झाड़ियों से उड़ते हैं और गंदे गीदड़ नालों में घूमते हैं।
-- डिस्कवरीज अमंग दी रुईन्स आफ नीनवे एण्ड बेबीलॉन, पृष्ठ ४१३

92

अति प्राचीन बाबुल की महिमा का कुछ भी शेष नहीं बचा परन्तु रास्ते के किनारे एक साइन बोर्ड पर लिखा हुआ केवल उसका नाम लिखा है।
प्राचीन बाबुल के अवशेषों के ऊपर विशाल बिखरा हुआ कूड़ा बाइबिल की प्रेरणा और उसके पूर्ण होने की गवाही देता है।

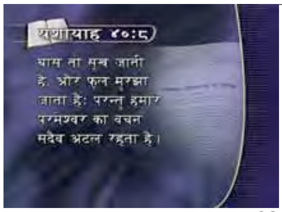

93

(मूलपाठ : यशायाह ४० : ८)
हम इस भविष्यवक्ता से सहमत हो सकते हैः "घास तो सूख जाती है, और फूल मुरझा जाता हैः परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहता है।"
यशायाह ४० : ८

94

और मित्र, यदि परमेश्वर प्राचीन राज्यों के भविष्य का शताब्दियों पहले इतनी सही भविष्यवाणी कर सकता है तो हमारे भविष्य को बताने की उसकी क्षमता और बुद्धि पर क्या हम संदेह कर सकते हैं? बिल्कुल नहीं।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

95

वास्तव में, बाईबिल की भविष्यवाणी हमें मौका देती है कि हम परमेश्वर की आँखों से भविष्य को देख सकें और हमारे जीवन की समस्याओं का उसके पास क्या हल है इसकी एक झलक पायें।

96

बाईबिल केवल भरोसे योग्य इतिहास, सही वैज्ञानिक सच्चाई, और पूरी हुई भविष्यवाणियों से बढ़कर है। यदि यह ऐसी न होती तो मनुष्य इसके साथ क्या करता, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता।

97

इस पुस्तक की विशेषता यह है कि उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व यरूशलेम से बाहर एक असमतल पहाड़ी पर जो हुआ था उसका लेखा-जोखा इसमें है।
और हम उस पर कैसा विश्वास करते हैं इससे बहुत अन्तर पड़ता है।

98

या तो जीवित परमेश्वर का पुत्र क्रूस पर मरा या नहीं मरा।
या तो वह, वह था जो बाइबिल कहती है या वह नहीं था!
क्या कलवरी कल्पना थी या सच्चाई थी?
इस अन्तर को हमें जानने की आवश्यकता है!

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

99

कदाचित सब से प्रमुख प्रमाण यह है कि इस पुस्तक में जीवन को बदलने की शक्ति है।

और यह शक्ति एक व्यक्ति -- यीशु मसीह -- में है।

यीशु ने कहा,

100

(मूलपाठ : यूहन्ना ५ : ३९)

"तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है।" यूहन्ना ५ : ३९

101

यीशु पुराने नियम के विषय में कह रहे थे, क्योंकि नया नियम अभी तक नहीं लिखा गया था।

और जब आप पुराने नियम के पन्नों को उलट कर देखेंगे, तब आप पायेंगे कि वे मसीह के आने की भविष्यवाणी कहते हैं, और उसके प्रेम और उद्धार के उद्देश्य को बताते हैं।

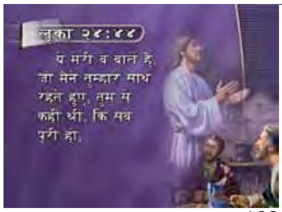

102

(मूलपाठ : लूका २४ : ४४)

यीशु ने शिष्यों से कहा :

"----ये मेरी वे बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए, तुम से कहीं थीं, कि सब पूरी हैं

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

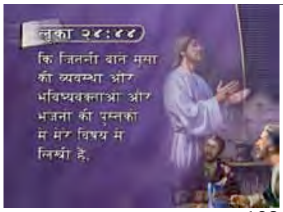

103

कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं,"
लूका २४ : ४४

104

पुराना नियम मसीह की भविष्यवाणी करता है, और नया नियम उसके जीवन की कहानी बताता है।

इस प्रकार आप देखते हैं कि संपूर्ण बाइबिल यीशु मसीह को प्रकाशित करती है, जो इस राजद्रोह में घिरे हुए को ग्रह पर यह दर्शाने आया था कि उसका पिता वास्तव में कैसा था।

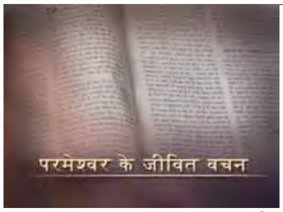

105

इसलिए बाइबिल को "परमेश्वर का जीवित वचन" कहते हैं।

यह अपने साथ एक आश्चर्यजनक शक्ति रखती है। एक ऐसी शक्ति जो जीवितों को बदलती है, मनुष्य के चरित्र को बदल देती है, कमजोर को शक्ति देती है, दुःखी को साहस और मरने वाले को आशा देती है।

पूरे इतिहास में बार -बार यह प्रमाणित किया गया है कि बाइबिल की शक्ति के द्वारा क्रोधी लोग भी शांति-प्रिय लोग में बदल गए।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

106

शारीरिक लालसापूर्ण और अनैतिक लोग भी शुद्ध और साफ बन गए हैं।

शराबी अपने पीने की आदत से छुटकारा पा गए, चोर अपनी चोरी से और ठग अपने ठगने से।

आप को आज यह जानने के लिए दूर जाना नहीं पड़ेगा कि बाइबिल की शक्ति के द्वारा जेल में पड़े क्रूर हत्यारे आनन्दित मसीहियों में बदल गए हैं।

107

आप को दूर देखने की आवश्यकता नहीं है यह जानने के लिए कि जिन विवाहों का सीधा तलाक ही होना था, वे बाईबिल की शक्ति के द्वारा बचाए गए और नवीन प्रेम से भर दिए गए। कोई भी व्यक्ति प्रतिदिन बाईबिल को ईमानदारी से पढ़ने के बाद बिना बदले नहीं रह सकता। और मेरे मित्र, यदि आप प्रतिदिन बाईबिल को पढ़ने में समय व्यतीत करेंगे, तो यह आपको भी बदल देगी।

108

यीशु ने लोगों को बदलने में अपना समय लगाया। यही मसीही धर्म का हृदय है। और यह बाईबिल का दिल है, उसकी शक्ति का रहस्य है।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

109

(मूलपाठ : यूहन्ना ८ : ३२)

यीशु मनुष्यों को बदलने वाली इस शक्ति को जानता था : "और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हे स्वतंत्र करेगा।"

यूहन्ना ८ : ३२

110

यह सत्य है जो मनुष्य को स्वतंत्र करता है -उसे बदल देता है। यह सत्य है जो एक शराबी को एक अच्छा और प्यारा पिता बना देता है। यह सत्य है जो नशीली दवाईयाँ लेने वाले को स्वतंत्र कर देता है। आज संसार में इतनी अधिक धोखा -धड़ी हैं कि हमें पूछना पड़ जाता है कि "सच्चाई क्या है?"

111

(मूलपाठः यूहन्ना १७:१७)

यीशु ने उत्तर दिया : "तेरा वचन सत्य है।" यूहन्ना १७:१७

बाइबिल, परमेश्वर का वचन, सत्य है!

उस वचन की शक्ति स्त्रियों और पुरुषों के हृदयों को बदल सकती है।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

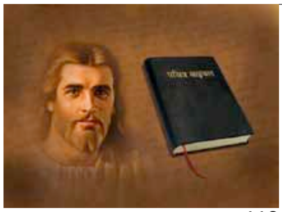

112

परन्तु परमेश्वर केवल उन लोगों को ही बदल सकता है जो इस पुस्तक के यीशु मसीह को ग्रहण करने के इच्छुक हैं।

हजारों लोगों का जीवन बाइबिल का अध्ययन करने से बदल गया है।

इस संसार में इस शक्ति से बढ़ कर कोई अन्य शक्ति नहीं है जो दिलों को छू सके और जीवनों को बदल सके।

आप देखिए, मित्र, हम इस पुस्तक का क्या करते हैं इससे हमारे जीवन में अंतर पड़ता है। यह केवल गिरजाघर में ले जाने वाली या घर में सजाने वाली पुस्तक नहीं है परन्तु यह उस से भी बढ़ कर है।

यह सहायतापूर्ण सूचना या उपयोगी सलाह से बढ़कर है।

यह ऐसी है मानो परमेश्वर हमारे हृदयों से बोल रहा हो। यह उस का इस पृथ्वी पर अपने बच्चों के लिए प्रेम पत्र है। इसमें जीने का रहस्य, अनन्त खुशियाँ और मस्तिष्क की शांति है।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

113

(दृश्य)

आइए, मैं आपको परमेश्वर के वचन की शक्ति से बदलने वाले जीवन की कहानी बताता हूँ। बहुत वर्ष पहले, एक बाउंटी नामक जहाज था

१७९० में, कप्तान ब्लाई और उसके साथी ब्रेड फ्रूट वृक्ष के पौधों को लाने के लिये इंग्लैण्ड से रवाना हुए ताकि उन्हें वेस्टइन्डीज में लगाया जा सके क्योंकि गुलामों के लिए यह सस्ता भोजन था।

114

(दृश्य)

ब्लाई की क्रूर कप्तानी और कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार के कारण वहाँ सैन्य विद्रोह हो गया। फ्लेचर क्रीश्चियन ने, जो उस सैन्य विद्रोह का प्रधान था, ब्लाई और उसके प्रति विस्वस्त १८ जनों को एक छोटी -सी नाव में भेज दिया। कप्तान ब्लाई की निपुणता के कारण उन्होने वापिस इंग्लैण्ड पहुंचने का रास्ता ढूंढ़ लिया।

115

(दृश्य)

बाउंटी पर सवार समूह ने अच्छी तरह यात्रा नहीं की, परन्तु अंत में वे निर्जन पिटकर्न टापू पर पहुँचे।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

116

(दृश्य)

उन्होंने बाउन्टी को जला दिया ताकि कोई उन्हें पहचान न सके। जब वे ताहिटी में थे, फ्लेचर ने बहुत -से स्त्रियों, बच्चों और कुछ देशी लोगों की मंडली का गठन किया। जब उन्होंने शराब बनाना सीखा तब उनकी कठिनाईयाँ और बढ़ी। हत्याएँ तथा अपराध होने लगे। कुछ दिनों बाद केवल एक पुरुष, जॉन आडम्स, तथा कुछ स्त्रियाँ और बच्चे बाकी रह गये।

117

(दृश्य)

बहुत छान -बीन के बाद जान एडम्स को एक बक्से में बाउंटी की बाईबिल मिली। उसने उसे पढ़ना शुरु किया और पढ़ने के बाद उसके जीवन मे एकं अनोखा परिवर्तन आया।

उसने यह अनुभव किया कि उस पर उन बच्चों को एक उज्जवल भविष्य प्रदान करने की भारी जिम्मेदारी आ गई है। उसने उनको शिक्षित करना आरम्भ किया और बताया कि कैसे पढ़ना, लिखना और रहना है।

उस द्वीप की सम्पूर्ण जनसंख्या के अनोखे परिवर्तन ने पहले वहां से आने जाने वाले जहाजों का ध्यान और फिर ब्रिटिश सरकार और सम्पूर्ण विश्व का ध्यान आर्कषित किया।

५ - प्राचीन लिपियों का रहस्य

118

मित्र, बाइबिल आपके जीवन को भी बदल सकती है। जब हम बाइबिल को पढ़ते है, तब पवित्र आत्मा हमें उसी प्रकार प्रेरणा देता है जिस प्रकार सदियों पहले बाइबिल के लेखकों को परमेश्वर का वचन लिखने की प्रेरणा उसने दी थी। जब हम इसका अध्ययन करते हैं, तो हमारा जीवन बदल जाता है।

परमेश्वर के वचन के पास एक खुले मस्तिष्क और सरल विश्वास के साथ आइए और कहिए "हे प्रभु, मुझे अपनी सच्चाई दिखा, और मैं उसका अनुसरण करूंगा। हे प्रभु, मेरे जीवन के लिए आवश्यक परिवर्तनों के बारे में मुझे बता"।

"हे प्रभु, मैं तुझे एक प्रेमी, क्षमा करने वाले तथा जीवन को बदलने वाले उद्धारकर्ता के रुप में तेरे वचनों के लिखे पृष्ठों द्वारा तुझसे मिलने की इच्छा करता हूँ।

119

हाँ, मित्र, केवल यह पुस्तक ही नहीं परन्तु इस पुस्तक का लेखक मान्यता रखता है। जब हम उस लेखक की एक झलक देखते हैं, तो हमारा विश्वास और बढ़ जाता है।

क्योंकि उसे जानने का अर्थ उसमें प्रेम और विश्वास रखना है।

६ - इतना दुःख क्यो?

1

एक प्रेमी परमेश्वर कैसे ऐसा होने दे सकता है?

६ - इतना दुःख क्यो?

६ - इतना दुःख क्यो?

2

क्लारा एडंरसन नाम की एक नौकरानी सैंनफ्रान्सिसको में रहती थी। क्लारा एक अत्यन्त आदर्श और सदाचारी महिला थी।

पन्द्रह साल तक एक ही स्वामी की सेवा करने के बाद एक दिन क्लारा गायब हो गई।

उसके स्वामी को इस विषय में कोई जानकारी नहीं थी कि वह कहाँ चली गई।

बहुत समय तक उसे किसी ने नहीं देखा।

तब अचानक, बहुत दिनों तक ढूढंने के बाद, उस शहर के समाज सेवा विभाग ने उसे ढूंढ लिया।

क्लारा सैंनफ्रान्सिसको के बाहर एक पहाड़ पर भूख के कारण मरणावस्था में छिपी हुई पाई गई। उसने कहा, "मैं मरना चाहती हूँ। मुझे अकेला छोड़ दो।" जब एक पत्रकार ने, जिसने अन्त में उसे ढूंढ लिया था उससे प्रश्न किये तो क्लारा ने कहा, "देखो कोई भी मेरी परवाह नहीं करता। मैं केवल एक नौकरानी हूँ -- इस समाज में हज़ारों में से केवल एक तुच्छ कार्यकर्ता हूँ। मेरे जीवन का कोई मूल्य नहीं है। मेरा कोई नज़दीकी रिश्तेदार नहीं है, कोई परिवार नहीं है, कोई मित्र नहीं है।

मैं इतनी अकेली हूँ कि मैं जीना नहीं चाहती। ऐसा

६ - इतना दुःख क्यो?

कोई नहीं है जिसे मैं अपना जान सकूं -- कोई भी नहीं है जिसके सामने मैं अपना हृदय खोल सकूं। इसलिए मुझे बस मर जाने दो, क्योंकि वास्तव में मेरी परवाह करनेवाला कोई नहीं है।"

3

"कोई परवाह नहीं करता! " एक सूनसान ग्रह पर पुरुषों और स्त्रियों की यह निराशाजनक पुकार है।

हाल ही में परमेश्वर के संबंध में एक निरीक्षण के दौरान, लोगों से यह पूछा गया, "यदि आप परमेश्वर से एक प्रश्न पूछ सकते, तो वह प्रश्न क्या होता?"

और आप? आप परमेश्वर से क्या पूछना चाहेंगे?

लाखों लोग यह पूछेंगेः "परमेश्वर, क्या तू वास्तव में मेरी देखभाल करता है? यदि तू बहुत अच्छा है तो इतनी अधिक बीमारियाँ, दुख और मृत्यु हमारे संसार में क्यों है?"

"क्यों इतनी अधिक हृदय की पीड़ा और दुख है?"

"अकाल, बाढ़ें, प्राकृतिक विपदा, और युद्ध क्यों है।"

4

जब हम अपने चारो ओर देखते हैं तब मालूम होता है कि इस संसार में एक शैतानी शक्ति है। चारों ओर हर दिन भयानक शोकपूर्ण घटनाएँ हो रही हैं।

६ - इतना दुःख क्यो?

5

(दृश्य)

इस संसार में इन सब शोकपूर्ण घटनाओं, दुःख, और पीड़ा का जिम्मेदार कौन है?

बहुत से लोग परमेश्वर को इन मुसीबतों के लिए दोषी ठहराते हैं।

कितनी बार आप उन्हें यह प्रश्न पूछते हुए सुनते हैं कि, "परमेश्वर ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?"

6

आइए हम देखते हैं कि बाईबिल इस अच्छाई और बुराई के बीच हो रहे महान युद्ध के विषय में क्या कहती है। आप पूछ सकते हैः "यदि परमेश्वर इन समस्त दुःखों और तकलीफों को इस संसार में नहीं लाया, तो वास्तव में इन दुःखों के लिए कौन जिम्मेदार है?"

7

बाइबिल दोषी शक्ति की ओर इशारा करती है! यीशु ने एक किसान की कहानी बताई जिसने अपने खेत में अच्छे बीज बोए, परन्तु जब वे पौधे उगे,

8

तो वहाँ उस खेत में जंगली दाने के पौधे भी दिखाई दिए।

६ - इतना दुःख क्यो?

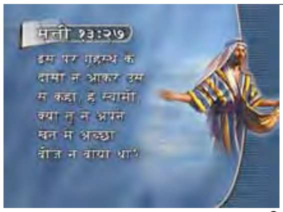

9

(मूलपाठ : मत्ती १३ : २७)

"इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उस से कहा, हे स्वामी, क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था?

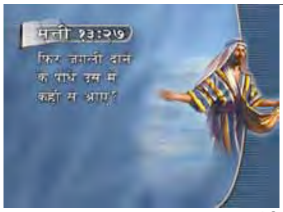

10

फिर जंगली दाने के पौधे उस में कहाँ से आए?"

वे यह जानना चाहते थे कि,"वे जंगली दाने के पौधे कहाँ से आए?"

11

(मूलपाठ : मत्ती १३ : ३७ - ३९)

"उसने उनको उत्तर दिया, कि अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है।"

12

खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य के सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं।"

13

"जिस बैरी ने उनको बोया वह शैतान है।"

मत्ती १३:३७ - ३९

14

आप देखते हैं कि जब परमेश्वर प्रत्येक को प्रेम और दया दिखाने का प्रयत्न करता है, तो उसी समय इस दुनिया में एक दूसरी शक्ति परमेश्वर के बच्चों के जीवन में आपत्ति, दुःख, मृत्यु और बीमारियाँ लाती है।

६ - इतना दुःख क्यो?

15

बाईबिल की अंतिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य हमें यह बतलाती है कि इन सब का आरम्भ कैसे हुआ जिससे स्वर्ग में क्या हुआ था हम सच्चाई को जान सके जिसके कारण पृथ्वी पर इतनी अधिक दुख और पीड़ा आई। हम इस बुराई के मूल की खोज करेंगे। यह जानकर आप को आश्चर्य होगा परन्तु स्वर्ग में एक बार लड़ाई हुई थी!

16

(मूलपाठ : प्रकाशित-वाक्य १:७-९)

"फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले, और अजगर और उसके दूत उससे लड़े,

17

परन्तु वे प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिए फिर जगह न रही।

18

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और संसार का भरमाने वाला है;

19

वह पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।"

प्रकाशितवाक्य १२:७-९

६ - इतना दुःख क्यो?

20

अब, ध्यान दीजिए कि शैतान या इब्लीस का प्रकाशितवाक्य १२:३,४ में किस प्रकार परिचय दिया गया है।

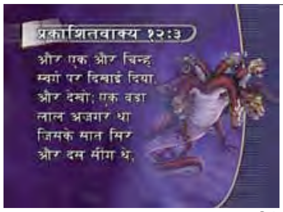

21

(मूलपाठः प्रकाशित-वाक्य १:३,४)
"और एक और चिन्ह स्वर्ग पर दिखाई दिया, और देखो; एक बड़ा लाल अजगर था जिसके सात सिर और दस सींग थे,

22

और उसके सिरों पर सात राजमुकुट थे।

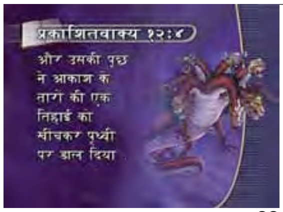

23

"और उसकी पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचकर पृथ्वी पर डाल दिया---"

24

प्रत्यक्ष रूप से स्वर्ग के एक-तिहाई स्वर्गदूतों ने बहकाने वाले का अनुसरण किया जिसने परमेश्वर के विरुद्ध राजद्रोह किया था।

परन्तु अब हम लूसीफर नामक गिराए गए स्वर्गदूत के विषय में और अधिक खोज करेंगे। पुराने नियम में उसका सोर के राजा के रूप में वर्णन किया गया है, और उसके बारे में यह कहा गया है,

६ - इतना दु:ख क्यो?

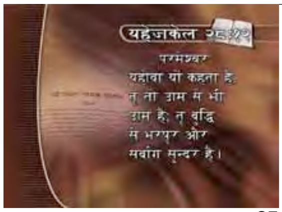

25

(मूलपाठ : यहेजकेल २८:१२-१४)

"....परमेश्वर यहोवा यों कहता है, तू तो उतम से भी उतम है; तू बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर है।

यहेजकेल २८:१२

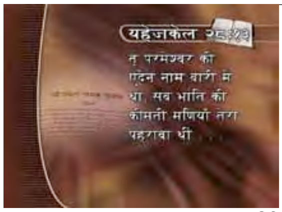

26

तू परमेश्वर की एदेन नाम बारी में था, सब भांति की कीमती मणियाँ तेरा पहरावा थीं--

यहेजकेल २८:१३

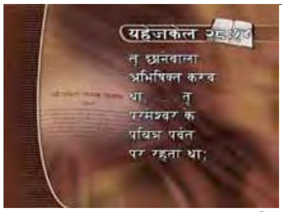

27

तू छानेवाला अभिषिक्त करूब था, ...तू परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर रहता था ;

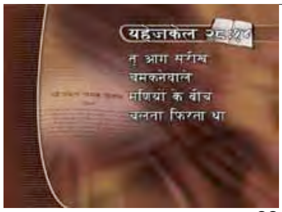

28

तू आग सरीखे चमकनेवाले मणियों के बीच चलता फिरता था"

यहेजकेल २८:१४

29

लूसीफर एक सुन्दर स्वर्गदूत था। उसे पूर्ण बनाया गया था। वह एक ऐसा स्वर्गदूत था जो छानेवाले करूब के रूप में परमेश्वर के निकट खड़ा रहता था।

30

लूसीफर का स्वर्ग में बहुत उच्च स्थान था। दया के सिंहासन या परमेश्वर के पवित्र सिंहासन के दोनों ओर दो स्वर्गदूत थे -- एक दाई ओर और दूसरा बाई ओर। लूसीफर उनमें से एक था।

६ - इतना दु:ख क्यो?

31

वह स्वंय परमेश्वर के निकट होने पर भी संतुष्ट नहीं था। वह स्वंय परमेश्वर बनना चाहता था। लूसीफर और उसके परमेश्वर के साथ घनिष्ट संबंध के बीच कुछ हो गया। परमेश्वर ने लूसीफर से कहा,

32

(मूलपाठ : यहेजकेल २८:१५)
"जिस दिन से तू सिरजा गया, और जिस दिन तक तुझ में कुटिलता न पाई गई "
यहेजकेल २८:१५

33

(मूलपाठ : यहेजकेल २८:१७)
"सुन्दरता के कारण तेरा मन फूल उठा था; और विभव के कारण तेरी बुद्धि बिगड़ गई थी..."
यहेजकेल २८:१७

34

यह सुन्दर और सम्मानित स्वर्गदूत स्वार्थी बन गया। उसने केवल परमेश्वर की महिमा और उपासना का लालच किया। वह शक्ति का भूखा था। उसके पास अपने सृष्टिकर्ता को विश्व पर राज करने की चुनौती देने का साहस था। ध्यानपूर्वक सुनिए:

६ - इतना दुःख क्यो?

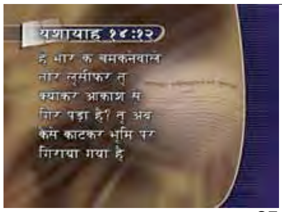

35

(यशायाह १४:१२-१४)

"हे भोर के चमकनेवाले तारे लूसीफर तू क्योंकर आकाश से गिर पड़ा है ! तू अब कैसे काटकर भूमि पर गिराया गया है ..."

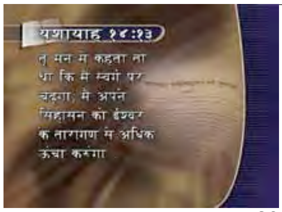

36

तू मन में कहता तो था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा...

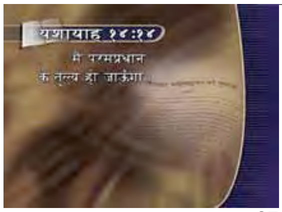

37

"... मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊँगा।"

यशायाह १४:१२ - १४

38

जैसे ही ये अभिमानी शब्द लूसीफर के होंठों से निकले वैसे ही स्वर्ग का सम्पूर्ण प्रेम और एकता लाखों स्वार्थी टुकड़ों में टूटकर बिखर गई।

39

इसके थोड़े ही समय बाद लूसीफर ने दूसरे स्वर्गदूतों के बीच असंतोष की भावना फैलानी शुरू कर दी थी। धीरे-धीरे किन्तु निश्चित रूप से उसने परमेश्वर के प्रेम और न्याय का अपमान करना आरम्भ किया।

६ - इतना दुःख क्यो?

40

एक पेटी में सड़े हुए फल की तरह, उसका राजद्रोह स्वर्ग में दूसरे स्वर्गदूतों के बीच फैलने लगा।

कदाचित आप यह सोच रहें होंगें कि परमेश्वर ने उसी समय शैतान को नष्ट क्यों नहीं कर दिया।

परमेश्वर यदि चाहता तो लूसीफर और उसके स्वर्गदूतों को जो उसके साथ इस क्रांति में सम्मिलित हो गए थे एक क्षण में नष्ट कर सकता था, परन्तु यदि उसने ऐसा किया होता तो उसके बनाए हुए सारे प्राणी डर कर उसकी सेवा करते।

६ - इतना दुःख क्यो?

41

मान लीजिए कि परमेश्वर हमारे चुनने की स्वतंत्रता को हमसे दूर कर देता और हम सब को रोबोट की तरह बना देता। आप में से कितने ऐसे हैं जिनके पास बच्चे हैं? काफी लोगों के पास हैं। क्या आप एक रोबोट बच्चा चाहेंगे? क्या आप ऐसा बच्चा पसन्द करेंगें जिसका प्रोग्राम आपने आपकी कही गई प्रत्येक बात का पालन करने के लिए निर्धारित कर दिया हो? आप का बच्चा सुबह उठकर कहे, "हां, मां मैं अपने चावल खाऊंगा।" "हां पिताजी, मैं अपना घर साफ करुंगा।" तो आपके पास एक बच्चा नहीं परन्तु एक रोबोट है - एक ठण्ड़ा, लोहे और मशीन का रोबोट। क्या आप इस प्रकार का बच्चा चाहेंगें? कभी नहीं। और न ही परमेश्वर।

42

परमेश्वर प्रेम का परमेश्वर है। वह केवल अपने बनाए गए प्राणियों के साथ एक प्रेमपूर्ण रिश्ते में ही खुश रह सकता है जहां वे उसकी उपासना करते हैं क्योंकि वे उससे प्रेम करते हैं और उस पर विश्वास करते हैं।

६ - इतना दुःख क्यो?

43

शैतान ने परमेश्वर के नियमों और न्याय को चुनौती दी थी, लेकिन परमेश्वर ने इन नियमों को जबरदस्ती यह दिखाने के लिए नहीं बनाया कि वह उनका स्वामी है !

परन्तु उनको इसलिए बनाया जिससे वह उसके बनाए गए प्राणियों की रक्षा कर सके, और उनकी शांति और खुशी को सुनिश्चित कर सकें ।

44

उसके नियम उस लाल बत्ती और गतिवधि करने वाले चिन्हों के समान हैं जोकि हमारी सुरक्षा और अच्छाई के लिए नियोजित किए गए हैं। परन्तु सब स्वर्गदूतों में सबसे अधिक सम्मानित प्राप्त करने वाला यह सोचता था कि उसने अपने आपको बनाने वाले परमेश्वर की अपेक्षा इस विश्व को और अधिक अच्छे ढंग से चला सकता हैं।

45

शैतान ने, "जो परमेश्वर के विपरीत था", अपने आपको एक दुष्टात्मा बना लिया !

६ - इतना दुःख क्यो?

46

(दृश्य)

परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को आज्ञा का पालन करने या न करने की छूट देता हैं। निष्पक्षता और प्यार के कारण, परमेश्वर ने शैतान को इस विश्व के समक्ष यह प्रदर्शित करने की अनुमति दे रखी है कि वह किस प्रकार से इस संसार को चलाएगा। हम नहीं समझ सकते कि यह सब कैसे हुआ जब कि परमेश्वर सब को प्यार करने वाला और सबके लिये अच्छा हैं।

47

स्वर्ग में शुरू होने वाली लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है, उसने केवल जगह बदल ली हैं !

पृथ्वी वह भूमि है जिसके ऊपर अच्छाई और बुराई की महान लड़ाई लड़ी जा रही है।

जहां शैतान यह प्रर्दशन करेगा कि किस प्रकार वह इस संसार को चलाएगा।

48

परन्तु पृथ्वी ही क्यों? हमारे ही ग्रह के साथ ऐसा क्यों है?

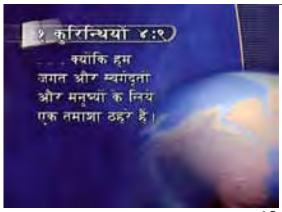

49

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों ४: ९)

"...क्योंकि हम जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिये एक तमाशा ठहरे हैं ?"

१ कुरिन्थियों ४:९

६ - इतना दुःख क्यो?

50

पृथ्वी अभी - अभी सृष्टिकर्त्ता के हाथों से बन कर निकली थी -- अति सुन्दर और पूर्ण। प्रत्यक्ष रूप से शैतान ने भी ऐसा ही सोचा क्योंकि उसने इसे परमेश्वर से छीन लेने योग्य समझा। वह इस कोमल और नवजात ग्रह पर कब्जा करने की योजना बनाएगा।

51

यद्यपि आदम और हव्वा, जो मनुष्य जाति के माता और पिता थे, पूर्ण और सिध्द बनाये गये थे, परन्तु उन्हें बुराई की सम्भावना से दूर नहीं रखा गया था। उन्हें इस बात की छूट दी गई थी कि वे चाहें तो परमेश्वर को प्यार करें अथवा उसके पीछे चलें या फिर चाहें तो उसके नियमों का पालन करने से इन्कार कर दें। परन्तु उनकी वफादारी की परख होनी थी, और परीक्षा केवल एक पेड़ पर केन्द्रित होनी थी।

52

(मूलपाठ : उत्पत्ति २:१६, १७)

"सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है;

६ - इतना दु:ख क्यो?

53

पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए, उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

उत्पत्ति २ : १६, १७

यह एक उचित निवेदन जान पड़ा होगा। उन्होंने बहुत हद तक अपने आपको सुरक्षित महसूस किया होगा। परन्तु मनुष्य अत्यधिक क्षतिग्रस्त तब हो जाता है जब वह पूर्णरूप से चौकस ना हो।

54

हव्वा के साथ ऐसा ही हुआ था।

उसको बहकाने के लिए शैतान ने अपनी अलौकिक शक्ति का प्रयोग किया।

शैतान खुलेआम बहुत कम काम करता है। वह बहुत धोखेबाज है। वह संगठनों, लोगों, या यहां तक कि सांप तक का भी प्रयोग करता है!

55

इसलिए पतरस ने कहा :

56

(मूलपाठ : इफिसियों ६:११-१२)

"परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको।"

६ - इतना दुःख क्यो?

57

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से है,

58

इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है।"

इफिसियों ६:११,१२

59

हव्वा को धोखा दिया गया।

उसे इस बात की शंका बिल्कुल नहीं थी कि जो बातें सांप कह रहा है वह शैतान की ओर से आई थी।

वह शैतान, जो सांप के द्वारा बोल रहा था, उसने उससे पूछा,

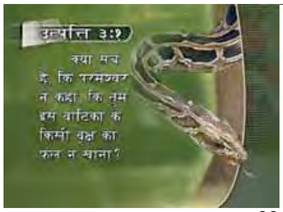

60

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १)

"....क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना ?"

उत्पत्ति ३: १

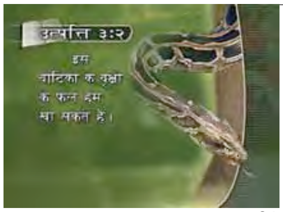

61

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : २ - ४)

हव्वा ने उत्तर दिया, "इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं;

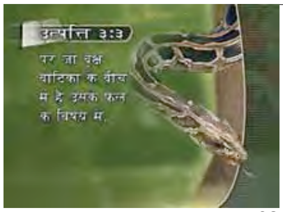

62

पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है उसके फल के विषय में,

६ - इतना दुःख क्यो?

63

परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।

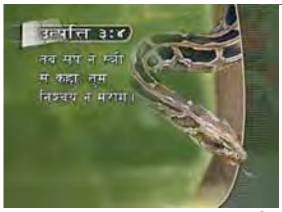

64

तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे।"
उत्पत्ति ३ : २ - ४

65

जब हव्वा ने साँप की बातें सुनी, तब उसके मस्तिष्क में यह बात अवश्य ही आई होगी कि यह जो कुछ कह रहा है वह परमेश्वर की बातों के एकदम विपरीत है। कदाचित यह देखते हुए कि वह असमजंस में पड़ गई है, साँप ने तुरन्त कहा,

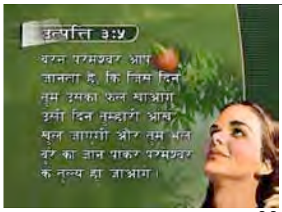

66

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : ५)
"वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।"
उत्पत्ति ३ : ५

६ - इतना दुःख क्यो?

67

शैतान ने यह सुझाव दिया कि परमेश्वर अन्यायी है,
और वह कुछ अच्छी बातें छुपा रहा है।
परमेश्वर के तुल्य बनना उसकी हार्दिक अभिलाषा थी
और यही उसके गिरने का कारण था।
अब यह बात हव्वा को भी अच्छी लगने लगी और
शीघ्र ही उसी क्षण वह बहक गई।

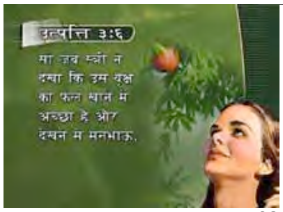

68

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : ६)
"सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में
अच्छा है और देखने में मनभाऊ,

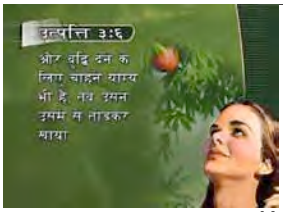

69

और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है, तब उसने
उसमें से तोड़कर खाया..."
उत्पत्ति ३ : ६

70

और हव्वा ने आदम को वह फल दिया, और उसने
उसको खाया।

71

आदम और हव्वा परमेश्वर के प्रेम और ईमानदारी की
परीक्षा में असफल हो गए, और कुछ समय के बाद ही
वे यह जान गए कि कुछ गलत हुआ है।

६ - इतना दुःख क्यो?

72

शैतान ने नवजात संसार का अपहरण कर लिया। और उसी क्षण से, उसने अपने आपको इस शीर्षक से संबोधित किया कि वह, "दुनिया का राजकुमार है।" इस राजद्रोह से उसने अपने आपको इस ग्रह का शासक बनाया !

आदम और हव्वा ने शैतान की बातों को सुना था।

73

और जब यह अत्यन्त शोकपूर्ण दिन बीत गया, तब हमेशा की तरह संध्या के समय में परमेश्वर आया, और उसने आदम और हव्वा को पुकारा। अब तक, यह दिन का सबसे खुशी का समय होता था जब उन्हें परमेश्वर के साथ चलने का और प्रत्यक्ष बातें करने का मौका मिलता था। परन्तु इस दिन वे भाग गए और अपने आप को झाड़ियों में छुपा लिया!

74

अन्त में, आदम धीरे से वाटिका की झाड़ियों के पीछे से बाहर आया और उसने प्रायश्चित किया,

75

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १०)

"...मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये मैं छिप गया।"

उत्पत्ति ३ : १०

६ - इतना दुःख क्यो?

76

इससे पहले आदम कभी भी नहीं डरा था, परन्तु ये पाप ने करवाया।

यहां तक कि यह एक व्यक्ति के दिल में परमेश्वर के लिए डर पैदा करता है।

77

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : ११)

परमेश्वर ने कहा, "...जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे बर्जा था, क्या तू ने उसका फल खाया है ?"

अध्याय ११

आदम ने उत्तर दिया:

78

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १२)

"...जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को दिया है उसी स्त्री ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैंने खाया।"

उत्पत्ति ३ : १२

कुछ घण्टे पहले, आदम हव्वा के साथ मरने के लिए तैयार हो गया था।

अब उसने उस पर दोष लगाया, और परमेश्वर पर भी दोष लगाया कि उसने उस स्त्री को बनाया है। किस प्रकार पाप एक पवित्र प्रेम के टुकड़े कर देता हैं!

६ - इतना दुःख क्यो?

79

परन्तु हव्वा दोष लगाने में कुछ कम नहीं थी। जब परमेश्वर ने उससे पूछा कि उसने क्या किया, तो उसका उत्तर यह था,

80

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १३)

"......सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैंने खाया।"

उत्पत्ति ३ : १३

हव्वा ने भी परमेश्वर पर दोष लगाया। दूसरे शब्दों में, वह यह कह रही थी, "सांप ने जिसे तूने बनाया था उसने मुझे मुसीबत में डाला।"

81

उसी दिन आदम और हव्वा मृत्यु के लिए दंडित हो गए थे!

जीवन के वृक्ष का फल न खा लें इसलिए परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उस बगीचे से निकाल दिया जो उनका घर था।

शैतान ने कहा कि वे कभी नहीं मरेंगे, परन्तु बाइबिल यह कहती है कि,

६ - इतना दुःख क्यो?

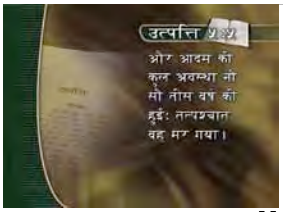

82

(मूलपाठ : उत्पत्ति ५ : ५)

"और आदम की कुल अवस्था नौ सौ तीस वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया।"

उत्पत्ति ५ : ५

बहुत देर के बाद, उन्हें यह मालूम हुआ कि वह शैतान

83

(मूलपाठ : यूहन्ना ८:४४)

यूहन्ना ८:४४

"...झूठा है वरन झूठ का पिता है।"

यूहन्ना ८:४४

84

संसार के दुःख और बरबादी के लिए परमेश्वर को दोषी ठहराना आसान है, परन्तु शैतान ही वास्तव में इस विनाश के लिए जिम्मेदार है।

85

(दृश्य)

वही है जो इस ग्रह पर मुसीबत लाया और सर्वदा से वही पाप और दुःख का कारण है। यीशु ने शैतान के चेहरे से और उसके दुख पहुँचाने के उपायों पर से मुखौटा उतार दिया।

६ - इतना दुःख क्यो?

86

सब्त के दिन जब वह सभा में उपदेश दे रहा था, तब उसने देखा कि एक स्त्री जो लंगड़ी थी उसके सामने झुकी।

उसकी दुःख भरी परिस्थितियों से प्रभावित होकर, यीशु ने उसे ठीक कर दिया।

87

अधिकारीगणों ने तुरन्त उसकी आलोचना की क्योंकि उसने सब्त के दिन उसे ठीक कर दिया था जोकि परमेश्वर की उपासना का पवित्र दिन है। परन्तु देखिए उसने अपने कार्यो का बचाव कैसे किया:

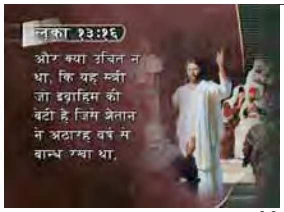

88

(मूलपाठ : लूका १३ : १६)
"और क्या उचित न था, कि यह स्त्री जो इब्राहिम की बेटी है जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बान्ध रखा था,

89

सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई जाती?"
(लूका १३ : १६)

90

यीशु ने कहा कि शैतान ने इस स्त्री को अठारह वर्षो से अपने कब्जे में कर रखा था।

केवल शैतान ही इसका दोषी है!

वास्तव में, शैतान ही सभी बीमारी, दुःख, निराशा, और मृत्यु के पीछे की पापपूर्ण शक्ति है !

६ - इतना दुःख क्यो?

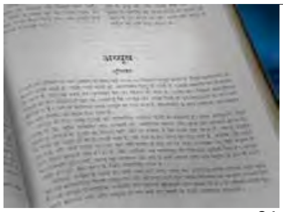
91

शैतान और परमेश्वर के बीच में होने वाले वाद-विवाद और शैतान की रणकौशल का अत्यधिक स्पष्ट और विस्तारपूर्वक वर्णन बाइबिल में केवल अय्यूब के प्रथम अध्याय की अपेक्षा और कहीं देखने को नहीं मिलेगा।

92

शैतान के गिराए जाने के कुछ समय के बाद परमेश्वर के पुत्रों ने अपने आप को उसके समक्ष पेश किया।
शैतान भी आया।
इस विषय में सोचिए!
"परमेश्वर के पुत्रों" की एक सभा थी, और शैतान वहाँ बिना बुलाए आया था!

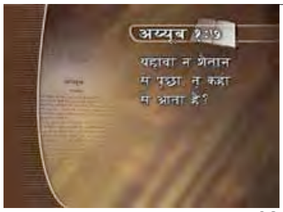

93

(मूलपाठ : अय्यूब १:७)
"यहोवा ने शैतान से पूछा, तू कहां से आता है ?"
(अय्यूब १:७)
दूसरे शब्दों में, तुम्हें किसने बुलाया? तुम्हें यहां आने का क्या अधिकार है? शैतान ने प्रभु को यह उत्तर दिया,

६ - इतना दु:ख क्यो?

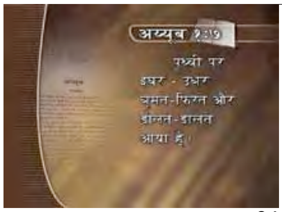

94

"…. पृथ्वी पर इधर - उधर घूमते - फिरते और डोलते - डालते आया हूँ।"

(अय्यूब १: ७)

शैतान ने पृथ्वी पर राज करने का दावा किया और उसने आदम का स्थान लिया !

95

आदम को "परमेश्वर का पुत्र" कहा गया (लूका ३:३८ देखिए), बिल्कुल उन लोगों की तरह जो उस दिन परमेश्वर से मिलने आए थे।

96

जिस प्रकार वास्तव में आदम हमारे संसार का मुखिया था, क्या उसी प्रकार वे भी दूसरे संसारों के मुखिया थे? शैतान का पृथ्वी को प्रतिनिधित्व करने का दावा करने पर प्रभु ने शैतान से कहा:

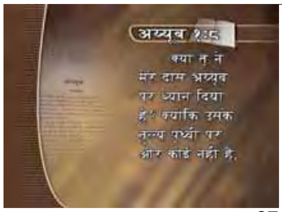

97

(मूलपाठ : अय्यूब १:८,९, ११)

"…क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है?, क्योंकि उसके तुल्य पृथ्वी पर और कोई नहीं है,

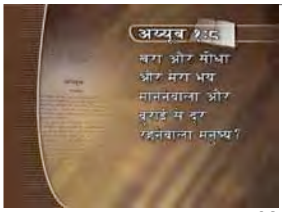

98

खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य?"

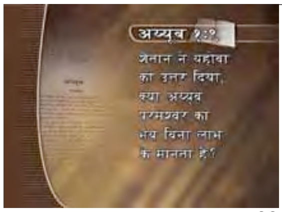

99

शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है?

६ - इतना दुःख क्यो?

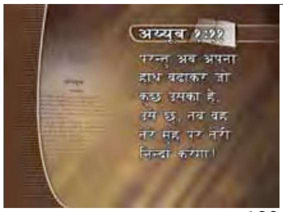

100

परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा! "

अय्यूब १ : ८ ,९, ११

101

कैसी चुनौती है!

शैतान ने यह दावा किया कि अय्यूब परमेश्वर के प्रति वफादार केवल इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने उसे बहुत कुछ दिया था और इसलिए नहीं कि वह परमेश्वर को प्यार करता था और उस पर विश्वास करता था।

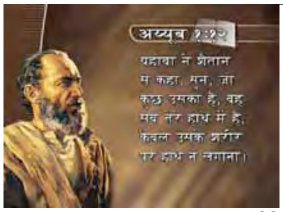

102

(मूलपाठ : अय्यूब १:१२)

"यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, जो कुछ उसका है, वह सब तेरे हाथ में है, केवल उसके शरीर पर हाथ न लगाना।'

103

तब शैतान यहोवा के सामने से चला गया।" अय्यूब १:१२

शैतान चला गया, वह अय्यूब की सम्पत्ति को नष्ट करने के लिये उत्सुक था।

६ - इतना दु:ख क्यो?

104

विपत्तियाँ शीघ्र आरम्भ हुई :

पहली: शबा के लोगों ने अय्यूब के जानवरों को चुरा लिया और उसके सेवकों को मार डाला।

105

दूसरी: आकाश से बिजली गिरी और उससे उसकी भेड़ें और उसके गड़रिए जल कर भस्म हो गए।

106

तीसरी: कसदी लोग वहाँ आए और अय्यूब के ऊँटों को लूटकर ले गए।

107

चौथी: (अत्यन्त दिल दहला देने वाला समाचार): तभी बवंडर आया और अय्यूब के ज्येष्ठ पुत्र के घर को उसने नष्ट कर दिया। वहाँ खाना - पीना चल रहा था और अय्यूब के दसों बच्चे मर गए !

108

बेचारा अय्यूब!

उसने सोचा कि प्रभु ने उसकी सम्पत्ति उससे ले ली है और उसके हार्दिक दु:ख का कारण वही है।

वह यह नहीं समझ पाया कि ये सब शैतान ने किया है!

तब हालांकि उसने अपने दु:खों से निदान पा लिया, लेकिन अय्यूब ने परमेश्वर के प्रति वफादारी नहीं बदली।

६ - इतना दुःख क्यो?

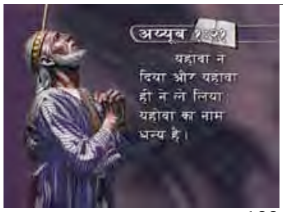

109

(मूलपाठ : अय्यूब १ : २१)

उसने कहा;"...यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने ले लिया; यहोवा का नाम धन्य है।"

अय्यूब १ : २१

हालांकि वह उन विपत्तियों को नहीं समझ सका जिसने उसकी सम्पत्ति और उसके बच्चों को बरबाद कर दिया था, तब भी अय्यूब पहले की ही तरह परमेश्वर की अच्छाइयों पर विश्वास करता था। परन्तु शैतान का कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ था। उसने परमेश्वर को फिर से चुनौती दी, यह कहते हुए,

110

(मूलपाठ : अय्यूब २ : ४ - ६)

"..... हां, प्राण के बदले मनुष्य अपना सब कुछ दे देता है।

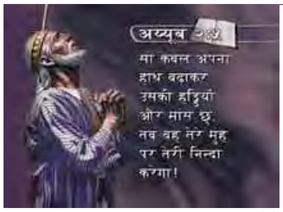

111

सो केवल अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डियाँ और मांस छू, तब वह तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।"

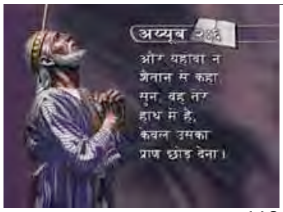

112

और यहोवा ने शैतान से कहा, सुन, वह तेरे हाथ में है, केवल उसका प्राण छोड़ देना।"

अय्यूब २ : ४ - ६

६ - इतना दुःख क्यो?

113

परीक्षा जारी थी!

अय्यूब जिसका जीवन दुःखों से भर गया था, क्या परमेश्वर के प्रति अब भी वफादार रहेगा, या वह परमेश्वर के विरुद्ध हो जाएगा?

114

(मूलपाठ : अय्यूब २:७)

"तब शैतान यहोवा के सामने से निकल गया,

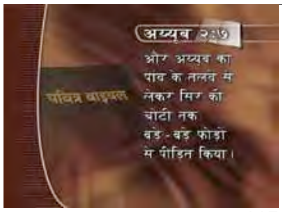

115

और अय्यूब को पांव के तलवे से लेकर सिर की चोटी तक बड़े - बड़े फोड़ों से पीड़ित किया।"   अय्यूब २ : ७

116

यदि आप के शरीर में कभी एक फोड़ा भी निकल जाए, तो आप को मालूम है कि एक ही फोड़ा कितना दुःखदायी हो सकता है।

कल्पना कीजिए कि यदि वह आपके सिर से पांव तक भर जाए तो क्या होगा!

117

यहाँ तक कि शैतान ने अय्यूब से उसकी धन सम्पत्ति, उसके बच्चे और उसका स्वास्थ्य, उससे छीन लिया, फिर भी अय्यूब परमेश्वर के प्रति वफादार रहा।

किस प्रकार का आदमी था वह !

बाइबिल कहती है,

६ - इतना दुःख क्यो?

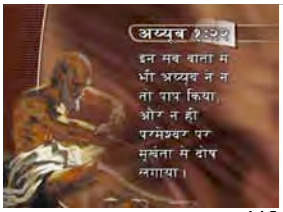

118

"इन सब बातों में भी अय्यूब ने न तो पाप किया, और न ही परमेश्वर पर मूर्खता से दोष लगाया।"

अय्यूब १ : २२

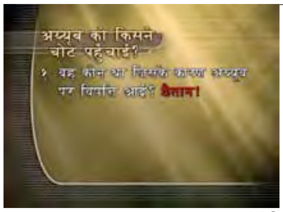

119

अय्यूब को किसने चोट पहुँचाई?

वह कौन था जिसके कारण अय्यूब पर विपत्ति आई?

शैतान!

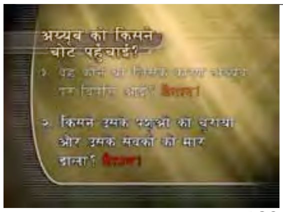

120

किसने उसके पशुओं को चुराया और उसके सेवकों को मार डाला? शैतान!

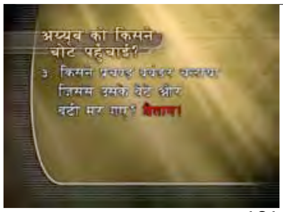

121

किसने प्रचण्ड़ बवंडर चलाया जिससे उसके बेटे और बेटी मर गए?

शैतान!

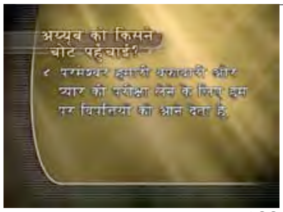

122

परमेश्वर हमारी वफादारी और प्यार की परीक्षा लेने के लिए हम पर विपत्तियों को आने देता है,

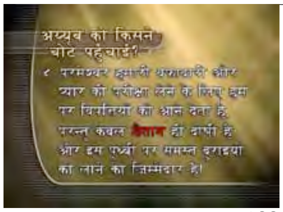

123

परन्तु केवल शैतान ही दोषी है और इस पृथ्वी पर समस्त बुराइयों को लाने का जिम्मेदार है!

६ - इतना दुःख क्यो?

124

हम सब व्याकुल करने वाले एक अधिकार और अवैधानिकता के सघंर्ष के बीच फंसे हुए हैं - एक ऐसी लड़ाई जो सृष्टिकर्ता और विद्रोही शैतान के बीच चल रही है। हम दर्शक नहीं है; हम भी उसके पात्र हैं, चाहे हम यह पसन्द करें या न करें।

125

शैतान को केवल एक कल्पना या एक प्रभाव मात्र समझना उस बुद्धिमान शक्ति के हमलों के सामने अपने आपको असुरक्षित छोड़ देना है।

126

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कहती है:

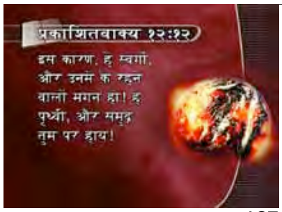

127

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १२ : १२)

"इस कारण, हे स्वर्गो, और उनमें के रहने वालों मगन हो!

हे पृथ्वी, और समुद्र तुम पर हाय!

128

क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है; क्योंकि जानता है कि उसका थोड़ा ही समय और बाकी है।"

प्रकाशितवाक्य १२ : १२

पतरस ने इस चुनौती को लिखा :

६ - इतना दुःख क्यो?

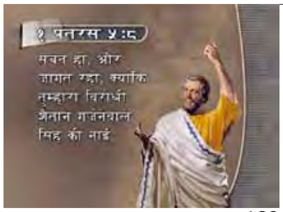

129

(मूलपाठ : १ पतरस ५ : ८)
"सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाई,

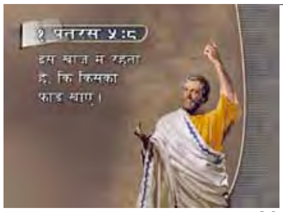

130

इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए।"
१ पतरस ५ : ८

131

परन्तु इतना होने पर भी शैतान हमेशा बुरा ही करता है, सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के पास सृष्टि के पुनः निर्माण की योजना है, जिसमें उसका प्रिय पुत्र सम्मिलित है जो हमारे पाप के कारण मरने के लिए तैयार हो गया ताकि हमें अनन्त जीवन मिल सके।

132

बाइबिल कहती है कि शैतान एक दहाड़ने वाले सिंह की तरह आता है।

133

शैतान ने राजा हेरोदस के द्वारा बालक यीशु को मारना चाहा। (वह हार गया)

134

(दृश्य)
शैतान स्वर्ग से स्वर्गदूत का नकाब पहनकर, तीन महान परीक्षाओं के साथ जंगल में यीशु के पास आया। (वह हार गया)

६ - इतना दुःख क्यो?

135

शैतान ने कलवरी पर यीशु को नाश करने के लिए भीड़ को भड़काया (वह सदा के लिये एक हारा हुआ शत्रु था)

136

यद्यपि एक कलवरी थी, पर एक पुनरुत्थान भी था! परमेश्वर की महिमा हो। यह परमेश्वर था जिसने अपना पुत्र दे दिया; और पुत्र ने अपने आपको, ताकि आपके और मेरे भाग्य बदल सके। वह विजय की घड़ी थी, और पृथ्वी पर शैतान के कैदियों को स्वतंत्र कराने का दिन था।

137

उस दिन शैतान एक हारा हुआ शत्रु हो गया। मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा सभी बुराईयों और दुःखों का नाश करने का अधिकार प्राप्त कर लिया।

इब्रानियों २ : १४:

138

(मूलपाठ : इब्रानियों २:१४)

"इसलिये जबकि लड़के मांस और लोहू के भागी हैं, तो वह अपने आप ही उनके समान उनका सहभागी हो गया,

139

ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे।"

६ - इतना दुःख क्यो?

140

शैतान ने विश्व के सभी विद्धानों के समक्ष यह प्रदर्शित करके दिखा दिया कि उसका स्वभाव किस प्रकार का है। और वह अभी भी यह दिखा रहा है कि वह दुनिया पर किस रीति से शासन करना चाहता है।

बवंडर, भूकम्प, बाढ़ें, बीमारी, निराशा और दर्द!

ये सब हम देखते हैं।

141

परन्तु इन सब के पीछे शैतान का अनदेखा अलौकिक कार्य है।

142

ये दुःख "परमेश्वर के कार्य नहीं हैं " - ये "शैतान के कार्य हैं।"

143

आप, दुःख, निराशा, और अपने जीवन की परेशानियों के विषय में सोच रहे होंगे।

आप अपने खोए हुए बच्चे या प्रेमी जन के विषय में सोच रहे होंगे, और पूछ रहे होंगे कि, "परमेश्वर कहाँ है?"

144

बाइबिल यह सिखाती है कि परमेश्वर है। वह आपके हृदय की पीड़ा, दुःख, और कठिनाईयों के बीच है। और पाप व दर्द को दूर करने के लिए वह शीघ्र आने वाला है।

६ - इतना दुःख क्यो?

145

अच्छा समाचार यह है कि इस सुन्दर ग्रह को, जिसे शैतान ने बन्दी बना लिया था, अब जल्दी ही छुड़ा लिया जाएगा। इस ज्ञान से इस भटके हुए ग्रह के चिन्तित और परेशान यात्रियों को शान्ति मिलनी चाहिए। परमेश्वर के पास धोखेबाज शैतान को नाश करने की एक योजना है, और हम इस योजना के विषय में आने वाली सभाओं में अध्ययन करेंगे। आइए देखे कि बाईबिल शैतान के बारे में क्या कहती है:

146

(मूलपाठ : यहेजकेल २८:१६, १८)

"...हे छानेवाले करुब मैं ने तुझे नाश किया है..."

147

सो मैंने तुझ में से ऐसी आग उत्पन की

148

जिससे तू भस्म हुआ, और मैंने तुझे...भूमि पर भस्म कर डाला है..."

यहेजकेल २८:१८

पाप और दुःख सदा के लिए समाप्त हो जाएगा।

६ - इतना दुःख क्यो?

149

हां, दोस्तो, यीशु जल्दी ही आ रहे हैं!

एक तुच्छ गलीली की तरह नहीं, एक अपमानित व्यति के तरह नहीं जिसपर थूका गया था और जिसका बहिष्कार किया गया था। उसकी तरह नहीं जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया था,

150

परन्तु राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु की तरह जिसके पास राज करने का अधिकार है। हमें उनसे मिलने के लिए तैयार हो जाना चाहिए, यदि हम ऐसा नहीं करेंगे, तो हम सब कुछ खो देंगे!

151

(दृश्य)

आज प्रश्न यह उठता है कि हमें किस पर विश्वास करना चाहिए ?

हमें किसके पीछे चलना चाहिए?

एक प्रेम करने वाले परमेश्वर के? या एक गिराए गए स्वर्गदूत के?

सीमा रेखाएँ खींची जा चुकी हैं; पूरे संसार को दो भागों में बांटा जा रहा है।

आप की वफादारी कहाँ है?

आप किसका साथ देंगे हैं?

६ - इतना दुःख क्यो?

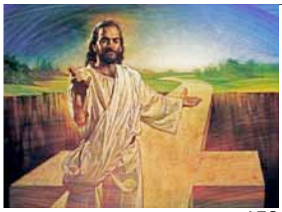

152

प्रत्येक बेचैन, अकेले हृदय को, प्रत्येक दर्द से भरे पापी आत्मा को, इस ग्रह पर युद्ध में सम्मिलित उसके सभी बच्चों को, यीशु प्यार भरा निमंत्रण देते हैं:

153

(मूलपाठ मत्तीः ११:२८)

"हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।"

मत्तीः ११:२८

154

(मूलपाठ : यूहन्ना ६:३७)

"...जो कोई मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।"

यूहन्ना ६:३७

क्या यह आनन्द का समाचार नहीं है?

६ - इतना दुःख क्यो?

155

यीशु जीवन की परेशानियों, दुःखों, टूटे हृदय और विफलता के बीच हैं।

वे आप के दुःखों को जिसे आप सह रहे हैं, समझते हैं।

उन्हें पता है कि कैसा अनुभव होता है जब आपका शरीर बीमारियों से बर्बाद हो रहा हो।

उन्होंने उस दर्द को सहा था जब क्रूर लोग उनके हाथों में कीले ठोक रहे थे।

वह अकेलेपन को भी जानता है। उसने उसे महसूस किया था जब वह अधेंरे में क्रूस पर अकेला चढ़ा था।

वह गरीबी जानते हैं जिसका अनुभव उन्हें फिलिस्तीन की सड़कों पर कम खाकर और बिना घर के रहने पर हुआ था।

आज उनके पास आइए। वे आपको नई आशा और प्रोत्साहन देंगे। यह सबसे अच्छी खबर है। जल्दी ही एक दिन यीशु फिर से आयेंगे और हमारे जीवन के दुःखों का अन्त कर देंगे। वे दोबारा हमें एक नई दुनिया देने आयेंगे।

पाप और पापियों का नाश हो जाएगा। शैतान भी अन्त में पूरी तरह से हार जाएगा।

यीशु की यह इच्छा है कि वे आपको परमेश्वर के

परिवार में शामिल कर लें, और उस नए बनाए ग्रह पर आपको अमरत्व का वरदान दें। परन्तु आपको यह निर्णय करना अनिवार्य है कि आपका प्रभु और स्वामी कौन होगा?

दोस्तो, यह निर्णय आपके जीवन और मृत्यु का मामला है!

क्या आप नहीं चाहेंगे कि सही का चुनाव करते हुए मसीह को अपना राजा मानें।

वे प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनकी बाहें खुली हुई हैं। वे कह रहे हैं, "आओ! आओ! आओ!

प्रार्थना में अपने सिरों को झुकाकर क्या आप यह कहेगें, "हाँ, प्रभु यीशु, मैं आ रहा हूँ?"

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

1

वह आपका जीवन भी बदल सकता है

2

दो व्यक्ति रेलगाड़ी में अमेरिका से हजारों मील दूर सफर कर रहे थे।

क्योंकि उनका सफर काफी लम्बा था, वे बातें करके अपना समय गुजार रहे थे।

वे मौसम के बारे में बातें कर रहे थे। वे राजनीति के विषय में बातें कर रहे थे।

वे अपने बचपन के अनुभवों, अपने घरवालों और अपनी शादियों के बारे में भी बातें कर रहे थे। उनका वार्तालाप अन्त में धर्म की बात पर होने लगा। उनमें से एक नास्तिक था।

तो दूसरा ईसाई था। एक परमेश्वर पर बिल्कुल विश्वास नहीं करता था तो दूसरे को परमेश्वर पर पक्का विश्वास था।

एक ने कभी भी बाइबिल नहीं पढ़ी थी। तो दूसरा उसे हमेशा पढ़ता था।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

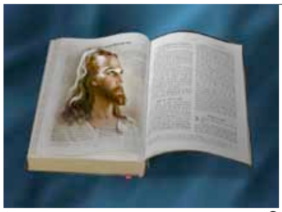
3

दोपहर बाद इस गर्मी के दिन उनकी चर्चा का विषय यीशु मसीह थे। उस नास्तिक ने अपने मसीही भाई से कुछ बहुत ही जरूरी प्रश्न पूछे। प्रश्न जैसेः तुम मसीही क्यों हो? क्या यह एक भूगोल का हादसा है? तुमने एक मसीही देश में जन्म लिया होगा, है न? यीशू किस प्रकार दूसरे महान लोगों से अलग है? क्या यीशु नैतिक शिक्षक या आचार संबंधी ज्ञानी से बढ़कर है? तुम इतने निश्चित कैसे हो कि यीशु ही सब कुछ हैं जो होने का वह दावा करता है? तुम इतना विश्वास कैसे रख सकते हो कि यीशु स्वर्गीय है और सदा का जीवन देने का उसका वायदा सच्चा है? दोपहर के समय उस गर्मी के दिन उस नास्तिक के किए गए प्रश्न काफी अच्छे प्रश्न थे। उसके मसीही मित्र ने उसको कुछ उतर दिए। मुझे कोई सन्देह नहीं है कि उन प्रश्नों के ठोस उत्तर और उन उतरों को समझने का अर्थ अनन्त जीवन है।

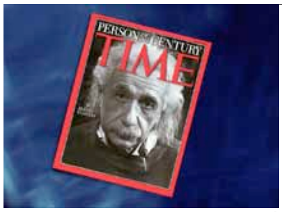

4

हमारे संसार में बेशक प्रसिद्ध लोग थे। उन लोगों का इस संसार को बेहतर जगह बनाने में काफी योगदान रहा।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

5

राजाओं, राष्ट्रपतियों, धर्मियों, फौजी नेताओं, वैज्ञानिकों और कलाकारों ने इस दुनिया पर अपनी छाप छोड़ दी है।

उनका नाम पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है।

6

परन्तु एक नाम इन सब नामों से ऊपर है। इतिहास भी उसके जन्म से पूर्व और बाद में विभाजित किया गया है।

उसका नाम यीशु है।

पूरे इतिहास में यीशु का नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

परन्तु उसका नाम सुनना एक बात है, और वास्तव में मानना दूसरी बात है।

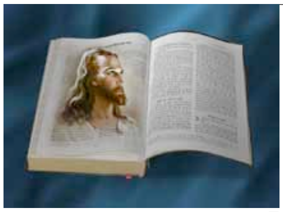
7

आज रात मैं आपको इतिहास के यीशु और बाइबिल के यीशु के साथ अधिक एवं पूरी तरह परिचित कराना चाहूँगा।

आइए शुरू से ही आरंभ करें। आप सोच रहे होंगे-कि यह यीशु कौन है? यह अलग कैसे है?

क्या वह केवल अच्छा आदमी, एक नैतिक शिक्षक या एक आचार संबंधी तत्व ज्ञानी ही था। दो चेले भी इन्हीं बातों पर सोच विचार कर रहे थे।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

8

पुनरुत्थान के दिन यीशु इमाउस के रास्ते पर जब दो चेलों से मिले

9

तो उसने उन्हें भविष्यवाणियाँ दिखाई जो कुछ दिनों पहले हुई थीं।

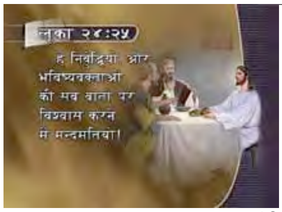

10

(मूलपाठ : लूका २४ : २५,२७)

"हे निर्बुद्धियों, और भविष्यवक्तओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियो!

11

तब उसने मूसा से और सब भविष्यवक्ताओं से आरंभ करके,

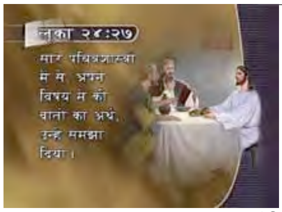

12

सारे पवित्रशास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया।"

लूका २४ : २५,२७

13

आइए हम उन सबूतों को देखे जो यह प्रमाण देते हैं कि यीशु ही मसीह है।

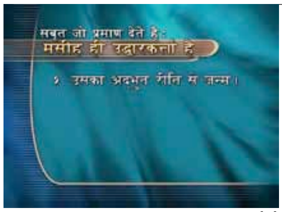

14

उसका अद्भुत रीति से जन्म यीशु के जन्म से बहुत पहले, यशायाह ने यह भविष्यवाणी की:

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

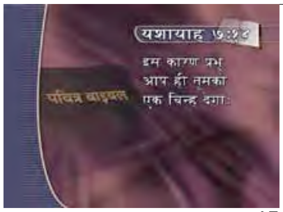

15

(मूलपाठ : यशायाह ७ : १४)

"इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा :

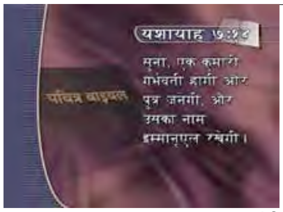

16

सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानूएल रखेगी।"

यशायाह ७ : १४

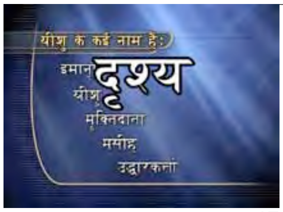

17

(दृश्य)

यीशु के कई नाम हैं, इमानूएल, यीशु, मुक्तिदाता, मसीह और उद्धारकर्त्ता।

यशायाह की यह भविष्यवाणी कि यीशु का जन्म एक कुंवारी से होगा उसके जन्म से ६०० वर्ष पहले लिखी गई थी।

एक स्वर्गदूत ने यह भविष्यवाणी की कि यीशु ही मसीह है एक सबूत के रूप में उद्धृत किया था। आइए देखें कि किस तरह स्वर्गदूत ने यीशु के जन्म के बारे में कुंवारी मरियम को बताया।

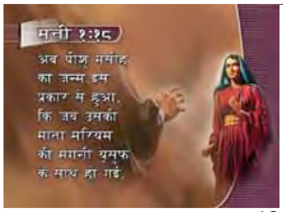

18

(मत्ती १ : १८)

"अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई,

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

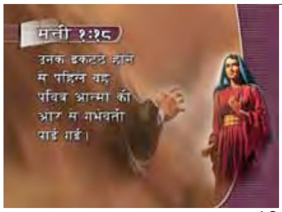

19

उनके इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई।"

मत्ती १ : १८

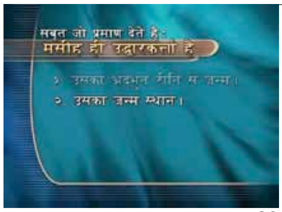

20

उसका जन्म स्थान

21

(मूलपाठ : मीका ५ : २)

"....बेतलहेम...तुझमें से मेरे लिए एक पुरूष निकलेगा जो इजराइलियों में प्रभुता करने वाला होगा......."

मीका ५ : २

यह बहुत ही आश्चर्यजनक बात है कि यीशु का जन्म बेतलहेम में हुआ था, ठीक उस शहर में जिसकी ६०० वर्ष पहले भविष्यवाणी हुई।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

22

(मूलपाठ : मत्ती २ : १)

"......यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ....."

मत्ती २ : १

नया नियम मीका की भविष्यवाणी को पूरा करने का आश्वासन देता है। यीशु एक अच्छे आदमी से बढ़कर था, एक नैतिक शिक्षक से बढ़कर था, एक आचार संबंधी तत्व ज्ञानी से बढ़कर था। वह एक कुवांरी से जन्मा था जैसे यशायाह भविष्यवक्ता ने भविष्यवाणी की थी। वह बेतलहम में पैदा हुआ जैसे मीका भविष्यवक्ता ने भविष्यवाणी की थी।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

23

बाइबिल की भविष्यवाणियाँ बहुत साल पहले ही हमें यीशु के जीवन की महत्वपूर्ण बातें साफ-साफ बताती हैं। ये भविष्यवाणियाँ बिल्कुल वैसी ही पूरी हुई जैसे की गई थीं। जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो परमेश्वर के पास एक योजना थी। उसके प्यार ने यीशु- उसके पुत्र को इस पृथ्वी पर आने के लिए कहा, कि वह पूर्ण जीवन जिए और हमारे पापों के लिए अपनी जान दे। उसने हमारी जगह ले ली ताकि हमें अनन्त जीवन मिले, यदि हम उसकी योजना को मान लें कि वह हमारा मुक्तिदाता है तो इसे उद्धारपाने की योजना कहते हैं।

24

लगभग २००० वर्ष पहले पूर्व दिशा के ज्योतिषियों ने बाइबिल का अध्ययन किया था।
उन्होंने यह पढ़ा था कि एक महान राजा आएगा और उन्हें मालूम था कि उसके आने का समय हो गया है।

25

उन्हें मालूम था कि समय हो गया है और सितारा उस नये जन्मे राजा के पैदा होने का चिन्ह था।
उन्होंने उसे बेतलहम में पाया और शीश झुकाकर यीशु की उपासना की।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

26

(मूलपाठ : लूका २ : ७)

"और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर,

27

चरनी में रखा; क्योंकि उनके लिए सराय में जगह न थी।"

लूका २ : ७

28

सराय में कोई कमरा खाली नहीं था, इसलिए यीशु को एक बक्से में डालकर वहाँ रखा गया जहाँ भेड़-बकरियों को रखा जाता था।

वह लाचार पैदा हुआ।

29

उसकी माँ बहुत दयालु थी,परन्तु वह जवान थी जब स्वर्गदूत ने आकर उसे बताया कि वह परमेश्वर के पुत्र को जन्म देगी।

30

यधपि वह "परमेश्वर का पुत्र" था, वह बिल्कुल अपने स्वर्गीय पिता के समान पूर्णरूप से परमेश्वर था।

पौलुस कहता है कि वह परमेश्वर के बराबर था और उसने मनुष्य की तरह एक सेवक का रूप धारण किया।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

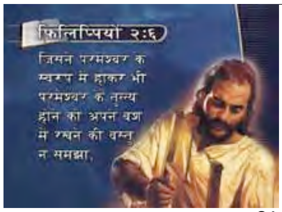

31

(मूलपाठ : फिलिप्पियों २ : ६)

"..... जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा,

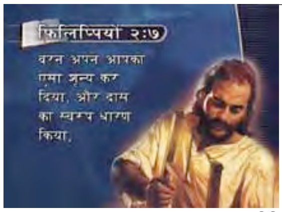

32

वरन अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया,

33

और मनुष्य की समानता में हो गया।"

फिलिप्पियों २ : ६, ७

34

इस पृथ्वी पर जीवन बिताने के लिए यीशु हमारी तरह बना।

परन्तु वह शुद्ध, साफ, बिना कोई दाग के था, ताकि वह अपने जीवन का बलिदान दे सके और हमें अनन्त जीवन मिल सके।

मसीह के जीवन के अन्तिम २४ घण्टों में, सदियों पुरानी भविष्यवाणियाँ विस्तारपूर्वक पूरी हुई।

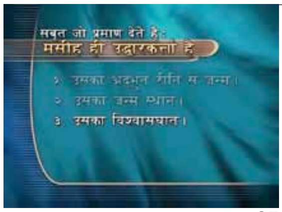

35

उसके साथ यहूदा ने जो विश्वासघात किया हम उसे एक उदाहरण के रूप में लेते हैं।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

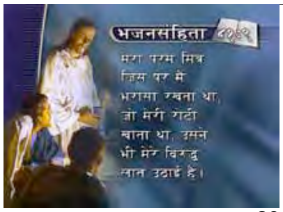

36

(मूलपाठ : भजनसंहिता ४१ : ९)

"मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है।"

पतरस ने यीशु से पूछा कौन उसे विश्वासघात करने जा रहा है, और यीशु ने उत्तर दिया,

37

"....जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूंगा, वही है...."

यूहन्ना १३ : २६

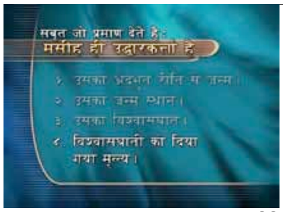

38

विश्वासघाती को दिया गया मूल्य

39

"........तब उन्होंने मेरी मजदूरी में चांदी के तीस टुकड़े तौल दिए।"

जकर्याह ११ : १२

40

(मूलपाठ : मत्ती २६ : १४, १५)

"तब यहूदा इस्करियोती – नाम बारह चेलों में से एक महायाजकों के पास गया"

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

41

और कहा, "यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे?" उन्होंने उसे तीस चांदी सिक्के तौलकर दे दिए।"

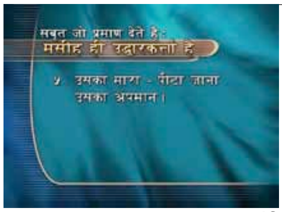

42

उसका मारा - पीटा जाना उसका अपमान

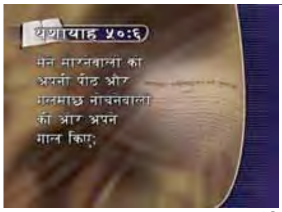

43

(मूलपाठ : यशायाह ५० : ६)

"मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचनेवालों की ओर अपने गाल किए;

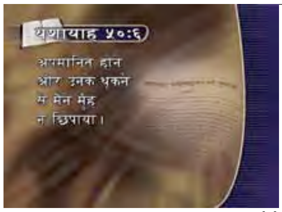

44

अपमानित होने और उनके थूकने से मैंने मुँह न छिपाया।"

यशायाह ५० : ६

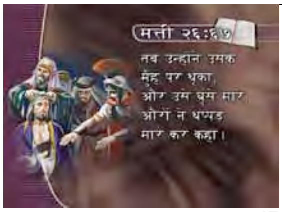

45

(मूलपाठ : मत्ती २६ : ६७)

"तब उन्होंने उसके मुँह पर थूका, और उसे घूंसे मारे, औरों ने थप्पड़ मार कर कहा,"

मत्ती २६ : ६७

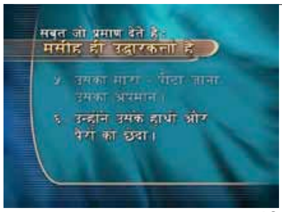

46

उन्होंने उसके हाथों और पैरों को छेदा।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

47

(मूलपाठ : भजनसंहिता २२ : १६)

".......वे मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं।"

भजनसंहिता २२ : १६

यीशु के जी उठने के पश्चात, थोमा, जो उसके चेलों में से एक था, उसे संदेह था कि वह जी उठा है, सचमुच मसीह के हाथ और पैर छेदे गए हैं इस संदर्भ में। उसने कहा,

48

(मूलपाठ : यूहन्ना २० : २५)

"...जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूं, और कीलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं,

49

........मैं प्रतीति नहीं करूंगा।"

यूहन्ना २० : २५

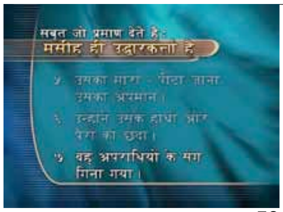

50

वह अपराधियों के संग गिना गया

ध्यान दीजिए मसीह की भविष्यवाणी सीधे रूप में कैसे पूरी हुई :

51

(मूलपाठ : यशायाह ५३ : १२)

".........वह अपराधियों के संग गिना गया।"

यशायाह ५३ : १२

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

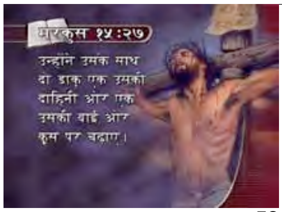

52

(मूलपाठ : मरकुस १५ : २७, २८)
"उन्होंने उसके साथ दो डाकू एक उसकी दाहिनी ओर,
एक उसकी बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाए।"

53

तब धर्मशास्त्र का वह वचन कि वह अपराधियों के संग
गिना गया, पूरा हुआ।"
मरकुस १५ : २७, २८

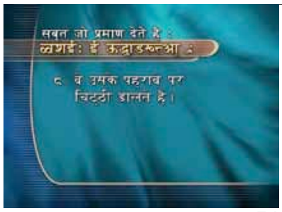

54

वे उसके पहरावे पर चिट्ठी डालते हैं।
यीशु की मृत्यु से हजारों वर्ष पूर्व राजा दाऊद ने यह
कहा था कि यीशु के वस्त्रों का क्या होगा :

55

(मूलपाठ : भजनसंहिता २२ : १८)
"वे मेरे वस्त्र आपस में बाटंते हैं, और मेरे पहरावे पर
चिट्ठी डालते हैं।"
भजनसंहिता २२ : १८

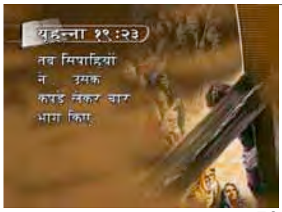

56

(मूलपाठ : यूहन्ना १९ : २३, २४)
"उन्होंने कहा......हम इसको न फाड़ें, परन्तु इस पर
चिट्ठी डालें कि वह किसका होगा.....

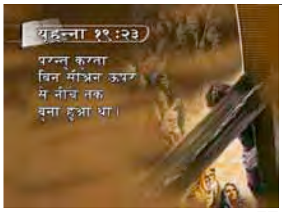

57

परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ
था।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

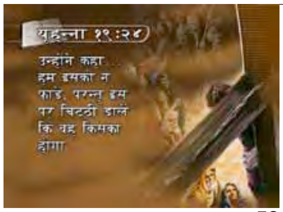

58

उन्होंने कहा......हम इसको न फाड़ें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह किसका होगा।"

यूहन्ना १९ : २३, २४

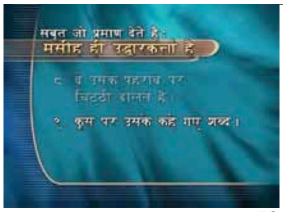

59

क्रूस पर उसके कहे गए शब्द

60

(मूलपाठ : भजनसंहिता २२ : १)

"हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

भजनसंहिता २२ : १

पुराने नियम के इस अध्याय को मत्ती २७ : ४६ से तुलना कीजिए:

61

(मूलपाठ : मत्ती २७ : ४६)

"हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तुने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

अपनी मृत्यु से नवें घण्टे पहले यीशु ने बड़े शब्द से पुकार कर कहा।

62

बहुत - सी भविष्यवाणियाँ इंसानी यीशु के नियंत्रण से पूर्णरूप से बाहर थीं।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

63

वह अपने जन्म के स्थान का प्रबन्ध नहीं कर सकता था।

64

उसके जन्म का तरीका,

65

उसके साथ विश्वासघात

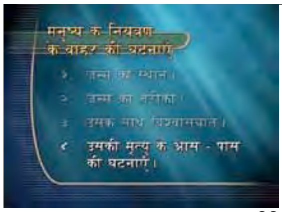

66

या उसकी मृत्यु के आस - पास की घटनाएँ।

67

यीशु सचमुच मसीह थे, जैसा दावा उन्होंने किया था। जब उन्हें दुःखदायी क्रुस पर चढ़ाया गया, पीड़ा पहुँचने तक पीटा गया, उनके हाथों और पैरों में कीलें ठोकीं गई, कांटो का ताज पहनाया गया, अपमानित किया गया और ठट्ठे में उड़ाया गया,

68

"वे चाहते तो अपने आपको बचाने के लिए दस हजार स्वर्गदूतों को बुलाकर दुनिया को नष्ट कर सकते थे।" वे स्वंय को और हमें एक साथ नहीं बचा सकते थे।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

69

क्या कभी - कभी आप यह सोचते हैं कि कोई सचमुच आप की परवाह करता है?

यीशु करते हैं!

बहुत पहले यरूशलेम के बाहर एक छोटी-सी पहाड़ी पर उन्होंने इस बात को प्रमाणित कर दिया था!

कैसा अनोखा प्यार!

यह हमारे घमण्डी हृदय को तोड़ देता है।

वे चाहते तो दस हजार स्वर्गदूतों को बुला सकते थे, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद है, उन्होंने ऐसा नहीं किया !

इसके बदले उन्होंने मेरे और आपके लिए अपने प्राण दे दिये!

70

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि, "आपके लिए यीशु कौन है?"

71

यीशु हमारे ग्रह पर एक सम्पूर्ण जीवन जीने और हमारे पाप से भरे जीवन की जगह को लेने के लिए आया।

जो मृत्यु हमें मिलनी चाहिए थी उसने उस मृत्यु को अपने ऊपर ले लिया, ताकि हमें अनन्त जीवन मिल सके !

उसके बलिदान के विषय में बाइबिल यह कहती है,

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

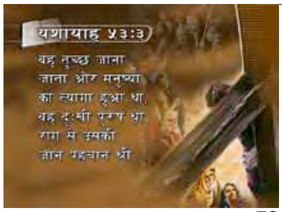

72

(मूलपाठ : यशायाह ५३ : ३ - ७)

"वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था, वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहचान थी.......

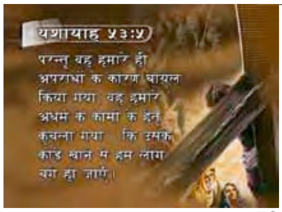

73

परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ।

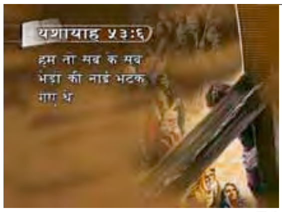

74

"हम तो सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए थे......

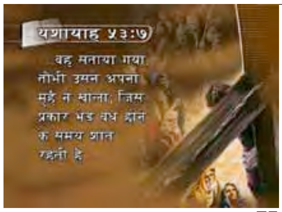

75

वह सताया गया, तौभी उसने अपना मुहँ न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय शांत रहती है।"

यशायाह ५३ : ३ - ७

76

यहाँ पर हम देखते हैं कि यीशु को एक मेम्ने की तरह बताया गया है।

बाइबिल में उसे बहुत बार "मेम्ना" कहा गया है।

77

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : ८)

प्रकाशितवाक्य १३ : ८ कहता है "....उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है।"

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

78

(प्रकाशितवाक्य ५ : ८, १२)

"....चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के सामने गिर पड़े.....

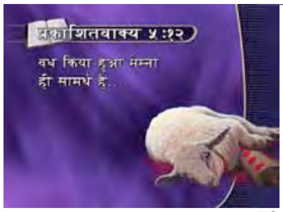

79

(कहता है) "वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ है....."

प्रकाशितवाक्य ५ : ८, १२

यीशु उस मेम्ने ने हम सबको हमेशा की मृत्यु से बचाकर उसके बदले में हमें अनन्त जीवन दिया।

80

(मूलपाठ : रोमियो ६ : २३)

"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है,

81

परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।"

रोमियो ६ : २३

82

आदम और हव्वा ने पाप किया और उन्हें परमेश्वर से अलग कर दिया गया।

परमेश्वर को उन्हें उनके बाग से जो उनका घर था बेदखल करना पड़ा और उसके बाद वे कभी भी जीवन के वृक्ष में से कुछ नहीं खा सके। उनकी जीवन शक्ति उनके मृत्यु पर्यन्त धीरे-धीरे घटती गई।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

83

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : २४)

"इसलिए आदम को उसने निकाल दिया और अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को नियुक्त कर दिया,

84

और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिए, चारों ओर घूमने वाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया।"

उत्पत्ति ३ : २४

85

परमेश्वर ने उन्हें बचाने के लिए अपनी योजना को उन्हें बताया।

86

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १५)

"मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश (शैतान के अनुयायी) और इसके वंश के बीच में (मसीह के अनुयायी) बैर उत्पन्न करूंगा।

87

और वह (यीशु) तेरे (शैतान के) सिर को कुचल डालेगा, और तू (शैतान) उसकी (यीशु की) एड़ी को डसेगा।"

उत्पत्ति ३ : १५

88

दबाव से तोड़ने का क्या अर्थ है?

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

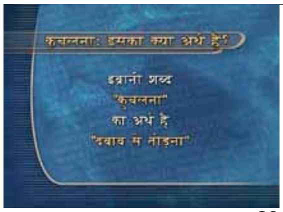

89

इब्रानी भाषा में "कुचलने" का अर्थ "दबाव से तोड़ना" है। किसी के सिर को कुचलना पैर के डसने से अधिक गम्भीर है।

मसीह शैतान के ऊपर विजयी होगा।

परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी योजना का स्मरण दिलाने और उन्हें बचाने के लिए कुछ और भी किया।

90

उसने बलिदान करने की व्यवस्था स्थापित की। उनको परमेश्वर के "मेम्ने" (यीशु) में अपना विश्वास दिखाना था जो एक दिन उन्हें हमेशा की जिन्दगी देने के लिए मरेगा।

91

बाइबिल हमें निश्चित रूप से यह नहीं बताती कि यह बलिदान की व्यवस्था कब शुरू हुई थी। आदम और हव्वा नंगे थे और परमेश्वर ने खाल से उनके लिए कपड़े बनाए।

और अगले ही अध्याय में कैन और हाबिल बलिदानों को लाए।

92

(मूलपाठ : उत्पत्ति ४ : ४,५)

"हाबिल भी अपनी भेड़ - बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

93

तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया।"

उत्पत्ति ४ : ४

94

परमेश्वर ने कैन और उसकी भेंट को ग्रहण नहीं किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ।"

उत्पत्ति ४ : ५

हाबिल एक मेम्ना लाया जो परमेश्वर के मेम्ने को प्रदर्शित करता था, परन्तु कैन भूमि की उपज लाया। कैन का दान परमेश्वर के मेम्ने के वध में विश्वास को नहीं दर्शाता था।

95

(मूलपाठ : इब्रानियों ९ : २२)

"........बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती।"

इब्रानियों ९ : २२

96

जब परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाया, तब उसने उन्हें पवित्र - स्थान के धार्मिक संस्कारों के द्वारा बहुत से पाठ सिखाए जो उसने मूसा से बनवाए थे। वह पवित्र स्थान या तम्बू, स्वर्ग में स्थित सच्चे तम्बू की नकल थी।

97

फसह उनमें से एक धार्मिक संस्कार था।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

98

पहले महीने के चौदहवें दिन, लोगों को यह निर्देश दिया जाता था कि वे एक मेम्ने का वध करके उस मेम्ने के रक्त को अपने दरवाजों की चौखट के सिरों पर लगाएँ।

यह इस बात का चिन्ह था कि मेम्ने के रक्त से वे बचाए जाएंगे।

99

उस रात मौत का फरिश्ता उनके घरों के ऊपर से गुजरा और जिनके घरों पर रक्त लगा हुआ था उन घरों के अन्दर रहने वालों को उसने कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।

100

फसह उन्हें यह याद दिलाता था कि केवल मेम्ने का लोहू ही हमें नाश होने से बचा सकता है। जानवरों के बलिदान से पाप साफ नहीं हो सकता।

परन्तु परमेश्वर के बलिदान पर लोगों का विश्वास ही उन्हें उनके पापों से बचा सकता है।

101

(मूलपाठ : इब्रानियों ९ : २६)

"....वह एक बार प्रकट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे...."

इब्रानियों ९ : २६

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

102

(मूलपाठ : इब्रानियों १० : ४)

"क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे।"

इब्रानियों १० : ४

103

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु को मसीह घोषित किया, और यीशु को इशारा करके कहा,

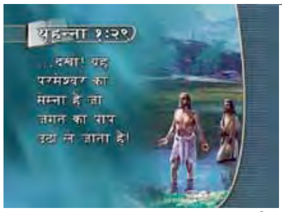

104

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : २९)

"........देखो! यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है! "

यूहन्ना १ : २९

105

धार्मिक बलिदानों की व्यवस्था मसीह का परमेश्वर का मेम्ना होने का संकेत देती आ रही थीं। पुराने नियम में सदियों से मरने वाले प्रत्येक मेम्ने का बहाया हुआ रक्त यीशु के बहाये रक्त की ओर इशारा करता है।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

106

यीशु ही दुनिया के उद्धारकर्त्ता हैं।

यीशु पाप क्षमा करते हैं।

यीशु माफी देते हैं।

यीशु हमें हमारे दोषों से हमें मुक्ति देते हैं।

यीशु हमें जीना सिखाते हैं।

यीशु का जीवन हमारे लिए एक उदाहरण है।

यीशु हमारे जीवन को योग्य बनाते हैं।

यीशु हमें अन्दर से बदलते हैं।

यीशु हमें नया जीवन देते हैं।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

107

सन् १९१४, में जब सर अरनेस्ट शेकलटन उत्तरी ध्रूवी महासागर को पार करने का प्रयास कर रहे थे तब उनका एंडयोरेंस नामक जहाज एक बर्फ के तैरते हुए टुक़ड़े से टकरा गया। शेकलटन और उनके साथी कई दिनों तक बहते रहे जब तक कि वे एलीफेन्ट द्वीप पर पहुँच नहीं गए। शेकलटन ने अपने आदमियों से वहाँ शिविर लगवाया जहाँ पर वे अपनी बची हुई सामग्री को सुरक्षित रख सकें और आने वाली सर्दी में जीने का प्रयास कर सकें। परन्तु उन्हें शीघ्र ही यह महसूस हो गया कि कोई भी आकर उन्हें नहीं बचाएगा। किसी को यह अनुमान नहीं था कि वे कहाँ पर हैं। वे लोग बर्फीले तूफान और ध्रूवी महासागर के कारण दुनिया से अलग गए थे। उनके बचने की केवल एक ही आशा थीः उनमें से कोई एक उस बैरी महासागर को पार करे और मदद लेकर आए। शेकलटन ने यात्रा करने के लिए एक बीस फुट बड़ी नाव तैयार करनी शुरू कर दी। अपनी इच्छा से आए हुए समूह के छः लोगों को उसने चुना जिन्हें ८०० मील के तूफानी समुद्र को पार करना था ताकि वे दक्षिणी जोर्जिया के बर्फ से जमे हुए द्वीप पर नोरविजियन मछुवारों के पड़ाव पर पहुँच सकें।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

108

साल के सबसे तूफानी समय में खुली नाव में जाना असंभव दिखाई देता था। परन्तु शेकलटन अपने आदमियों के साथ गया। कई दिनों तक वे घबराहट में एक साथ अपने आपको मोटे कपड़े से ढककर बैठे रहे, जहाज के सामने के भाग को उन्होंने भंयकर लहरों की ओर मोड़ दिया, और वे यह प्रार्थना कर रहे थे कि हवा उनके छोटे से पाल को फाड़ न दे। उनकी हड्डियों को कंपा देने वाली ठन्ड़ थी, उनके सोने वाले बैग बर्फ के कारण जम गए थे, बर्फीला पानी उनकी पीठ पर झरने की तरह बह रहा था, उन्हें भूख और प्यास भी लग रही थी। उनकी यात्रा शुरू होने के चौदह दिनों बाद जब सब लगभग ठण्ड और प्यास से मर रहे थे, तब उन्हे दक्षिणी जोर्जिया की काली चट्टानें दिखाई दीं। शेकलटन ने यह दुर्लभ कार्य कर दिखाया था; जल्दी ही एक जहाज उसके बचे हुए निःसहाय लोगों को बचाने के लिए रवाना हुआ। जब परमेश्वर ने हमारी बुरी अवस्था को देखा और देखा कि हम अपने द्वीप में अकेले हो गए थे, पाप के असीमित समुद्र चारों ओर से घेरे हुए था, तब उसने स्वंय को उस बैरी समुद्र में डुबो दिया। उसने अपने ऊपर मनुष्य जाति की कातिल, अतिशीत विशाल बुराई को ले लिया।

७ - एक जीवन ने संसार को बदल दिया

109

पूरे विश्व में यीशु के समान और कोई भी नहीं है। केवल वही है जो हमको बचा सकते हैं। केवल वे ही हैं जो हमारे अपराधों को दूर करके हमारे जीवन को बदल सकते हैं।

केवल वे ही हैं जो हमें हमेशा की जिन्दगी प्रदान कर सकते हैं। क्या आप इसी वक्त अपना हाथ उठाना पसन्द करेगें, और कहेंगे, " हाँ यीशु, मैं आज रात को आपको अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करता हूँ।

हाँ, प्रभु, मुझे विश्वास है कि आप मेरे लिए मरे।

हाँ, प्रभु, मैं अपना जीवन आपको देता हूँ।

केवल अपना हाथ खड़ा करें, मैं आपके लिए प्रार्थना करता हूँ।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

1

अमरता का रहस्य

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

2

(दृश्य)

पृथ्वी हिल गई। शक्तिशाली झटकों ने पूरे शहर को हिला दिया। दफ्तर की इमारतें गिर गई और घर चकनाचूर हो गए। अस्पताल, पाठशालाएँ और गिरजाघर सब नाश हो गए।

फरवरी २००१ को एलसालवेडोर में जो भुईडोल आया था उसमें लगभग तीन हजार लोगों की मृत्यु हो गयी। हजारों लोग बेघर हो गए। आपातकाल में सहायता करने वालों ने घायलों को ढूढ़ने में दिन रात एक कर दिया। उन्हें केवल कुछ लोग ही जीवित मिले । चार दिनों तक लगातार खोदने के बाद, वे अपनी खोज बन्द करने की तैयारी कर ही रहे थे जब किसी ने उस ध्वंस इमारत के ढेर के बीच में किसी एक आधे दबे हुए हाथ को देखा। उसने सब को और भी चौंका दिया जब वह हाथ थोड़ा सा हिला । बचाने वाले कर्मचारी ने गंभीरता से खोदा उन्हें उस अधेड़ उम्र के व्यक्ति को उस अवशेष में से निकालने के लिए लगभग चार घंटे लगे । वह बिना भोजन या पानी के चार दिन तक जीवित रहा ।

उसका उत्तर था, "मैं जीना चाहता था। मैं मरना नहीं चाहता था। मुझे विश्वास था कि सहायता अवश्य आयेगी।"

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

3

हम जीने की इस इच्छा के साथ पैदा हुए थे। यह आपके और मेरे पास थी जब हमने इस दुनिया में प्रवेश किया। यह सम्भवतः हमारी सबसे अधिक दृढ़ इच्छा है और हम सब में समान रूप से पाई जाती है।

4

जब एक मानव जीवन पर खतरा आता है, तो लोग उसे बचाने के लिए असम्भव, साहसपूर्ण सीमाओं तक जाते हैं।

चाहे यह खतरा कुएं में गिरे एक बच्चे का हो या समुद्र में फंसे जहाज पर सवार लोगों का।

5

या एक खतरनाक पहाड़ी पर असहाय व्यक्ति का या भुईडोल से टूटी इमारतों के ढ़ेर में फंसे हुए घायल लोगों का।

जब भी किसी का जीवन नाश होने पर हो, तब लोग उसे बचाने के लिए दौड़ते हैं।

6

तब भी इस सच्चाई के बारे में हम में से कोई भी नहीं सोचना चाहता कि हमारा जीवन खतरे में है।

और केवल खतरा ही नहीं। हम सबकी मृत्यु निश्चित है।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

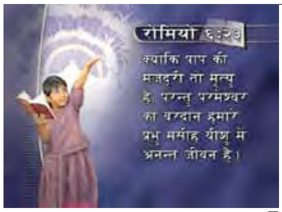

7

(मूलपाठ : रोमियो ६ : २३)

बाइबिल कहती है : "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

रोमियो ६ :२३

8

पाप जहरीला और प्राण घातक है। क्यों?

क्योंकि वह हमें समस्त जीवन के स्रोत से जो स्वंय परमेश्वर है - अलग करता है। और हम सब ने पाप किया है।

9

(मूलपाठ : रोमियो ३ : २३)

"इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

रोमियो ३ : २३

10

(मूलपाठ : रोमियो ३ : १० -१२)

"........ कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।

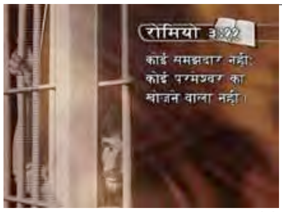

11

कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजने वाला नही।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

12

"सब भटक गए हैं.......... कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं।"

रोमियो ३ : १० -१२

13

हमारे मूल माता -पिता, आदम और हव्वा ने, जिनके द्वारा सारी मानव जाति आई, परमेश्वर की आज्ञा ना मानकर अपने आप को उससे अलग कर लिया।

14

(मूलपाठ : रोमियो ५ : १२)

"इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई,

15

और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सबने पाप किया।"

रोमियो ५ : १२

16

पाप का प्राकृतिक परिणाम मृत्यु है।

पाप से उत्पन्न मृत्यु का औसत १०० प्रतिशत है।

आदम पाप के कारण मरा।

और हम सब जो उस से उत्पन्न हुए हैं इस में हम में से प्रत्येक सम्मिलित हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

17

अतः हम सब गड्ढ़े में गिरने वाले हैं।

जाल में फंसे हुए और असहाय हैं।

मरने के अधिकारी हैं जब तक हमें कोई न बचाए।

बुरा समाचार यह है कि हम मृत्यु के अधिकारी हैं जब तक हमें कोई न बचाए। अच्छा समाचार यह है कि हमें बचाने वाला कोई हैं!

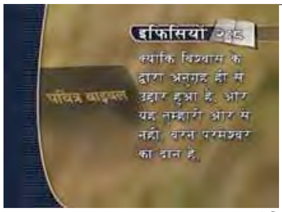

18

(मूलपाठ : इफिसियो २ : ८ -९)

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है,

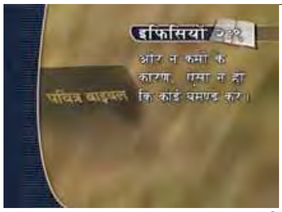

19

और न कर्मो के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।"

इफिसियो २ : ८, ९

हाँ, हम सब ने पाप किया है।

इसमें कोई शक नहीं है !

प्रत्येक स्वार्थी कार्य, शब्द या सोच से भी हम पाप करते हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

20

प्रत्येक दिन हम जो अनगिनत बार पाप करते हैं उसके विषय में सोचिए !

और हमारी परेशानी केवल यह नहीं है कि हमने पाप किया है – सच्चाई यह है कि हम पापी हैं !

21

एक इंसान जिसे प्राणनाशक बीमारी हो वह अपनी परेशानी को ना पहचान सके या यदि वह चिकित्सा की मदद न ले तो वह मर जाएगा। और यह उन पापियों का भाग्य है जो अपनी धार्मिक स्थिति को पहचानने में असमर्थ हो जाते हैं और मदद के लिए नहीं पुकारते।

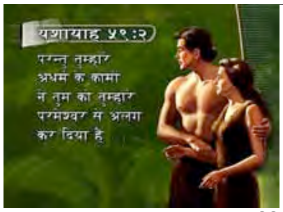

22

(मूलपाठ : यशायाह ५९: २)

"परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है।"

यशायाह ५९ : २

परमेश्वर सम्पूर्ण जीवन का स्रोत है, और जब आदम ने पाप किया, वह मरना शुरू हो गया।

हम सब मृत्यु की सजा के अन्तर्गत है। परन्तु प्रेम के परमेश्वर ने हमें बिना मोक्ष की आज्ञा दिये पाप का परिणाम नहीं बताया है !

यह एक अच्छा समाचार है !

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

23

(मूलपाठ : रोमियो ६ : २३)

"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

रोमियो ६ : २३

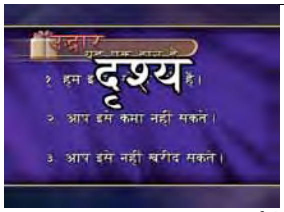

24

(दृश्य)

उद्धार एक दान है।

हम इसके योग्य नहीं हैं।

ना ही हम इसे अपने अच्छे कार्यो के द्वारा कमा सकते हैं, और हम इसे किसी भी कीमत पर खरीद नहीं सकते।

25

बहुत से लोग यह विश्वास रखते हैं कि मनुष्य अच्छे कार्यो को करने के द्वारा क्षमा और अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं।

लोग नोकीले कांटो के बिस्तरों पर बैठते हैं, वे यह विश्वास करते हैं कि अपने शरीरों को कष्ट पहुँचाने से वे परमेश्वर का समर्थन कमा सकते हैं।

26

कुछ लोग अपने शरीरों को कोड़े और चेन से मारते और आघात पहुँचाते हैं, दूसरे लोग नोकीले हुक से अपने आप को छेदते हैं, और

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

27

कुछ लोग नंगे पैर गर्म कोयले पर चलते हैं शरीर के अनोखे असामान्य कार्यो के द्वारा स्वर्गीय समर्थन की अभिलाषा करते हैं।

28

दूसरे यह विश्वास करते हैं कि मन्दिरों को बनाने या धर्मी पुरुषों को भोजन करवाने से वे भविष्य के जीवन के लिए श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं,

29

और कुछ दूसरों के लिए, परमेश्वर का समर्थन प्राप्त करने के लिए मक्का की यात्रा करना या इस्लाम की रक्षा के लिए मर जाने के अतिरिक्त कोई अन्य बड़ी खुशी या अन्य कोई रास्ता नहीं है।

30

बहुत से मसीही बिना सोचे समझे ऐसा ही करते हैं। वे गिरजाघर जाते हैं, दान देते हैं और बाईबिल के सुनहरे नियम को मानते हैं। वे यह सोचते हैं कि उन्होंने परमेश्वर का समर्थन प्राप्त कर लिया है और इस प्रकार अनन्त जीवन के भागी हो गए हैं। परन्तु क्या यह सम्भव है?

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

31

क्या मनुष्य शारीरिक दण्ड, मानसिक वेदना या दयालुता के कार्य करने के द्वारा रिश्वत देकर परमेश्वर को कह सकता है कि उसके पाप क्षमा किए जाएँ और उसे अनन्त जीवन मिले?

32

क्या हम उस प्रकार उद्धार को प्राप्त कर सकते हैं जिस प्रकार कोई खेल में ट्रॉफी या सोने का पदक जीतता है?

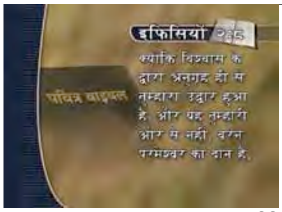

33

(मूलपाठ : इफिसियो २ : ८,९)

बाइबिल कहती है : "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है,

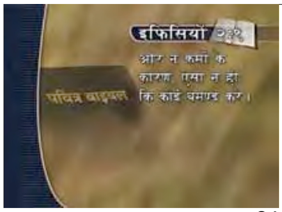

34

और न कर्मो के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।"

इफिसियों २ : ८, ९

35

हम अपने कर्मो के द्वारा अपने आप को नहीं बचा सकते हमें परमेश्वर के अनुग्रह और उसके प्रेम और उसके समर्थन पर निर्भर रहना चाहिए, जिन्हें वह हमें मुफ्त में देता है।

यदि हम उद्धार को कमा सकते, तो यह दान नहीं होता।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

36

मान लो कि आप को नौकरी देने वाला आपको एक लिफाफा देता और कहता कि उस के पास आप के लिए एक उपहार है।

37

यदि आप उस के अन्दर बीते हुए दो सप्ताह के वेतन चैक को पाते हैं, तो क्या वह उपहार होगा?
यदि आप ने उसे कमाया है तो नहीं !

38

परन्तु समस्त विश्व पर शासन करने वाला सर्वशक्तिमान परमेश्वर क्यों

39

(दृश्य)
उन लोगों के साथ संबंध रखे जो अन्तरिक्ष के कोने पर इस गृह पर बसते हैं?क्यों उसने स्वार्थी राजद्रोही मनुष्य को पूर्णरुप से परित्याग नहीं कर दिया और पाप के परिणाम को सहने के लिए छोड़ दिया?

40

(मूलपाठ : १ यूहन्ना ४ : ८)
"......परमेश्वर प्रेम है।"
१ यूहन्ना ४ : ८

41

आप में से कुछ माता -पिता हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

42

और आप में से कुछ जानते हैं कि जब एक बच्चा बीमार हो जाता है और दिन रात रोता रहता है तो कैसा लगता है। आप उसे चुप कराने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करते हैं, परन्तु उससे कोई मदद नहीं मिलती। आप फर्श पर चलते हैं, बच्चे को गाना सुनाते हैं और अपने मित्रों के द्वारा दिए गए सभी परामर्शो का प्रयोग करते हैं, परन्तु कुछ भी काम नहीं आता। परन्तु मैं आप से कुछ पूछता हूँ आप चाहें कितना भी थक चुके हों, चाहें बच्चा कितनी देर तक बीमार हो, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता, क्या आप कभी उस बच्चे को किसी को दे देने की सोच भी सकते हैं? या उसे अकेले भुगतने के लिए छोड़ सकते हैं?

43

नहीं ? क्यों ? क्योंकि आप उस असहाय छोटे बच्चे से प्रेम करते हैं और इसलिए भी क्योंकि उस बच्चे को दुःख और दर्द भोगना है।

परमेश्वर भी ऐसा ही है।!

44

इस पृथ्वी ग्रह पर उसके बच्चे पाप की बिमारी से बिमार हो गए थे,

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

45

और उसके कारण जो दुःख और दर्द वे भोग रहे है केवल इसके कारण परमेश्वर उनसे और अधिक प्रेम करता हैं।

46

परमेश्वर ने कभी हमसे दूर जाना पसन्द नहीं किया ! उसने हमें मरने के लिए और हमारे राजद्रोह के परिणामों को भोगने के लिए कभी भी नहीं छोड़ा।

47

(मूलपाठ : २ पतरस ३ : ९)

बाइबिल कहती है: "प्रभु-------तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि नाश हो, वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।"

२ पतरस ३ : ९

48

चाहे आप कितने भी अच्छे या बुरे हो इस पर विचार किए बना, परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आप को बचाना चाहता है। वह यह नहीं चाहता कि आप मर जाएं।

49

तब भी, हम सब ने पाप किया है।

हम सब ने परमेश्वर के विरुद्ध राजद्रोह किया है और उसके नियम को तोड़ा है।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

50

दुनिया की सरकारें बिना नियम कानून के अधिक समय तक नहीं चल सकतीं।

51

नियम तोड़ने वालों को दण्डित किया जाता है। परन्तु परमेश्वर का नियम तोड़ना और भी गम्भीर बात है, क्योंकि पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है- केवल वहीं है जो हमारी मदद कर सकता है और हमें बचा सकता है !

52

यहाँ तक कि परमेश्वर अनन्त प्रेम का परमेश्वर है, वह न्याय का परमेश्वर भी है।
सीने पर्वत पर उसने अपने विषय में वर्णन किया :

53

(मूलपाठ : निर्गमन ३४: ६, ७)
"-----यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य,

54

हजारों पीढ़ियों तक निरन्तर करुणा करने वाला, अधर्म और अपराध और पाप का क्षमा करने वाला, परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा।"
निर्गमन ३४ : ६, ७

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

55

क्या इसका कोई हल नहीं है? इससे बाहर निकलने का रास्ता नहीं है?

हाँ बाहर निकलने का एक रास्ता है !

प्रेमी परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए और फिर भी न्यायी रहने के लिए एक रास्ता ढूंढ़ा है।

56

उसने मरने के लिए एक सिद्ध प्रतिनिधि ढूंढ़ा है, जो हमारे पापों का दण्ड चुकाता है ताकि हम जीवित रह सकें।

यूहन्ना, जो प्यारा शिष्य था, इस प्रकार व्याख्या करता है:

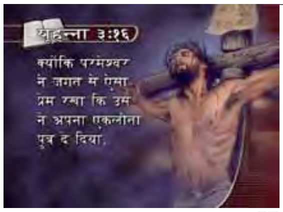

57

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : १३)

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,

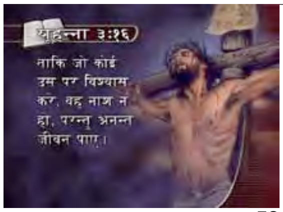

58

ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यूहन्ना ३ : १६

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

59

यीशु एक मनुष्य की तरह पृथ्वी पर रहने के लिए आये, उन्होंने उन्हीं कठिनाईयों और परिक्षाओं का सामना किया जिस प्रकार
प्रत्येक प्राणी ने सामना किया।
उन्होंने एक सिद्ध आज्ञाकारी मनुष्य का जीवन व्यतीत किया। फिर, मानव जाति के लिए एक पाप रहित प्रतिनिधि के रूप में, मसीह ने प्रत्येक व्यक्ति का पाप स्वेच्छा से अपने ऊपर ले लिया और उन के बदले मर गये

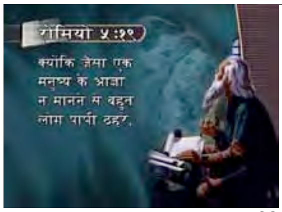

60

(मूलपाठ : रोमियो ५ : १९)
पौलुस ने लिखा : "क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे,

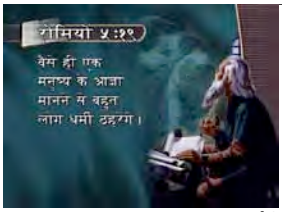

61

वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।"
(रोमियो ५ : १९)

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

62

यीशु की मृत्यु किसी भी अर्थ पूर्ण अभिप्राय से क्रोधित परमेश्वर को संतुष्ट नहीं करती थी। हमारे पापों से हमें बचाने के लिए यीशु मरने के लिए तैयार हो गये, और परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करता था कि वह हमारे लिए अपने एकलौते पुत्र का बलिदान देने के लिए तैयार हो गया। यीशु परमेश्वर का मेम्ना था, बलिदान किया जाने वाला मेम्ना।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

63

(दृश्य)

जिस प्रकार परमेश्वर के चुने हुए लोग, इस्त्राएली, मूसा के द्वारा मिश्र से छुड़ाए जाने के बाद सीने पर्वत के पास जंगल में इधर -उधर घूमते थे, वे प्रतिदिन पाप में गिरे हुए मनुष्य को बचाने की परमेश्वर की योजना के दृष्टांत चित्र को, चिन्हों और पर्वो के द्वारा देखते थे। वह मरुस्थल में बनाया गया तम्बू रूपी मंदिर, जो परमेश्वर के विशिष्ट निर्देश के द्वारा बनाया गया था जहाँ पर परमेश्वर के द्वारा स्थापित उपासना सभाएँ होती थीं, उसने निरंतर मनुष्य का ध्यान भविष्य की कलवरी की ओर आकर्षित किया उस पर्वत के शिखर पर जहाँ यीशु मरेगा, जहाँ सच्चा मेम्ना समस्त मनुष्य जाति के पापों के लिए बलिदान किया जाएगा, जो सब को क्षमा और उद्धार की आशा और आश्वासन दे रहा है।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

64

पापी बलिदान करने वाला पशु लेकर आता था। वह उस के सिर पर अपना हाथ रखता था और अपने पाप का अंगीकार करता था।

उसके बाद वह चाकू लेता था और उसका बलिदान कर देता था, यह इस बात की ओर संकेत था कि उसके पाप उस बलिदान किए जाने वाले मेम्ने की मृत्यु का कारण बने –जो यीशु को दर्शाता था।

65

अप्रिय, हाँ। परन्तु कलवरी पर वह क्रूस जो मानव प्राणी के हृदय में अनन्त जीवन का आश्वासन लाया था वह और भी अधिक अप्रिय था। तब भी, परमेश्वर ने इस कार्य के द्वारा यह दर्शाया कि पाप पापी के लिए मृत्यु लाता है या फिर निर्दोष (मेम्ने) के लिए बलिदान।

66

बाईबिल में परमेश्वर के लोग उस समय बलिदान करके परमेश्वर के पुत्र की होने वाली मृत्यु में अपने विश्वास को दिखाते थे, जो मनुष्य के स्थान में मरेगा।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

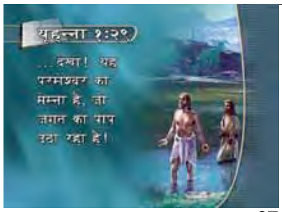

67

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : २९)

यीशु सच्चे मेम्ने थे जब यीशु बपतिस्मा लेने के लिए आये यूहन्ना ने कहा, "---- देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।" कितनी व्यंगात्मक बात है कि जिन्हें वह बचाने आया था उन्होंने ही उसके जीवन को लेने की योजना बनाई। यीशु मारे गये, ठट्ठों में उड़ाया गया उसे क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दी गई जो सबसे बुरी कानूनी आज्ञा दी गई।

68

(मूलपाठ : १ पतरस २ : २२)

यहाँ तक की बाइबिल कहती है कि "न तो उस ने पाप किया, और न उस के मुंह से छल की कोई बात निकली" वह क्रूस पर चढ़ाया गया!

१ पतरस २ : २२

69

फसह के मौसम में मसीह क्रूस पर चढ़ाये गये। उस मौसम में रोमी शासकों की यह रीति थी कि वे अच्छा विश्वास दिखाने के लिए एक अपराधी को छोड़ देते थे। भीड़ ने बरअब्बा को चुना और उसके बदले में यीशु को मरने दिया।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

70

मृत्यु में, यीशु पापियों के साथ पहचाने गये। उन्हें दो ड़ाकूओं के बीच में क्रूस पर चढ़ाया गया!

और इस प्रकार परमेश्वर ने समस्त संसार के पापों को उसके ऊपर डाल दिया,

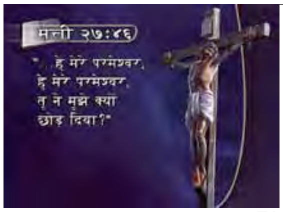

71

(मूलपाठ : मत्ती २७ : ४६)

उसने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, "----हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

मत्ती २७ : ४६

उन्होंने पाप के द्वारा लाये गये भयानक अलगाव को महसूस किया। मसीह अपने पिता से अलगाव के गहरे दर्द को सहन नहीं कर सकते थे। इससे उनका हृदय टूट गया!

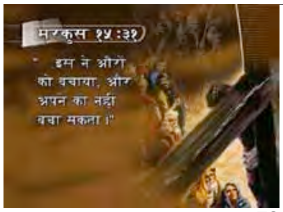

72

(मूलपाठ : मरकुस १५ : ३१)

भीड़ चिल्लाई "---इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता।"

मरकुस १५ : ३१

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

73

और यह सच था! वह अपने -आप को नहीं बचा सके और फिर भी दूसरों को बचाया। वह परमेश्वर ही था, जिसने खोई हुई जाति के लिए, टुटे हुए नियम और पाप की मजदूरी का मूल्य चुकाया। इस प्रकार वह परमेश्वर ही थे, जिन्होंने उस प्रेम के साथ जो तब तक संतुष्ट नहीं होता जब तक मनुष्य के बदले, उसके प्रतिनिधि के रूप में अपना पुत्र मरने के लिए ना दे दिया।

74

यीशु के साथ ऐसा व्यवहार किया गया जिसके हम योग्य थे ताकि हमारे साथ ऐसा व्यवहार किया जाए जिसके वह योग्य है। वह हमारे पापों के लिए दण्ड़ित किये गये और उन्होंने हमारी मृत्यु को सहा ताकि हम अनन्त जीवन को प्राप्त कर सकें। इस प्रकार से परमेश्वर हमें अनन्त जीवन दे सके और अब भी न्यायी रहे। इसलिए नहीं कि हमने कोई अच्छा कार्य किया था, परन्तु इसलिए ताकि परमेश्वर मसीह के कार्य का और उसके सिद्ध जीवन का श्रेय हमें दे सके।

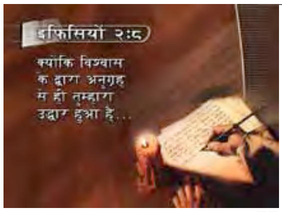

75

(मूलपाठ : इफिसियों २ : ८)
पौलुस ने, अन्य जातियों से कहा :– "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है---"
यह विश्वास ही उद्धार का रास्ता है।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

76

जब फिलिप्पी जेलर ने पौलुस से पूछा कि उद्धार पाने के लिए उसे क्या करना चाहिए, पौलुस ने उत्तर दिया,

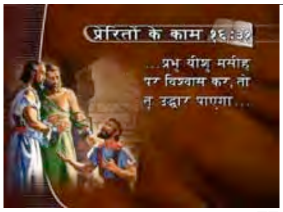

77

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १६ : ३१)

"प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा"

प्रेरितों के काम १६ : ३१

78

तब भी, केवल इस बात से सहमत होना कि मसीह का इस पृथ्वी पर रहना ही पर्याप्त नहीं है। वह बचाने वाला विश्वास नहीं है। इसमें उससे भी अधिक और है।

79

(मूलपाठ : याकूब २ : १९)

बाइबिल कहती है कि "दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं।"

याकूब २ : १९

80

यीशु में विश्वास रखने का अर्थ १९०० वर्ष पूर्व हुई उसकी मृत्यु को स्वीकार करने से भी अधिक है। बाइबिल कहती है,

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

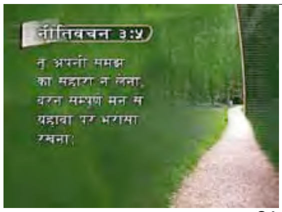

81

(मूलपाठ : नीतिवचन ३ : ५, ६)

"तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना;

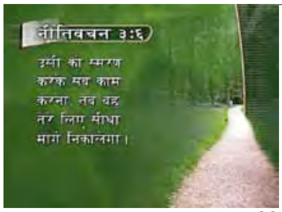

82

उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।"

नीतिवचन ३ : ५, ६

क्या आप उस पर भरोसा रखते हैं? क्या आप वास्तव में उस पर भरोसा रखते हैं?

83

उद्धार करने वाला विश्वास मसीह के बलिदान में विश्वास करना है कि हमने जो पाप किए थे उन्हें उसके बलिदान ने पूर्णरूप से और पूरा मूल्य देकर चुका दिया है।

इसका अर्थ यह विश्वास करना है कि हम जो कर सकते हैं वह हमें नहीं बचाता है, परन्तु वह जो मसीह ने हमारे लिए कलवरी पर किया था।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

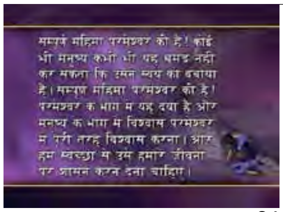

84

कोई भी मनुष्य कभी भी यह घमंड नहीं कर सकता कि उसने स्वयं को बचाया है। सम्पूर्ण महिमा परमेश्वर की है ! परमेश्वर के भाग में यह दया है और मनुष्य के भाग में विश्वास परमेश्वर में पूरी तरह विश्वास करना। और हमें स्वेच्छा से उसे हमारे जीवनों पर शासन करने देना चाहिए।

85

उद्धार पाना बहुत आसान है, फिर भी कितने उसे बहुत कठिन और पेचीदा बना देते हैं।

वह प्रश्न जिसका हमें उत्तर देना चाहिए यह वही प्रश्न है जो फिलिप्पी जेलर से किया गया था जब उसने पौलुस और साइलस को उस भयानक रात में पूछा था जब भुईड़ोल ने जेल के दरवाजों को खोल दिया था :

86

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १६ : ३०)

"उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?"

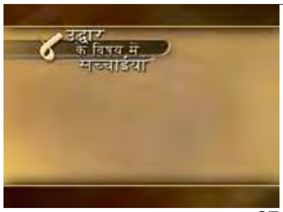

87

उद्धार के विषय में केवल चार सच्चाईयाँ हैं जिनके विषय में जानने की आप को आवश्यकता है। ताकि आप बचाए जाएं।

केवल चार।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

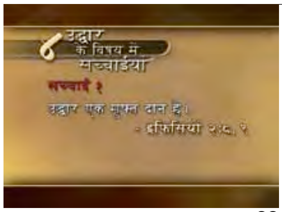

88

(मूलपाठ : इफिसियो २ : ८ ,९)

सच्चाई १ : उद्धार एक मुफ्त दान है।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है, न कर्मो के कारण ऐसा न हो कि कोई घमंड करे।"

इफिसियो २ : ८ ,९

अब यह है प्रश्न कि "ऐसा क्यों है कि उद्धार को एक मुफ्त दान क्यों होना चाहिए इसका कारण हमें सच्चाई नम्बर दो से पता चलता है।

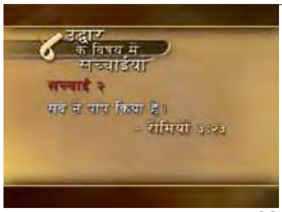

89

(मूलपाठ : रोमियो ३ : २३)

सच्चाई -२ : हम सब ने पाप किया है।

रोमियो ३ : २३ कहता है, "इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

90

इसका अर्थ है कि मैं इस दान के योग्य नहीं हूँ। मैं उद्धार के योग्य नहीं हूँ।

आप देखिए, मैंने पाप किया है।

मैं परमेश्वर की महिमा से रहित हुआ हूँ।

यदि उद्धार पाना मेरी अच्छाईयों पर निर्भर होता, तो मैं उसे कभी नहीं कमा सकता, क्योंकि मैंने पाप किया है - मैं कभी भी पर्याप्त रूप से अच्छा नहीं हो सकता। यर्थाथ रूप से यही कारण है कि क्यों उद्धार को तब एक मुफ्त दान होना चाहिए, जो मुझे मुफ्त में दिया गया है, क्योंकि मैं उसे कमा नहीं सकता और मैं उस के योग्य नहीं हूँ।

हम सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

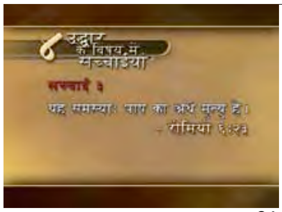

91

(मूलपाठ : रोमियों ६ : २३)

- सच्चाई -३ : यह समस्या : पाप का अर्थ मृत्यु है।

रोमियो ६ : २३

"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।"

यह सबसे बडी समस्या है जिसका हम सामना करते हैं। मैं एक पापी हूँ; इसलिए मैं मृत्यु का अधिकारी हूँ। मैं उद्धार पाने के दान के योग्य नहीं हूँ।

मैं उस मुफ्त दान के योग्य नहीं हूँ। इसलिए ही इसको मुफ्त दान होना आवश्यक है, आप ने देखा, क्योंकि हम सबने पाप किया है और हम सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

समस्या यह है कि एक पापी की तरह मैं मृत्यु का अधिकारी हूँ। परन्तु परमेश्वर के पास इस समस्या का समाधान है।

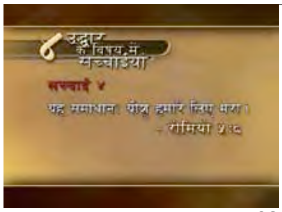

92

(मूलपाठ : रोमियो ५ : ८)

सच्चाई -४ : यह समाधान : यीशु हमारे लिए मरा।

रोमियो ५ : ८ कहता है, "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।"

क्या ही सुन्दर बात है? यीशु मुझ पापी के लिए मरा। और मित्र, वह आप के लिए भी मरा !

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

93

चार सरल सच्चाईयाँ।

आइए इन का पुर्ननिरिक्षण करते है :

94

१. उद्धार एक मुफ्त दान है।

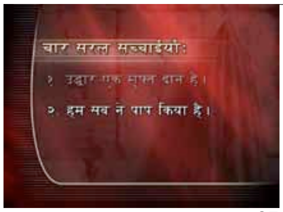

95

२. हम सब ने पाप किया है।

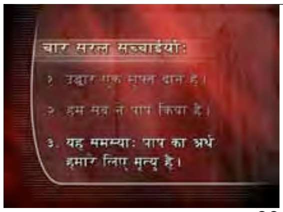

96

३. यह समस्या : पाप का अर्थ हमारे लिए मृत्यु है।

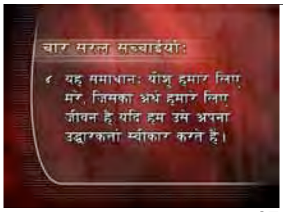

97

४. यह समाधान : यीशु हमारे लिए मरे, जिसका अर्थ हमारे लिए जीवन है यदि हम उसे अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते हैं।

98

जब हम पापी थे, यीशु हमारे लिए मरा। मेरे दोस्तों, क्या आप उससे प्रेम नहीं करते क्योंकि वह आपके और मेरे पापों के लिए मरा?

क्या आप उससे प्रेम नहीं करते क्योंकि उसने हमें उद्धार का मुफ्त दान दिया?

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

99

अब आप यह पूछ सकते हैं, "किस प्रकार मैं उस मुफ्त दान को स्वीकार कर सकता हूँ?"

100

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ३ : २०) बाइबिल इसका उत्तर हमें प्रकाशितवाक्य ३ : २० में देती है

"...देख, मैं द्वार पर खडा हुआ खटखटाता हूं"

यदि कोई व्यक्ति जिस के पास अनन्त जीवन है आपके घर के द्वार पर खडा हुआ खटखटाता है, तो क्या आप उसे बाहर ही छोड देते हैं या उसे अन्दर आने का निमंत्रण देते हैं?

101

वास्तव में, दरवाजा खोलकर उन्हें अन्दर आने का निमंत्रण देंगें! आप देखिए, यीशु को प्राप्त करने के द्वारा हम उस के द्वारा, लाए गए अनन्त जीवन के उपहार को प्राप्त करते हैं।

क्या यह सुन्दर नहीं है?

यीशु हमारे जीवन में आना चाहता है।

हम उसे अन्दर आने के लिए निमंत्रण दें।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

102

इस प्रकार हम उस मुफ्त दान को स्वीकार करते हैं। हम साधारण रूप से यह कहते हैं "यीशु तेरा धन्यवाद हो!
मेरे जीवन में आओ।
मेरे हृदय में आओ।
मेरे जीवन को नियंत्रित करो, मेरे हृदय को नियंत्रित करो।"
और जब यीशु अन्दर आ जाते है, हमें उन्हें अपने मित्र, अपने उद्धारकर्त्ता और अपने प्रभु व स्वामी के रूप में ग्रहण करना चाहिए।

103

दो महत्वपूर्ण घटनाएँ होती हैं जब हम यीशु को अपने हृदयों में आने के लिए कहते हैं - जब हम अपने जीवन में उसे ग्रहण करते हैं।

104

(मूलपाठ : १. यूहन्ना १ : ९)
सबसे पहले हम अपने पापों को स्वीकार करें और उसके क्षमादान को ग्रहण करें
"यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और विश्वासयोग्य है

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

105

और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य है।"
१. यूहन्ना १ : ९
मित्रों, यह एक सुन्दर प्रतिज्ञा है।

106

यह महत्व नहीं रखता कि हमने क्या किया या हम कहाँ थे, यह भी महत्व नहीं रखता कि हमारा जीवन किस प्रकार का था हम किस प्रकार जीते थे, यहाँ तक कि हम अत्यधिक भयंकर पापी थे हम यीशु के पास आ सकते हैं और उद्धार के मुफ्त दान को ग्रहण कर सकते हैं। अपने पापों को स्वीकार कर सकते हैं और पूरी तरह से और सम्पूर्ण पापों की क्षमा प्राप्त कर सकते हैं।

107

बाइबिल हमें बताती है कि यीशु ने समुद्र की गहराई में जाकर हमारे पापों का मूल्य चुका दिया है, ताकि हम उसे दोबारा याद न करें।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

108

मेरे मित्रों जब यीशु क्षमा कर देता है तो वह सब कुछ भूल जाता है।

क्या कोई ऐसा पाप है जिसे आप ने परमेश्वर के समक्ष स्वीकार किया है तो भी आप अब तक अपराधी हैं और अपराध के भार से दबे हैं हो सकता है कि आप यह अनुभव करते हैं कि कुछ पाप हैं जो परमेश्वर के लिए क्षमा करने के लिए बहुत बड़े हैं।

परमेश्वर ने जो कहा है हमें उस पर विश्वास करना चाहिए।१. यूहन्ना ५ : १० में ये शब्द स्पष्ट कर देता हैं कि यदि हम परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते हैं तो हम उसे झूठा ठहराते हैं।

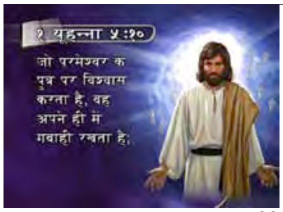

109

(मूलपाठ : १. यूहन्ना ५ : १०)
"जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह अपने ही में गवाही रखता है;

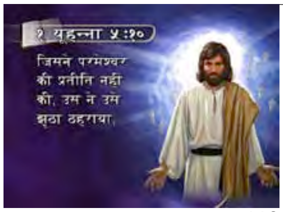

110

जिसने परमेश्वर की प्रतीति नहीं की, उस ने उसे झूठा ठहराया,

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

111

क्योंकि उस ने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है।"

१. यूहन्ना ५ : १०

जब यीशु यह प्रतिज्ञाएं करते हैं कि वह हमारे पापों को क्षमा कर देगें और हमारे अपराधों को दूर कर देगें, तो वह वैसा ही करेगें जैसा वे कहते हैं।

112

जब यीशु क्षमा करते हैं, वह भूल जाते हैं। और हमें भी भूल जाना चाहिए!

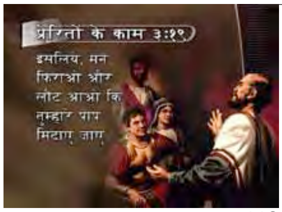

113

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ३ : १९)

प्रेरितों के काम ३ : १९ में पतरस के शब्दों में

"इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाए...."

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

114

आप देखते हैं, हम यीशु के पास आते हैं, हम मुफ्त उद्धार के दान को स्वीकार करते हैं, हम उसे अपने जीवनों में आने का निमंत्रण देते हैं, और सब से प्रथम बात जो घटती है वह यह है कि वे हमें क्षमा करते और हमें साफ करते व हमें धोते हैं और हमारे पापों को समुद्र की गहराईयों में डाल देते हैं।

मेरे मित्रों क्या यह सुन्दर नहीं हैं?

क्या आप अपने और मेरे उद्धारकर्त्ता से प्यार नहीं करते?

परन्तु कुछ अन्य बात भी हैं जो घटती है जब हम उनको अपने हृदय में आने के लिए निमंत्रण देते हैं।

115

वे हमें पापों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देते हैं। कि हम अधिक से अधिक उस की तरह बन जाए और उसके पदचिन्हों पर चलें।

चोर अब चोरी नहीं करता है।

झूठ बोलने वाला अब झूठ नहीं बोलता।

शराबी अब शराब नहीं पीता है।

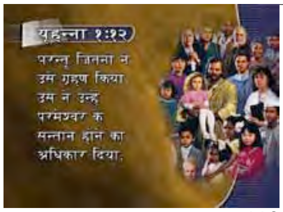

116

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : १२)

यूहन्ना १ : १२ में : "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया,

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

117

उन्हें जो उस के नाम पर विश्वास रखते है।"

वह हमें उसके बच्चे, उसकी पुत्री, उसके पुत्र बनने की शक्ति देगें।

अब हम शैतान के अधिकार में नहीं हैं।

अब हम अंधकार की संतान नहीं हैं।

118

वह हमें अपने पद चिन्हों पर चलने की शक्ति देगें।

जैसे ही हम उस पर विश्वास करते हैं, जैसे ही हम उद्धार के दान को स्वीकार करते हैं, वैसे ही वह हमें विजयी बनने की शक्ति देगें।

119

यदि हम दान को प्राप्त करने के बाद ठोकर खाते हैं और गिर जाते हैं, तब भी वह हमें बार -बार क्षमा करेगें।

तब वह हमें विजयी होने की शक्ति देगें –कि हम अधिक और अधिक यीशु की तरफ बढ़े।

यह हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु पर ईमानदारी, भरोसा, और विश्वास को सीखने की विकास प्रक्रिया है।

हम सिद्ध नहीं होंगे, परन्तु हम क्षमा किए जाएंगे।

शैतान अब हमारा प्रभु नहीं है।

यीशु हमारे प्रभु हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

120

आप देखिए, विश्वास का अर्थ, ईमानदारी करना, भरोसा और उद्धार के दान को स्वीकार करना है वह हमारे पापों को स्वीकार करता है। वह हमारे पापों को क्षमा करता है और हमें अपने पदचिन्हों पर चलने की भी शक्ति देता है।

121

जब हम अपने हृदय के द्वार पर खटखटाने का उत्तर देते हैं और यीशु को अन्दर आने का निमंत्रण देते हैं, तो वह हमारे पापपूर्ण हृदयों को साफ कर देते हैं और हमें क्षमा कर देते हैं। वह हमें बदलने की शक्ति भी देते हैं और पाप पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देते हैं और अधिक से अधिक उस की तरह बनने की शक्ति देते हैं।

122

और जब यीशु हमारे अन्दर रहते हैं, तो हम पूर्णरूप से यह जान सकते हैं कि हमारे पास अनन्त जीवन है। क्या आप जानते हैं?
हमें यह चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि हम बचाए जाएंगे और यीशु के साथ हमेशा रहेंगे या नहीं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

123

(मूलपाठ : १. यूहन्ना ५ : १२, १३)

"जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं; उसके पास जीवन भी नहीं है।

124

मैंने तुम्हें इसलिये लिखा है कि तुम परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो,

125

कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।"

१. यूहन्ना ५ : १२, १३

126

यीशु चाहते हैं कि हम जाने - यहाँ और अभी - कि हमारे पास अनन्त जीवन है।

हम यहाँ और अब यह जान सकते हैं कि जब हम अपने हृदयों में यीशु को आने का निमंत्रण देते है, तब हम अपने उद्धार का आश्वासन

प्राप्त कर लेते हैं।

यीशु प्रत्येक को सब जगह निमंत्रण देते है, ताकि

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

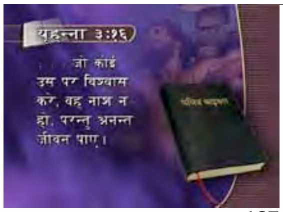

127

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : १६)

"जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यूहन्ना ३ : १६

संभवतः आप यह अनुभव करते हैं कि आप एक आशा रहित पापी हैं, परन्तु यह सच नहीं है परमेश्वर अत्यन्त असंभव परिस्थिति को विजय में बदल सकते है!

मसीह के लिए कोई भी जीवन इतना बुरा नहीं है।

कोई भी पाप इतना बड़ा नहीं है जो क्षमा न किया जा सके!

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

128

३१, दिस्मबर, १९९५ को जान क्लेन्सी नामक एक अनुभवी योद्धा -जो न्यूयार्क शहर में रहता था आग बुझाने वाला था, वह अपने समूह को एक मेनहट्टन जिले के निचले भाग में स्थित एक जलती हुई बहुमंजिली इमारत में ले गया जब आग नियंत्रण से बाहर हो गई, तब आग बुझाने वाले सैनिक इस सोच में पड़ गए कि क्या पता कोई इस इमारत में हो, यद्यपि जो लोग उस इमारत का प्रयोग कर रहे थे वे आवारा नशीले पदार्थो के अभ्यस्त शराबी और वेश्याएँ थीं। फिर भी, क्लेंसी और उसके साथियों ने यह इरादा किया कि वे नर्क जैसे तपते हुए अग्नि -कुण्ड में खोज बचाव का अभियान संचालन करने के लिए प्रवेश करेंगे। वह इमारत धुएं से भर गई और कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वे आग बुझाने वाले सैनिक अपने जीवन को खतरे में डाल कर उन आवारा लोगों को ढूंढ रहे थे जो इस इमारत को अल्पकाल के लिए एक घर के रूप में प्रयोग कर रहे थे अचानक दूसरी मंजिल की छत गिर गई जिस के कारण जॉन क्लेंसी फंस गया। उसके साथियों ने घबरा कर उसे प्रचण्ड़ अग्नि में से निकाला, अंत में जब उन्होंने उसे बाहर खींचा, तब बहुत देर हो चुकी थी उसका शरीर इतना जल चुका था कि वह

पहचाना नहीं जा रहा था। १९९५ का वह दिन उस आग बुझाने वाले बहादुर सैनिक की जिंदगी का आखिरी दिन था। उसने अपने पीछे अपनी पत्नी को छोड़ दिया था जिसके पेट में छः माह का गर्भ था और उसने भविष्य की योजना को भी पीछे छोड़ दिया था। क्लेन्सी का यह विश्वास था कि समस्त जीवन मूल्यवान है; इसलिए वह उन लोगों को बचाने के लिए खुद का जीवन खतरे में डालने के लिए तैयार हो गया था जो कि उस इमारत में थे उसने अपनी घर की सुरक्षा को उस जलती हुई आग के लिए छोड़ दिया था। वह आग में प्रवेश कर गया और अपना जीवन गवां दिया। वह एक जगह पर खड़ा न रह सका जब उसे यह पता था कि दूसरे मर रहें हैं। जब इस कहानी की बारीकियां सामने आई तब जांच करने वालों ने यह खोज की कि वह आग जानबूझ कर लगाई गई थी। एडविन स्मिथ नामक व्यक्ति जो उस इमारत में ही था, "नीचे और बाहरी" में से एक जो उस इमारत में ही था, उसने वह आग लगाई थी। परन्तु कटु सत्य यह है कि जॉन क्लेंसी जिस व्यक्ति को बचाने का प्रयत्न कर रहा था उसने ही उस इमारत में आग लगाई थी उसने अपना जीवन एक जानबूझकर आग लगाने वाले को दे दिया। यह यीशु मसीह का एक आश्चर्यजनक उदाहरण

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

है।

129

यीशु ने अपने स्वर्गीय घर की सुरक्षा को छोड़ दिया और इस दुनिया के नर्क रूपी अग्नि -कुण्ड की लौ में कूद गया। हमारा उद्धारकर्त्ता क्रूस पर चढ़ाया गया, और पाप की अग्नि ने उसे पूर्णतः भस्म कर दिया। जानबूझ कर अपनी पसंद के द्वारा हमने पाप किया। अपनी क्रोधी प्रवृत्ति, अपनी अनाज्ञाकारिता, अपने भोग विलास, अपने लालच, अपने झूठ बोलने के कारण हम ने इस संसार में आग लगा दी थी। मसीह मरे ताकि हम जीवित रह सकें। उसने क्रूस पर पाप की ज्वाला का अनुभव किया ताकि हम उस नर्क की ज्वाला का अनुभव न करें जब यीशु उस पाप को हमेशा के लिए जलाने के लिए आएगें। आज यीशु आप को यह आश्वासन देने की अभिलाषा कर रहे हैं कि आप हमेशा की जिन्दगी जी सकते हैं।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

130

वह सुन रहे हैं और प्रतीक्षा कर रहे हैं। आज आप क्यों नहीं अपने हृदय का दरवाजा खोलते हैं और अन्दर आने का निमंत्रण देते हैं और उसे अपने जीवन का उद्धारकर्त्ता और प्रभु मानते हैं? वे प्रतीक्षा कर रहे हैं! वे सुन रहे है! एक चीज है जो यीशु नहीं कर सकते हैं, वह आपको अपने हृदय के दरवाजे को खोलने के लिए आपके साथ जबरदस्ती नहीं कर सकते। उसने हम में से प्रत्येक को पसन्द करने या चुनने की शक्ति दी है। हमें उन में से एक होना चाहिए जो दरवाजा खोलते हैं! यदि हम दरवाजा खोलते हैं तो वह खुशी से अन्दर आएगें! मित्र, क्या आप इसी समय ऐसा करना चाहेंगे? एक क्षण की प्रतीक्षा किए बिना आप यीशु को अपने हृदय में आने का निमंत्रण देना पसन्द करेंगे?

131

यदि ऐसा है, तो मेरे साथ प्रार्थना करिए।

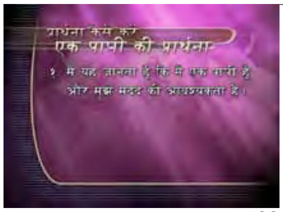

132

"प्रिय परमेश्वर, मैं यह जानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ और मुझे मदद की आवश्यकता है।

८ - अनन्त जीवन के लिए उत्पन्न

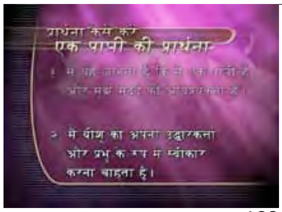

133

मैं यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करना चाहता हूँ।

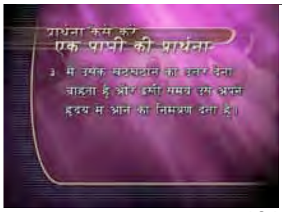

134

मैं उनके खटखटाने का उत्तर देना चाहता हूँ और इसी समय उन्हें अपने हृदय में आने का निमंत्रण देना चाहता हूँ।

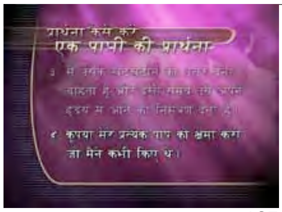

135

कृपया मेरे प्रत्येक पाप को क्षमा करें जो मैंने कभी किए थे।

कृपया मेरे जीवन को पूर्णरूप से नियंत्रण करें।

136

मैं चाहता हूँ कि यीशु मेरे हृदय में आए और उसे धोकर साफ करे और फिर उसके लिए जीने में मेरी मदद करे।

मेरी प्रार्थना को सुनने और उसका उत्तर देने के लिए तेरा धन्यवाद हो, यीशु के नाम से आमीन।"

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

1

न्यायाधीश आपके पक्ष में है।

2

कहा जाता है कि इंग्लैण्ड के राजाओं में से एक जेम्स प्रथम ने एक बार न्यायधीश बनने का प्रयास किया। उसने सावधानीपूर्वक मुकद्दमें के एक पक्ष को सुना। वह फैसला करने ही वाला था कि उसने मुकद्दमें के दूसरे पक्ष को भी सुना। फिर पूरी तरह उलझता गया और यह नहीं जानता था कि क्या करे। लोग जिन्हें वह पहले निर्दोष समझता था अब दोषी लग रहे थे। लोग जिन्हें वह दोषी समझता था अब निर्दोष लग रहे थे। अंत में निराश होकर उसने न्यायधीश पद लेने से इंकार कर दिया।

किंग जेम्स प्रथम ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया कि मैं केवल एक पक्ष को ही भली प्रकार सुन सकता था, किन्तु जब मैंने दोनो ही पक्षों को सुन लिया, मैं नहीं जानता कौन सही है। एक उलझे हुए न्यायधीश को सही फैसला करने में परेशानी होती है।

परमेश्वर एक निष्पक्ष, पूरी तरह न्याययुक्त और यर्थात न्यायी है। जब हमारा न्याय करता है वह किसी भी दशा में भ्रमित नहीं होता है।

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

3

(दृश्य)

बाइबिल हमें सिखाती है कि हम में से प्रत्येक के विरुद्ध परमेश्वर के समक्ष एक मुकद्दमा है।

4

(दृश्य)

अभी भी, हमें अदालत में बुलाया जा रहा है कि हम उस अदालत में उपस्थित होकर अपने जीवन और कार्यो का लेखा दें।

प्रत्येक स्त्री और पुरुष जो कभी जीवित थे उनका मुकद्दमा विश्व की सर्वोच्च अदालत में परमेश्वर के न्याय के कटघरे में विचाराधीन है।

पौलुस प्रेरित उस निर्धारित न्याय के विषय में बताता है जिसका पूरे संसार को सामना करना ही है:

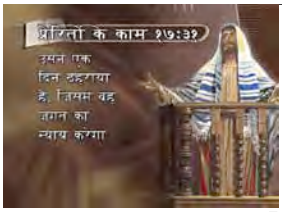

5

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १७ : ३१)

"उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह जगत का न्याय करेगा।"

प्रेरित के काम १७ : ३१

किसी को भी छूट नहीं मिलेगी कोई भी अदालत के बुलावे से बच नहीं सकता। बाइबिल स्पष्टता से कहती है कि प्रत्येक को उपस्थित होना पड़ेगा :

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

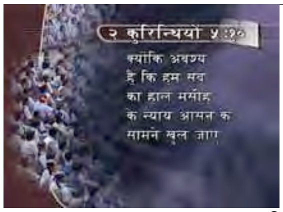

6

(मूलपाठ : २. कुरिन्थियों ५ : १०)

"क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए ----"

२ कुरिन्थियों ५ : १०

7

चाहे हम विश्वास करें या न करें।

चाहें हम पसन्द करें या न करें।

चाहें हम मसीही होने का दावा करें या न करें।

हम जो भी हों हम सब को उपस्थित होना ही है।

परमेश्वर के यहाँ कोई पक्षपात नहीं जब हमें स्वर्ग की अदालत बुलाएगी हमें उपस्थित होना ही है। क्यों?

पौलुस उत्तर देता है :

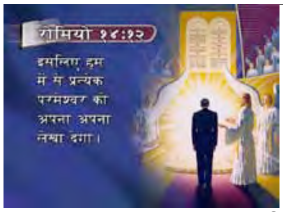

8

(मूलपाठ : रोमियो १४ : १२)

"इसलिए हम में से प्रत्येक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।"

रोमियो १४ : १२

9

स्वर्गीय अदालत का फैसला प्रत्येक मनुष्य के भाग्य को सदैव के लिए निर्धारित कर देगा और फैसला कभी न बदलने वाला होगा, क्योंकि उससे ऊँची कोई और अदालत अपील के लिए नहीं है !

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

10

(दृश्य)

परन्तु निर्णय लेने या सजा सुनाने से पहले जांच - पड़ताल होनी चाहिये। आइए बाईबिल की ओर मुड़ें और स्वर्ग में इस जांच -पड़ताल के दृश्य पर ध्यान दें। - दानिय्येल भविष्यवक्ता लिखता है :

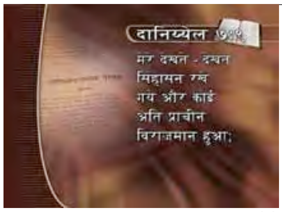

11

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : ९, १०)

"मेरे देखते - देखते सिंहासन रखे गये और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ;

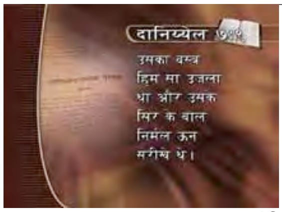

12

उसका वस्त्र हिम सा उजला था और उसके सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे।

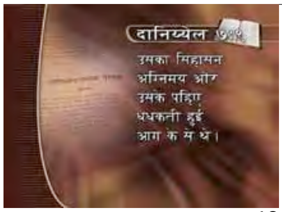

13

उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिए धधकती हुई आग के से थे;

14

"उसके सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी।

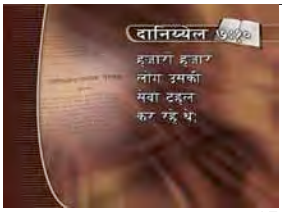

15

हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे;

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

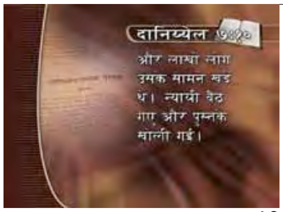

16

और लाखों लोग उसके सामने खड़े थे। न्यायी बैठ गए और पुस्तकें खोली गई।"

दानिय्येल ७ : ९, १०

17

यहाँ दानिय्येल परमेश्वर पिता या अति प्राचीन को उसके अनन्त सिंहासन पर बैठे और असंख्य दूतों से घिरा दिखाता है।

अब ध्यान दें कि दानिय्येल ने अगले दर्शन में क्या देखा:

18

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : १३)

"मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो,

19

मनुष्य की सन्तान सा कोई आकाश के बादलों पर आ रहा था !

20

वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा और उसको वे उसके समीप लाये।"

दानिय्येल ७ : १३

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

21

यहां परमेश्वर का पुत्र अति प्राचीन के समक्ष खड़े हुए दिखाया गया है। बिल्कुल पृथ्वी के अदालती दृश्य के समान।

अति प्राचीन न्याय आसन पर विराजमान है गवाह है स्वर्गदूत जिन्होंने सबकुछ देखा और लिखा और सिंहासन के सामने मनुष्य का वकील यीशु खड़ा है, जैसा यूहन्ना ने लिखाः

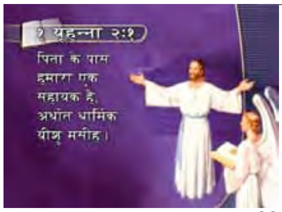

22

(मूलपाठ : १ यूहन्ना २ : १)

"पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह।"

१ यूहन्ना २ : १

23

(दृश्य)

अच्छा, आप कहेंगे प्रत्येक वहां उपस्थित है केवल उसे छोड़कर जिसकी जांच होती है अपने में यह सत्य है, लेकिन आइए देखें बाइबिल क्या कहती है :

24

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : १०)

"न्यायी बैठ गये और पुस्तकें खोली गयीं।"

दानिय्येल ७ : १०

प्रत्यक्ष रुप से इन पुस्तकों में जिनकी जांच होती है, उनके जीवन का लेखा है क्योंकि सुलेमान ने लिखाः

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

25

(मूलपाठ : सभोपदेशक १२ : १४)

"क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहें वे भली हों या बुरी न्याय करेगा।"

सभोपदेशक १२ : १४

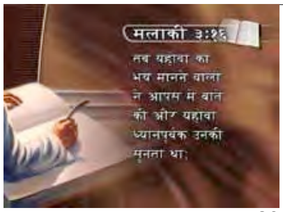

26

(मूलपाठ : मलाकी ३ : १६)

मलाकी जोड़ता है : "तब यहोवा का भय मानने वालों ने आपस में बातें की और यहोवा ध्यान पूर्वक उनकी सुनता था;

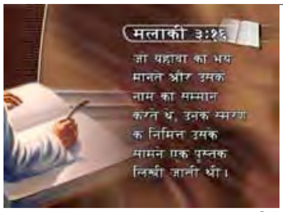

27

जो यहोवा का भय मानते और उसके नाम का सम्मान करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती थी।"

मलाकी ३ : १६, नया किंग जेम्स अनुवाद

परमेश्वर हर समय हमारा ध्यान रखता है जब हमारे हृदय उसकी ओर होते हैं। दूसरों को उत्साहित करने वाला हमारा प्रत्येक शब्द और दया का कार्य परमेश्वर लिख देता है। राजा दाऊद भी लेखे - जोखे के बारे में जानता था क्योंकि उस ने कहा :

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

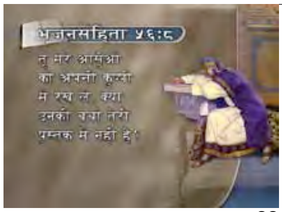

28

(मूलपाठ : भजनसंहिता ५६ : ८)

"तू मेरे आसुँओं को अपनी कुप्पी में रख ले, क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक में नहीं है?"

भजनसंहिता ५६ : ८

परमेश्वर आपके जीवन के सर्वाधिक गहरे दुःख को भी जानता है।

वास्तव में, परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है, क्योंकि दाऊद ने भी लिखा :

29

(मूलपाठ : भजनसंहिता १३९ : १, ३, १६)

"हे यहोवा तू ने मुझे जांच कर जान लिया है।

30

"तू मेरी पूरी चाल -चलन का भेद जानता है।"

31

----और मेरे सब अंग जो दिन - दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहिले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।"

भजनसंहिता १३९ : १, ३, १६

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

32

जबकि परमेश्वर हमारे विषय में सब कुछ जानता है, लेख प्रमाण रखना उसके लिए लाभदायक आवश्यक नहीं है लेख प्रमाण विश्व के लाभ के लिए रखे गए हैं कि प्रत्येक मुकद्दमें में परमेश्वर के प्रेम और न्याय का स्पष्ट प्रमाण हो ।

परमेश्वर के प्रति हमारी जवाबदेही एक गंभीर विचार है।

33

हर एक को सर्वाधिक बहुमूल्य उपहार जीवन का लेखा देना है! सुलेमान यही कह रहा था जब उसने लिखाः

34

(मूलपाठ : सभोपदेशक ११ : ९)

"हे युवक अपने लड़कपन में आनन्द कर और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह;

35

अपनी मनमानी कर और अपनी आंखों की अभिलाषा के अनुसार चल;

36

परन्तु यह जान ले कि इन सब बातों के विषय में परमेश्वर तेरा न्याय करेगा।"

सभोपदेशक ११ : ९

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

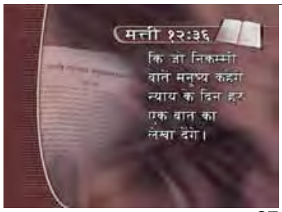

37

(मूलपाठ : मत्ती १२ : ३६, ३७)

मत्ती ने लिखा : "कि जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे।"

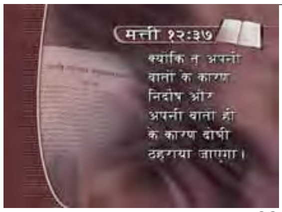

38

"क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।"

मत्ती १२ : ३६, ३७

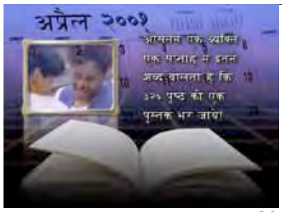
39

किसी ने आकंलन किया है कि औसतन एक व्यक्ति एक सप्ताह में इतने शब्द बोलता है कि ३२० पृष्ठ की एक पुस्तक भर जाएगी !

६० वर्षो में यह ३००० ऐसी पुस्तकों से अधिक हो सकता है !

40

न्याय के समय आपकी पुस्तकालय के पास कहने के लिए क्या होगा? इतना ही नहीं, उन शब्दों के पीछे उद्देश्य और कार्य भी प्रकाश में लाये जायेंगे:

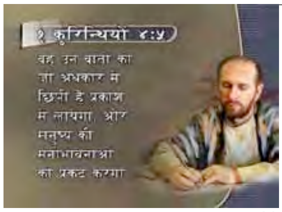

41

(मूलपाठ : १.कुरिन्थियों ४ : ५)

"वह उन बातों को जो अंधकार में छिपी हैं प्रकाश में लायेगा, और मनुष्य की मनोभावनाओं को प्रकट करेगा।"

१ कुरिन्थियों ४ : ५

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

42

उस दिन न तो कुछ मिटाया जाएगा और न छिपाया जाएगा !

मनुष्य अपने मित्रों और यहां तक कि अपने परिवारों को मूर्ख बनाने में सफल हो सकते हैं। परन्तु परमेश्वर को कोई भी मूर्ख नहीं बना सकता। वह मनोभावों को पढ़ता है !

43

आप जानते हैं, जब हमारे न्याय का दिन आएगा हम स्वयं को दो में से एक स्थिति में पाएंगे : या तो हमारी बीती हुई असफलताएँ यीशु के लहू से ढकी जा चुकी होगी या हमारा लेख प्रमाण हमें दोषी ठहराने के लिए खड़ा होगा और वास्तव में, यह नहीं कि हम क्या दावा करते हैं, किन्तु हम क्या करते हैं, इससे अन्तर पड़ता है!

44

(मूलपाठ : मत्ती १६ : २७)

हमें बताया गया है कि जब यीशु आयेगा, " वह प्रत्येक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।"

मत्ती १६ : २७

हमारे भले काम नहीं किन्तु परमेश्वर का अनुग्रह हमारे उद्धार का कारण है। परन्तु हमारे भले काम प्रकट करते हैं कि हमारे हृदय परमेश्वर को समर्पित हैं।

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

45

अब शायद आप कह रहे होंगें "यदि हमारा उद्धार अनुग्रह से है, तो हमारा न्याय हमारे कामों के अनुसार क्यों है?"

वह एक अच्छा प्रश्न है! डॉक्टर साकी कूबो ने अभी हाल ही में लिखा थाः

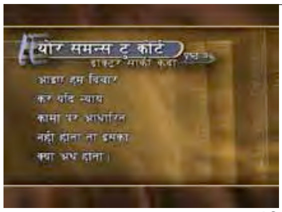

46

"आइए हम विचार करें यदि न्याय कामों पर आधारित नहीं होता तो इसका क्या अर्थ होता।

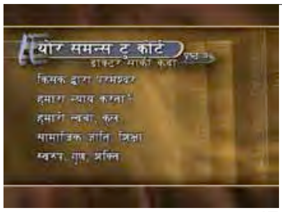

47

किसके द्वारा परमेश्वर हमारा न्याय करता? हमारी त्वचा, कुल, सामाजिक जाति, शिक्षा, स्वरुप, गुण, शक्ति,

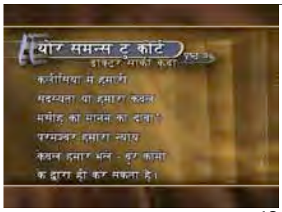

48

कलीसिया में हमारी सदस्यता या हमारा केवल मसीह को मानने का दावा? परमेश्वर हमारा न्याय केवल हमारे कामों, अच्छे या बुरे के द्वारा कर सकता है।" योर समन्स टु कोर्ट, पृष्ठ २० ।भले काम निश्चय ही सच्चे लोगों द्वारा नहीं किये जाते हैं

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

49

(दृश्य)

परमेश्वर और मनुष्य के लिए प्रेम से भरे हृदय के परिणाम अपने -आप हो जाते हैं। यीशु के साथ प्रेम सम्बन्ध ही उसके भक्तों को भले कार्यो के लिए प्रेरित करते हैं। सभोपदेशक की पुस्तक में निष्कर्ष निकालते हुए सुलेमान ने कहा:

50

(मूलपाठ : सभोपदेशक १२ : १३, १४)

"जब सब कुछ सुन लिया गया, निष्कर्ष यह है :

51

परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है।

52

"क्योंकि परमेश्वर प्रत्येक बात का न्याय करेगा।"

सभोपदेशक १२ : १३, १४

क्योकि मसीह के साथ मनुष्य के सम्बन्ध का न्याय उसके व्यवहार से होना है तो उस व्यवहार को मापने के लिए कोई स्पष्ट मापदण्ड होना ही चाहिए।

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

53

पृथ्वी पर हमारी न्याय प्रक्रिया में अदालती जांच का सामान्य उद्देश्य यह निर्धारित करना होता है क्या अपराध किया गया है क्या एक कानून तोड़ा गया है। केवल तब ही जब कानून का उल्लंघन हुआ है, एक आदमी दोषी पाया जा सकता है।

54

परमेश्वर के न्याय में एक कानून या मापदण्ड है, और याकूब स्पष्ट करता है कि कौन सा कानून ऊपर लगाया जायेगा।

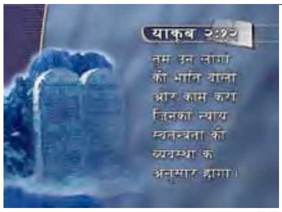

55

(मूलपाठ : याकूब २ : १२)

"तुम उन लोगों की भांति बोलो और काम करो जिनका न्याय स्वतन्त्रता की व्यवस्था के अनुसार होगा।"

याकूब २ : १२

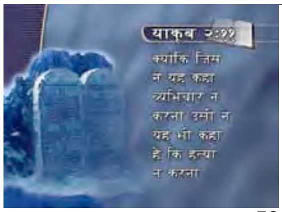

56

(मूलपाठ : याकूब २ : ११)

पिछले पद में याकूब आज्ञाओं में से दो का जिक्र करता है। "व्यभिचार न करना और हत्या न करना।" इसलिए परमेश्वर की दस आज्ञाओं की व्यवस्था ही स्वतन्त्रता की व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्य के जीवन का न्याय किया जाएगा।

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

57

(दृश्य)

न्याय केवल यह निश्चय करेगा कि मसीह और शैतान के बीच महान विवाद में हम किस ओर हैं।

क्या हम मसीह के साथ हैं?

क्या हमने उसे अपने में जीने दिया है?

58

क्या हमारे दिलों में उसके और उसकी इच्छा के प्रति, जो दस आज्ञाओं में व्यक्त की गयी है, असीम प्रेम है? क्या उसकी शक्ति द्वारा उसकी इच्छा का पालन करने की हमारी इच्छा है? क्या हम ने उस की व्यवस्था को अपने हृदय में लिखा है?

59

आप जानते हैं जब देशान्तर में बसने वाले एक देश के नागरिक होने की इच्छा करते हैं उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे उस देश के प्रति भक्ति की शपथ लें, वफादार नागरिक बनने और उस देश के कानून का पालन करने का वचन दें।

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

60

(दृश्य)
ठीक ऐसा ही मसीहियों के साथ भी है। जब वे मसीह को स्वीकार करते और उसके राज्य के नागरिक बनने की इच्छा करते हैं। परमेश्वर उनसे कहता है कि वे परमेश्वर के प्रति अपने
प्रेम और भक्ति की शपथ लें और उसके शासन की व्यवस्था का पालन करें।

61

यदि देशान्तर में रहने वाले सब अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति वफादार नहीं रहते।
कुछ बाहरी रुप से उस देश के भक्त नागरिक लगते हैं किन्तु बाद में विनाशक पाये जाते हैं।
जब यह प्रमाणित हो जाता है तब नागरिकता समाप्त करके उसे देश से निकाल दिया जाता है।

62

इसी प्रकार सब मसीही अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वस्त नहीं रहते। अभी धर्मी घोषित होना ही पर्याप्त नहीं है हमें उसके प्रति उसके आने तक विश्वस्त रहना है।
मसीह को मानने का दावा करना पर्याप्त नहीं है। हमें यीशु की आज्ञाकारिता और विश्वस्तता से पूर्ण सिद्ध जीवन को जीना होगा।

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

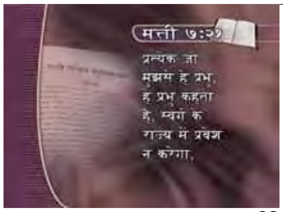

63

(मूलपाठ : मत्ती ७ : २१)

यीशु ने कहा "प्रत्येक जो मुझसे हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा,

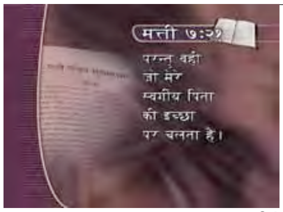

64

परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।"

मत्ती ७ : २१

भले और बुरे मसीह और शैतान के बीच पूरा संघर्ष परमेश्वर के प्रेममय चरित्र के विषय हैं।

65

और व्यवस्था चरित्र का लिखित मापदण्ड है। आश्चर्य न होगा जब यह अन्तिम न्याय में मुख्य रूप से उभरेंगे!

66

किन्तु सर्वाधिक चौंकाने वाला तथ्य जिसके बारे में मसीहियों का बहुत थोड़ा ज्ञान है कि स्वर्गीय अदालत अभी चल रही है!

वास्तव में, प्रकाशितवाक्य बाइबिल की अन्तिम पुस्तक प्रकट करती है कि परमेश्वर का न्याय अभी चल रहा है।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

67

इसीलिए प्रकाशितवाक्य के अंत में यूहन्ना संसार की अन्तिम चेतावनी और निमन्त्रण की रुपरेखा इन शब्दो में देता है:

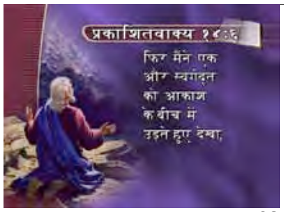

68

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : ६, ७)

"फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा,

69

उसके पास पृथ्वी के लोगों को सुनाने के लिए सुसमाचार था --

70

हर एक जाति, और कुल और भाषा और लोगों के लिए

71

उस ने बड़े शब्द से कहा परमेश्वर से डरो और उसकी महिमा करो क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है;

72

और उसका भजन करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद और जल के सोते बनाए।"

प्रकाशितवाक्य १४ : ६, ७

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

73

आप ध्यान देंगे कि यह संदेश यह नहीं कहता है कि न्याय करने का समय आने वाला है यह कहता है न्याय करने का समय आ पहुँचा है।"

74

इस तिगुणा संदेश का दूसरा भाग परमेश्वर के लोगों को झूठे धार्मिक सिद्धान्त से बाहर निकालने के लिए बुलाता है जो अंतिम दिनों में जीवित होंगे। इस अंतिम संदेश का अंतिम भाग दुनिया के लोगों को यह चेतावनी है कि प्रकाशितवाक्य १३ के पशु की शक्ति की उपासना से सावधान हो जाओ।

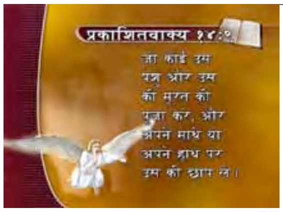

75

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : ९, १०)
"जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले"

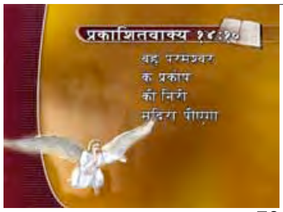

76

वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा पीएगा।"
प्रकाशितवाक्य १४ : ९, १०

अब, १४ और १५ पदों पर ध्यान दीजिए, जो तीन स्वगदूतों के संदेशों को उद्घोषित करते हैं:

77

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : १४, १५)
"और मैंने दृष्टि की और देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है,

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

78

जिसके सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है।"

79

फिर एक और स्वर्गदूत ने मंदिर में से निकल कर, उस से जो बादल पर बैठा था, बड़े शब्द से पुकार कर कहा,

80

'अपना हंसुआ लगाकर लवनी कर क्योंकि लवने का समय आ पहुँचा है,

81

इसलिए कि पृथ्वी की खेती पक चुकी है।"
प्रकाशितवाक्य १४ : १४, १५

82

पृथ्वी की कटनी क्या है यह दुनिया का अन्त है कटनी मसीह के दूसरे आगमन को लक्ष्य करती है। यीशु के दूसरे आगमन के पूर्व क्या होगा? परमेश्वर के न्याय का समय। उसका न्याय यह बता देगा कि कौन उसके वापिस आने के लिए तैयार है। परन्तु हमें इस विषय की गहराई से जांच करने के लिए रुकना चाहिए। शायद आप यह सोच रहे होंगे कि यह न्याय कब आरंभ होगा?

83

दानिय्येल की पुस्तक में एक अत्यधिक याद करने योग्य भविष्यवाणी में कुंजी मिलती है!

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

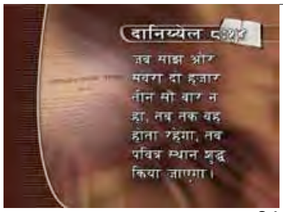

84

(मूलपाठ : दानिय्येल ८ : १४)

"जब सांझ और सवेरा दो हजार तीन सौ बार न हों, तब तक वह होता रहेगा, तब पवित्र स्थान शुद्ध किया जाएगा।"

दानिय्येल ८ : १४, किंग जेम्स अनुवाद

बाइबिल में यह सबसे लम्बे समय की भविष्यवाणी है।

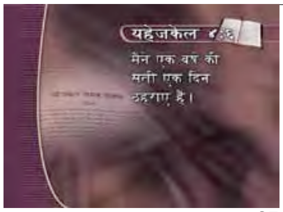

85

(मूलपाठ : यहेजकेल ४ : ६)

भविष्यवाणी में हमने ध्यान दिया कि एक दिन एक वर्ष को दर्शाता है।

"मैंने एक वर्ष की संती एक दिन ठहराए हैं।"

यहेजकेल ४ : ६

इसी प्रकार २३०० दिन २३०० वर्ष को दर्शाता है।

86

दानिय्येल के अध्याय ७,८ और ९ में पाई जाने वाली २३०० वर्षो की भविष्यवाणी विस्तृत भविष्यवाणी का भाग है।

87

यह भविष्यवाणी हमारे प्रभु का बपतिस्मा और क्रूस पर बलिदान की एकदम सही दिनांक निश्चित करती है। यह इस बात को भी बताती है कि न्याय का समय कब आरम्भ होगा।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

88

ये २३०० भविष्यवाणी के दिन या यह २३०० वर्षों की अवधि राजा अरस्तु के यरुशलेम के पूर्णनिर्माण की आज्ञा से आरम्भ हुई। इस्राएली बाबुल में ७० वर्षों के लिए बंदी थे और वे अपने घर जाने और उनके प्रिय शहर को पुनः बनाने को बेचैन थे।

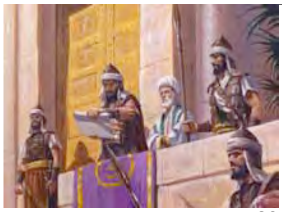
89

अन्त में सन् ४५७ ईसा पूर्व राजा ने लम्बे समय से की गई प्रतिज्ञाओं की राजाज्ञा निकाली। तेइस सौ वर्ष उस दिनांक से १८४४ ईसवी में समाप्त होते हैं।

आइए हम अपने पाठ में वापिस जाएं। जब तक दो हजार तीन सौ वर्ष या भविष्यवाणी के दिन या वास्तविक साल पूरे न हो लें, तब पवित्र स्थान शुद्ध किया जाएगा। हमने देखा कि यह भविष्यवाणी १८४४ में पूरी हुई पवित्र स्थान को शुद्ध करना क्या है?

90

१८४४ में बाइबिल जिसका वर्णन करती है जैसा कि परमेश्वर के न्याय का समय आरंभ हुआ। वह घड़ी आई। आप पूछ सकते हैं, किस प्रकार यह न्याय का समय पवित्र स्थान को शुद्ध करने से संबधित है जिसकी दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी कि ऐसा २३०० दिनों के अंत में होगा?

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

91

पवित्र स्थान को शुद्ध करना क्या है? इसका न्याय के समय के साथ क्या संबंध है? बाइबिल दो पवित्र स्थानों का वर्णन करती है एक पृथ्वी पर और दूसरा स्वर्ग में।

92

प्राचीन इस्राएल में, लोग प्रतिदिन अपने बलिदान पवित्र स्थान में लाते थे।

93

वहाँ वे अपने पापों को स्वीकार करते थे और एक मेम्ने का जीवन बलिदान करते थे जो कि भविष्य में होने वाली परमेश्वर के पुत्र यीशु की मृत्यु पर अपने विश्वास को दिखाते थे।

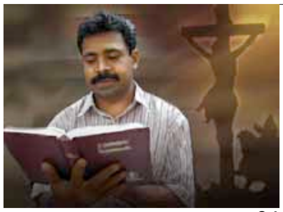
94

आज यदि हम पाप करते हैं, तो हम अपने पापों के लिए परमेश्वर से क्षमा मांगते हैं क्योंकि यीशु हमारे पापों का मुल्य चुकाने के लिए हमारे बदले मरा।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

95

किस प्रकार कलवरी से पहले लोगों के पास कोई बलिदान नहीं था जिसे वे पीछे देखते इसलिए विश्वास के द्वारा वे उस समय जब परमेश्वर का मेम्ना उनके लिए मरा उसकी अपेक्षा आगे की ओर देखते थे। एक निर्दोष पशु के बलिदान के कार्य के द्वारा वे उद्धारकर्त्ता में अपने विश्वास को स्वीकार करते थे जो उनके क्षमा प्राप्त करने को संभव बनाने के लिए आएगा और जान देगा।

96

तब उनके पाप प्रतिकात्मक रूप से पवित्र स्थान में याजक के द्वारा परम पवित्र स्थान के परदे के सामने याजक के पशु के रक्त के छिड़कने से स्थानान्तरित किए जाते थे।

97

तब प्रत्येक वर्ष में एक दिन, इस्राएल के लोग अत्यन्त पवित्र और विधिपूर्वक एक सभा बुलाते थे, जो अत्यंत प्रायश्चित या पवित्र स्थान को साफ करने का दिन कहलाती थी।

इस्राएल के लोगों के लिए यह न्याय का दिन होता था।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

98

प्रायश्चित के दिन के दस दिन पूर्व, तुरही फूंकी जाती थी, जो इस्राएलियों को याद दिलाती थी कि वे अपने पापों का प्रायश्चित करने और उन्हें स्वीकार करने के लिए अपने जीवन की सूची तैयार करले।

99

"क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिए तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित किया जाएगा,

100

और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे।"

लैव्यवस्था १६ : ३०

101

अब इब्रानियों की पुस्तक इसे स्पष्ट करती है कि पृथ्वी का पवित्र स्थान और उसकी सभा स्वर्ग के पवित्रस्थान का एक उदाहरण थी जहाँ मसीह हमारा महायाजक हमारे पापों को क्षमा करता है।

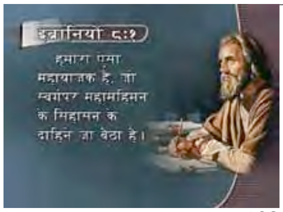

102

(मूलपाठ : इब्रानियों ८ : १,२)

पौलुस कहता है, "हमारा ऐसा महायाजक है, जो स्वर्गपर महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा है,

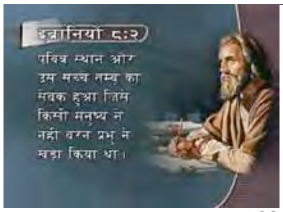

103

पवित्र स्थान और उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं वरन प्रभु ने खड़ा किया था।"

इब्रानियों ८ : १, २

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

104

(मूलपाठ : इब्रानियों ९ : ११, १२, २४)

फिर से : "परन्तु मसीह महायाजक होकर आया -----

105

अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया,

106

हमारे लिए प्रायश्चित द्वारा अनन्त पाप से मुक्ति प्राप्त किया ---

107

क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं किया,

108

जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना हैं; पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया,

109

ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे-------"

इब्रानियों ९ : ११, १२, २४

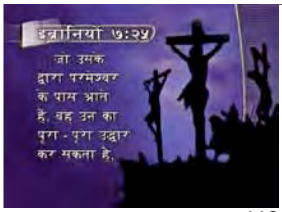

110

(मूलपाठ : इब्रानियों ७ : २५)

"-------जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उन का पूरा - पूरा उद्धार कर सकता है,

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

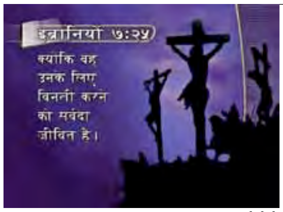

111

क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।"

इब्रानियों ७ : २५

वास्तविक निवास स्थान या पवित्र स्थान स्वर्ग में है। जो कुछ पृथ्वी पर होता है वह सबकुछ उद्धार की योजना में जो कुछ होता है उसका नमूना है। यीशु वह मेम्ना है जो मरता है। यीशु वह याजक है जो जीवित है। यीशु हमारा महायाजक है जिस प्रकार इस्राएलियों का महायाजक साल में एक बार परम पवित्र स्थान में प्रवेश करता था उसी प्रकार अन्त के समय में यीशु अपने न्याय के कार्य को सम्पन्न करने के लिए प्रवेश करेंगे।

112

(मुलपाठ : मत्ती १० : ३२, ३३)

न्याय के दिन, यह हमारा मसीह के साथ संबंध और व्यवहार है जो हमारे अनन्त जीवन को स्थिर करता है। मसीह हमें बचाना चाहता है। हमें बचाने के लिए जो भी वे कर सकते हैं वह कर रहे हैं। वह कहते हैं, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा,

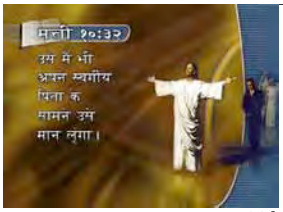

113

उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के समाने मान लूंगा।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

114

परन्तु जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा।"

मत्ती १० : ३२, ३३

115

आप देखते हैं कि न्याय के दिन आप अकेले ही खड़े नहीं होंगे! यदि हमने यीशु मसीह को स्वीकार कर लिया है, तो वह भी हमें अपने पिता के सामने स्वीकार करेगें। यदि हम मसीह के हैं तो वह हमारा वकील है। यीशु के द्वारा हम परमेश्वर के सामने ऐसे खड़े होंगे जैसे कि हमने कभी पाप न किया हो।

116

हमारे अभिलेख केवल हमारे उद्धारकर्त्ता के प्यारे जीवन को दिखाएंगे और उसके सिद्ध जीवन का श्रेय हमें प्राप्त होगा। इसलिए, हे मित्रों, जो यीशु को अपने पूरे मन और आत्मा से प्रेम करते हैं और उसके पीछे चलते हैं उन्हें न्याय के दिन से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि यीशु अपने बहाए गए लहू को दिखाएगा कि उसने अंगीकार किए गए प्रत्येक पाप को ढक दिया क्योंकि यूहन्ना ने लिखा :

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

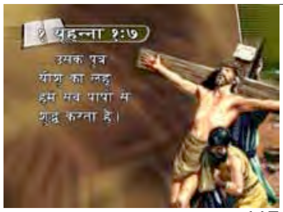

117

(मूलपाठ : १. यूहन्ना १ : ७)

"-----उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।"

१. यूहन्ना १ : ७

118

(दृश्य)

हम पृथ्वी के अंतिम समय में रह रहे हैं। १८४४ से स्वर्ग की अदालत में मसीह के आगमन के पूर्व न्याय के लिए बैठक बुलाई गई है।

119

(दृश्य)

इसमें कोई संदेह की बात नहीं है कि न्याय हाबिल से आरंभ हुआ, वह प्रथम धार्मिक व्यक्ति था जो पृथ्वी ग्रह पर मरा।

120

(मूलपाठ : १. पतरस ४ : १७)

पौलुस ने लिखा है : "क्योंकि वह समय आ पहुँचा है कि पहिले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए।"

१.पतरस ४ : १७

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

121

अदालत में हम हाबिल के दिन को अपने मस्तिष्क की आँख से उसी तस्वीर को देख सकते हैं।
जिस प्रकार अदालत में उसका मामला आता है, परमेश्वर हाबिल के जीवन को देखता है और वहाँ परमेश्वर के मेम्ने की मृत्यु को उसके ग्रहण करने का अभिलेख है।

122

बाइबिल में अभिलेख किया गया हाबिल के अंतिम कार्यो में से एक कार्य वह बलिदान था जो उस ने चढ़ाया, जो कि आने वाले उद्धारकर्त्ता में उसके विश्वास को दर्शाता है। मसीह के लोहू के द्वारा उसके सभी पाप ढक दिए गए।

123

आप आश्वासित हो सकते हैं कि यीशु, हाबिल का वकील अपने कील से छिदे हुए हाथों को बढ़ाकर कहता है पिता, मेरे रक्त ने, हाबिल के अपराध को चुका दिया और क्या आपने उन अनगिनत स्वर्गदूतों को आनन्दित होते हुए नहीं सुना जब यीशु कहते है,
"जीवन की पुस्तक में हाबिल का नाम लिखो! "
और उसका नाम अब भी वहाँ है!
जिस प्रकार मसीह ने प्रतिज्ञा की थी:

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

124

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ३ : ५)

"जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहनाया जाएगा,

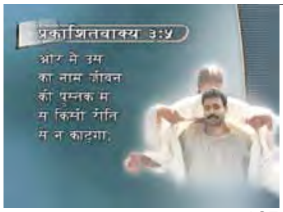

125

और मैं उस का नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा;

126

पर उस का नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूंगा।"

प्रकाशितवाक्य ३ : ५

127

और इसमें कोई शंका की बात नहीं कि यहूदा का नाम भी स्वर्ग की अदालत में उठाया गया। यहूदा मसीह का अनुयायी था उसके शिष्यों में से एक।

वह पूर्णरूप से बुरा नहीं था, परन्तु उसका जीवन उसके रोजगार से मेल नहीं खाता था। वह मसीह को सर्वश्रेष्ठ जानकर प्रेम नहीं करता था।

128

कभी कभी वह मसीह की ओर खिंच जाता था, परन्तु उसकी एक कमजोरी दूसरी कमजोरी को बढ़ाती गई और अन्त में उसने सचमुच अपने

प्रभु को चांदी के तीन सिक्कों के लिए बेच दिया! तब दुःख में उसने अपने आप को फांसी लगा ली!

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

129

यीशु यहूदा से प्रेम करते थे। यहाँ तक कि उसने अंतिम भोज की रात को झुककर यहुदा के धूलभरे पांव धोए। यीशु ने उस घमंडी ह्रदय को छूने की आशा की। वह न्याय के दिन उसके वकील के रूप में उसके साथ खड़ा होना चाहता था,

130

परन्तु यहूदा दूर चला गया। यीशु को यहूदा का नाम दुहराने में कितना दुःख हुआ होगा। हमारी स्वयं की धार्मिकता न्याय के समय में काम नहीं आएगीः

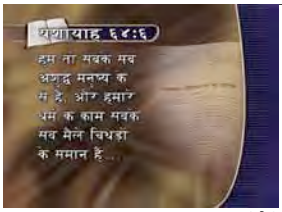

131

(मूलपाठ : यशायाह ६४ : ६)
"हम तो सबके सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सबके सब मैले चिथड़ों के समान हैं------"
यशायाह ६४ : ६

132

वे लोग जो अपने जीवन में मसीह को प्रथम स्थान हमेशा देते हैं। केवल वे ही मसीह की धार्मिकता का पहिरावा पहन सकते हैं बिना उस पहिरावे के, कोई भी मनुष्य न्याय के दिन स्थिर नहीं रह सकेगा है। इसलिए यहूदा का नाम जीवन की पुस्तक से काट डाला है।

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

133

यह एक पवित्र समय है जिसमें हम रह रहे हैं। इस्राएलियों की तरह ही, हमें भी अपने जीवन की सूची बनाने की आवश्यकता है। हमें यीशु के साथ अपनी की गई प्रतिज्ञा को बनाए रखने की आवश्यकता है, क्योंकि केवल इसी अदालत में हमें खड़े होने की एक संभावित तैयारी करनी है। शीघ्र ही मनुष्य का परीक्षा काल बन्द हो जाएगा और आज्ञा निकाली जाएगी:

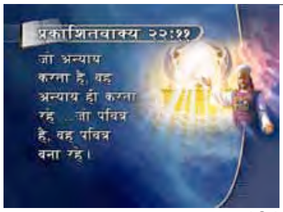

134

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २२ : ११)
"जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे---जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे।"
प्रकाशितवाक्य २२ : ११

उस समय में, परमेश्वर ने जो क्षमा और दया इतने लम्बे समय से मनुष्य को दी थी वह वापस ले ली जाएगी। मनुष्य की भाषा में सब से दुःखदायी शब्द उन सब के होंगे जिन्होने उद्धार को खो दिया है जिन्होंने मसीह को अपने प्रभु और वकील के रूप में ग्रहण नहीं किया है।

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

135

(मूलपाठ : यिर्मयाह ८ : २०)

वे कहेंगे, "कटनी का समय बीत गया, फल तोड़ने की ऋतु भी समाप्त हो गई और हमारा उद्धार नहीं हुआ!"

यिर्मयाह ८ : २०

तब यीशु दुनिया में वापिस आएगा, जैसा हम पढ़ते हैं।

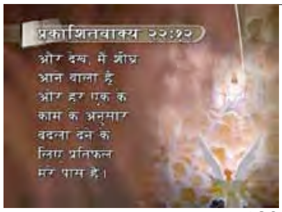

136

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २२ : १२)

"और देख, मैं शीघ्र आने वाला हूँ और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।"

प्रकाशितवाक्य २२ : १२

137

मित्र, न्याय के समय में यीशु आपका वकील बनने की अभिलाषा करते हैं। वह कलवरी पर उसके बलिदान को ग्रहण करने की आप से अभिलाषा करते है। वह अभिलाषा करते है कि आप उसके सामने अपने पापों को स्वीकार कर लें ताकि वह उन्हें मिटा सके। वह आपके नाम को जीवन की पुस्तक में लिखने की अभिलाषा करते है। यूहन्ना उन लोगों का वर्णन करता है जो उस नगर में प्रवेश करेंगे या नहीं करेंगे।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

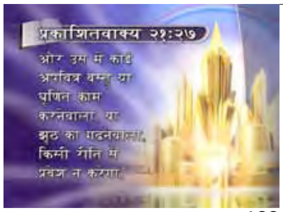

138

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २१ : २७)

"और उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला , किसी रीति से प्रवेश न करेगा,

139

पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।"

प्रकाशितवाक्य २१ : २७

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

140

क्या आप इसी समय यीशु के लिए अपने हृदय के द्वार को खोलना पसन्द करेंगे? क्या आप उसे अपने जीवन में से उस वस्तु को निकालने के लिए कहेंगे जो उसके राज्य में आपके अस्तित्व को रहने देने के लिए स्वीकार नहीं करने देती? न्याय के समय में परमेश्वर हमारे विषय में सब कुछ बताता है। इस सम्पूर्ण विश्व में सब कुछ प्रकट किया जाएगा। हमारे सारे अभिलेख लेखाबद्ध है। हमारे सारे पापों को ढांकना चाहेंगे- यीशु के रक्त से ढके रहेंगें? क्या आप चाहेंगे कि मसीह आगे बढ़े और कहे, "हाँ यह पुरूष और महिला मेरे लोगों में से एक है। मैंने इनके पाप क्षमा कर दिए हैं। मैंने उनके पापों को मिटा दिया है। मैंने उनकी गलतियों को क्षमा कर दिया है। उनके पाप मेरे रक्त से ढ़क गए हैं। अभिलेख में से हमेशा के लिए मिटा दिए गए हैं। यीशु स्वर्ग के सिंहासन पर खड़ा है। वहाँ न्याय के समय आप के उद्धारकर्त्ता के रूप में खड़ा है। इसी समय इसी क्षण! क्या आप उनके पास आएंगे? क्या आप उनको अपना पूरा जीवन देंगे? क्यों नहीं आप अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाएं जब हम प्रार्थना करें और कहें, "हाँ प्रभु! मेरा जीवन ले लीजिए मैं आपका होना चाहता हूँ।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

1

क्या सचमुच कोई अन्तर पड़ता है?

2

क्या आपने ध्यान दिया है कि शहरों में किस प्रकार से अपराध बढ़ रहे हैं?
यह कई आश्चर्यजनक रूपों में दिखाई देता है।

3

एक दिन एक आदमी पुलिस मुख्यालय के अन्दर तेज चलता हुआ आया। वह बहुत नाराज था। उसके घर में कोई घुस आया था और बहुमूल्य चीजों को लेकर चला गया था। वह चोर की एक झलक देखने में सफल हुआ था और पुलिस से मांग की कि इस के लिए कुछ करे। इसलिए दफ्तर पदाधिकारी उसे लूटेरों के फोटो के ढ़ेर के पास ले गए और उस आदमी को चित्र देखकर चोर को पहचानने के लिए कहा।

4

अचानक अधिकरी ने कहा रूक जाइए, उसने एक पन्ने को रोकते हुए उस व्यक्ति के चेहरे की और ध्यान से देखा और कहा, ये आप हैं! पुलिस अधिकारी ने कहा "आपकी गिरफ्तारी के लिए वारेन्ट है!" हुआ यह कि वह क्रोधित व्यक्ति जो न्याय की मांग करता पुलिस के दफ्तर में आया थ, स्वंय ही अपराधी घोषित किया गया!

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

5

अपराध और हिंसा सब ओर है। वहाँ भी जहाँ आप आशा नहीं कर सकते काम करने की जगह पर, कारखानों में गावों में शहर में और नगर में।

6

देशों में दंगा, क्रान्ति और डाका डालना आम बात है रास्ते सुरक्षित नहीं हैं। हत्या, अपहरण, आतंकवाद, बमकाण्ड, लूटना, बलात्कार, चोरी गबन करना और सरकारी भ्रष्टाचार दुनिया के सभी देशों में प्रत्येक दिन सूचित किया जाता है।

क्यों अपराध बढ़ रहा है?

अव्यवस्था के अभूतपूर्व बढ़ोतरी के पीछे क्या है?

हमारी दुनिया को क्या हो गया है?

7

पश्चिमी देशों में और दुनिया के सुसम्पन्न देशों में एक नई पीढ़ी के नवयुवक प्रश्न कर रहे हैं, सच्ची बातों में भी संदेह कर रहे हैं, और चुनौती दे रहे हैं। परमेशवर वयस्कों को अपने बच्चों के लिये आदर्श भूमिका के लिए पुकार रहा है। बच्चे अपने आस पास के समाज के व्यवहार की नकल उतार रहे हैं। उनके आध्यात्मिक उदाहरण कौन होंगे?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

8

पिता अपने काम में और कर देने में चोरी करते हैं, माताएँ गर्भपात करातीं है और दोनो माता पिता एक दूसरे को धोखा देते हैं।

9

बच्चे यह सब देखते हैं! टूटता हुआ घर अप्रिय निशान छोड़ जाता है!यदि माता पिता बच्चों को सही और गलत की शिक्षा नहीं देगें तो कौन देगा? निश्चित है कि माता पिता स्कूल पर इतना बड़ा उत्तरदायित्व नहीं छोड़ सकते !बहुत सारे स्कूल नैतिक जीवन के महत्व को नहीं सिखाते हैं। एक साधारण विश्वास जगह ले रहा है कि हम लोग बाईबिल के नैतिक स्तर से कहीं आगे बढ़ गये हैं!

10

आज भी कुछ कलीसियाएं यह सिखा रही हैं कि परमेश्वर का गलत और सही स्तर अब और लागू नहीं होता है।

11

वे कहती हैं कि उसकी आज्ञाओं को समाप्त कर दिया गया है,

12

या वे हमसे अब और सम्बधित नहीं है,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

13

या इन्हें मानना असम्भव है,

14

परिणामतः बहुत से लोग अपनी मनमानी कर रहे हैं और समाज टूटते हुए घर, अनियन्त्रित बच्चे, उग्र अपराधों की फसल काट रहा है।

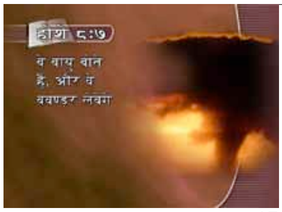

15

(मूलपाठ : होशे ८ : ७)

होशे भविष्यवक्ता के शब्दों में, "वे वायु बोते हैं, और वे बवण्ड़र लेवेंगे।"

16

लेकिन प्रश्न पूछा जाना चाहिए कि कौन निश्चित करता है कि स्थिति सही है या गलत? क्या नैतिक लोगों की नैतिकता कभी -कभी अपूर्ण नहीं होती? अगर हमारे बाहर गलत और सही का कोई स्तर नहीं है, तो हम उचित - अनुचित का अन्तर खो बैठते हैं।

17

(मूलपाठ : नीतिवचन १६ : २५)

परन्तु बाईबिल हमें याद दिलाती है कि हमलोग गलत और सही की पहचान नहीं कर सकते। "ऐसा भी मार्ग है, जो मनुष्य को सीधा देख पड़ता है, परन्तु उस के अन्त में मृत्यु ही मिलती है।"

नीतिवचन १६ : २५

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

18

(मूलपाठ : २. तीमुथियुस ४ : ३)

प्रेरित पौलुस ने भविष्यवाणी की थी : "क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे,

19

क्योंकि कानों की खुजली के कारण अपने लिए बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे;

20

और अपने कान सत्य से फेरकर कथा कहानियों पर लगाएंगे।"

२. तीमुथियुस ४ : ३, ४

21

हाँ, दुःख की बात यह है कि हम पाते हैं के नियमों को हटा देने से हम लोगों को स्वतंत्रता नहीं मिलती! सही और गलत के स्तर को हटा दें तो व्यवस्था आ जाएगी।

22

यदि आप यातायात की बत्ती और संकेत हटा दें तो रास्ते और राजपथ पर अव्यवस्था आ जाएगी।

23

नियम क्या है?

क्या हम लोग जान सकते है, सही या गलत क्या है?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

24

बहुत समय पहले परमेश्वर ने हमलोगों को अपराध मुक्त समाज के लिए नुस्खा दिया था।
और यदि हमेशा उसको पालन करते रहे तो अपराध कभी न जन्म लेगा!
पृथ्वी पर कहीं भी सभी लोग सुरक्षित और खुश रहेंगें।

25

(मूलपाठ : निर्गमन २० : २)
जब इस्राएलियों ने सीनै पर्वत के नजदीक डेरा डाला था परमेश्वर उनसे मिलने के लिए आया और उस ने कहा "कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिश्र देश से निकाल लाया हूँ।"
निर्गमन २० : २

26

(दृश्य)
परमेश्वर ने स्वंय को उनके दासत्व से छुड़ानेवाला पहचान कराया। वही एक है जिसने उनके सामने लाल सागर पर रास्ता बनाया। वह उनका बचाने वाला था। दूसरे शब्दों में वह कह रहा था, "मैं आपके लिये चिंता करता हूं आप मुझ पर विश्वास कर सकते हैं।"

27

तब उसने अपनी पवित्र आज्ञा को बोला कि लोगों को शान्ति और सुरक्षा से जीने के लिए ज्ञान मिलें जिससे वह क्या सही है और क्या गलत है जाने।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

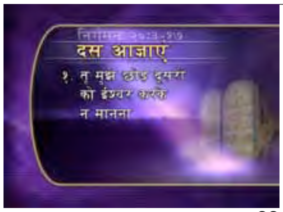

28

चलिए जल्दी से दस आज्ञाओं की सूची को देखें जो उसने सीनै पर्वत पर कहीं

(मूलपाठ : दस आज्ञा निर्गमन २० से)

"तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना....

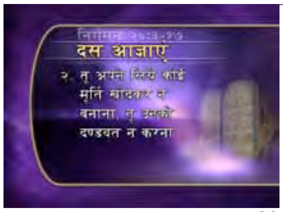

29

"तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, तू उनको दण्डवत न करना....

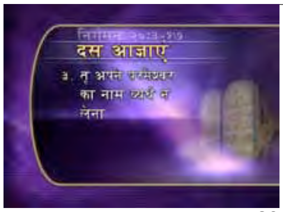

30

"तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना.......

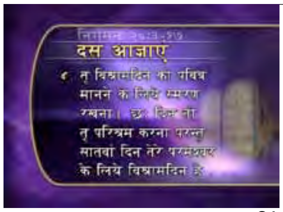

31

"तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करना परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर के लिये विश्रामदिन है......

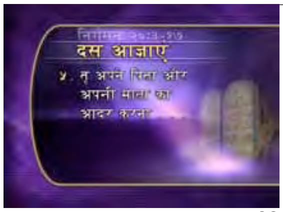

32

"तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना......

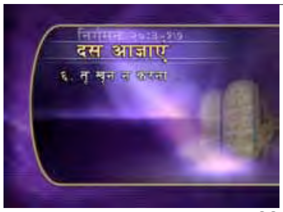

33

"तू खून न करना.....

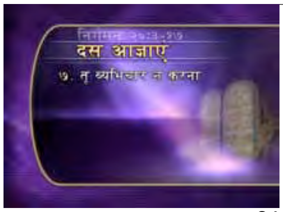

34

"तू व्यभिचार न करना।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

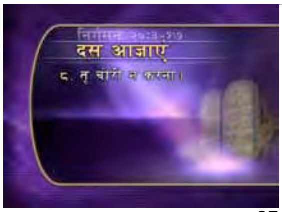

35

"तू चोरी न करना।

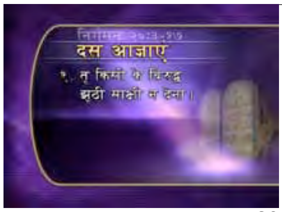

36

"तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।

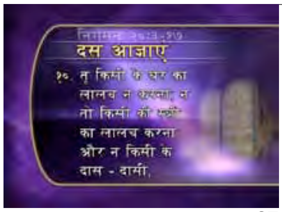

37

"तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना; और न किसी के दास -दासी,

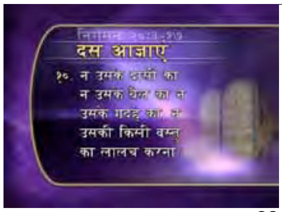

38

न उसके दासी का न उसके बैल का न उसके गदहे का, न उसकी किसी वस्तु का लालच करना।"
निर्गमन २० : ३ -१७

39

(दृश्य)
जैसे इस्राएली लोग सुन रहे थे वे बहुत अधिक प्रभावित हुए यदि वह परमेश्वर की इच्छा थी तो वे निश्चय करेंगे !

40

फिर भी, यह जानते हुए कि मनुष्य कितना भूलक्कड़ हो सकता है, परमेश्वर ने दस आज्ञाओं को दो पत्थर की स्लेटों पर अपनी उंगलियों से लिखा :

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

41

(मूलपाठ : निर्गमन ३१ : १८)

"जब परमेश्वर मूसा से सीनै पर्वत पर ऐसी बातें कर चुका,

42

उसने साक्षी देनेवाली पत्थर की दोनों तख्तियाँ दी,

43

परमेश्वर की अपनी उंगली से लिखी हुई पत्थर की तख्तियाँ दी।"

निर्गमन ३१ : १८

44

जो भी, यह पहली बार था कि परमेश्वर ने लिखित रूप में अपनी आज्ञा दी थी, ये आज्ञाएँ अनन्तकाल से विद्यमान थीं। सीनै पर्वत से बहुत पहले, या आदम -हव्वा से पहले, अनन्त, न बदलने वाला उचित का स्तर परमेश्वर के स्वर्गीय शासन का मूल आधार था।

45

सचमुच में, स्वर्गदूत भी परमेश्वर की आज्ञा द्वारा शासित किये जाते हैं। उनको चुनने दिया गया था कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करें या इन्कारकर उसके विरुद्ध विद्रोह करें।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

46

शैतान और उसके स्वर्ग- दूतों ने अपनी मनमानी करने का और अपना नियम बनाने का निर्णय लिया। और यही विद्रोह उन्हें स्वर्ग से बाहर निकलने का कारण बना।

47

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १२ : ७ -९)

बाइबिल बताती है, "फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले और अजगर और उसके दूत उससे लड़े,

48

परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उनके लिये फिर जगह न रही।

49

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना साँप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमानेवाला है;

50

पृथ्वी पर गिरा दिया गया और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।"

प्रकाशितवाक्य १२ : ७ - ९

लेकिन वहाँ पर स्वर्गदूत थे जिन्होंने परमेश्वर के पीछे चलने का निश्चय किया और उसकी आज्ञा के साथ विश्वस्त रहे।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

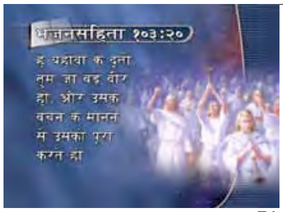

51

(मूलपाठ : भजनसंहिता १०३ : २०)

"हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो।"

भजनसंहिता १०३ : २०

52

अदन की बारी में आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा का ज्ञान था, इसलिये उन्होंने पाप करने के बाद लज्जा और अपने को दोषी महसूस किया।

53

और जब कैन क्रोधित हुआ क्योंकि परमेश्वर ने हाबिल की भेंट को स्वीकार किया और उसकी नहीं, परमेश्वर ने उससे पूछा,

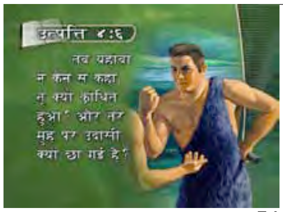

54

(मूलपाठ : उत्पत्ति ४ : ६, ७)

"तब यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है?

55

यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है।"

उत्पत्ति ४ : ६, ७

परमेश्वर के कानून का नियंत्रण हर समय होना चाहिये क्योंकि हमें बताया गया है कि,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

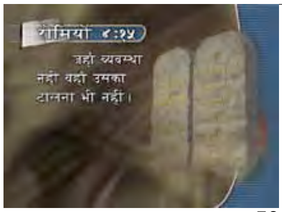

56

(मूलपाठ : रोमियों ४ : १५)
"....जहाँ व्यवस्था नहीं वहाँ उसका टालना भी नहीं।"
रोमियों ४ : १५

57

वेबस्टर न्यू वर्ल्ड कालेज डिक्शनरी कहती है,
"उल्लघंन.... आज्ञा, कर्त्तव्य आदि का उल्लघंन करना, पाप...."

58

सीनै पर परमेश्वर से आज्ञा देने से पहले इब्राहीम इन आज्ञाओं को जानता और मानता था।

59

(मूलपाठ : उत्पत्ति २६ : ५)
परमेश्वर ने कहा था वह इब्राहीम को आशीष देगा और उसके वंश को, "क्योंकि इब्राहीम ने मेरी मानी और जो मैंने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं, विधियों और व्यवस्था का पालन किया।"
उत्पत्ति २६ : ५

60

जी हाँ, सीनै से बहुत पहले, यूसुफ की संवेदनशील अन्तरात्मा ने पोतीफर की पत्नी द्वारा लाई परीक्षा का सामना करने में उसकी सहायता की, यह कह कर,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

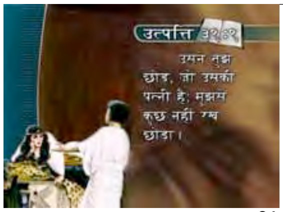

61

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३९ : ९)

"उसने तुझे छोड़, जो उसकी पत्नी है; मुझसे कुछ नहीं रख छोड़ा।

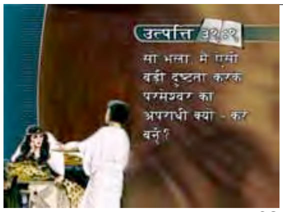

62

सो भला, मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों- कर बनूँ?"

उत्पत्ति ३९ : ९

63

यूसुफ जानता था कि व्यभिचार करना पाप था; वह परमेश्वर के सही और गलत के स्तर को जानता था। उसने दृढ़ता से निर्णय लिया कि वह परमेश्वर की पवित्र आज्ञा को नहीं तोड़ेगा!

64

(दृश्य : ४ सेकेन्ड)

इस्राएलियों को बताया गया था कि परमेश्वर की सेवा करें और आज्ञा माने पर मिश्र में जब वे अपने कष्टकर बन्दी- स्थिति में थे, वे परमेश्वर के नियम को भूल गये।

65

निर्गमन के बाद, सीनै पहुँचने से कुछ - सप्ताह पहले, परमेश्वर ने मूसा को झिड़का क्योंकि इस्राएली सब्त के दिन मन्ना जमा करने की कोशिश करके उसके नियमों को तोड़ रहे थे।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

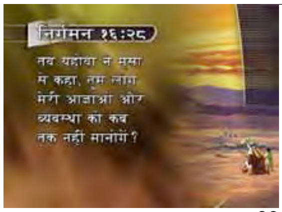

66

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : २८, ३०)

"तब यहोवा ने मूसा से कहा, तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानोगें?"

67

"लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया।"

निर्गमन १६ : २८, ३०

आप देख सकते हैं, सीनै से पहले चौथी- आज्ञा की पहचान हो चुकी थी।

68

हाँ, परमेश्वर का नियम दुनिया के लिये अनन्त काल से सही स्तर का है। और वास्तव में, क्या हमें आश्चर्य होना चाहिये कि परमेश्वर के राज्य में उसके नियम है?

69

(मूलपाठ : १ कुरिन्थियों १४ : ३३, ४०)

प्रेरित पौलुस ने लिखा: "क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का कर्त्ता नहीं है......"

70

"पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाएं।"

१ कुरिन्थियों १४ : ३३, ४०

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

71

बिना नियम के सुव्यवस्थित सरकार नहीं रह सकती। नियम के बिना सद्‌भावपूर्ण, खुशहाली, सुरक्षित समाज काम नहीं कर सकता।

प्रकृति के अपने नियम हैं, यहाँ तक कि बच्चे बिना नियम के खेल नहीं खेल सकते!

72

(मूलपाठ : रोमियो २ : १३)

बाइबिल कहती है: "क्योंकि परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुनने वाले धर्मी नहीं,

73

पर व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी ठहराए जाएंगे।"

रोमियो २ : १३

आप देख सकते है कि परमेश्वर की आज्ञाओं को केवल जानना ही पर्याप्त नहीं, उनको मानना भी आवश्यक है।

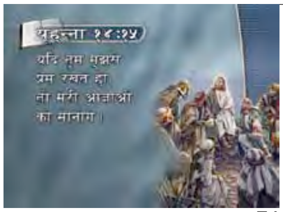

74

(मूलपाठ : यूहन्ना १४ : १५)

यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

यूहन्ना १४ : १५

वास्तव में, यीशु पुराने नियम को दुहरा रहे थे, प्रेम की नींव सब आज्ञाओं के मानने में है।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

75

(मूलपाठ : मत्ती २२ : ३७ - ४०)

"......तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।

76

बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है।"

77

तब यीशु ने कहा, "उसी के समान यह दूसरी भी है: कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

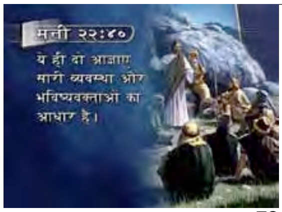

78

ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार है।"

मत्ती २२ : ३७ - ४०

79

यदि हमलोग सचमुच में पूरे मन, दिमाग, और आत्मा, से परमेश्वर से प्रेम करते हैं, तो

80

हमलोग निश्चित रूप से उस प्रेम को पहली चार आज्ञाओं को मानकर जतायेंगे:

81

हमारे जीवन में परमेश्वर पहले स्थान पर होगा।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

82

हमारी उपासना केवल उसी के लिये हो

83

हमलोग उसके पवित्र नाम को आदर और सम्मान देंगे

84

प्रत्येक सब्त को उनके साथ भेंट करने के लिये हमलोग उत्सुक रहेंगे

85

और यदि हम अपने मनुष्यों से अपने जैसा प्रेम करते हैं तो हम अवश्य :

86

अपने माता -पिता को आदर और सम्मान देंगे

87

जीवन को महत्व देगें

88

नैतिकता बनाये रखेंगे

89

दूसरों की सम्पत्ति का आदर करेंगे

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

90

एक -दूसरे के साथ रिश्ते में ईमानदार रहेंगे।

91

जो वस्तु दूसरों की है उस का लालच न करेंगे

92

आँकड़े बताते हैं कि लोगों के व्यवहार के नियत्रंण के लिए ३५० से अधिक कानून बनाये गये हैं।

93

लेकिन केवल दस आज्ञाओं में, परमेश्वर ने मनुष्य के हर आचरण को सम्मिलित कर लिया है। केवल परमेश्वर ही ऐसे आदर्श और सम्पूर्ण नियम लिख सकता था। बाईबिल बताती है कि:

94

(मूलपाठ : भजनसंहिता १९ : ७)

"यहोवा की व्यवस्था खरी है वह प्राण को बहाल कर देती है।

भजनसंहिता १९ : ७

95

(मूलपाठ : भजनसंहिता १९ : ११)

"उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है।"

भजनसंहिता १९ : ११

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

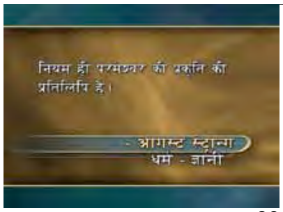

96

बाइबिल का ज्ञाता आगस्ट स्ट्रान्ग ने लिखा है: "नियम ही परमेश्वर की प्रकृति की प्रतिलिपि है।"

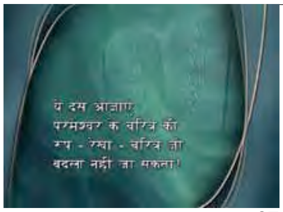

97

आज हम कह सकते हैं, "यह दस आज्ञाएं परमेश्वर के चरित्र की रूप -रेखा -चरित्र जो बदला नहीं जा सकता!"

98

आप देख सकते हैं, परमेश्वर के नियम में थोड़ी -बहुत बदलाहट, आदर्श की अपेक्षा कम का कारण बन जायेगी।

आदर्श नियम होने के कारण, उसे कभी भी बदला नहीं जा सकता।

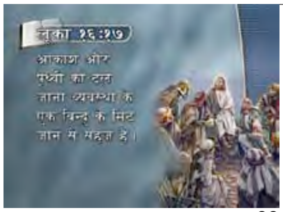

99

(मूलपाठ : लूका १६ : १७)

ये सच्चाई है जब यीशु ने कहा : "आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है।"

लूका १६ : १७

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

100

लेकिन आप कहते हैं, "मैंने हमेशा महसूस किया है कि दस -आज्ञाओं ने मेरी खुशी पर रोक लगा दी है - एक प्रकार से मुझे घेर कर रखा है।" परमेश्वर नहीं चाहता कि उसका नियम लोगों के लिये बोझ बन जाये या उसकी खुशी पर रोक लगा दे।

101

इसके विपरीत, परमेश्वर की इच्छा है कि उसके नियम हमें दुःख और दोष से, कवच बन कर दीवार के समान सुरक्षित रखें। उसका इरादा है कि उसके नियम सभी के लिये स्वतत्रंता और हर तरफ सुरक्षा सुनिश्चित करें।

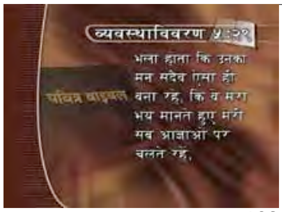

102

(मूलपाठ : व्यवस्थाविवरण ५ : २९)
परमेश्वर ने कहा, "भला होता कि उनका मन सदैव ऐसा ही बना रहे, कि वे मेरा भय मानते हुए मेरी सब आज्ञाओं पर चलते रहें,

103

जिससे उनकी और उनके वंश की सदैव भलाई होती रहे! "
व्यवस्थाविवरण ५ : २९

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

104

जिस प्रकार हमलोग पुल और पर्वत के रास्ते पर खतरे से अपने को बचाने के लिये रक्षा -पटरी बनाते हैं, उसी प्रकार परमेश्वर ने हमें अपने नियम दिये हैं कि जीवन के रास्ते पर हमें सुरक्षा और मार्गदर्शन मिले।

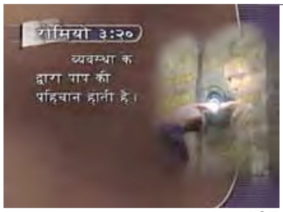

105

(मूलपाठ : रोमियों ३ : २०)

लेकिन परमेश्वर ने लोगों को अपना नियम दिया इसका दूसरा कारण है,

"...व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है।"

रोमियों ३ : २०

106

(मूलपाठ : रोमियों ७ : ७)

जिस प्रकार पौलुस ने कहा, "..वरन् बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता।

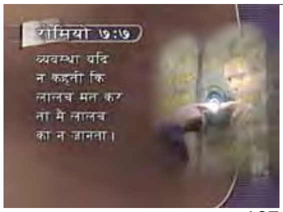

107

व्यवस्था यदि न कहती कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता।"

रोमियों ७ : ७

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

108

एक राजकुमारी की कहानी कही गई है। उसको उसकी प्रजा द्वारा यह विश्वास दिलाया गया कि वह सबसे सुन्दर स्त्री है। एक दिन एक व्यापारी उसके गाँव में आया और उसे एक दर्पण बेच गया। जब उसने अपने आप को दर्पण में देखा तो अपनी ही तस्वीर से डर गयी और दर्पण को पटक कर टुकड़े - टुकड़े कर दिया।

109

परमेश्वर की आज्ञा दर्पण की तरह है, और जब हमलोग राजकुमारी की तरह उसमें देखते है, राजकुमारी की तरह हमलोग जो देखते हैं तो उससे हम खुश नहीं होंगे,

110

लेकिन आज्ञा को नष्ट करने से या नकारने से हमारी स्थिति बदल नहीं जायेगी।

111

आज्ञा हमारे पाप को दिखाती है!

यदि हम परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उसकी शिक्षा का पालन करें तो खुशहाली और दोषरहित जीवन में उसके नियम हमारी मदद के लिये मार्ग- दर्शन के समान है।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

112

आज्ञा, पाप को वश में करने और दोष को दूर करने के लिये हमें शक्ति नहीं दे सकती।
बीते दिनों में जो पाप हमने किये हैं उसे मिटाने के लिये हमलोग भविष्य में अच्छाई को किसी भी परिमाण में कर सकते हैं, पर वह मिटेगा नहीं?
तब हमलोग किस प्रकार क्षमा पा सकते हैं? आज्ञा तोड़ने की सजा, जो मृत्यु है, उससे हम कैसे बच सकते हैं?

113

अदन की बारी के फाटक पर ही परमेश्वर ने बलि की वेदी की स्थापना की एक स्मृति - चिन्ह जो स्मरण कराये कि आज्ञा नहीं मानने से मृत्यु होती है - या तो अनाज्ञाकारी की या एक निर्दोष प्रतिनिधि की।
परमेश्वर की योजना में मनुष्य को बचाने के लिए एक मेम्ने को भेंट करना था जो पापी के विश्वास को दिखलाता है।

114

यह परमेश्वर का आदम को यह समझने में मदद का प्रयास थी कि आज्ञा तोड़ने की मांग को संतुष्ट करने के लिये निर्दोष परमेश्वर के पुत्र को मरना है। मसीह, परमेश्वर का मेम्ना, लोगों की सजा को अपने ऊपर लेगा और मृत्यु को भोगेगा।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

115

आप देख सकते हैं, आज्ञा किसी को पाप से बचा न सकी।

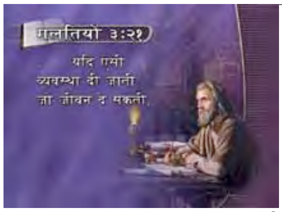

116

(मूलपाठ : गलतियों ३ : २१)

प्रेरित पौलुस कहते हैं, "यदि ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सके,

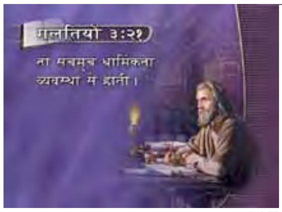

117

"तो सचमुच धार्मिकता व्यवस्था से होती। "गलतियों ३ : २१ यह आज्ञा से नहीं कि क्षमा और उद्धार मिले - यह परमेश्वर का अनुग्रह है।

मसीह के बलिदान से ही हम लोगों को अनन्त जीवन मिल सकता है।

118

(मूलपाठ : रोमियों ६ : २३)

"क्योंकि, पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

रोमियों ६ : २३

आज्ञा पालन से उद्धार नहीं पाया जा सकता।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

119

(मूलपाठ : इफिसियों २ : ८, ९)

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है,

120

न कर्मो के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।"

इफिसियों २ : ८, ९

121

यदि हम अनुग्रह द्वारा बचाये जाते हैं, तो क्या आज्ञा का उल्लंघन करने वाले जीवन बिताने के लिए स्वतंत्र होंगे? कभी - नहीं!

122

(मूलपाठ : रोमियों ६ : १२)

पौलुस ने लिखा है: "सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें , कि अनुग्रह बहुत हो?

123

"कदापि नहीं, हम जब पाप के लिये मर गये तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएं?"

रोमियों ६ : २

उद्धार उनके लिये है जो पाप से बचना चाहते हैं और परमेश्वर के राज्य के भागीदार बनना चाहते हैं।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

124

ऐसे लोग है जो विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का नियम मिटा दिया गया है। कुछ क्षण के लिये ऐसा सोचें।

125

यदि आज्ञा नहीं है, तो पाप नहीं है, क्योंकि 'पाप' आज्ञा को तोड़ने से होता है।"

126

यदि आज्ञा नहीं है, तो हमें अनुग्रह नहीं चाहिए। अनुग्रह परमेश्वर के प्रेम से भरी दया है जब हम परमेश्वर के नियम को तोड़ते हैं।

127

यदि हमें अनुग्रह नहीं चाहिये तो हम क्रूस के बिना रह सकते है।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

128

यदि क्रूस की आवश्यकता नहीं है तो निश्चित तौर पर हमें उद्धारकर्ता नहीं चाहिये। यदि हम आज्ञा के बिना भी रह सकते हैं तो हम, पाप, अनुग्रह, क्रूस और उद्धारकर्ता के बिना भी रह सकते हैं हमें वैसा उद्धारकार्त्ता चाहिये जो हमारे पाप के ऋण को चुकाने के लिये अपने अनुग्रह द्वारा बचाने के लिये क्रूस पर मरा, क्योंकि हमने उसकी आज्ञा को तोड़ा हैं। यह सुसमाचार है। अनुग्रह परमेश्वर की आज्ञा के बिना नहीं रह सकता है। परमेश्वर के अनुग्रह से हम परमेश्वर के नियम को मानने की इच्छा रखते हैं।

129

यदि एक कैदी मरने की प्रतीक्षा कर रहा है

130

और उसे क्षमा मिलती है और वह स्वतंत्र कर दिया जाता है, तो क्या इसका अर्थ यह है कि वह अनाज्ञाकारी जीवन जी सकता है? अपनी इच्छापूर्ति कर सकता है? कभी नहीं।

131

क्योंकि उसे क्षमा किया गया था, उसे पहले से कहीं अधिक उस देश के नियमों को कायम रखने के लिये वचन -बद्ध होना चाहिए।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

132

विशेष बात यह है कि परमेश्वर की आज्ञा हमारे पापों को दिखाती है और उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता समझाती है। जैसे हम मसीह को अपने उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं वह हमें क्षमा प्रदान करता हैं और अपनी आज्ञा पालन करने के लिये शक्ति देता हैं, क्योंकि उन्होंने यह प्रतिज्ञा की है:

133

(मूलपाठ : इब्रानियों ८ : १०)

"... मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में ड़ालूंगा और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा...."

इब्रानियों ८ : १०

134

यदि आप कुछ करने के लिये उत्सुक हैं तो वह कार्य आसान बन जाता है, क्या ऐसा नहीं है? और यही परमेश्वर की प्रतिज्ञा है उन लोगों के लिए जो उसकी आज्ञा को मानते हैं। वह अपनी व्यवस्था को उनके हृदय पर लिखेगा जिससे वे पालन करने से प्रेम करेंगे।

135

(दृश्य)

केवल यही एक उपाय है जिससे लोग परमेश्वर की आज्ञा मानकर उसके पीछे चल सकेंगे। क्योंकि मसीह अपने पिता से प्रेम रखने के कारण उसकी आज्ञाओं का पालन कर सके थे।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

136

(मूलपाठ : यूहन्ना १५ : १०)
उसने कहा, "मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।"
यूहन्ना १५ : १०

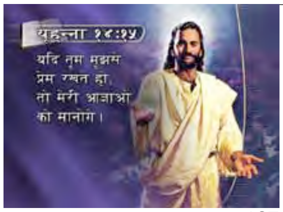

137

(मूलपाठ : यूहन्ना १४ : १५)
और यीशु ने हम लोगों से कहा है कि उनकी आज्ञाओं का पालन कर उनके प्रति अपना प्रेम दिखायें : "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"
यूहन्ना १४ : १५

138

प्रेम और परमेश्वर की आज्ञा - पालन का महानतम प्रदर्शन एक ठण्डी अंधेरी रात में एक पुराने जैतून के पेड़ के नीचे हुआ था। परमेश्वर के पुत्र के चेहरे से लहू की बूंदें टपक रही थीं जब उन्होंने यह प्रार्थना की,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

139

(मूलपाठ : मत्ती २६ : ३९)

" .... हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझसे टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो..."

मत्ती २६ : ३९

मनुष्यों का भाग्य तराज़ू पर लटक रहा था - दोषी दुनिया बचायी जाय या बरबाद हो जाय।

140

क्या यह युवा गलीली जीवन की इच्छा तथा मानविक आकांक्षाओं को त्याग कर क्रूस पर अपनी बलि दे सकेगा?

वे अपने मस्तक से पसीने को पोछते हुए कह सकते थे : "पापी को अपने पाप की सजा स्वंय भुगतने दो।"

141

या फिर वे हमारे लिये क्रूस को उठा सकते थे। उन्होंने निर्णय किया और हमारे पापों के कारण प्राण त्याग दिए। उन्होंने लहू बहाया जिससे हम क्षमा किए जाँए। उन्होंने हमारी मृत्यु सही ताकि हम सदा उनके साथ रह सकें।

142

चूंकि मसीह ने हमारे पापों का मुल्य चुकाया, हम इसी समय उनके बलिदान के द्वारा क्षमा प्राप्त कर सकते हैं।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

143

कलवरी पहाड़ी पर वह पुराना क्रूस उस मुल्य की अविस्मरणीय समृति है जिसे परमेश्वर ने पापी मनुष्य को बचाने और तोड़े गए नियम के दावे को सन्तुष्ट करने के लिए चुकाया।

144

यदि परमेश्वर का नियम समाप्त या बदला जा सकता, तो यीशु को मरने की आवश्यकता नहीं होती। तब कलवरी भी अनावश्यक हो जाता।

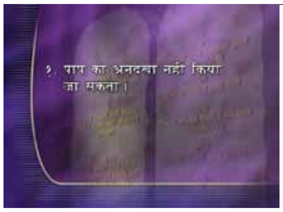

145

परन्तु परमेश्वर पापी मनुष्य के पापों को अनदेखा नहीं कर सकता था!

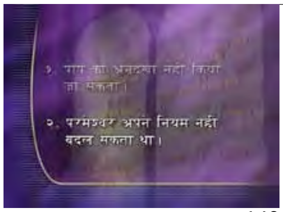

146

वह अपने नियम नहीं बदल सकता था।

147

इसलिए पापी मनुष्य को एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता थी और उसके प्रेम के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमारे बदले मरने के लिए अपने एकलौते पुत्र को दे दिया!"

148

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : १६)
"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

149

ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

यूहन्ना ३ : १६

150

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उन लोगों का वर्णन करती है जो यीशु के दूसरे आगमन में उनसे मिलने और उनके साथ घर जाकर उस स्वर्गीय नगर में अनन्त जीवन बिताने के लिए तैयार हैं।

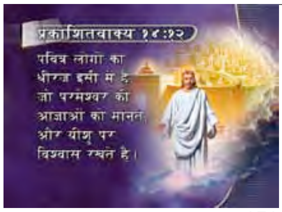

151

(मुलपाठ : प्रकाशित वाक्य १४ : १२)

परमेश्वर उनके विषय में यह कहता है: "पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं।"

प्रकाशितवाक्य १४ : १२

152

(मूलपाठ : प्रकाशित वाक्य १४ : १४)

१४ वें पद में परमेश्वर कहता है, "और मैंने दृष्टि की, और देखा, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है,

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

153

जिस के सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है।"

पृथ्वी की कटनी के समय प्रभु के आगमन का यह वर्णन है।

154

महान भविष्यवाणी में यीशु ने यूहन्ना को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में कलीसिया के इतिहास के विषय में बताया, वह कहते है कि पृथ्वी पर परमेश्वर की शेष कलीसिया के अंतिम सच्चे भाग का इस प्रकार वर्णन है :

155

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १२ : १७)

"और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से लड़ने गया

156

जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं।"

प्रकाशितवाक्य १२ : १७

157

बाइबिल की अन्तिम पुस्तक में आप इसका वर्णन पाते हैं!

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

158

परमेश्वर के लोग अपने सृष्टिकर्त्ता और अपने उद्धारकर्त्ता से इतना अधिक प्रेम करते हैं कि वे वही करना चाहते हैं जो वह कहता और इच्छा करता है। वे उसकी इच्छा का पालन करके उसके प्रति अपने प्रेम को दर्शाते हैं। वे स्वीकार करते हैं कि इसकी इच्छा उसके नियमों में सम्मिलित है। उन्होंने ईमानदारी से उत्तर दिया कि उनके पापों से उनको बचाने के लिए केवल एक ही था जिसने बहुत अधिक किया। अपने हाथों को आगे बढ़ाकर यीशु बुला रहे हैं। "आओ!"" वह अब भी हमें बुला रहे हैं! वह हमें उसके लिए जीने की शक्ति देना चाहते हैं।

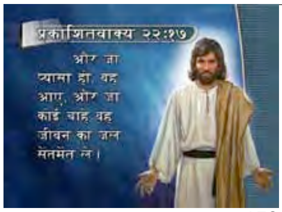

159

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २२ : १७)

वे हमारे पापों को धोना चाहते हैं। वे अब भी हमें बुला रहे हैं!

"...... और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले।"

प्रकाशितवाक्य २२ : १७

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

160

बहुत बड़े शहर के एक उपनगर में एक प्रचारक एक घर में भेंट करने गया। उस घर की महिला नम्र स्वभाव की थी परन्तु उसने दृढ़ता से कहाः "मुझे बाइबिल या मसीहियत में रुचि नहीं है -- बिलकुल नहीं है", "परन्तु यदि आप किसी शाम फोन करेंगे तो आप को पता चलेगा कि मेरे पति इसके विषय में और अधिक सीखने के बहुत इच्छुक हैं। मैं सचमुच चाहूंगी कि आप वापस आए और उनसे मिलें।" वह प्रचारक एक शनिवार की शाम को वापस आया। क्योंकि वह काम करने का दिन नहीं था, इसलिए उस महिला का पति अपनी आदत के अनुसार एक होटल में अपने मित्रों के साथ दोपहर बाद जुआ खेल रहा था। वह बातचीत करना चाहता था, परन्तु वह एक ऐसी आत्मा के वश में था जिससे मनुष्य बोलता तो बहुत है परन्तु बहुत कम कह पाता है। उसने कहा, "मेरे पास बाइबिल है।" "आप मेरी बाइबिल को अवश्य देखें। मेरी माँ ने उसे संदूक में डालकर मुझे दिया था जब मैं अपने विवाह के लिए घर से चला गया था। प्रिय, मेरी बाइबिल कहाँ है?" बहुत देर तक बाइबिल की खोज की गई परन्तु उन्हें केवल एक प्रार्थना की पुस्तक ही मिली। उसे बाइबिल कभी नहीं मिली।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

161

परन्तु शराब उसकी समस्याओं में से एक थी। उसी तरह जुआ भी उसे बर्बाद कर रहा था, और वह अत्यधिक धूम्रपान का आदि था। इन, और दूसरी आदतों ने उसके और उसकी पत्नी के बीच की दूरी को और बढ़ा दिया था। उसकी पत्नी ने अपना सामान बांध लिया और वह घर छोड़ने के लिए तैयार थी। वे अलग होने की योजना बना रहे थे। सब कुछ बुरा हो रहा था। परन्तु उस व्यक्ति के हृदय में अच्छा बनने की प्रबल इच्छा थी जिसे शराब भी नहीं डुबा सकती थी। यहाँ तक कि नशीली शराब भी उसे डुबा नहीं सकती थी। उस प्रचारक ने सोमवार की शाम को उससे दुबारा मिलने का समय निश्चित किया, और उस समय, साप्ताहिक बाइबिल अध्ययन का क्रम आरंभ हुआ।

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

162

हर सप्ताह, जैसे ही परमेश्वर के वचन से प्रसंग बताए गए, वैसे ही क्रूस की शक्ति ने अपना कार्य आरंभ कर दिया। मसीह, अपने पवित्र आत्मा के द्वारा एक और घर में प्रवेश कर रहे थे। वह शाम अनोखी थी जब उस व्यक्ति ने कहा, "आपको आज रात थोड़ी देर अवश्य रुकना चाहिए। मेरी पत्नी अब सोने जायेगी। क्या आप और मैं आमने - सामने थोड़ी बातचीत कर सकते हैं?"

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

163

तब उसने प्रचारक को अपने जीवन की दुःखद कथा सुनायी जिसका आरम्भ अच्छी तरह हुआ था। उसका जन्म एक विश्‍वस्त मसीही परिवार में हुआ था पर उसने जवानी में नियत्रंण खो दिया था और उड़ाऊ पुत्र के समान गलत मार्ग पर चल पड़ा था - ऐसा मार्गजिसके गडड़े गहरे हैं और जो दूर देश को जाता है। कलीसिया को भुला दिया गया, बाइबिल को अनदेखा। मसीह को केवल अनावश्यक प्रतिज्ञाओं में स्मरण किया जाता था। "परन्तु मैं क्या जानना चाहता हूँ प्रचारक, आपने मेरे लिए क्या किया है? मेरे पास एक शराब भी नहीं थी या अब चार सप्ताह के लिए एक शर्त लगाना था। न ही उस समय मैंने परमेश्‍वर का नाम व्यर्थ लिया।" तब जैसे ही उसने चूल्हे में आधी -जली हुई सिगरेट को डाला, वह चला गया।"मेरी सिगरटे मेरे लिए बेस्वाद हो गई। मैं जानता हूँ कि मैं उसे छोड़ना चाहता हूँ। परन्तु यह इन सब से अधिक महान आश्‍चर्य की बात है। मेरी पत्नी ने अपना सामान खोला। उसने यह कार्य अब से तीन सप्ताह पहले ही कर लिया था। इस सुबह वह मेरे पीछे दरवाजे तक आई, इतने वर्षो में पहली बार, उसने मुझे चूमकर नमस्कार किया। हाँ, उसने किया। मैं

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

आश्‍चर्यचकित रह गया, प्रचारक, मैं और अधिक विस्मित हो गया जब उसने मेरे सामने मुस्कुराई और कहा, "मैं नए जैक को पसन्द करती हूँ।" अब मेरे साथ क्या हुआ? मैं इससे निश्‍चित हूँ कि यह बात हमारे सोमवार शाम के बाइबिल अध्ययन से संबधित है।"

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

१० - सही और गलत को क्या हुआ?

164

उस प्रचारक ने कहा, "मैंने व्यक्तिगत तौर पर मैंने कुछ नहीं किया, परन्तु मैं विश्वास करता हूँ कि बाइबिल ये सब कुछ स्पष्ट कर सकती है।"

फिर, उसने २ कुरिन्थियों ५ : १७ निकाला और उसने पढ़ना शुरू किया: "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई; देखो, व सब नई हो गई।" अब नये जैक ने धीरे से अपने लिए उस पद को पढ़ा। "एक नया प्राणी - एक नया जैक! वह यह है! एक नया जैक! और यदि आप मुझे जानते थे, प्रचारक, तो आज रात मैं बिलकुल वैसा ही हूँ। हाँ, मित्रो, यीशु मसीह परमेश्वर के स्वर्गीय पुत्र है, और केवल उसी के पास स्त्रियों और पुरुषों को बदलने की शक्ति है। यह यीशु आप का भी जीवन बदलना चाहते है। आप कमजोरी अनुभव कर सकते हैं परन्तु यीशु शक्तिशाली है।भूतकाल में आपने जो कुछ किया कोई बात नहीं, यीशु आपको माफ कर देगें और साफ कर देगें। वह आपको नया जीवन जीने के लिए अपनी शक्ति दे देगें। कोई भी चीज आप को रोक न सकेगी। यीशु बुला रहे हैं। वह घर आने के लिए बुला रहे हैं। क्या आप अपने को दोषी मानकर घुटने टेकते हैं और कहते हैं, '"प्रभु, हाँ, मैं आ रहा हूँ?" इसी समय अपने घुटने

टेकिए। श्रोतागणों को भूल जाइए! जब आप घुटने के बल हों केवल यीशु के विषय में सोचिए। कहिए, यीशु, मैं आ रहा हूँ। मैं अभी आ रहा हूँ।" आइए प्रार्थना करें।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

1

आपकी सबसे गहरी इच्छाओं को कैसे संतुष्ट करें

2

थामस हक्सले नामक जीव वैज्ञानिक के विषय में एक कहानी कही गई, जो एक शहर में देर से पहुँचा जहाँ उसे एक भाषण देना था।

वह टैक्सी के अन्दर कूदा जो कि उस समय की एक घोड़ा गाड़ी थी, और वह चालक पर चिल्लाया, "और अधिक गति बढाओ!"

3

उस आज्ञाकारी चालक ने कोड़ा चलाया और वह वाहन सड़कों पर बहुत तेज रफ्तार से झटके खाते हुए चलने लगा। भयभीत हक्सले अपनी सीट पर आराम से बैठे हुए एक क्षण के लिए संभला, और फिर इतना हिलने के बाद बैठ गया। उसने पुकारा, "सुनो, सुनो क्या तुम जानते हो कि मैं कहाँ जाना चाहता हूँ?" "नहीं, मेरे प्रभु, "चालक ने उत्तर दिया, "परन्तु मैं जितना तेज चला सकता था उतना चला रहा हूँ।"

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

4

इन दिनों बहुत से भयभीत लोग गतिशील हैं। उनके जीवन में बहुत कुछ हो रहा है। वे हमेशा कहीं भी तेज गति से जा रहें हैं। परन्तु सच्चाई यह है, कि बहुत से लोग वास्तव में यह नहीं जानते कि वे कहाँ जा रहे है; वे नहीं जानते कि उनके जीवन किस ओर जा रहे हैं।

5

उचित रूप से यही एक कारण है कि परमेश्वर अपनी अंतिम प्रार्थना बाइबिल की अंतिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य में करता है। १४ वें अध्याय के, ७ वें पद में, यूहन्ना प्रेरित दुनिया से प्रार्थना करता है, जो यीशु के आगमन की

प्रतीक्षा कर रहे हैं वह इन शब्दों में प्रार्थना करता है.......

6

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : ७)

".......परमेश्वर से डरो; और उसकी महिमा करो; क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुंचा है;

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

7

और उसका भजन करो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।"

प्रकाशितवाक्य १४ : ७

यदि आप के पास अपने शहर का नक्शा है और आप उसमें एक स्थान ढूंढ़ने के लिए उसका प्रयोग कर रहे हैं, और वह नक्शा गलत है, तो इससे बहुत अन्तर पड़ता है।

8

किसकी उपासना करें? उसकी उपासना करें जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया प्रत्येक चीजों के सृष्टिकर्त्ता की उपासना करें।

परमेश्वर हमें धीरे चलने के लिए और यह समझ प्राप्त करने के लिए कि हम कहाँ जा रहे हैं, निमंत्रित करता है।

तब हम यह समझ लेंगे कि हमें परमेश्वर ने बनाया था, तो यह हमें इस बात की समझ देता है कि हम यहाँ क्यों हैं और हम कहाँ जा रहे हैं।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

9

परन्तु आज, लोग यह भूल गए हैं कि परमेश्वर विश्व का, हमारी दुनिया का, प्रत्येक चीजों का और इस दुनिया में प्रत्येक प्राणी का सृष्टिकर्त्ता है।

कुछ लोग कहते हैं कि आप बिना कोई शक के बाइबिल पर विश्वास कर सकते हैं दूसरे कहते हैं कि आप नहीं कर सकते।

कौन सही है?

10

(दृश्य)

आज, हजारों लोग यह सोचते हैं कि हम ऐसे ही बढ़ गए। करोड़ों वर्ष पूर्व हम केवल एक ही कोशिका से बढ़े हैं और समुद्री जन्तु में बदले फिर भूमि में पाए गए।

वे सोचते हैं कि सब चीजें संयोग से या दुर्घटना के द्वारा हो गई ये हम समझ नहीं सकते।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

11

परन्तु क्या आप जानते हैं परमेश्वर ने सृष्टिकर्त्ता के रूप में अपने कार्य का हमें चिन्ह दिया है?

उसने हमें कुछ ऐसा दिया है जो कि हमें प्रत्येक सप्ताह यह याद दिलाएगा कि उसने हमें, हमारी दुनिया, और हमारे विश्व को बनाया?

यदि बाइबिल सच्ची है, तो आपका सम्पूर्ण अनन्त भाग्य इस बात पर निर्भर करता है कि आप उस पर विश्वास करते हैं और उसे ग्रहण करते हैं या नहीं।

आप बाइबिल के विषय में जो विश्वास करते हैं वह यह सब अन्तर करता है कि आप परमेश्वर के विषय में क्या विश्वास करते हैं।

12

वास्तव में, उसने हमें सृष्टि की रचना के सप्ताह के अन्त में यह हर सप्ताह स्मरण रखने के लिए दिया।

परन्तु लगभग सम्पूर्ण दुनिया भूल गई कि यह किस की याद दिलाने वाला है।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

13

(दृश्य)
और उस स्मरण दिलाने वाले के बिना बहुत से यह भूल गए कि वह परमेश्वर ही है जिसने इस दुनिया की सृष्टि की।
इसलिए अपने समय में हम लोगों को चन्द्रमा पर भेदों को ढूंढ़ने के लिए भेजते हैं कि हमारी दुनिया की शुरुआत किस प्रकार हुई।

14

हम शक्तिशाली दूरबीन से अंतरिक्ष में दूर तक देखते हैं, कि हमें कुछ भेद मिल जाए कि किस प्रकार हमारा विश्व आरंभ हुआ। तो आइए हम इस महान पुस्तक बाईबिल जो परमेश्वर का वचन भी कहलाता है, उसको पढ़ते हैं और इसकी सच्चाई का सबूत ढूढंते हैं ताकि इस पर विश्वास किया जा सके।

15

इतना प्रयास और खर्चा और इतनी अधिक रुचि क्यों? क्योंकि हम अपने सबसे बड़े प्रश्नों का उत्तर चाहते हैं। क्या हम विश्व में अकेले हैं? हम यहाँ कैसे पहुँचे? हम यहाँ क्यों है? और हम कहाँ जा रहें है? इस प्रकार खोज जारी है। तबभी सब साथ -साथ, सारे उत्तर एकदम हमारे समक्ष हैं। परन्तु हम एक दुनिया हैं जो भूल गए हैं - हमें अब याद नहीं कि हम कहाँ से आए हैं!

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

16

उस दुनिया को जो भूल गई है, परमेश्वर कहता है, "स्मरण रख - स्मरण रख कि मैं तुम्हारा सृष्टिकर्त्ता हूँ और तुम्हें स्मरण दिलाने की मदद करने के लिए, मैंने तुम्हें एक चिन्ह दिया है - एक चिन्ह!"

17

(दृश्य)
इतिहास में इस समय जब क्रमिक विकास सिखाता है कि हम संयोग का परिणाम हैं, परमेश्वर कहता है "तुम बढ़े नहीं थे मैंने तुम्हें बनाया है!"

18

परन्तु कुछ लोग पूछ सकते हैं, "यह निशान या चिन्ह क्या हैं जो हमें यह याद दिलाता है कि परमेश्वर ने हमको बनाया है?"
स्मरण करिए जब हमने इसका अध्ययन किया था कि परमेश्वर ने सृष्टि के सप्ताह के प्रत्येक दिन के बीच क्या बनाया था?

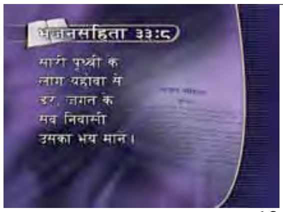

19

(मूलपाठ : भजनसंहिता ३३ : ८ ,९)
सृष्टि की रचना आश्चर्यजनक थी। उसने इसे इतनी जल्दी कैसे बनाया था? बाइबिल इसका उत्तर देती है। "सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरें, जगत के सब निवासी उसका भय मानें।"

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

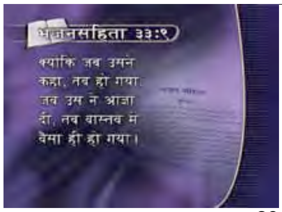

20

"क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया□; जब उस ने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया।"

भजनसंहिता ३३ : ८, ९

21

हम यह नहीं समझ सकते, परन्तु परमेश्वर अपने कहे गए वचन के द्वारा चीजों को अस्तित्व में लाने में समर्थ हुआ था।

परमेश्वर के वचन, चाहे कहे गए हों, या बाइबिल में लिखे गए हो उनमें रचना करने के गुण हैं और वे शक्तिशाली हैं!

यह वादा केवल इसी बात को मानने के द्वारा स्वीकार किया जा सकता है कि परमेश्वर ने हमें यह पुस्तक दी है ताकि वह हमें अपनी इच्छा बता सके।

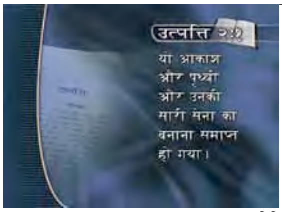

22

(मूलपाठ : उत्पत्ति २ : १)

"यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।"

उत्पत्ति २ : १

23

छः दिनों में सृष्टिकर्त्ता ने दुनिया को बनाया और उसे झाड़ियों और वृक्षों, फूलों और झरनों से सवांरा।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

24

उसने सूर्य की चमक और प्रतापी सूर्यास्त और रात के मनोरंजन के लिए चन्द्रमा को बनाया।

25

परन्तु सब से अच्छा, उसने दो पूर्ण लोगों को बनाया। कितने गर्व की बात है! उनके बनाने वाले ने उन्हें अपने स्वरुप में बनाया! वे पृथ्वी के ऊपर और जो कुछ उसमें हैं उस पर शासन करने के लिए बनाए गए थे!

26

(मूलपाठ : उत्पत्ति १ : २७)
"तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया।"
उत्पत्ति १ : २७

27

परन्तु, परमेश्वर की रचना अभी समाप्त नहीं हुई थी! उसके पास एक और चीज बाकी थी जिसे वह करना चाहता था। सावधानीपूर्वक ध्यान दीजिए कि बाइबिल क्या कहती है कि अगले दिन सृष्टि के सातवें दिन क्या हुआ :

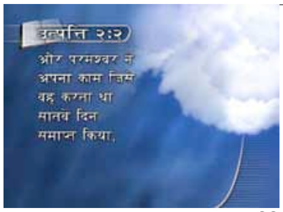

28

(मूलपाठ : उत्पत्ति २ : २ -४)
"और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

29

और उस ने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया।

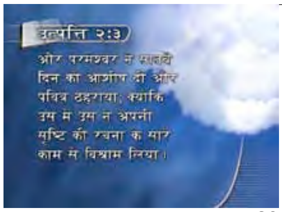

30

और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उस में उस ने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया।

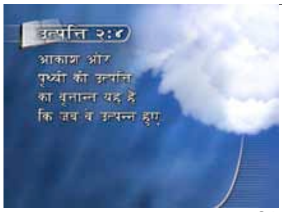

31

आकाश और पृथ्वी की उत्पत्ति का वृत्तान्त यह है कि जब वे उत्पन्न हुए।"

उत्पत्ति २ : २ -४

32

केवल परमेश्वर ही किसी चीज को पवित्र बना सकता है, और बाइबिल कहती है कि उसने सातवें दिन को पवित्र ठहराया।

33

किसी चीज को पवित्र करने का अर्थ है कि उसे पवित्र कार्य के लिए अलग कर देना। परमेश्वर ने सब्त को दूसरे सारे दिनों से अलग कर दिया। यह पवित्र रखने के लिए अलग किया गया पूर्णरूप से उसके लिए अर्पित कर दिया गया। कुछ ऐसे लोग हैं जो सोचते हैं कि एक दिन से क्या अन्तर पड़ता है? हो सकता है कि यह उदाहरण मदद करे।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

34

एक विवाह से एक स्त्री पवित्र होती है या एक आदमी के लिए अलग की जाती है।
मान लीजिए कि आप की शादी का दिन है आप बहुत उत्तेजित हैं आप कुछ समय से इस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

35

यह भी मान लीजिए आप की होने वाली पत्नी के पास छः बहने हैं। विवाह के उत्सव के समय एक स्त्री और एक पुरुष एक हो जाते हैं। वह अलग हो जाती है। उन सातों में से अब एक नहीं रही। वह पवित्र हो गई। वह विवाह में अपने पति की हो गई।

36

क्या होता यदि विवाह के बाद, आपकी पत्नी की एक बहन कहती, "इससे क्या अन्तर पड़ता है? सातों में से एक से काम चल सकता है। सातों बहनें एक दूसरे की तरह अच्छी हैं।" आप क्या कहते है? क्या इससे अन्तर पड़ता है?

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

37

आपके क्या विचार हैं श्रीमती जी, क्या कोई अन्तर पड़ता है?

बिल्कुल पड़ता है!

पति होने के नाते, आप यह कहेंगे, "मेरी दुल्हन चुनी गई, पवित्र ठहराई गई, अलग की गई, और मेरे लिए अर्पित की गई थी?"

इसलिए परमेश्वर ने एक सामान्य साधारण २४ घन्टे का दिन लिया वह सातवां दिन और इसे चुना और पवित्र ठहराया,

अलग किया और अपने आप को अर्पित किया।

सब्त एक आशीष है, और पवित्र दिन है। परमेश्वर के वचन के अनुसार वह कोई और दिन नहीं परन्तु सातवां दिन है।

38

(मूलपाठ : मरकुस २ : २७,२८)

मसीह कहते है : "सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये।

39

इसलिये मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।"

मरकुस २ : २७, २८

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

40

परमेश्वर ने सब्त का दिन दिया ताकि हम यह स्मरण करने के लिए समय निकाल सके कि हम कोश से नहीं बढ़े। परमेश्वर ने हमें और शेष अद्भुत दुनिया को छः दिनों में बनाया। यह एक पवित्र समय था जब मनुष्य और उसका बनाने वाला एक साथ प्रत्येक सप्ताह अपने प्रेम की प्रतिज्ञा और उपासना ताजा करते थे। प्रत्येक सप्ताह मनुष्य को यह स्मरण रखना था कि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को छः दिनों में बनाया और सातवें दिन विश्राम किया।

41

परमेश्वर ने जब अपनी उंगली से नियम को लिखा तो उसने मनुष्य को स्मरण रखने के लिए कहा। चौथा नियम परमेश्वर के पवित्र नियमों के बीच में है। उसने मनुष्य जाति को इस दिन को याद रखने के लिए कहा क्योंकि छः दिनों में उसने पृथ्वी, समुद्र और जल के सोते बनाए।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

42

यदि सब्त हमेशा सृष्टि की स्मृति के रूप में रखा जाता तो आज एक क्रमिक विकास पर विश्वास करने वाला, अविश्वासी या शंका करने वाला जीवित नहीं रहता। जब पृथ्वी पर पाप बढ़ गया, तो मनुष्य यह भूल गया कि वह कहाँ से आया है, और वह यहाँ क्यों है और कहाँ जा रहा है जब ऐसा हो गया, तब वह यह भी भूल गया कि उसे कैसे जीना चाहिए।

43

(दृश्य)

मूसा के समय तक इस्राएल के लोग लगभग पूरी तरह अपने परमेश्वर को भूल गए।

वे मनुष्य के द्वारा बनाई गई मूर्तियों की पूजा करने में डूब गए!

44

(दृश्य)

परमेश्वर ने अद्भुत रीति से उन्हें उनके शत्रुओं से छुड़ाया और जंगल में उनकी रास्ते भर "प्रतिज्ञा की गई भूमि" में पहुँचाने तक अगुवाई की।

इस जंगल में, उसने उनको दो चीजें दिखाई कि वह उनसे सातवें दिन के सब्त के संबंध में क्या करवाना चाहता है जो उसने इस दुनिया के इतिहास के प्रथम सप्ताह में उनके लिए बनाया था।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

45

(दृश्य)

पहले परमेश्वर ने उन्हें यह स्मरण दिलाया कि वह उनकी परवाह करता है और इसलिए उसने उन्हें मिश्र से बाहर निकालने में अगुवाई की। वे अपने साथ पर्याप्त भोजन नहीं रख सकते थे। शीघ्र ही वे बुड़बुड़ाने लगे क्योंकि उनका भोजन समाप्त हो गया था। समस्त अद्‌भुत कार्य और दयालुता जो परमेश्वर ने उन्हें दिखाए थे उनकी प्रशंसा उन्होंने नहीं की फिर भी प्रेमी परमेश्वर ने उनके लिए भोजन प्रदान किया।

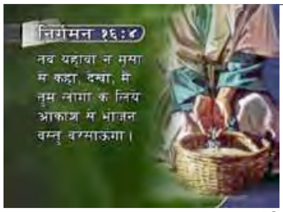

46

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : ४, ५)

"तब यहोवा ने मूसा से कहा, देखो, मैं तुम लोगों के लिये आकाश से भोजन वस्तु बरसाऊंगा।

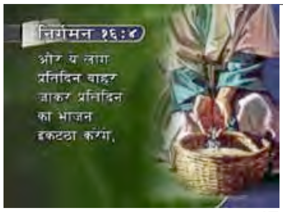

47

और ये लोग प्रतिदिन बाहर जाकर प्रतिदिन का भोजन इकटठा करेंगे,

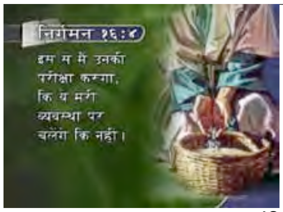

48

इस से मैं उनकी परीक्षा करूंगा, कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेंगे कि नहीं।"

निर्गमन १६ : ४

यह रोटी जिसके विषय में यहाँ कहा गया है उसे सामान्य रूप से मन्ना कहा जाता था।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

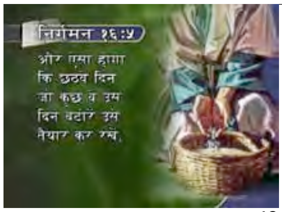

49

"और ऐसा होगा कि छठवें दिन जो कुछ वे उस दिन बटोरें उसे तैयार कर रखें,

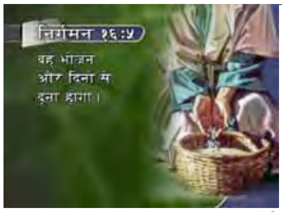

50

वह भोजन और दिनों से दूना होगा।

निर्गमन १६ : ६

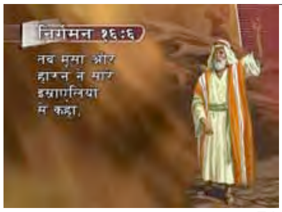

51

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : ६)

"तब मूसा और हारून ने सारे इस्राएलियों से कहा,

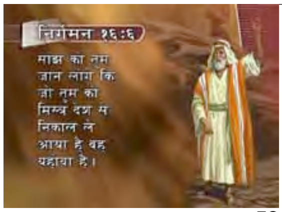

52

सांझ को तुम जान लोगे कि जो तुम को मिस्त्र देश से निकाल ले आया है वह यहोवा है।"

निर्गमन १६ : ६

53

(दृश्य)

रात में जब ओस बैठ जाती थी उस समय मन्ना गिरती थी। भोर के समय जब ओस भाप बनकर उड़ जाती थी तब मन्ना पूरी धरती पर फैल जाती थी। लोग भोर के समय बाहर जाकर उसे बटोर लेते थे और दिन चढ़ने पर शेष मन्ना लोप हो जाती थी। परन्तु ध्यान दीजिए कि सप्ताह के छठवें दिन क्या होता था :

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

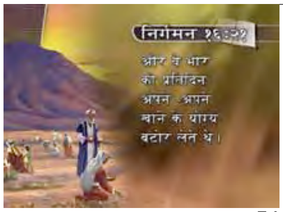

54

(मूलपाठः निर्गमन १६ : २१,२२)

"और वे भोर को प्रतिदिन अपने -अपने खाने के योग्य बटोर लेते थे।

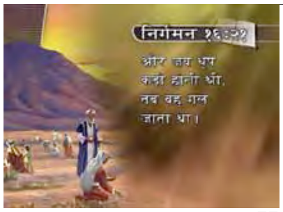

55

और जब धूप कड़ी होती थी, तब वह गल जाता था।

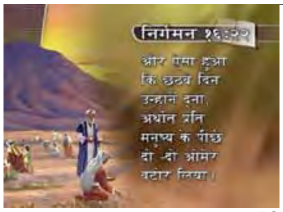

56

और ऐसा हुआ कि छठवें दिन उन्होंने दूना, अर्थात प्रति मनुष्य के पीछे दो -दो ओमेर बटोर लिया।

57

और मंडली के सब प्रधानों ने आकर मूसा को बता दिया।

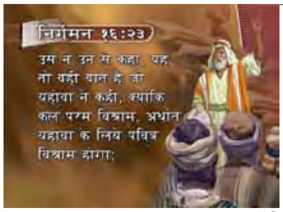

58

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : २३)

"उस ने उन से कहा, यह तो वही बात है जो यहोवा ने कही, क्योंकि कल परम विश्राम, अर्थात यहोवा के लिये पवित्र विश्राम होगा।

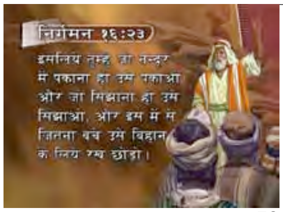

59

इसलिये तुम्हें जो तन्दूर में पकाना हो उसे पकाओ और जो सिझाना हो उसे सिझाओ, और इस में से जितना बचे उसे बिहान के लिये रख छोड़ो।"

निर्गमन १६ : २१ -२३

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

60

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : २५, २६)
"तब मूसा ने कहा, आज उसी को खाओ, क्योंकि आज यहोवा का विश्राम दिन है; इसलिये आज तुम को वह मैदान में न मिलेगा।"

61

छः दिन तो तुम उसे बटोरा करोगें, परन्तु सातवां दिन तो विश्राम का दिन है, उस में वह न मिलेगा।"
पद २५, २६

62

अधिकतम लोग वही करते थे जैसी परमेश्वर ने आज्ञा दी थी, परन्तु कुछ लोग सब्त के दिन मन्ना बटोरने जाते थे। ध्यान दीजिए कि परमेश्वर इसके विषय में क्या कहता है!

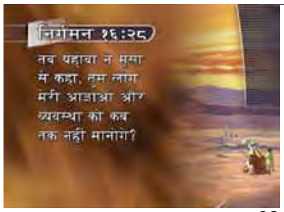

63

(मूलपाठ : निर्गमन १६ : २८ -३०)
"तब यहोवा ने मूसा से कहा, तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानोगे?

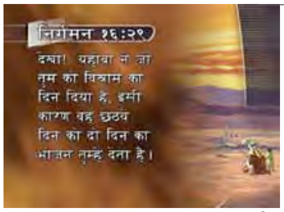

64

देखो! यहोवा ने जो तुम को विश्राम का दिन दिया है, इसी कारण वह छठवें दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है।

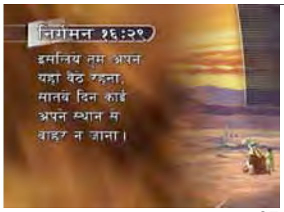

65

इसलिये तुम अपने यहां बैठे रहना, सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना।"

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

66

लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया।"

निर्गमन १६ : २८ -३०

67

सब्त सृष्टि के समय स्थापित किया गया था और परमेश्वर के लोगों के द्वारा सीने पर्वत पर चढ़ने से पहले पवित्र माना जाता था, जहाँ पर परमेश्वर ने उन्हें दस नियम दिए थे।

68

निर्गमन की यात्रा के तीसरे महीने में, परमेश्वर लोगों को सीने पर्वत पर लाया और वहाँ वह मूसा को दिखाई दिया और उसे संदेश दिया कि वह उसे लोगों के साथ बांटे :

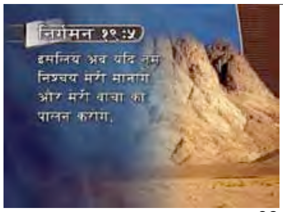
69

(मूलपाठ : निर्गमन १९ : ५, ६)

"इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे,

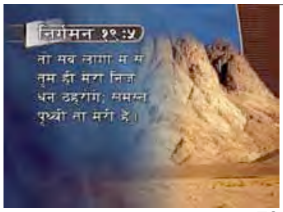
70

तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है।

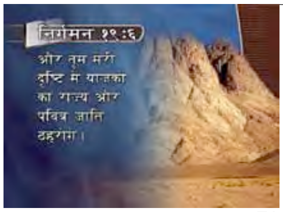
71

और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

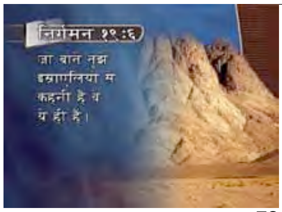

72

जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी है वे ये ही हैं।"
निर्गमन १९ : ५, ६

73

परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए सबसे सुन्दर प्रस्ताव बनाया है। यदि वे उसके नियमों और आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो वे विशेष लोग और एक पवित्र जाति होंगे! उन नियमों में से एक नियम यह निश्चित करने के लिए दिया गया था कि उसके लोग अपने सृष्टिकर्ता से उनके संबंध को कभी न भूलें। वास्तव में, यह नियम स्मरण शब्द से आरम्भ होता है।

74

(मूलपाठ : निर्गमन २० : ८ -११)
"तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना,

75

परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्राम दिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम काज करना :

76

और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

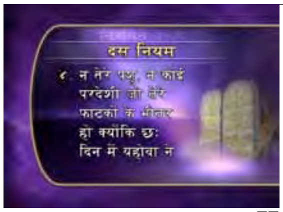

77

(न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो क्योंकि छः दिन में यहोवा ने

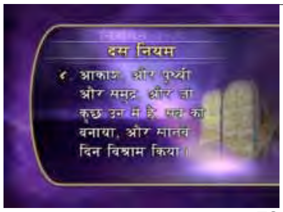

78

आकाश, और पृथ्वी और समुद्र, और जो कुछ उन में है, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया।

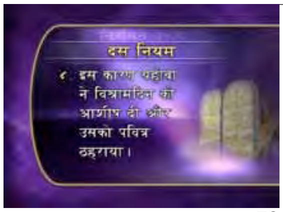

79

इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।"

निर्गमन २० : ८ -११

80

सब्त उन दस आज्ञाओं के मध्य में, या हृदय में है।

सब्त का दिन सृष्टि की एक स्मृति है।

वह इतना ही पुराना है जितनी की दुनिया!

यदि परमेश्वर के लोग उसकी आज्ञा का पालन करते हैं और उसकी सृष्टि की स्मृति को याद रखते हैं तो परमेश्वर उन्हें बहुत सी आशीषें देने की प्रतिज्ञा करता है।

81

(मूलपाठ : यशायाह ५८ : १३, १४)

"यदि तू विश्रामदिन को अशुद्ध न करे, अर्थात मेरे उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करे, और विश्रामदिन को आनन्द का दिन माने,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

82

और यहोवा का पवित्र किया हुआ दिन समझकर माने, यदि तू उसका सम्मान करके उस दिन अपने मार्ग पर न चले,

83

अपनी इच्छा पूरी न करे, और अपनी ही बातें न बोले,

84

तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा ---"
यशायाह ५८ : १३, १४
यदि मनुष्य इस स्मृति को याद रखता, तो बहुत सी कठिनाइयाँ जिसका वह सामना करता है परमेश्वर को भूल जाना व्यर्थ जीवन, रोग से पीड़ा, परिचय का खोना -सब कुछ हल हो जाती। कोई भी क्रमिक विकास का विश्वासी नहीं होता!

85

(दृश्य)
परन्तु यह दुःख की बात है, परमेश्वर के लोग भूल गए। वे उसके पवित्र दिन में उसकी अराधना करना भूल गए,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

86

और यह बात हुए अधिक दिन नहीं हुए थे उससे पहले ही उन्होने काठ और पत्थरों की उपासना करना आरम्भ कर दिया।

वे अपने मूल से दूर खो गए थे!

87

उन सदियों के बीच में जब परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं ने दोबारा से उन का ध्यान सृष्टिकर्त्ता की ओर आकर्षित किया उस समय वे लोग सब्त को मानने के लिए जागृत हो गए थे। यशायाह ने इस बात पर जोर देते हुए कहा है कि परमेश्वर का कभी भी यह अभिप्राय नहीं था कि वह सब्त को केवल यहूदियों तक सीमित रखे।

88

सब्त यहूदी जाति के आने से पहले स्थापित किया गया था। परमेश्वर ने इस आशीष को केवल एक जाति के लिए ही नहीं सीमित किया था।

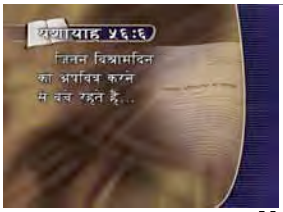

89

(मूलपाठ : यशायाह ५६ : ६, ७)

" ---जितने विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचे रहते हैं ----

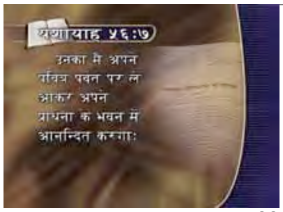

90

उनको मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आकर अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित करूंगा:

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

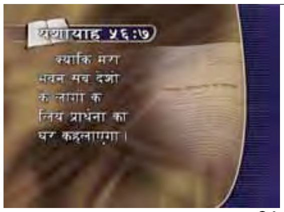

91

---क्योंकि मेरा भवन सब देशो के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा।

यशायाह ५६ : ६,७

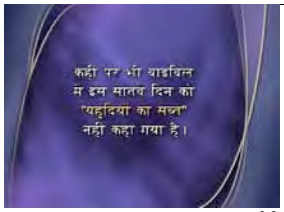

92

बाइबिल में कहीं पर भी इस सातवें दिन को "यहूदियों का सब्त" नहीं कहा गया है।"

यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि यह दिन समस्त मानव जाति के लिए है जब उसने कहा,

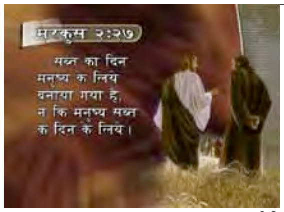

93

(मूलपाठ : मरकुस २ : २७)

"---सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये।"

मरकुस २ : २७

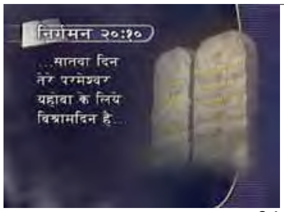

94

(मूलपाठ : निर्गमन २० : १०)

और परमेश्वर ने कहा, "---सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है---"

निर्गमन २० : १०

95

(मूलपाठ : मत्ती १२ : ८)

यीशु ने कहा कि वह "सब्त के दिन का भी प्रभु है।"

(मत्ती १२ : ८) क्योंकि उसने उसे बनाया है।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

96

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १ : १०)

इसीलिए यूहन्ना (प्रकाशक) ने इसे पुकारा है "प्रभु का दिन।"

प्रकाशितवाक्य १ : १०

सब्त केवल सृष्टि और निर्माणकर्त्ता की स्मृति ही नहीं परन्तु परमेश्वर और मनुष्य के मध्य का चिन्ह है।

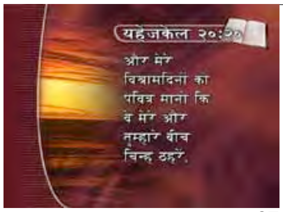

97

(मूलपाठ : यहेजकेल २० : २०)

"और मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानो कि वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरें,

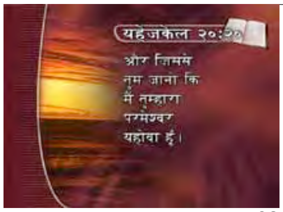

98

और जिससे तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

यहेजकेल २० : २०

वह परमेश्वर जिसने सात दिन में सृष्टि की रचना करते समय सब्त को पवित्र बनाया उसी ने पापी इंसान को पवित्र बनाया। हमारा सृष्टिकर्त्ता ही हमारा उद्धार करता है!

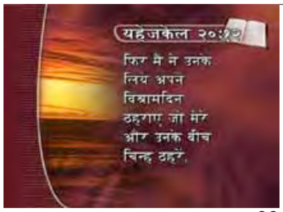

99

(मूलपाठ : यहेजकेल २० : १२)

"फिर मैं ने उनके लिये अपने विश्रामदिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरें,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

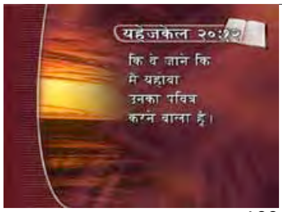
100

कि वे जाने कि मैं यहोवा उनका पवित्र करने वाला हूँ।"
यहेजकेल २० : १२

101

(दृश्य)
पृथ्वी में पाप आने से पहले सब्त की स्थापना हो चुकी थी, जब पाप को इस पृथ्वी से हमेशा के लिए निकाल दिया जाएगा तब भी उसे
(सब्त) मनाया जाएगा।

102

(मूलपाठ : यशायाह ६६ : २२,२३)
"क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश और नई पृथ्वी, जो मैं बनाने पर हूं, मेरे सम्मुख बनी रहेगी, यहोवा की यही वाणी है,

103

उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा।"

104

फिर ऐसा होगा कि एक नये चांद से दूसरे नये चांद के दिन तक और एक विश्रामदिन से दूसरे विश्राम दिन तक,

105

समस्त प्राणी मेरे साम्हने दण्डवत करने को आया करेंगे, यहोवा का यही वचन है।" यशायाह ६६ : २२, २३

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

106

(दृश्य)

पूरे अनन्तकाल में, परमेश्वर के लोग अपने सृष्टिकर्त्ता और उद्धारकर्त्ता का आदर करने के लिए सब्त के दिन को लगातार मनाएंगे। फिर भी सब्त का दिन पृथ्वी पर पाप आने से पहले मनाया जाता था, और वह तब भी मनाया जाएगा जब पृथ्वी नई बनाई जाएगी, तो क्या यह उचित नहीं है कि परमेश्वर के लोगों को इसे आज भी मनाना चाहिए?

107

यदि हमारे पास परमेश्वर और सब्त के विषय में कोई प्रश्न है, तो हम देख सकते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने सब्त को मनाया।

108

लूका हमें बताता है कि यीशु सब्त के दिन क्या करता था :

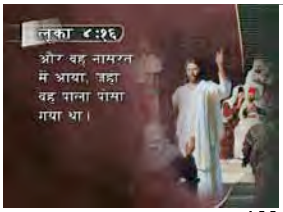

109

(मूलपाठ : लूका ४ : १६)

"और वह नासरत में आया, जहां वह पाला पोसा गया था;

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

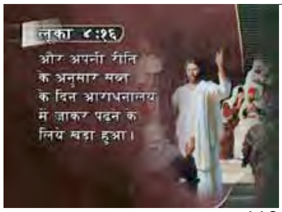

110

और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ।" लूका ४ : १६

बाइबिल कहती है कि यह यीशु की रीति थी!

111

वेब्सटर का शब्दकोष कहता है, "सब्त;

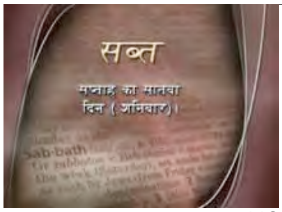

112

सप्ताह का सातवां दिन (शनिवार)।"

- वेब्सटर्स न्यू वर्ल्ड डिक्नरी, द्वितीय महाविद्यालय सम्पादन।

113

(दृश्य)

आदम और मूसा के समय के बीच यदि यह दिन बदल दिया गया होता या भुला दिया गया होता, तो परमेश्वर इस बात को याद दिलाता जब उसने सीने पर्वत पर दस आज्ञाएं लिखी थीं।

114

(दृश्य)

यदि मूसा और यीशु के समय के बीच यह दिन खो जाता, तो मसीह निश्चय ही उस रिकार्ड को ठीक कर देता।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

115

(दृश्य)

यदि शिष्यों के जीवनकाल के बीच यह दिन बदल गया होता तो वे निश्चय ही इसके विषय में लिख देते।

116

(दृश्य)

और वास्तव में यहूदी भी, जो समय का सही रिकार्ड रखते थे, अब भी सातवें दिन, या शनिवार की आराधना करते हैं।

117

(दृश्य)

पृथ्वी पर यीशु के जीवनकाल के बीच विश्रामदिन की पहचान का प्रश्न कभी नहीं पूछा गया था। केवल यही वाद विवाद उठा कि उसका पालन वह कैसे करता था। कठिन नियमों के द्वारा रब्बियों ने सब्त के पालन का अर्थ बिगाड़ दिया था। यीशु ने मनुष्य द्वारा बनाई गई आवश्यकताओं को हटाने का और सब्त पालन के अर्थ को दिखाने का प्रयत्न किया।

118

जब उन्होंने यीशु के ऊपर सब्त तोड़ने का दोष लगाया क्योंकि वह उस दिन लोगों को चंगा करता था, तो उसने उत्तर दिया,

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

119

(मूलपाठ : मत्ती १२ : १२)

" ----सब्त के दिन भलाई करना उचित है।"

मत्ती १२ : १२

120

(दृश्य)

बाइबिल कहती है कि यीशु ने चंगाई दी और प्रचार किया, सब्त हमें पूर्ण बनाने के लिए है; हमें गलतियों, पक्षपात और स्वार्थ से स्वतंत्र करने के लिए और हमें शान्ति देने के लिए है। यह हमें परमेश्वर की स्वरूपता में लाता है और हमें हमारे सृष्टिकर्त्ता की ओर दोबारा से इगिंत करता है। यही वह कार्य था जो यीशु करने आया था और यही वह कार्य था जो शिष्यों ने किया जब वह उन्हें छोड़कर चला गया।

121

(दृश्य)

सब्त पालन का अर्थ यीशु के अनुयायियों के द्वारा उसकी मृत्यु पर दर्शाया गया। इस मृत्यु की घड़ी में, यीशु के मित्रों ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार विश्राम किया और यीशु के शरीर पर सुगंधित वस्तुएं लगाने के कार्य को सब्त के समय के समाप्त होने के बाद तक छोड़ दिया।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

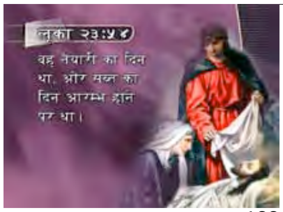

122

(मूलपाठ : लूका २३ : ५४ -५६)

"वह तैयारी का दिन था, और सब्त का दिन आरम्भ होने पर था।

123

और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आई थीं, पीछे पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी कि उस की लोथ किस रीति से रखी गई है।

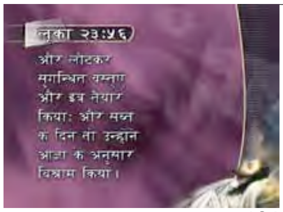

124

और लौटकर सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार कियाः और सब्त के दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया।"

लूका २३ : ५४ -५६

125

(दृश्य)सब्त से पहले वाले दिन, यीशु में उनका विश्वास टूट गया। क्रूस पर उसकी क्रूर मृत्यु के वे गवाह थे। उनके सपने और आशाएं अंधेरी कब्र में सो गई, वे उसके मृत शरीर पर सुगन्धित वस्तुएं लगाना चाहते थे।

126

(मूलपाठ : लूका २४ : १)

"----परन्तु सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थीं, ले कर कब्र पर आई।"

लूका २४ : १

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

127

आइए, हम उन तीन स्मरणीय दिनों की घटनाओं पर ध्यान दें।

128

१. शुक्रवार : यीशु मरा; उन स्त्रियों ने सुगंधित वस्तुएं और इत्र तैयार किया।

129

२. शनिवार (सब्त का दिन) : यीशु ने कब्र में विश्राम किया; उसके अनुयायीयों ने विश्राम किया।

130

३. रविवार (सप्ताह का पहला दिन) : यीशु मृतकों में से जी उठा!

स्त्रियाँ यीशु को सुगन्धित वस्तुएं लगाने आई थीं।

इसमें कोई शंका नहीं हो सकती कि यीशु की मृत्यु का कौन सा दिन सब्त था।

131

(मूलपाठ : यूहन्ना १९ : ३०)

तैयारी के दिन यीशु क्रूस पर लटकाये गये और वे चिल्लाये, ".....पूरा हुआ ...."

यूहन्ना १९ : ३०

132

पाप से मुक्ति दिलाने का उसका कार्य पूरा हो गया! सब्त समाप्त होने तक उसने कब्र में आराम किया

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

133

(दृश्य)

और सप्ताह के पहले दिन रविवार को वह जी उठा। यहाँ तक कि मरने के बाद भी यीशु ने सब्त का पालन किया; सब्त दिनों कब्र में उसने विश्राम किया। जब हम क्रूस के पास खड़े होते हैं, तो हम यह अनुभव करते हैं कि सात दिन में से कोई एक दिन काम नहीं करेंगे! सब्त से छेड़छाड़ करना सृष्टि, सीनै और कलवरी पर अविश्वास करना होगा!

134

हाँ, यह बात महत्वपूर्ण है कि सात दिन में से कौन सा दिन मनाएं। जार्ज वान्डेमैन नामक एक मसीही लेखक ने लिखा :

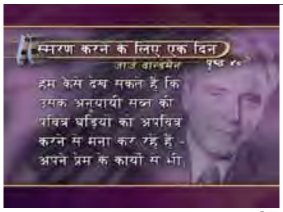
135

"हम कैसे देख सकते हैं कि उसके अनुयायी सब्त की पवित्र घड़ियों को अपवित्र करने से मना कर रहें हैं - अपने प्रेम के कार्यो से भी,

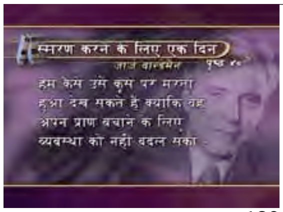
136

हम कैसे उसे क्रूस पर मरता हुआ देख सकते हैं क्योंकि वह अपने प्राण बचाने के लिए व्यवस्था को नहीं बदल सका -

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

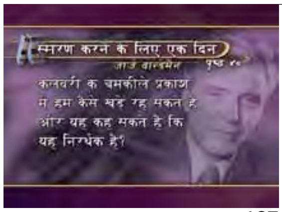

137

कलवरी के चमकीले प्रकाश में हम कैसे खड़े रह सकते हैं और यह कह सकते हैं कि यह निरर्थक है?"
-स्मरण करने के लिए एक दिन, पृष्ठ ४०

138

सृष्टिकर्त्ता ने कहा "स्मरण रहे" तब भी बहुत -से लोग भूल गए। परन्तु यह परमेश्वर का अभिप्राय नहीं था। यीशु यह आशा करता था कि मसीही लोग हर समय सब्त का पालन करते रहेंगे।

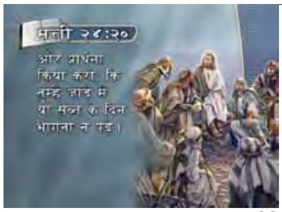

139

(मूलपाठ : मत्ती २४ : २०)
"और प्रार्थना किया करो; कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े।"
मत्ती २४ : २०

140

(दृश्य)
यीशु यह आशा करता था कि ७० ईसवी में जब यरुशलेम का नाश हुआ था, मसीही लोग तब भी सब्त का पालन करते रहेंगे!

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

141

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १७ : १,२)
नया नियम यह रिकार्ड रखता है कि यीशु के अनुयायी पुनरुत्थान के बाद भी सब्त का पालन करते थेः
"वे थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय थाः

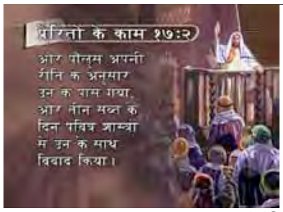

142

और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उन के पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उन के साथ विवाद किया।"
प्रेरितों के काम १७ : १,२
अन्य सब्त में जब पौलुस उपदेश दे रहा था, कुछ लोग अपनी प्रार्थना लेकर आए :

143

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १३ : ४२,४४)
"लोग उन से विनती करने लगे, कि अगले सब्त के दिन हमें ये बातें फिर सुनाई जाएँ।

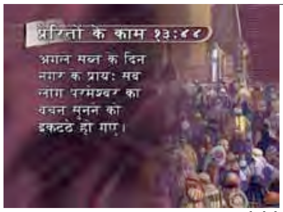

144

अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकटठे हो गए।"
प्रेरितों के काम १३ : ४२, ४४

145

यह सच है, प्रेरितों के काम नामक पुस्तक ८४ सभाओं का रिकार्ड रखता है जो पौलुस ने की थी।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

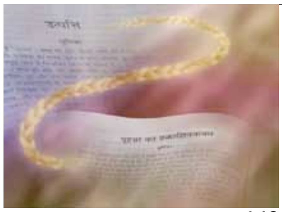
146

उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक सब्त सुनहरे धागे की तरह चल रहा है, जो उनको दर्शाता है जो यीशु से उसके दूसरे आगमन पर मिलने के लिए तैयार है!

147

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : १२)
"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते है।"
प्रकाशितवाक्य १४ : १२

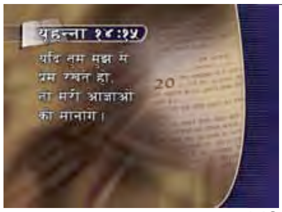

148

(मूलपाठ : यूहन्ना १४ : १५)
यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"
(यूहन्ना १४ : १५) और उनमें से एक आज्ञा हमें बताती है कि "स्मरण करो सब्त के दिन को"

149

यदि हम प्रत्येक सप्ताह के सातवें दिन सब्त को परमेश्वर अपने सृष्टिकर्त्ता की उपासना करते हैं, तो हम कभी नहीं भूलेंगे कि हम कहाँ से आए थे या इस दुनिया को जो हमारे चारो ओर है, किसने बनाया।

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

150

यदि हम प्रत्येक सप्ताह सब्त का पालन करते हैं, तो हमें यह सोचने की आवश्यकता नहीं कि हम कौन हैं -विश्व के राजा परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ!

151

हमें यह सोचने की आवश्यकता नहीं होगी कि हम यहाँ कैसे आए। हम यहाँ हैं क्योंकि परमेश्वर हमें चाहता था, क्योंकि उसने हमें बनाया है।

152

वही यीशु जो आप से पूछते हैं कि "स्मरण रखना" आज रात आप की ओर अपना हाथ बढ़ाता है वे हाथ जो आपके पापों के कारण कलवरी पर कीलों से ठोके गए थे और नम्रता से बुलाता है, "मेरे पीछे हो लो"।

153

क्या आप अभी अपने सृष्टिकर्त्ता के पीछे हो लेंगे? क्या आप सब्त को, जिसे उसने आपके लिए बनाया, स्मरण रखने की आज्ञा का पालन करेंगे? क्या आप अब से प्रत्येक सप्ताह उसकी आराधना करेंगे जब उसका सब्त प्रत्येक सातवें दिन आता है? क्या आप यीशु और प्रेरितों की तरह अपने बनाने वाले के सातवें दिन के सब्त को अराधना करेंगे?

११ - किसी अच्छाई के लिए सृजे गए

154

मित्रों, सब्त केवल आराधना के लिए सप्ताह के किसी एक दिन का विषय नहीं हैं।

यह सभी प्रकार से यीशु की आज्ञा मानने का विषय है। यह आदम और हव्वा के साथ खड़े रहने का विषय है जैसा कि उन्होंने पहले सब्त को अदन की वाटिका में आराधना की थी। यह मूसा के साथ परमेश्वर की आज्ञा मानने का विषय है जब परमेश्वर ने कहा था, "सब्त का दिन पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।" यह उसी दिन में उपासना करने का विषय है जैसा कि पुराने नियम के यशायाह, यिर्मयाह, दानिय्येल और समस्त महान विश्वासियों ने किया था। यह पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ प्रत्येक सब्त को समस्त सृष्टि की रचना करने वाले परमेश्वर की प्रशंसा करने का विषय है। प्रकाशितवाक्य के अनुसार यह परमेश्वर के अंतिम समय के उन लोगों का एक भाग होने का विषय है, जो आज्ञाओं का पालन करते हैं। क्या आप यह कहना पसन्द करेंगे, "हाँ यीशु, मैं तेरे साथ खड़ा होऊँगा। मैं तुझे पहला स्थान दूंगा। मैं प्रत्येक रास्ते पर तेरा अनुसरण करूंगा यदि ऐसी आपकी इच्छा है तो अपना हाथ उठाएं जब हम प्रार्थना करते हैं।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

1

अपने साथ ऐसा न होने दें।

2

कल्पित या झूठी कथाएं सच के रूप में सरलता से ग्रहण कर ली जाती हैं यदि वे अधिक समय तक हमारे आसपास हों। मकड़ी का ही उदाहरण ले लीजिए। लगभग ३५० ईसा पूर्व युनानी दर्शनशास्त्री अरस्तु ने एक मकड़ी का वर्गीकरण किया कि उसके छः पैर होते हैं। और अगली २० शताब्दियों तक लोग यही विश्वास करते रहे। किसी ने पैरों को गिनने की परवाह तक नहीं की। आखिर महान अरस्तु को कौन चुनौती देता? आगे जाकर लेमार्क, जो जीव वैज्ञानिक और प्रकृति के ज्ञाता थे उन्होंने इसकी खोज की। उन्होंने ध्यानपूर्वक मकड़ी के पैरों को गिना। और अन्दाजा लगाइए कि उसके कितने पैर गिने एकदम आठ! वह कल्पित कथा जो सच की तरह सदियों से सिखाई गई थी वह नष्ट हो गई क्योंकि लेमार्क ने गिनने का कष्ट किया।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

3

क्या यह सम्भव है कि मसीही कलीसिया के अन्दर धार्मिक कल्पित कथा घुस आयी हो? क्या यह सम्भव है कि हम छः या आठ पैरों वाली मकड़ी से अधिक महत्वपूर्ण विषय का अध्ययन कर रहे हैं?

लाखों लोग सप्ताह के पहले दिन आराधना करते हैं यह विश्वास कर कि यह बाईबिल का सब्त है। अपने पिछले सत्र में हमने खोज की थी कि सप्ताह का सातवां दिन, शनिवार, परमेश्वर का सच्चा सब्त है। जिस प्रकार से २००० साल से पाठ्य -पुस्तकें गलत सिखाती आ रही हैं कि मकड़ी के छः पैर होते हैं, इसी प्रकार हजारों लोगों ने सब्त के झूठ को ग्रहण किया है। आप बाईबिल की इन सभाओं में लगातार इसलिए आ रहे हैं क्योंकि आप का हृदय इस सच्चाई को जानने का इच्छुक है। आप जानना चाहते हैं कि वास्तव में परमेश्वर का वचन क्या कहते हैं आप इस बात में दिलचस्पी नहीं लेते कि धार्मिक नेतागण क्या सिखाते हैं। आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर क्या कहता हैं। आइए हम अपने पिछले सत्र में खोज की गई बातों को दोहराएँ।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

4

(दृश्य)

हमने सीखा कि परमेशवर ने हमें प्रत्येक सप्ताह एक विशेष दिन दिया है -सब्त का दिन जिसमें हम उसकी आराधना करते हैं और अपने सृष्टिकर्त्ता के रूप में उसके कार्य को स्मरण करते हैं। हमने सीखा कि सब्त का दिन कोई भी दिन नहीं है। परन्तु वह सप्ताह का सातवां दिन है और हमने सीखा कि सब्त को हम तब भी मानते रहेंगे जब इस दुनिया का अन्त हो जाएगा और जब हम लोग स्वर्ग में अपने सृष्टिकर्त्ता के साथ रहेंगे।

5

परन्तु जब हम अपनी दुनिया के चारों ओर देखते हैं तब हम यह पाते हैं कि अधिकतर लोग सातवें दिन परमेश्वर की आराधना नहीं करते।

6

यहाँ तक कि बहुत -से लोग बाईबिल के परमेश्वर की आराधना नहीं करते, परन्तु दूसरे ईश्वरों की आराधना करते हैं।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

7

परन्तु वे जो बाईबिल के परमेश्वर की आराधना करते हैं, उनमें से भी बहुत लोग उसके पवित्र दिन को छोड़कर किसी और दिन में आराधना करते हैं। ऐसा क्यों? क्या परमेश्वर ने इस दिन को बदला? क्या किसी और ने बदला?

बहुत से लोग क्यों दूसरे दिन -रविवार -को सब्त की तरह मानते हैं?

8

हमने सीखा कि बाईबिल हमें बताती है कि परमेश्वर ने अपने नियम में एक बहुत ही विशेष चिन्ह हम पृथ्वी पर रहने वालों को दिया था:

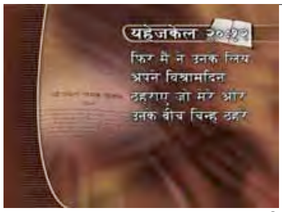

9

(मूलपाठ : यहेजकेल २० : १२, २०)

"फिर मैं ने उनके लिये अपने विश्रामदिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरें,

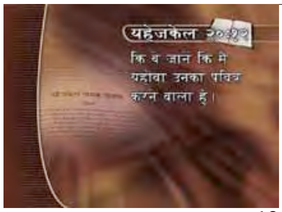

10

कि वे जानें कि मैं यहोवा उनका पवित्र करने वाला हूँ ---"

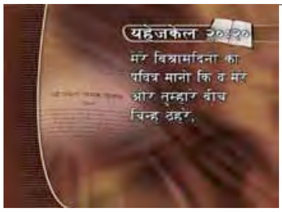

11

"मेरे विश्रामदिनों को पवित्र मानो कि वे मेरे और तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरें,

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

12

कि जिससे तुम जानो कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

यहेजकेल २० : १२, २०

13

(दृश्य)

बाइबिल आरंभ से अन्त तक, सच्ची गवाही देती है कि परमेश्वर ने ही सब्त के दिन को बनाया है और यह सब्त सप्ताह का सातवां दिन है बाइबिल में ऐसा कोई भी स्थान नहीं है जहाँ परमेश्वर ने यह बताया है कि उसने अराधना और विश्राम के इस दिन को बदला है वह चिन्ह जो उसके और उसके लोगों के बीच है।

14

(दृश्य)

आइए हम परमेश्वर के वचन के अध्ययन के द्वारा एक क्षण के लिए दोहराए कि इन संदेशों में हमने क्या प्राप्त किया है।

जब परमेश्वर ने पृथ्वी ग्रह और मनुष्य को बनाना समाप्त किया तब उसने सब्त को बनाया।

15

प्रथम सप्ताह के उस सातवें दिन में और पूरी पृथ्वी के इतिहास में उसकी सृष्टि की रचना की एक स्मृति।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

16

जब परमेश्वर ने सीनै पहाड़ पर अपने नियम लिखे, तो उसने सब्त के नियम को उन नियमों के एकदम बीच में अर्थात हृदय के पास रखा।

17

(दृश्य)

यह नियम मनुष्य को हमेशा याद दिलाने के लिए था कि वह केवल ही अस्तित्व में नहीं आया।

18

वह सातवें दिन को मानने के लिए मनुष्य को देता है क्योंकि उसने छः दिनों में पृथ्वी की सृष्टि की

19

और सातवें दिन विश्राम किया। अपने नियमों के संबंध में परमेश्वर ने मूसा के द्वारा लोगों को कहा कि उन नियमों में से न तो कुछ निकाले न ही उनमें कुछ बढ़ाए।

20

(मूलपाठ : व्यवस्थाविवरण ४ : २)

"जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूं उस में न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना,

21

तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो -जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूँ उन्हें तुम मानना।" व्यवस्थाविवरण ४ : २। परमेश्वर ने भी उनसे कहा,

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

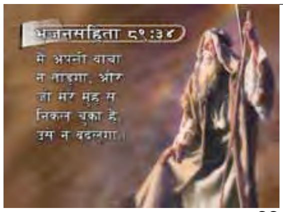

22

(मूलपाठ : भजनसंहिता ८९ : ३४)

"मैं अपनी वाचा न तोड़ूंगा, और जो मेरे मुंह से निकल चुका है, उसे न बदलूंगा।"

भजनसंहिता ८९ : ३४

23

स्वयं यीशु ने सीनै पर्वत पर दी गई व्यवस्था का पालन करने का संकल्प दिखाया। उसने पहाड़ी उपदेश में व्यवस्था को मिटाने नहीं परन्तु उन्हें पूरा करने आया है!

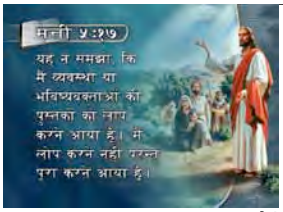

24

(मूलपाठ : मत्ती ५ : १७ -१९)

उसके शब्दों पर ध्यान दीजिए : –

"यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ। मैं लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूँ।"

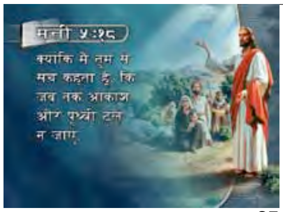

25

क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं,

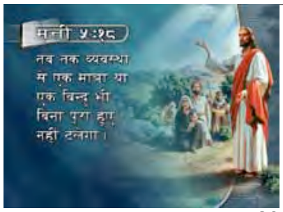

26

तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

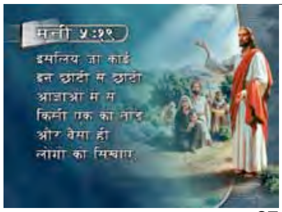

27

इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े और वैसा ही लोगों को सिखाए,

28

वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा ----"

मत्ती ५ : १७ - १९

जब परमेश्वर ने अपने लोगों को दस आज्ञाएं दे दीं, तो उसने यह भी साफ कर दिया कि कोई भी मनुष्य प्राणी उसके पवित्र होठों से निकले निर्देश को नहीं बदलेगा।

29

स्वयं यीशु ने अपने उदाहरण से यह दिखाया कि वह उस दिन का आदर करना चाहता था जिसे उसने और उसके पिता ने इस पृथ्वी के इतिहास के पहले सप्ताह में पवित्र बनाया।

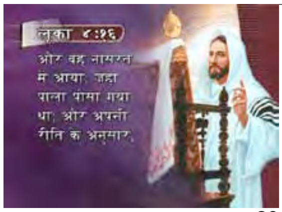

30

(मूलपाठ : लूका ४ : १६)

"और वह नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार,

31

सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ।"

लूका ४ : १६

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

32

जब धर्मी नेताओं ने यीशु के चेलों के ऊपर सब्त को तोड़ने का दोष लगाया, तब यीशु ने कहा कि वह इस दिन का भी प्रभु है।

33

(मूलपाठ : मरकुस २ : २७, २८)
"सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए।

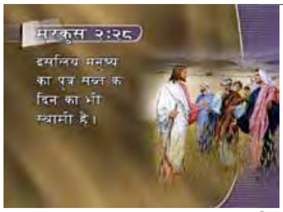

34

इसलिये मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।"
मरकुस २ : २७, २८

35

न केवल यीशु सब्त के दिन का आदर करता था परन्तु वह अपने चेलों से भी कहता था कि प्रार्थना करें कि वे उसके पवित्र दिन को भविष्य में भी माना करें।

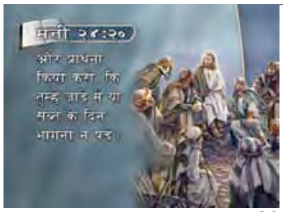

36

(मूलपाठ : मती २४ : २०)
मती २४ : २० में यह विनती पाते हैं : "और प्रार्थना किया करो, कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े।"

37

यहाँ यीशु यरूशलेम के नष्ट होने के ठीक पहले अपने अनुयायियों के भागने की बात कर रहे थे।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

38

इसका विनाश रोमियों द्वारा ७० ईसवी में हुआ।

39

जब उसे क्रूस पर चढ़ाया गया, उसकी आशा थी कि उसको मानने वाले सब्त का पालन करते रहेंगे।

40

कट्टरपंथी यहूदी ३,५०० वर्ष पहले हुए निर्गमन के समय से सातवें दिन में उपासना करते रहे हैं। संसार में कहीं भी हों, वे सप्ताह के सातवें दिन को परमेश्वर का दिया हुआ सब्त मानते हैं।

41

यदि केवल बाइबिल ही हमारी सूचना का आधार होती, तो हम फिर भी यह निश्चित कर पाते कि कौन -सा सातवां दिन या सब्त है। क्रूस - काण्ड के वर्णन पर ध्यान दें तो लूका की पुस्तक सप्ताह के अन्त की घटनाओं का सारांश बताती है। शुक्रवार को यीशु की क्रूस की मृत्यु के बाद की बाइबिल वर्णन करती है :

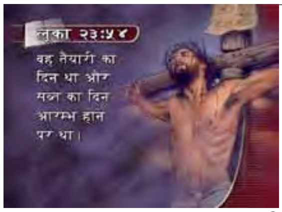

42

(मूलपाठ : लूका २३ : ५४ - ५६; २४ : १)
"वह तैयारी का दिन था और सब्त का दिन आरम्भ होने पर था।"

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

43

और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आई थीं, पीछे -पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी कि उसकी लोथ किस रीति से रखी गई है।

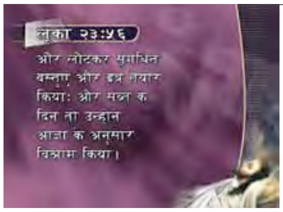

44

और लौटकर सुंगधित वस्तुएं और इत्र तैयार किया : और सब्त के दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया।

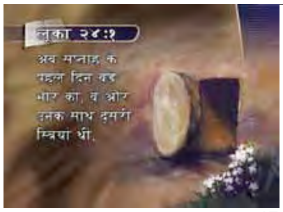

45

"अब सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर को, वे और उनके साथ दूसरी स्त्रियां थीं,

46

वे उन सुंगधित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थीं, लेकर कब्र पर आई।"

लूका २३ : ५४ - ५६, २४ : १

47

लगभग पूरी मसीही दुनिया, मसीह की मृत्यु के स्मरण में गुड फ्राईडे मनाती हैं।

मसीह के जी उठने के स्मरण में ईस्टर - रविवार मनाती हैं।

48

बाइबिल हमें बताती हैं, "आज्ञा के अनुसार" इन दो दिनों के बीच का दिन सब्त है।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

49

(दृश्य)

यधपि लूका ने ये बातें क्रूस के बहुत सालों बाद लिखी थी फिर भी उसने रविवार को "सप्ताह का पहला दिन" बतलाया है। उसने फिर भी सातवें -दिन को "सब्त" कहा। बाइबिल इन दो दिनों को स्पष्ट रूप से पृथक करती है।

50

सचमुच, प्रेरित क्रूस के बहुत वर्ष बाद तक सब्त के दिन उपासना और प्रचार करते रहे।

51

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १३ : १४, ४२, ४४)

बाइबिल बताती है कि पौलुस और उसके साथी जब अन्ताकिया गये वे

".....सब्त के दिन आराधनालय गये और बैठे।"

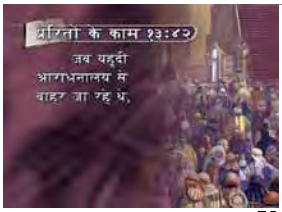

52

(प्रेरितों के काम १३ : १४)

".....जब यहूदी आराधनालय से बाहर जा रहे थे,

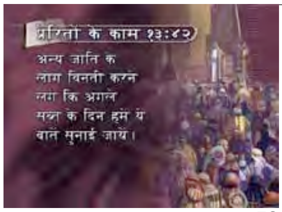

53

अन्य जाति के लोग विनती करने लगे कि अगले सब्त के दिन हमें ये बातें सुनाई जायें।"

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

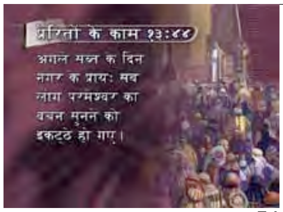

54

"अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए।"

प्रेरितों के काम १३ : ४२, ४४

यह पौलुस की रीति थी कि सब्त के दिन आराधनालय में उपासना करे:

55

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १८ : ४)

"और वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद -विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था।"

प्रेरितों के काम १८ : ४

इन बाइबिल -संबंधी सच्चाईयों से देखा जा सकता है कि कोई प्रमाण नहीं कि यीशु या उसके चेलों ने उपासना का दिन बदल दिया हो। बदलाहट की आज्ञा का बाइबिल में ऐसा कोई प्रमाण नहीं है।

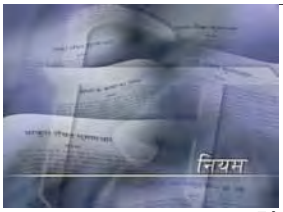

56

नये-नियम के किसी भी लेखक ने सब्त के किसी परिवर्तन के बारे में नहीं कहा! यदि ऐसा महवपूर्ण परिवर्तन घटित होता तो बाइबिल के नये नियम की पुस्तकों का यह प्रमुख विषय होता!

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

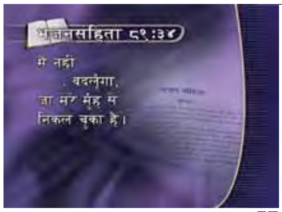

57

(मूलपाठ : भजनसंहिता ८९ : ३४)

परमेश्वर ने कहा, "मैं नहीं ...... बदलूँगा, जो मेरे मुँह से निकल चुका है।"

भजनसंहिता ८९ : ३४

परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को नहीं बदला है और न ही किसी को अधिकार है कि परमेश्वर की व्यवस्था को बदले!

बहुत से रविवार -पालन करने वाले विद्वान इसे स्वीकार करते हैं।

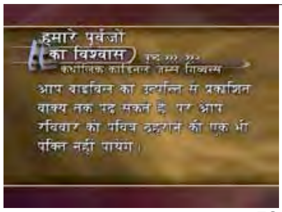

58

केथोलिक कार्डिनल जेम्स गेब्बन्स ने लिखा : "आप बाइबिल को उत्पत्ति से प्रकाशित वाक्य तक पढ़ सकते हैं, पर आप रविवार को पवित्र ठहराने की एक भी पंक्ति नहीं पायेंगे।

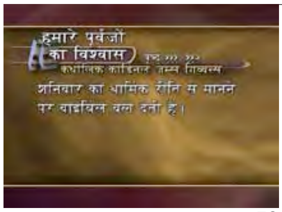

59

शनिवार को धार्मिक रीति से मानने पर बाइबिल बल देती है।"

द फेथ आफ आवर फादरस्, पृष्ठ १११, ११२

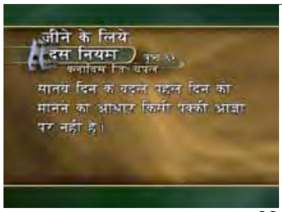

60

क्लोविस जि॰ चेपल, एक मेथोडिस्ट, यही विचार रखते हैं, "सातवें दिन के बदले पहले दिन को मानने का आधार किसी पक्की आज्ञा पर नहीं है।"

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

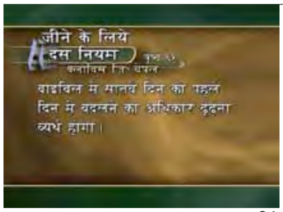

61

"बाइबिल में सातवें दिन को पहले दिन में बदलने का अधिकार ढूंढ़ना व्यर्थ होगा।"
जीने के लिये दस नियम। पृष्ठ ६१ ।

62

ऐसा कोई रिकार्ड बाइबिल में नहीं है कि यीशु या उसके शिष्यों ने कोई दूसरे दिन को माना या दूसरों को मानने के लिए कहा। "तब कैसे रविवार पालन आरम्भ हुआ?" आप पूछना चाहेंगे।

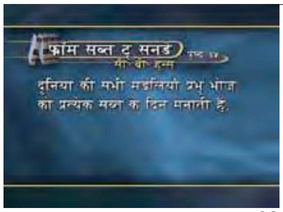

63

पाँचवी सदी के इतिहासकार विद्वान सुकरात से सीखते हैः "दुनिया की सभी मडंलियाँ प्रभु भोज को प्रत्येक सब्त के दिन मनाती हैं,

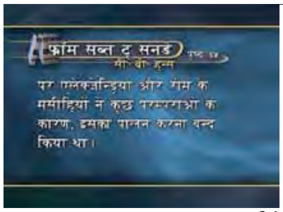

64

पर एलेक्जेन्ड्रिया और रोम के मसीहियों ने कुछ परम्पराओं के कारण, "इसका पालन करना बन्द कर दिया है।"-इक्लेज़ियास्टिकल हिस्ट्री, सी॰ बी॰ , हेन्स द्वारा उदधृत किया गया, ' फ्रॉम सब्त टू सनडे', पृष्ठ ३५ पर

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

65

दूसरे इतिहासकारों द्वारा प्रमाणित किया गया है कि मध्य -युग के समय बहुत -सी मंडलियाँ सातवें दिन के सब्त का पालन करती थीं और आधुनिक समय में दुनिया के मसीहियों द्वारा किया गया पालन अच्छा प्रमाण है।

66

इतिहासकारों के अनुसार दिनों का बदलाव ७० और १३५ ईसवी के बीच में हुआ। ये दोनों वर्ष यहूदियों के राजद्रोह के हैं जिन्हें रोमी सरकार ने बेरहमी से कुचल दिया था।

67

यहूदियों के प्रति रोम का बढ़ता क्रोध और यहूदी -मसीही तनावों के कारण यहूदियों के विरुद्ध लेख निकलने लगे और सारे रोमी साम्राज्य में यहूदी - विरोधी मत फैल गया। इसके कारण मसीहियों ने अपने आप को यहूदियों से अलग करने की चेष्टा की। चूँकि सब्त - पालन उनको यहूदियों के साथ मिलाता था इसलिए बहुत - सारे मसीही सब्त - पालन को कम महत्व देने लगे।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

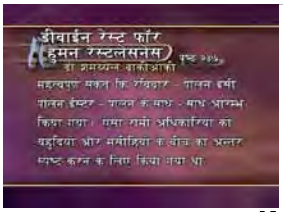

68

"महत्वपूर्ण संकेत कि रविवार - पालन इसी पालन ईस्टर - पालन के साथ - साथ आरम्भ किया गया। ऐसा रोमी अधिकारियों को यहूदियों और मसीहियों के बीच का अन्तर स्पष्ट करने के लिए किया गया था,

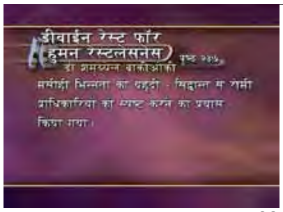

69

मसीही भिन्नता को यहूदी - सिद्दान्त से रोमी प्राधिकारियों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया।" पृष्ठ २३७।

70

इस बात को ध्यान में रखते हुए, यह स्पष्ट हो जाता है कि रोमी साम्राज्य की राजधानी में रहने वाले मसीहियों ने स्वंय को सब्त - पालन से अलग करने में पहल की। वे उस स्थान में थे जहाँ शत्रुता सबसे अधिक थी।

71

(दृश्य)
यह बात विशेष रूप से समझ में आती है कि ये मसीही सब्त - पालन से दूर हटने लगे क्योंकि रोमी सब्त - पालन को तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे। रोम की कलीसिया में अधिकतर अन्य जातियों से आए लोग थे जो मूर्ति - पूजा से निकल कर आए थे।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

72

(मूलपाठ : रोमियों ११ : १३)

यह ध्यान देने की बात है कि पौलुस रोम की कलीसिया को किस प्रकार संबोधित करता है : मैं तुम अन्यजातियों से यह बातें कहता हूँ...."

रोमियो ११ : १३

73

ये मसीही, हाल ही में मूर्त्ति - पूजा से मसीही धर्म में आये थे, ये यहूदी मसीहियों की तरह सब्त -पालन करने में अपने को स्थापित नहीं कर पाये थे, जो हमेशा सब्त - पालन करते रहे थे।

74

लेकिन क्यों सप्ताह के अन्य दिनों को छोड़कर रविवार को चुना गया?

यह एक अच्छा प्रश्न है !

रोमी -साम्राज्य में मूर्त्ति -पूजक बहुत वर्षों से सूर्य की पूजा करते थे, इसलिये रविवार को सूर्य का दिन कहकर उत्सव मनाते थे।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

75

रोमी -सम्राट अपने को सूर्य -देवता का प्रतिनिधि मानते थे, पैसों और इमारतों पर सूर्य का प्रतीक -चिन्ह लगाते थे और अपनी प्रजा से उपासना की मांग करते थे। कुछ धार्मिक -गुरूओं का विश्वास है कि कलीसिया ने अन्धविश्वासियों से समझौता करने में अपना लाभ देखा। उनके कुछ रीतियों को अपनाकर कलीसिया उनका प्रवेश सरल कर देती। अपनी सारी प्रजा को एक धर्म में मिलाकर रोमी साम्राज्य की शक्ति बढ़ती।

76

कई शताब्दियों से रविवार को पवित्र -दिन के रूप में नहीं, परन्तु छुट्टी के दिन के रूप में मनाया जाता था। फिर दोनों दिन पवित्र दिन के रूप में मनाए जाने लगे।

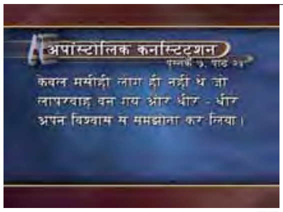
77

इसी पुस्तक के २३वें अध्याय में लिखा है : "केवल मसीही लोग ही नहीं थे जो लापरवाह बन गये और धीरे - धीरे अपने विश्वास से समझौता कर लिया।

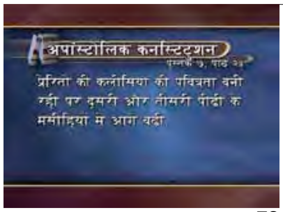
78

प्रेरितों की कलीसिया की पवित्रता बनी रही पर दूसरी और तीसरी पीढ़ी के मसीहियों में आगे बढ़ी,

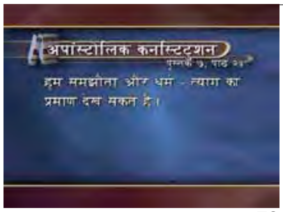
79

हम समझौता और धर्म -त्याग का प्रमाण देख सकते हैं।"

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

80

रोमी सम्राट कोन्सटेनटाइन द्वारा मार्च ७, ३२१ ईसवी को पारित प्रथम सार्वजनिक रविवारीय कानून के असर से कलीसिया में समझौते की ओर झुकाव आया।

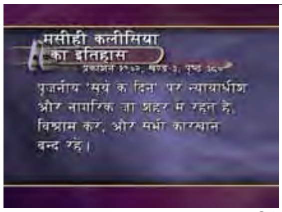

81

यधपि वह एक मूर्तिपूजक होते हुए उसने कानून बनाया :"पूजनीय 'सूर्य के दिन' पर न्यायाधीश और नागरिक जो शहर में रहते हैं, विश्राम करें, और सभी कारखाने बन्द रहें।

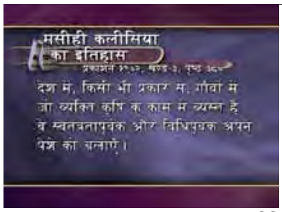

82

देश में, किसी भी प्रकार से, गाँवों में जो व्यक्ति कृषि के काम में व्यस्त हैं वे स्वतंत्रतापूर्वक और विधिपूर्वक अपने पेशे को चलाएँ।

मसीही कलीसिया का इतिहास, प्रकाशन १९०२, खण्ड ३ पृष्ठ ३८०

83

लौदिकिया की सभा में रोमी कलीसिया ने अगला कदम उठाकर रविवार -□पालन को मसीहियत का एक भाग बना दिया। यह रविवार -□पालन का प्रथम धार्मिक कानून था।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

84

"वर्ष ३२५ में, रोमी बिशप सिलवेस्टर ने, पहले दिन को 'परमेश्वर का दिन' ठहरवा दिया।"

हिस्टोरिया इक्लीजिऐसटिका, पृष्ठ ७३९।

अन्य लोडिसिया सभा में जो ३६४ में हुई, निम्नलिखित कानून बने :

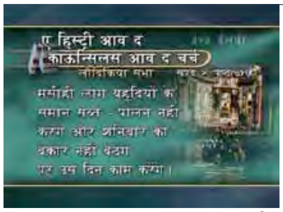

85

मसीही लोग यहूदियों के समान सब्त -पालन नहीं करेंगे और शनिवार को बेकार नहीं बैठेंगे--- पर उस दिन काम करेंगे।

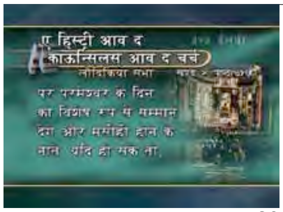

86

पर परमेश्वर के दिन को विशेष रूप से सम्मान देंगे और मसीही होने के नाते, यदि हो सके तो,

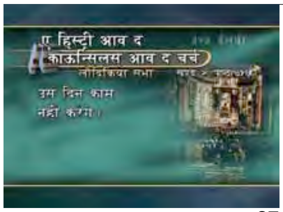

87

उस दिन काम नहीं करेंगे।"

ए हिस्ट्री आव द काऊन्सिलस् आव द चर्च, पुस्तक २, पृष्ठ ३१६

88

इतना होते हुए भी, छठी शताब्दी में भी मसीही लोग सब्त पालन कर रहे थे। जिसकी पोप ग्रेगरी ने निंदा की।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

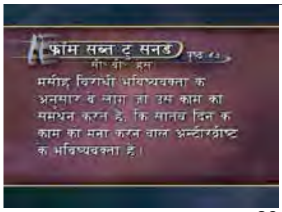

89

"मसीह विरोधी भविष्यवक्ता के अनुसार वे लोग जो उस काम का समर्थन करते हैं, कि सातवें दिन के काम को मना करने वाले अन्टीरव्रीष्ट के भविष्यवक्ता हैं।" द लॉ आव सनडे, सी॰ बी॰ हेन्स की फ्राम सब्त टु सनडे में उद्‌घृत, पृष्ठ ४३।

90

(दृश्य)
यह ध्यान रहे कि उस समय बाइबिल सभी के पास नहीं थी, जिस प्रकार अब है। उस समय बाईबिल के सिद्धान्त मौखिक रूप से सिखाए जाते थे। कुछ समय के बाद लोग सिद्धान्त और परम्परा के बीच के अन्तर को कठिनाई से ही देख पाते थे।

91

ऐसा उस समय तक रहा जब -तक यीशु और उसके शिष्यों ने लोगों का सत्य का ज्ञान नहीं दिया। फिर शताब्दियाँ बीत गई,

92

और प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार आन्दोलन आया, जिसने उन सस्कारों और परम्पराओं पर प्रश्न उठाए जिन्होंने परमेश्वर के वचन की शिक्षा का स्थान ले लिया था।

93

धर्मसुधार आन्दोलन की आवाज थी, "बाईबिल ही हमारे विश्वास का आधार है।"

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

94

बहुत -से विश्वासी, हस और जेरोम की तरह, अपने विश्वास के कारण जीवित जला दिए गए।

95

फिर भी, छः शताब्दियों के बाद, सब्त की सच्चाई पूरी तरह निष्क्रिय हो गयी। शताब्दी से चली आ रही परम्पराओं के नीचे छिप गयी, कुछ ही लोग ध्यानपूर्वक बाइबिल की शिक्षा को खोजते और मानते थे जो वचन सिखाता है। उन्होंने कभी यह प्रश्न नहीं उठाया कि यह सत्य है या असत्य।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

96

कभी -कभी लोग बिना प्रश्न किए विषय को स्वीकार कर लेते हैं। कई शताब्दी तक बहुत से लोगों का यह विश्वास था कि पृथ्वी इस विश्व -ब्रह्माण्ड का केन्द्र है। वे विश्वास करते थे कि सूर्य और दूसरे ग्रह पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं। वह केवल पुरानी परम्परा को चुनौती दे रहा था। उसने प्रकट किया, पृथ्वी नहीं, सूर्य विश्व -ब्रह्माण्ड का केन्द्र हैं। क्या आप जानते हैं सबसे अधिक किसने उसका विरोध किया? कलीसिया के अगुवे -धार्मिक गुरु। वे चिल्लाये -"आप परमेश्वर के स्वर्ग को नहीं बदल सकते।" जबकि, कोपरनीकस परमेश्वर के स्वर्ग को नहीं बदल रहा था। वह केवल पुरानी परम्परा को सामने ला रहा था जिसकी वैज्ञानिक प्रमाणिकता नहीं थी। सब्त कैसे बदल गया? कोपरनीकस सच्चाई को प्रकट कर रहा था। किसी बात को लम्बे समय तक मानने से वह सच्चाई नहीं बनती। सब्त कैसे बदल गया? अचम्भे में डालने वाली बात को सुनकर कैथोलिक लेखकों की अचम्भे में डालने वाली बातों पर ध्यान दें, जिनकी कलीसिया ने सब्त को रविवार में बदलने की अगुवाई की।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

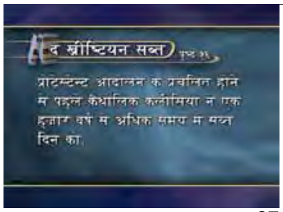

97

"प्रोटेस्टेन्ट आंदोलन के प्रचलित होने से पहले कैथोलिक कलीसिया ने एक हजार वर्ष से अधिक समय में सब्त दिन को,

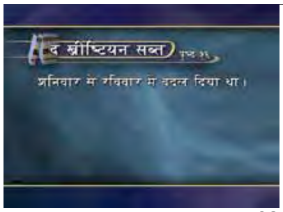

98

शनिवार से रविवार में बदल दिया था।"
द ख्रीष्टियन सब्त, पृष्ठ १६

99

दीक्षा पुस्तिका में हम पढ़ते हैं:

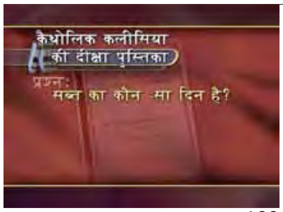

100

"प्रश्न : सब्त का दिन कौन -सा है?

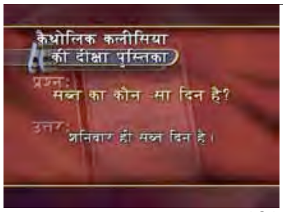

101

उत्तर : शनिवार ही सब्त दिन है।

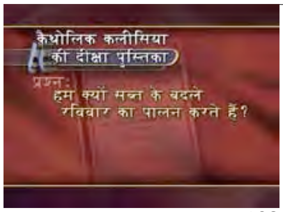

102

प्रश्न : हम क्यों सब्त के बदले रविवार का पालन करते हैं?

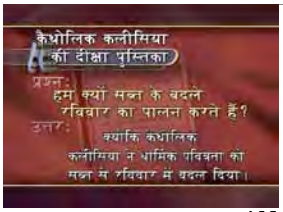

103

उत्तर : "....क्योंकि केथोलिक कलीसिया ने धार्मिक पवित्रता को सब्त से रविवार में बदल दिया।"
३३६ ईसवी में लौदिकिया सभा द्वारा यह बदला गया था।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

104

आप पूछ सकते हैं कि क्यों कैथोलिक कलीसिया ने, अपनी स्वतंत्र और खुली स्वीकृति से इस प्रथा को बदला? उत्तर है : उस अधिकार के द्वारा जो कैथोलिक कलीसिया ने परम्परा के लिए स्वीकार किया है।

105

कलीसिया के अन्दर परम्परा के अधिकार को लेकर केथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट के बीच प्रारंभिक समय में एक विशेष मतभेद था। जब मार्टिन लूथर ने यह घोषणा की कि वह केवल बाईबिल की सच्चाई को मानेगा तो ऐसा करके उसने कैथोलिक कलीसिया की कई रीतियों को चुनौती दी जो केवल परम्परा पर आधारित थीं।

106

ट्रेन्ट की सभा को यह फैसला करना था कि परम्परा और बाईबिल के साथ उसके सम्बन्ध पर कैथोलिक कलीसिया की स्थिति क्या हो। अन्त में इस प्रश्न का हल निकाला गया। सभा को फैसले पर पहुँचाने वाले भाषण का निचोड़ एच॰ एच॰ होल्टमैन के रिकार्ड से देखिए :

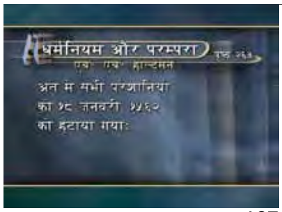

107

"अंत में सभी परेशानियों को १८ जनवरी, १५६२ को हटाया गया :

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

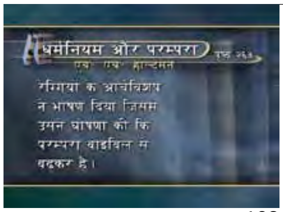

108

रेग्गियों के आर्चबिशप ने भाषण दिया जिसमें उसने घोषणा की कि परम्परा बाइबिल से बढ़कर है।"

- केनन एण्ड ट्रेडीशन, पृष्ठ २६३

इस विचार को बाईबिल प्रमाणित नहीं करती कि कलीसिया सिद्धान्त के लिये परम्परा का आधार है।

109

क्या आपको याद है कि यीशु ने अपने समय में धर्म
-अगुओं से एक प्रश्न पूछा था?

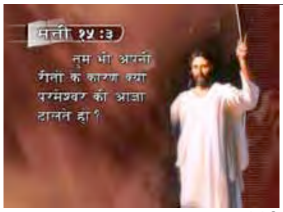

110

(मूलपाठ : मत्ती १५ : ३, ९)

उसने पूछा, "--- तुम भी अपनी रीतों के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?"

111

और उसने कहा, "और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।"

मत्ती १५ : ३,९

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

112

क्या आप वास्तविक प्रश्न को देख रहे हैं?क्या आप मसीह और बाइबिल के पीछे चलेंगे -□या लोगों की परम्परा के पीछे? यह दिनों और संख्याओं की बात नहीं है। यह है स्वामियों के विषय की बात! आपका स्वामी कौन है? यीशु मसीह? या किसी संस्था की परम्पराएँ?

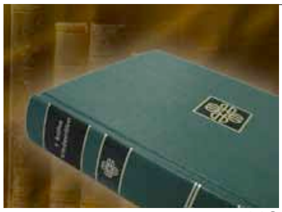
113

हमने कई विश्वस्त विद्वानों और ऐतिहासिक कार्यो को उद्धरित किया हैं। पर सब्त परिवर्तन पर कुछ आधुनिक बयान को देखिए।

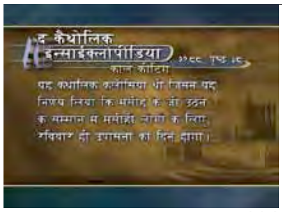

114

हम इस बयान पर ध्यान दें : "कि यह केथोलिक कलीसिया थी जिसने यह निर्णय लिया कि मसीह के जी उठने के सम्मान में। मसीही लोगों के लिए, रविवार ही उपासना का दिन होगा।"
कार्ल कीटिंग, कैथलिसिज्म और फन्डामेन्टलिज्म, १९८८, पृष्ठ ३८

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

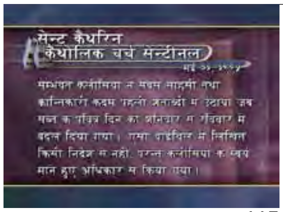

115

दूसरा बयान जो आपको रोकेगा और सोचने के लिये मजबूर करेगा, सेन्ट कैथरिन कैथोलिक कलीसिया सेन्टीनल, मई २१, १९९५, द्वारा कहा गया।"सम्भवत् कलीसिया ने सबसे साहसी तथा क्रान्तिकारी कदम पहली शताब्दी में उठाया जब सब्त के पवित्र दिन को शनिवार से रविवार में बदल दिया गया। ऐसा बाईबिल में लिखित किसी निर्देश से नहीं, परन्तु कलीसिया के स्वयं माने हुए अधिकार से किया गया,

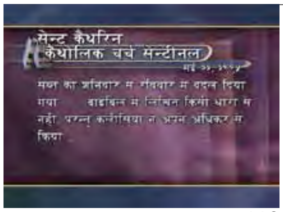

116

सब्त को शनिवार से रविवार में बदल दिया गया......बाइबिल में लिखित किसी धारा से नहीं, परन्तु कलीसिया ने अपने अधिकर से किया........

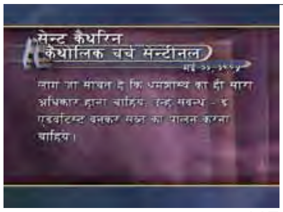

117

लोग जो सोचते हैं कि धर्मशास्त्र का ही सारा अधिकार होना चाहिये, उन्हें सेवेन्थ -डे एडवेंटिस्ट बनकर सब्त का पालन करना चाहिये।"

118

दानिय्येल ७ अध्याय की भविष्यवाणी में परमेश्वर ने दानिय्येल को प्रकट किया कि दानिय्येल ७ : २१, २५ का "छोटा सिंग" करता था....

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

119

(मूलपाठ : दानियेय्ल ७ : २५)
"समयों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा।
"कितनी सच्ची भविष्यवाणी! यहाँ पर स्पष्ट भविष्यवाणी है कि पृथ्वी की धार्मिक शक्ति परमेश्वर के नियम को बदलने की चेष्टा करेगी। दस आज्ञाओं में से केवल एक आज्ञा है जो समय की बात करती है - सब्त की आज्ञा।

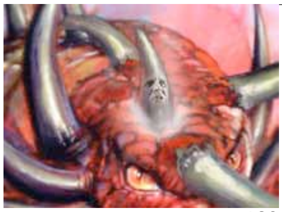
120

रोमी कलीसिया ने यह करने को सोचा, पर स्वर्ग और पृथ्वी को बनाने वाला परमेश्वर आज भी वही है। अदन में जो उसने स्थापित किया उसे नहीं बदला। वास्तव में, भविष्यवाणी सभी को, सभी ओर से सृष्टिकर्त्ता की उपासना करने के लिए पुकारती है, क्योंकि वही मनुष्यों का न्याय करेगा।

121

यह भविष्यवाणी उन लोगों को तैयारी के लिये दी गई जो यीशु के साथ मिलने के लिये तैयार पाये जायेंगे जब वह बादलों में महिमा के साथ आयेगा।

122

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : १२)
"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु मसीह पर विश्वास रखते हैं।"
प्रकाशितवाक्य १४ : १२

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

123

यीशु का विश्वास जिनके पास है, और जो हृदय से परमेश्वर को प्रेम करते हैं वे उसकी आज्ञाओं का पालन कर रहे होंगे।

124

जी हाँ, परमेश्वर हम लोगों से कहता है कि हम उसके पवित्र -दिन का पालन कर उसे सृष्टिकर्त्ता के रूप में स्मरण करें। जैसा वह कहता है वैसा करने का अर्थ है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। जब एक व्यक्ति आदमी का बनाया हुआ सब्त -पालन करता है तो वह लोगों की परम्परा को मान रहा है। जब हम परमेश्वर की इच्छा को जान जाते हैं तो उसे पालन करने में हमें खुशी होती है। परमेश्वर लोगों की परम्परा के बारे में कुछ कहना चाहता है।

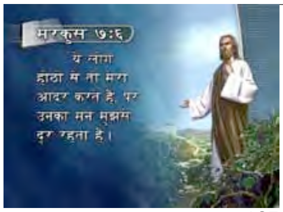

125

(मूलपाठ : मरकुस ७ : ६, ७)

".....ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझसे दूर रहता है।"

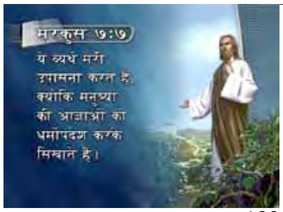

126

ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।"

मरकुस ७ : ६, ७।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

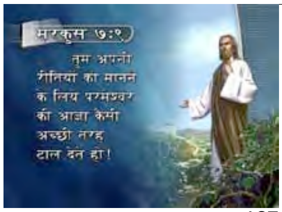

127

(मूलपाठ : मरकुस ७ : ९)

और फिर "......तुम अपनी रीतियों को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो! "

मरकुस ७ : ९

128

(मूलपाठ : मरकुस ७ : ६)

यीशु ने कहा, "...उनका मन मुझसे दूर रहता है।"

आप देखें, यह सचमुच मन का मामला है।

यह तो प्रेम की बात है।

129

(मूलपाठ : १ यूहन्ना ५ : ३)

बाइबिल कहती है, "परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं।"

१ यूहन्ना ५ : ३

130

एक दिन यीशु जब उपदेश दे रहे थे तो उन्होंने अपने सुनने वालों से कहा कि सभी स्वर्ग नहीं जा रहे हैं। उन्होंने कहा एक वृक्ष को उसके फल से जान सकते हो, कि वह अच्छा या बुरा है।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

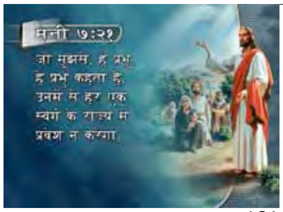

131

(मूलपाठ : मत्ती ७ : २१)

तब उसने कहा, "जो मुझसे, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा,

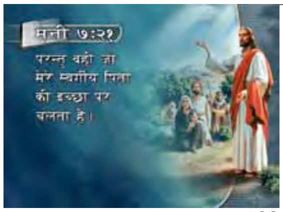

132

परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।"

मत्ती ७ : २१

133

यह स्पष्ट है। उनके जीवन के फल को देख कर परमेश्वर जानता है कि उसके अपने कौन हैं। वे नहीं जो कहते हैं वे परमेश्वर के हैं, परन्तु वे जो उसके कहे को करते हैं। ऐसे लोगों का परमेश्वर के राज्य में स्वागत किया जायेगा।

134

यदि आप उससे प्रेम करते हैं, तो आप उसे अपनी जिन्दगी को चलाने देंगे जिससे उसकी इच्छा पूरी कर सकें। जब हम सब्त पालन करते हैं तब हमलोग केवल परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मानते, पर अपने जीवन में आशीष के भागीदार बन जाते हैं।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

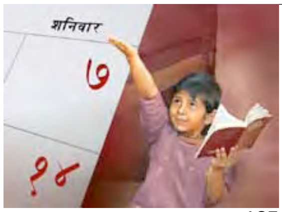

135

जब हम प्रत्येक सप्ताह उस विशेष दिन को बिताते हैं, तो हम अपने सृष्टिकर्त्ता को स्मरण करते हैं और, उसके पास पहुँचते हैं, तो हम लोग उसे और अधिक और अच्छी तरह जान पाते हैं। हमारा जीवन आज कल अधिक व्यस्त है। प्रायः सभी जल्दी में है। कितना अधिक काम करना है - और ये सब करने के लिये बहुत कम समय रह जाता है!

136

इन सबके बीच में जहाँ हड़बड़ी और तनाव और जल्दबाजी है, परमेश्वर हमें बुलाता है कि सप्ताह के एक दिन आराम करें। वह हमें निमंत्रण देता है कि एक दिन उसके साथ बितायें, उसकी उपासना करें उससे बातें करें, और बाईबिल द्वारा उसके वचनों को सुनें। क्या ही अच्छा मौका है - सप्ताह का एक दिन उसके साथ बितायें, उसके बारे में सोचे और उससे बातचीत करें ।

१२ - कल्पित कथा से लाखों ठगे गए

137

मित्रों, मैं बात साफ कर देना चाहता हूँ। एक तरफ हमारे पास सच्चाई है, दूसरी तरफ परम्परा। एक तरफ हमारे पास बाइबिल है तो दूसरी तरफ लोगों की शिक्षा। एक तरफ हमारे पास परमेश्वर की आज्ञा है तो दूसरी तरफ लोगों का सिद्धान्त। एक तरफ हमारे पास सब्त है तो दूसरी तरफ रविवार। दिन की बात नहीं है -स्वामियों की बात है। यह परमेश्वर की आज्ञा पालन की बात नहीं है- यह यीशु के पीछे चलने की बात है। क्या आप लोगों की बनाई परम्परा के बदले परमेश्वर की सच्चाई पर चलना चाहते हैं? जब हम प्रार्थना करते हैं आप प्रभु यीशु को पूर्णरूप से अनुसरण करने का अपना निर्णय सुनायें।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

1

स्वर्ग, नरक, या कुछ नहीं?

2

१९५६ में बेल्जियन कांगो नागरिक - विद्रोह की जकड़ में था। डॉ पॉल कार्लसन का अस्पताल के राजद्रोही सेना के कब्जे में आ गया। अस्पताल में बहुत -से कर्मचारी मार डाले गए। दुर्भाग्य से डॉ कार्लसन उनके बीच थे। उनका अर्थरहित कत्ल करने के बाद जब उनका शरीर मिला, तब उनकी जेकट की जेब में नया -नियम मिला। उसके पृष्ठों में डॉक्टर ने दिनाँक लिखा था। उनको गोली मारने से पहले का वह दिन था, और उन्हों ने कलम से केवल एक शब्द लिखा था, 'शान्ति' । अत्याधिक दूर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में शान्ति। मृत्यु के समय शान्ति। डॉ पॉल कार्लसन को ऐसी शान्ति किसने दी?

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

3

जब हम मृत्यु का सामना करते हैं तो क्या इसी प्रकार की अविश्वसनीय शान्ति हमारे लिए संभव है? जब मृत्यु आती है तो हमें बिखरने से कौन बचा सकता है? मृत्यु के संबंध में बहुत -से प्रश्न ऐसे हैं जिनका उत्तर नहीं है। जब एक व्यक्ति मरता है तो वास्तव में क्या होता है? क्या यह स्वर्ग है? या नरक? या कुछ भी नहीं? आप जानते है कि मौलिक शरीर का क्या होता है, परन्तु वह व्यक्ति कहाँ गया जो इसमें रहता था? जब लोग मरते हैं, तो क्या वे पूर्णरूप से जीवित नहीं रहते या क्या वे कहीं और रहते हैं?

4

मृत्यु का दर्द इतना झुलसा देने वाला होता है कि निराश होकर हम यह विश्वास करना चाहते हैं कि कोई ऐसा रास्ता है कि जिन्हें हम प्यार करते हैं वे वास्तव में नहीं गए हैं -- और फिर यदि हम खोज करते हैं, तो हम अब भी उनसे बात करने का एक रास्ता प्राप्त कर लेते हैं।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

5

कुछ प्रभावी आवाजें सुनी गई हैं जो हमें यह आश्वासन दिलाती हैं कि यह सब सच और संभव है। उदाहरण के लिए आत्मिक माध्यम जेम्स वैन प्राघ पर विचार कीजिए। उसकी पुस्तक स्वर्ग से बातें एक माध्यम का मृत्यु के बाद जीवन का संदेश है। लैरी किंग के कार्यकर्म में सम्मिलित होने के बाद यह उस पुस्तक बिक्री सूची में सर्वप्रथम आई।

6

मृत्यु के विषय में वास्तविक सच्चाई को जानकर हमारे हृदय रो उठते हैं और हमारे हृदय को शान्ति मिलती है जब हम कब्र का सामना करते हैं।

7

(दृश्य)

क्या इस विषय पर परमेश्वर के पास कहने के लिए कुछ है? जब हम मरते हैं तो क्या इस विषय में बाइबिल के पास कहने के लिए कुछ है? एक प्रभावशाली उत्तर है, हाँ !

8

और यह उत्तर यीशु मसीह के पुनरुत्थान में मिलता है।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

9

बाइबिल कहती है, क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बाद, उसके मित्रों ने उसके शरीर को "यूसुफ की नई कब्र" में रखा।

10

रोमी शासक पिलातुस ने एक पहरेदार भेजा, और उसके सैनिकों ने कब्र के मुँह को एक पत्थर से बन्द कर दिया और उस पर रोमी मुहर लगा दी। अब उसका शरीर कोई नहीं ले जा सकता था। कोई नहीं, केवल मसीह का पिता ही।

11

रविवार की भोर को जब अंधेरा ही था, तब एक प्रकाशमान स्वर्गदूत स्वर्ग से उतरा, और उसने कब्र के दरवाजे पर रखे पत्थर को हटा कर मसीह को बाहर आने के लिए पुकारा।

12

जी उठा उद्धारकर्त्ता मृत्यु के ऊपर पूर्ण विजय
प्राप्त करके बाहर आया - एक शक्तिशाली विजेता के रूप में।
उस स्वर्गदूत के तेज से सैनिक मृतकों के सदृश्य हो गए।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

13

मसीह के पुनरुत्थान की कहानी प्राचीन मसीही कलीसिया को खींचने वाली शक्ति थी - क्योंकि रोमी मृत्यु के बाद जीवन की कोई आशा नहीं करते थे। वे केवल यह बात जानते थे कि कब्र एक गहरा अंधेरा गड्ढा है जिसके बाहर कोई भी फिर से जीवित आने की आशा नहीं कर सकता था। अब मसीहियों के पास सच्ची आशा का एक संदेश था। कब्र अंतिम अंत नहीं था। जो "मसीह में" मरते हैं वे एक दिन फिर से जीवित होंगे।

14

रोम शहर के नीचे बनाई गई कब्रें उस प्राचीन समय में मूर्तिपूजक की मृत्यु और मसीहियों की मृत्यु के बीच के अन्तर को दर्शाती है। जिन मूर्तिपूजक लोगों की आशारहित मृत्यु हो गई उनकी कब्रों के लेखों पर ध्यान दीजिए।

15

ये दुःख भरे शब्द बार-बार लिखे गए: "सदा के लिए अंतिम नमस्कार" - या अनन्तकाल के लिए अंतिम नमस्कार।" फिर मसीहियों की कब्रों पर लिखे गए लेखों पर ध्यान दीजिए :

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

16

"नमस्कार जब तक हम फिर से न मिलें " या "सुबह होने तक शुभरात्रि"। उनकी कब्रों पर आशा और साहस के साथ लिखा गया है और उनकी कब्रें पुनरुत्थान के दिन की प्रतीक्षा कर रही हैं।

17

(मूलपाठ : प्रकाशित वाक्य १ : १८)

"मैं मर गया था, और देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ। आमीन।

18

और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।"

प्रकाशित वाक्य १ : १८

जब तक एक मसीही नहीं जानता कि परमेश्वर के पास उसके लिए क्या है तब तक मृत्यु के बाद भविष्य की कोई वास्तविक आशा नहीं।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

19

१ कुरिन्थियों का पन्द्रहवाँ अध्याय पौलुस का मृत्यु और पुनरुत्थान पर आशा भरा लेख है। वह बड़े विश्वास से कहता है कि पुनरुत्थान के बिना मसीही का कोई भविष्य नहीं है।"

प्रकाशित वाक्य १ : १८

जब तक एक मसीही नहीं जानता कि परमेश्वर के पास उसके लिए क्या है तब तक मृत्यु के बाद भविष्य की कोई वास्तविक आशा नहीं थी का मृत्यु और पुनरुत्थान पर एक विशेष लेख है। पौलुस का मृत्यु और पुनरुत्थान पर एक विशेष लेख हैं। वह स्पष्ट रूप से बताता है कि यदि पुनरुत्थान नहीं है, तो मसीहियों के लिए कोई भविष्य नहीं है।

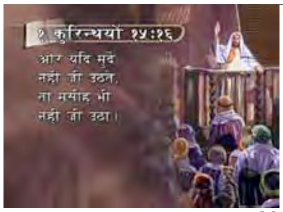

20

(मूलपाठ : १ कुरिन्थियों १५ : १६ -१८)

ध्यान दीजिए उसने क्या कहाः "यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा,

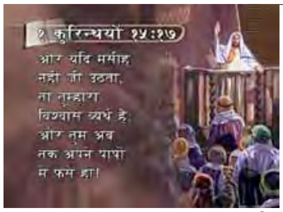

21

और यदि मसीह नहीं जी उठता, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो!""

22

वरन जो मसीह में सो गए है, वे भी नाश हुए।"

१ कुरिन्थियों १५ : १६ -१८

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

23

परन्तु यह समझने के लिए कि उसने क्यों कहा है जो उसने किया हमें यह समझने की आवश्यकता है कि बाइबिल मृत्यु के विषय में क्या सिखाती है।

24

जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, तो वह कभी नहीं चाहता था कि कोई भी कभी मरे।

परमेश्वर ने आदम को बनाने के बाद देखा कि उसने क्या बनाया है और बाइबिल हमें उत्पत्ति १:३२ में बताती है कि सबकुछ बहुत अच्छा था!

पृथ्वी ग्रह पर आदम और हव्वा के गिरने (पाप करने) से पूर्व मृत्यु, बिमारी या दुःख नहीं था। फिर भी आप स्मरण करेंगे कि परमेश्वर ने मनुष्य जाति से क्या कहा:

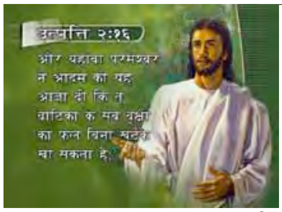

25

(मूलपाठ : उत्पत्ति २ : १६, १७)

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है;

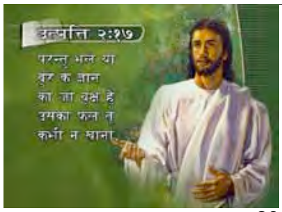

26

परन्तु भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू कभी न खाना,

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

27

क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

उत्पत्ति २ : १६ ,१७

28

कहानी का अगला अध्याय इतना आनन्ददायक नहीं है। यह दुःखदायी कहानी उत्पत्ति की पुस्तक अध्याय तीन में हमारे लिए अभिलेखित की गई है, अध्याय ३ ।

29

शैतान सर्प को माध्यम बनाकर हव्वा के समक्ष उपस्थित हुआ और परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने और मना किए गए पेड़ का फल खाने के लिए उसे बहकाया। जब हव्वा ने यह समझाया कि परमेश्वर ने उसे कहा था कि इस वृक्ष का फल न खाना नहीं तो मर जाएगी।

30

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : ४)

सर्प ने कहा, "तुम निश्चय न मरोगे।"

(पद ४)

यह मृत्यु के विषय में प्रथम झूठ था जो बाइबिल में अभिलेखित किया गया था!

हव्वा ने शैतान पर विश्वास करने को चुना और अच्छे तथा बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खा लिया।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

31

परमेश्वर आदम और हव्वा को जीवन के वृक्ष से अलग करने के लिए विवश हो गया था क्योंकि :

32

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : २२,२३)

"---- मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है।

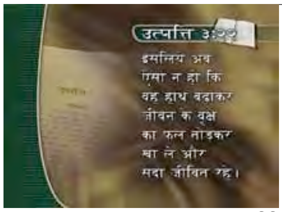

33

इसलिये अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे।

34

तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की वाटिका में से निकाल दिया

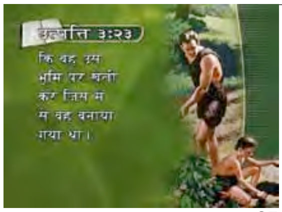

35

कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था।"

उत्पत्ति ३ : २२ ,२३

36

मनुष्य जाति के ऊपर मृत्यु आई क्योंकि वह परमेश्वर से अलग किया गया, जीवन के स्त्रोत से और जीवन के वृक्ष से।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

37

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १८, १९)

इस समय परमेश्वर ने आदम से कहा : "----तू खेत की उपज खाएगा।

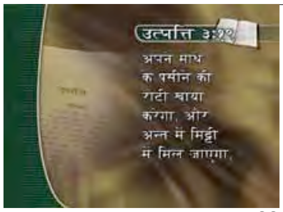

38

"अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा,

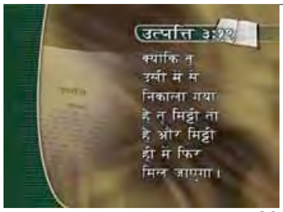

39

क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।" उत्पत्ति ३ : १८, १९

40

यहाँ यह समझने की आवश्यकता है कि मृत्यु क्या है और हमें अन्त तक उससे अलग होने के लिए तथा उस से बचाने के लिए परमेश्वर क्या करना चाहता है।

41

बाइबिल कहती है कि मनुष्य मिट्टी में लौट जाएगा जिस में से वह निकाला गया है। ध्यान दीजिए परमेश्वर ने आदम को कैसे बनाया था :

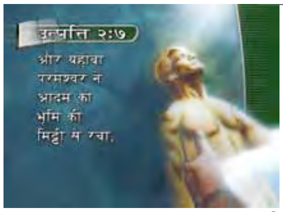

42

(मूलपाठ : उत्पत्ति २ : ७)

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा,

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

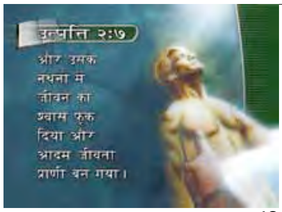

43

और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया और आदम जीवता प्राणी बन गया।"

उत्पत्ति २ : ७

44

परमेश्वर ने पृथ्वी के पदार्थों को लिया और मनुष्य का शरीर बनाया। जब उसने मनुष्य के शरीर को आकार देना समाप्त कर दिया, तब उसके पास केवल एक शरीर था उसे जीवित प्राणी बनाने के लिए उसे कुछ और चाहिए था। बाइबिल यहाँ कहती है कि परमेश्वर ने आदम के नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया।

45

(दृश्य)

हम इसे बनाने का समीकरण इस प्रकार करते हैं:

शरीर

+

श्वास

= एक जीवित आत्मा।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

46

(दृश्य)

या मृत्यु के लिए हम लिख सकते हैं

जीवित व्यक्ति

-श्वास

=मृतक शरीर।

47

(मूलपाठ : सभोपदेशक १२ : ७)

यही बात है जिसे बुद्धिमान मनुष्य ने सभोपदेशक में कहा था: "तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी।"

सभोपदेशक १२ : ७

48

अतिआवश्यक रूप से यही बात बाइबिल की पुस्तकों में से लिखी जानी जाने वाढ़ली प्रथम पुस्तक अय्यूब में है जो मृत्यु के विषय में यह कहती है।

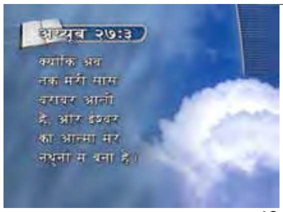

49

(मूलपाठ : अय्यूब २७ : ३)

"क्योंकि अब तक मेरी सांस बराबर आती है, और ईश्वर का आत्मा मेरे नथुनों में बना है।"

अय्यूब २७ : ३

ध्यान दीजिए बाइबिल यह कहती है, "क्योंकि अब तक ईश्वर का आत्मा मेरे नथुनों में बना है।"

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

50

यही वह है जिसे परमेश्वर ने मनुष्य के नथुनों में डाला था जब उसने उसे बनाया था।

51

(मूलपाठ : भजनसंहिता १४६ : ३,४)
अन्य मूलपाठ पर दृष्टि डालें : "तुम प्रधानो पर भरोसा न रखना, किसी आदमी पर, क्योंकि उस में उद्धार करने की भी शक्ति नहीं।"

52

उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा; उसी दिन उसकी सब कल्पनाएं नाश हो जाएंगी।"
भजनसंहिता १४६ : ३, ४

53

दाऊद राजा मृत्यु के विषय में सच्चाई बताता है कि जब श्वास शरीर को छोड़ देती है और तब वह पृथ्वी को शरीर लौटा देती है। मनुष्य मर जाता है।

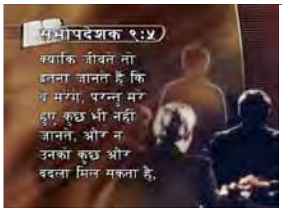

54

(मूलपाठ : सभोपदेशक ९ : ५,६)
यह बात जो सुलेमान ने कही उससे मिलती है : "क्योंकि जीवते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ और बदला मिल सकता है,

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

55

क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है।

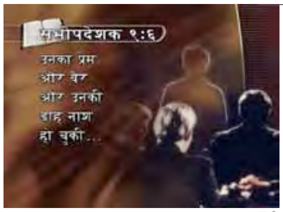

56

"उनका प्रेम और बैर और उनकी डाह नाश हो चुकी---"

सभोपदेशक ९:५ ,६

57

(दृश्य)

वह कुछ नहीं जानता!

नहीं!

नहीं कुछ नहीं!

भजनसंहिता के लेखक ने जो लिखा है उस से यह बात मिलती है कि मृतक स्वर्ग में नहीं है और परमेश्वर की प्रशंसा नहीं कर रहे हैं। तब, आप पूछ सकते हैं, वे कहाँ हैं?

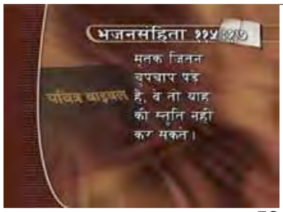

58

(मूलपाठ : भजनसंहिता ११५ : १७)

दाऊद इसे स्पष्ट करता है: "मृतक जितने चुपचाप पड़े हैं, वे तो याह की स्तुति नहीं कर सकते।"

भजनसंहिता ११५ : १७

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

59

(मूलपाठ : अय्यूब १४ : १०, १२, १३)

"परन्तु पुरुष मर जाता, और पड़ा रहता है; जब उसका प्राण छूट गया, तब वह कहाँ रहा?"

60

वैसे ही मनुष्य लेट जाता और फिर नहीं उठता; जब तक आकाश बना रहेगा,

61

तब तक वह न जागेगा, और न उसकी नींद टूटेगी।

62

भला होता कि तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता, और जब तक तेरा कोप ठंडा न हो जाए तब तक मुझे छिपाए रखता,

63

और मेरे लिए समय नियुक्त करके फिर मेरी सुधि लेता!"

अय्यूब १४ : १०, १२, १३

64

हम परमेश्वर के वचन में यह पाते हैं कि मनुष्य मरता है और कब्र में सो जाता है। और पुनरुत्थान के दिन तक वह नहीं उठता:

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

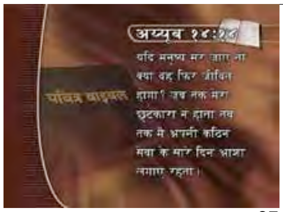

65

(मूलपाठ : अय्यूब १४ : १४, १५)

"यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा? जब तक मेरा छुटकारा न होता तब तक मैं अपनी कठिन सेवा के सारे दिन आशा लगाए रहता।

66

तू मुझे बुलाता और मैं बोलता ..."

अय्यूब १४ : १४, १५

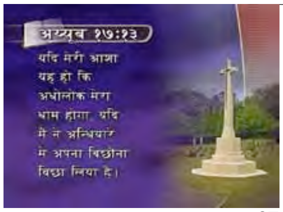

67

(मूलपाठ : अय्यूब १७ : १३)

ध्यान दीजिए अय्यूब हम से जो कहता है: "यदि मेरी आशा यह हो कि अधोलोक मेरा धाम होगा, यदि मैं ने अन्धियारे में अपना बिछौना बिछा लिया है।"

अय्यूब १७ : १३

68

यह भी ध्यान दीजिए कि अय्यूब ने मृत्यु के विषय में बात करते समय नींद शब्द का प्रयोग किया है।

और यही बात बाइबिल के दूसरे लेखकों ने भी की है।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

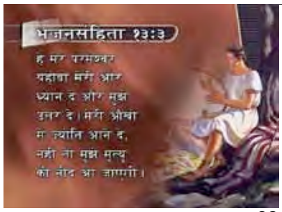

69

(मूलपाठ भजनसंहिता १३ : ३)

"हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर दे। मेरी आँखो में ज्योति आने दे, नहीं तो मुझे मृत्यु की नींद आ जाएगी।"

भजनसंहिता १३:३

दाऊद मृत्यु की नींद सोने के लिए डरता था – वह जीना चाहता था!

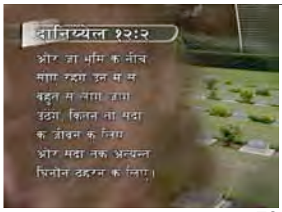

70

(मूलपाठ : दानिय्येल १२ : २)

दानिय्येल उन मृतकों के विषय में बताता है जो जी उठेंगे : "और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिए और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिए।"

दानिय्येल १२ : २

71

परमेश्वर के वचन में सबसे दिलासा देने वाली सच्चाई यह है कि जब एक व्यक्ति मर जाता है तो वह स्त्री हो या पुरूष चुपचाप आराम करता है, और जीवन की समस्यायें उसे व्याकुल नहीं करतीं जब तक जीवन देने वाला उसे न पुकारे। क्या यह कोई आश्चर्य की बात है बाईबिल मृत्यु का संबंध नींद से बताती है?

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

72

भविष्यवक्ता नातान ने दाऊद राजा को बताया कि जब उसकी मृत्यु का समय आएगा तो उसके साथ क्या होगा।

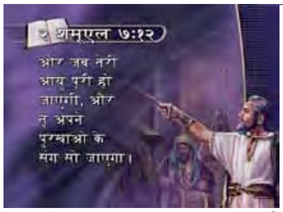

73

(मूलपाठः २ शमूएल ७:१२)
"और जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा।"
२ शमूएल ७:१२

74

यीशु ने स्वयं मृत्यु को नींद कहा।
उन्होंने उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जो उन्होंने अपने प्रिय मित्र लाजर की मृत्यु के लिये किया था। आइए, दृष्टि डालते हैं कि किस प्रकार यीशु और उसके घनिष्ट साथियों ने मृत्यु के विषय में कहा। बैतनिय्याह में लाजर, मरियम और मार्था का घर था जहाँ यीशु प्रायः उनसे मिलने जाते थे।

75

(मूलपाठ : यूहन्ना ११ : ५)
बाइबिल कहती है, "और यीशु मार्था और उसकी बहन और लाजर से प्रेम करता था।"
यूहन्ना ११ : ५

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

76

एक दिन जब यीशु और उसके चेले यरदन नदी के पास थे, तब उन्होंने बैतनिय्याह में उनके तीन साथियों से एक अति आवश्यक संदेश प्राप्त किया कि लाजर बहुत बीमार था, परन्तु यीशु जहाँ थे वहाँ दो दिन और रुक गए।

77

(मूलपाठ : यूहन्ना ११ : ११, १२, १४, १५)
तब यीशु ने कहा, "हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।"

78

चेले बहुत प्रसन्न हो गए, उन्होंने कहा, "हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा!"

79

"तब यीशु ने उन से साफ कह दिया, कि लाजर मर गया है।

80

और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ न था जिससे तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।"

यूहन्ना ११ : ११ -१५

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

81

वे बैतनिय्याह के रास्ते गए जहाँ वह परिवार रहता था। जैसे ही वे उस नगर में पहुँचे, मार्था दौड़कर उनसे मिलने आई।

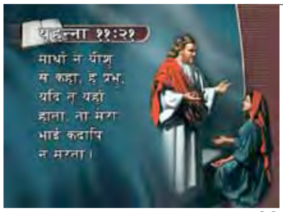

82

(मूलपाठ : यूहन्ना ११ : २१,२३, २४)

जब वह यीशु से मिली उसने कहा हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता।"

यूहन्ना ११ : २१

इसमें कोई शंका नहीं थी कि वह इस विषय में सही थी! परन्तु यीशु के पास एक योजना थी।

83

उसने कहा, "तेरा भाई जी उठेगा।"

अब मार्था के उत्तर पर ध्यान दीजिएः

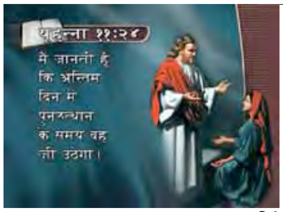

84

"मैं जानती हूँ कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।"

यूहन्ना ११ : २३ -२४

मार्था ने यीशु को आश्वासन दिया कि वह यह आशा करती थी कि दुनिया के अंत में पुनरुत्थान के समय वह लाजर को देखेगी।

85

यीशु उस घटना की एक अनोखी झलक दिखाने वाले थे।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

86

(मूलपाठ : यूहन्ना ११ : २५)

तब यीशु ने साफ कह दिया : "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है यदि वह मर भी जाए, तौभी जीएगा।"

यूहन्ना ११ : २५

87

यूहन्ना हमें बताता है, जब यीशु लाजर की कब्र पर आए

88

(मूलपाठ : यूहन्ना ११ : ३५)

कि यीशु के आँसू बहने लगे!

वे अपने मित्र लाजर के लिए नहीं रो रहे थे। वे जानते थे कि वे उसे जीवित करने वाले थे।

89

वे उसके परिवार और मित्रों के दु:ख के कारण रो रहे थे और उन सब के लिए जो भविष्य में दु:खी होंगे जब वे अपने प्रिय जनों को खोएंगे।

90

यीशु ने कहा कि उस बन्द प्रवेश द्वार के पत्थर को

91

हटाया जाए।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

92

(मूलपाठः यूहन्ना ११:३९)

यीशु के निवेदन पर चिन्तित होते हुए मार्था ने प्रश्न किया: "... परन्तु, हे प्रभु...उस में से अब तो दुर्गन्ध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए हैं।"

यूहन्ना ११:३९

हाँ , यीशु ने बैतनिय्याह जाने में चार दिनों की देर की। यह देरी लाजरस के सचमुच न मरने की शंका को दूर करने के लिये थी।

93

परन्तु पत्थर लुड़काकर दूर कर दिया गया था, और यीशु ने जोर से पुकार कर कहा, "लाजर बाहर आ! "

94

किसी ने कहा है कि यह अच्छा हुआ कि यीशु ने विशेष रूप से केवल लाजर से ही कहा, नहीं तो पृथ्वी की प्रत्येक कब्र खुल गई होती!

95

बैतनिय्याह में उन तीन मित्रों के लिए वह दिन कितनी प्रसन्नता का रहा होगा!

मित्रों, बैतनिय्याह में वह एक उल्लास भरा दिन था,

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

96

परन्तु यह उस महिमा और उल्लास की केवल एक छोटी-सी झलकी थी जो उस दिन अनुभव होगा जब यीशु आएंगे और उनके दूसरे मित्रों की कब्रें खुल जाएंगी -- और वे उससे हवा में मिलने के लिए जी उठेंगे!

यह एक दिलासा देनेवाला संदेश है जो पौलुस प्रेरित ने प्राचीन मसीहियों के साथ बांटा था।

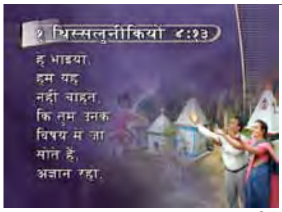

97

(मूलपाठः १ थिस्सलुनीकियों ४:१३, १६)

"हे भाइयों, हम यह नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो,

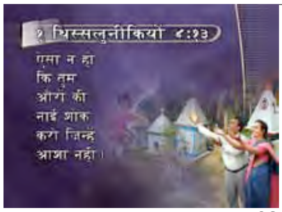

98

ऐसा न हो कि तुम औरों की नाई शोक करो जिन्हें आशा नहीं!"

१ थिस्सलुनीकियों ४:१३

पौलुस हमसे कहता है कि यीशु क्या करेंगे जब वे दूसरी बार आएंगेः

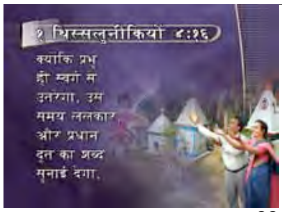

99

"क्योंकि प्रभु ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा,

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

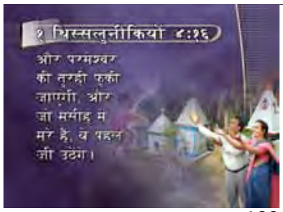
100

और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।"
१ थिस्सलुनीकियों ४:१६

101

पौलुस उन घटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन करता है जो यीशु के आने पर होंगी :

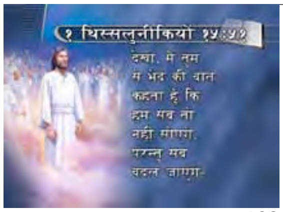
102

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १५:५१-५५)
"देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे-

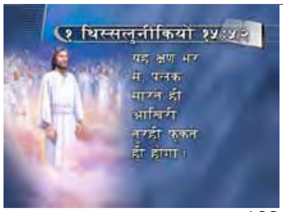
103

यह क्षण भर में, पलक मारते ही आखिरी तुरही फूंकते ही होगा।

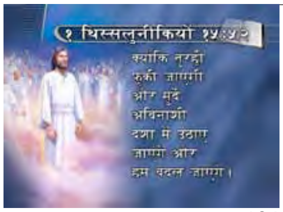
104

क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे और हम बदल जाएंगे।"
१ कुरिन्थियों १५:५१, ५२
पौलुस हमें बताता है कि हम कैसे बदल जाएंगे।

105

"क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले और मरनहार देह अमरता को पहिन ले।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

106

और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा,

107

तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।

108

"हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही?"

१ कुरिन्थियों १५:५३-५५

109

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था कि सब कब्र से जी उठेंगे।

110

(मूलपाठः यूहन्ना ५:२८,२९)

"इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे

111

जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे,

112

और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे।"

यूहन्ना ५:२८, २९

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

113

एक क्षण के लिए सोचिए: यदि लोग मृत्यु के बाद स्वर्ग या नरक में जाते तो फिर धर्मी और अधर्मी को पुनरुत्थान की क्या आवश्यकता थी?

यीशु अपने दूसरी बार आने के बारे ऐसा क्यों कहते हैं?

114

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २२ : १२)

"और देखो, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ, और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।"

प्रकाशितवाक्य २२:१२

115

यह कितनी सरल बात है!

जब लोग मरते हैं, तो वे सो रहे हैं। जब तक यीशु नहीं आ जाते वे अपने कामों और परेशानियों से आराम कर रहे हैं।

116

यीशू क्यों आ रहे हैं? वह पुनरुत्थान कराने और उन सब लोगों से मिलने आ रहे हैं जिन्होंने उनके बलिदान को स्वीकार किया है। वे अपने विश्वासी अनुयायियों का स्वागत करने आ रहे हैं। इस सुसमाचार को सुनिए!

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

117

(मूलपाठ : १ थिस्सलुनीकियों ४:१७)

"तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें।

118

और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।"

१ थिस्सलुनीकियों ४:१७

119

हमने देखा कि बचाए गए सभी लोगों का शरीर बिल्कुल यीशु की तरह प्रतापी हो जाएगा, और वे अमरता (अनन्त जीवन) को प्राप्त करेंगे ताकि वे प्रभु के साथ सदा रहें।

120

कोई भी पूछ सकता है,"कि क्रूस पर उस डाकू का क्या होगा?"

121

आइए देखें कि उस डाकू के विषय में जो प्रतिज्ञा यीशु ने उस से की थी उसके विषय में वास्तव में बाइबिल हमें क्या सिखाती है।

यीशु दो डाकुओं के बीच क्रूस पर लटकाये गये थे। ताकि जो उसे क्रूस पर लटका रहे थे वे उसकी पहचान अपराधियों से कर सकें।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

122

मरकुस की पुस्तक कहती है कि पहले दोनों डाकुओं ने यीशु पर व्यंग किया और कहा कि यदि सचमुच उसके पास शक्ति है तो वह अपने आप को और हमें छुड़ा ले।

तब उसमें से एक डाकू ने प्रायश्चित किया और उद्धार के लिए पुकारा।

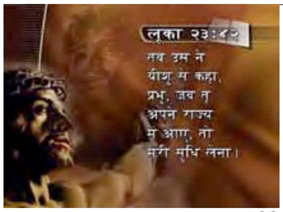

123

(मूलपाठः लूका २३:४२,४३)

"तब उस ने यीशु से कहा, प्रभु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।

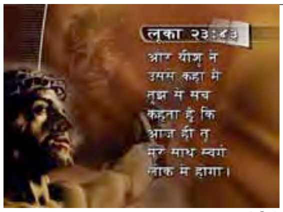

124

और यीशु ने उससे कहा मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्ग लोक में होगा।"

लूका २३:४२,४३

125

आइए फिर से उस प्रतिज्ञा को देखें।

हाँ, मित्र!

आज इसी समय आप भी यह आश्वासन प्राप्त कर सकते हैं।

मसीह में आश्वासन है।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

126

यद्यपि मसीह उस दिन मरे होगें, और रविवार की सुबह तक कब्र में लेटे होगें, पर उन्होंने कब्र से हमें बचाने की जिम्मेदारी ली।

127

(मूलपाठः लूका २३:४३)

(दृश्य)

मरने वाले डाकू के लिए क्या ही आश्चर्यजनक आश्वासन था! जब उसके लिए कोई आशा नहीं थी और जबकि उसकी आत्मा चारों ओर के अंधकार से भयभीत हो रही थी तब यीशु ने उसे आशा की किरण दिखाई। यीशु ने डाकू से उसी घड़ी प्रतिज्ञा की, "मैं आज कह रहा हूँ (या इसी समय मैं तुझसे कह रहा हूँ) "तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

128

कुछ लोग सोचते हैं कि यीशु उस डाकू से प्रतिज्ञा कर रहे थे कि वह तुरन्त स्वर्ग में जाएगा। परन्तु जब यीशु की मृत्यु हुई तब वह स्वयं भी तुरन्त स्वर्ग को नहीं गये।

129

बाइबिल हमें बताती है वे शुक्रवार को मरे और उन्हें उधार ली गई कब्र में रखा गया।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

130

रविवार की सुबह, यीशु मरियम को दिखाई दिये और वह उनकी उपासना करना चाहती थी, परन्तु उन्होंने उसे मना किया क्योंकि वह अब तक ऊपर स्वर्ग में नहीं गये थे। उन्होंने जो कहा उसे सुनिए:

131

(मूलपाठ : यूहन्ना २० : १७)

"... मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया ..."

यह रविवार की सुबह थी और उन्होंने कहा कि वे अब तक अपने पिता के पास ऊपर नहीं गये!

यूहन्ना २०:१७

यीशु शुक्रवार को स्वर्ग में नहीं हो सकते थे!

132

बाइबिल हमें बताती है कि वह डाकू भी शुक्रवार को स्वर्ग में नहीं था।

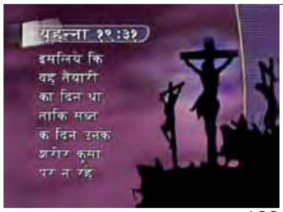

133

(मूलपाठ : यूहन्ना १९:३१-३३)

"इसलिये कि वह तैयारी का दिन था, ताकि सब्त के दिन उनके शरीर क्रूसों पर न रहें

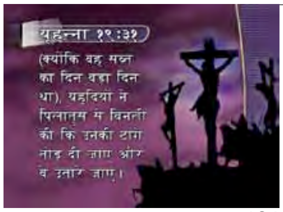

134

(क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था), यहूदियों ने पिलातुस से विनती की कि उनकी टांगे तोड़ दी जाएं और वे उतारे जाएं।"

यूहन्ना १९ : ३१

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

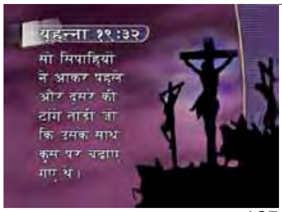

135

सो सिपाहियों ने आकर पहले और दूसरे की टांगे तोड़ी जो कि उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे।

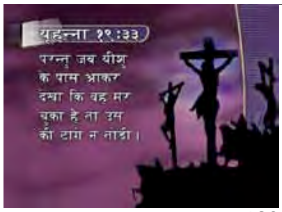

136

परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है तो उस की टांगे न तोड़ी।"

यूहन्ना १९:३१-३३

137

यहाँ हम देखते हैं कि उन्होंने उन दो डाकुओं की टांगे तोड़ दी ताकि वे भाग न सकें,

138

परन्तु उन्होंने यीशु की टांगे नहीं तोड़ी क्योंकि वह शुक्रवार को ही मर चुका था।

इसलिए न तो मसीह न ही डाकू शुक्रवार के दिन स्वर्ग में थे।

139

यीशु ने हमें स्वतंत्र करने और हम में सुधार लाने के लिए मूल्य चुकाया।

140

सबसे महान उपहार जो परमेश्वर मनुष्य जाति को दे सकता है वह है अनन्त जीवन, मृत्यु के ऊपर जय!

इसके बिना सभी उपहार व्यर्थ हैं!

और यह उपहार माँगने के साथ ही आपका है!

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

141

आप का यह निर्णय आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय होगाः आपका अनन्त भविष्य इस निर्णय पर निर्भर करता है!

142

अनन्त जीवन का अमूल्य उपहार उन सब के लिए है जो मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करते हैं। और उसका मूल्य? केवल एक समर्पित हृदय। एक साफ और परिवर्तित हृदय। क्रूस पर एक घमण्ड़ी और स्वार्थी हृदय नया बन जाता है। इससे अधिक वह क्या कर सकता था।

143

आप चाहें तो अनन्त जीवन आप का हो सकता है।

144

क्योंकि यीशु जीवित हैं इसलिये हमारे पास महिमायुक्त आशा है -- ऐसी आशा जो मृत्यु के बाद जीवन की है!

145

एक शाम अमरीका के पूर्वी भाग के एक छोटे से शहर में धर्म सभाएं रखी गई। उन सभाओं में एक जवान पुरुष अत्याधिक निराश होकर घूम रहा था।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

146

वह सभागृह एक कब्रिस्थान के समीप था। सभागृह में प्रवेश करने से पहले वह जवान कब्रिस्थान से धीरे धीरे चलता हुआ आया। जीवन के अर्थ के विषय में उसके मन में कई प्रश्न थे। वह क्षमा प्राप्त करने और मन की शान्ति के लिए इच्छुक था। जब वह मृत्यु के विषय में सोच रहा था तो वह किसी और चीज की अपेक्षा अनन्त जीवन का आश्वासन चाहता था।

147

उस शाम बाईबिल के अध्ययन का विषय था: "मृत्यु के बाद जीवन की आशा।" वह जवान दर्शकों में बैठकर एकाग्रचित होकर सुनने लगा। उसी रात आशा की नई किरण उसके हृदय में जाग उठी। उसने अपना जीवन मसीह को सौंप दिया। उसी रात उसने मसीह को ग्रहण कर लिया जो उसके लिये मरा और उसे अनन्त जीवन देने के लिए मृतकों में से जी उठा। उसी रात उसका सम्पूर्ण जीवन इस जीवित मसीह के द्वारा बदल गया। उसी रात उसकी आत्मा में शान्ति भर गई।

148

आपको भी यह शान्ति मिल सकती है -- यह आशा, अनन्त जीवन का आश्वासन, और मृत्यु के बाद जीवन की आशा। यदि आप यह आश्वासन चाहते हैं तो क्या आप इसी समय हमारे साथ प्रार्थना के लिए खड़े होना चाहेंगे?

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

1

क्या जीवित मृतकों से बातें कर सकते हैं?

2

जब लोग मर जाते हैं तो क्या वे आत्माओं के रुप में जीवितों सें मिलने आते हैं? क्या मृतकों की आत्माएं वापस आने और जीवितों से बातें करने में समर्थ हैं? मृत्यु के समय क्या केवल देह मरती है और आत्मा जीवित रहती है?

3

क्या आत्मवादी, ब्रह्मावादी, और माध्यम सही हैं जब वे कहते हैं कि वे प्रियजनों की आत्माओं से हमारा सम्पर्क करवा सकते हैं?

4

क्या मृतकों की आत्माएं जीवित लोगों में प्रवेश करके उनकी देहों, आवाज़ों, मस्तिष्कों का प्रयोग बोलने और कार्य करने के लिए कर सकती हैं?

5

इस समय हम जो बात कर रहें हैं सर्वाधिक गंभीर विषयों में से एक है जिसका हम में से किसी को भी सामना करना पड़ सकता है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

6

और यह इतनी गंभीर है कि इसे जीवन और मृत्यु का विषय कहा जा सकता है। हमारा अनन्त उद्धार दांव पर है। इसलिए हमें इसके विषय ज्ञान होना ही चाहिए।

हम पूरी निश्चियता से कैसे जान सकते हैं कि हमारा अनुभव सही और वास्तविक है या झूठा और खतरनाक?

7

इन प्रश्नों का उतर यह है कि बाइबिल में यीशु हमें सच्चाई बताते हैं!

8

यीशु हमारे मित्र हैं। वे समझते हैं कि जब हम मृत्यु की घाटी में किसी प्रिय को खो देते हैं तो हम किस स्थिति से गुजरते हैं। उन्हें हमारे दुःख से सहानुभूति है। उन्होंने हमारा दुःख देखा है। इसलिए हम यीशु की ओर मुड़ेंगे और देखेंगे कि उन्होंने मृत्यु, पुनरुत्थान, और अनन्त जीवन के विषय में क्या कहा है? जो कुछ यीशु ने कहा है, उस पर मैं विश्वास करुंगा। क्या हम और आप इस बात पर सहमत हो सकते हैं?

9

क्या आप यीशु के धन्यवादी नहीं हैं? उन्हें हमारे दुख से सहानुभूति है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

10

(मूलपाठः यूहन्ना ११:३५)

बाइबिल कहती है कि एक मित्र की मृत्यु पर "यीशु रोया।"

यूहन्ना ११:३५

वे स्वयं भी दुख की घाटी से होकर गुजरे थे।

11

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १:१७, १८)

"मत डर, मैं प्रथम और अन्तिम हूँ।

12

और जीवता हूँ मैं मर गया था, और अब देख मै युगानुयुग जीवता हूँ। आमीन।

13

और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास है।"

प्रकाशितवाक्य १:१७, १८

इससे भी अधिक यीशु जीवन दाता हैं। वे इसलिए आए कि हम अब बहुतायत से नया जीवन पायें।

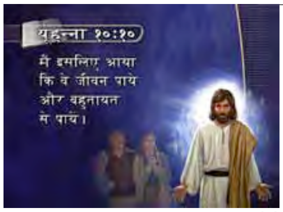

14

(मूलपाठः यूहन्ना १०:१०)

"मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाये और बहुतायत से पायें।"

यूहन्ना १०:१०

सदैव के लिए वह एक पूर्णतया नए जीवन का वचन देता है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

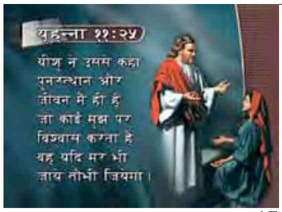

15

(मूलपाठः यूहन्ना ११:२५)

"यीशु ने उससे कहा पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाये तौभी जीएगा।"

यूहन्ना ११:२५

यीशु जीवन के विशेषज्ञ हैं। वे इसके विषय में विश्व के किसी भी व्यक्ति से अधिक जानते हैं क्योंकि उन्होंने ही इस ग्रह पर जीवन का सृजन किया।

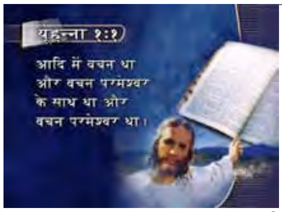

16

(मूलपाठः यूहन्ना १:१,३)

"आदि में वचन था और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था।

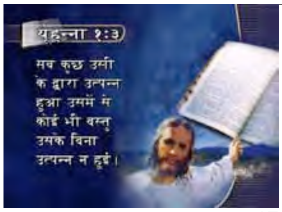

17

"सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।" यूहन्ना १:१,३

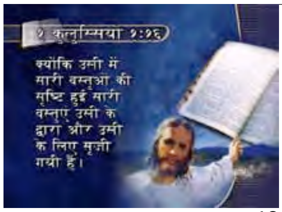

18

(मूलपाठः १ कुलुस्सियों १:१६)

"क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गयी हैं।"

१ कुलुस्सियों १:१६

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

19

इस श्रृंखला में हमने जो कुछ सीखा है उसे इस समय दोहराना महत्वपूर्ण है। यीशु ने स्पष्ट किया कि मृत्यु न तो जीवन है और न ही जीवन की किसी दूसरे रूप में निरन्तरता है।

20

(मूलपाठः यूहन्ना ११:११)

अपने मित्र के विषय जो मर गया था यीशु ने कहा, "हमारा मित्र लाजर सो गया है ..."

यूहन्ना ११:११

वह उस मनुष्य के विषय कह रहे थे जो मर चुका था। देखिए यीशु मृत्यु का वर्णन कैसे करते हैंः "नींद"। यह बाइबिल में मृत्यु की निकटतम उपमा है।

21

(मूलपाठः यूहन्ना ११:१४)

कहीं उसके चेले गलत न समझें यीशु ने साफ कह दिया कि "लाजर मर गया है।"

यूहन्ना ११:१४

लाजर कहीं और किसी दूसरे रूप में जीवित नहीं था।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

22

वह मर चुका था और उसकी देह कब्र में थी। यीशु ने और आगे साफ -साफ सिखाया कि मृत्यु के बाद पुनरुत्थान से पहले कोई जीवन नहीं है, और उन्होंने एकदम स्पष्ट कर दिया कि पुनरुत्थान अभी भविष्य में है।

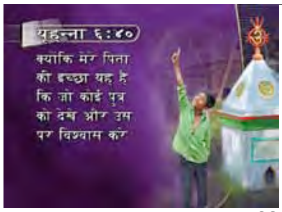

23

(मूलपाठः यूहन्ना ६:४०)
"क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कोई पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे

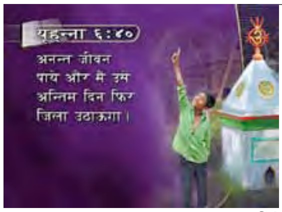

24

अनन्त जीवन पाये और मैं उसे अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।"
यूहन्ना ६:४०

25

प्रभु यीशु के वापस लौटने की बात जानकर हमारे हृदय आनन्द से भर उठे हैं। उनका उद्देश्य स्पष्ट है और यह जीवन और मृत्यु के विषय पर पर्याप्त प्रकाश डालता है। वे क्यों वापस आ रहे हैं?

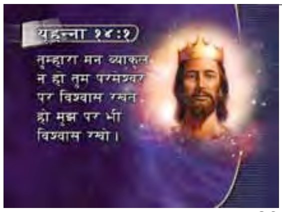

26

(मूलपाठः यूहन्ना १४:१-३)
"तुम्हारा मन व्याकुल न हो तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।"

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

27

"मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं यदि न होते तो मै तुम से कह देता। मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ।"

28

"और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ तो फिर आकर तुम्हे अपने यहां ले जाऊँगा;

29

कि जहाँ मैं रहूँ वहां तुम भी रहो।"

यूहन्ना १४:१-३

30

यीशु ने स्वयं ही महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया:

31

(मूलपाठ: मत्ती २४:३०,३१)

"तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे,

32

और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।"

33

"और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक,

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

34

चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे।"
मत्ती २४:३०,३१

35

तुरही क्यों? स्वर्गदूत क्यों?

36

चुने हुओं को मृत्यु की नींद से जगाने और उन्हें स्वर्ग में वह स्थान जो यीशु ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार किया है ले जाने के लिए एकत्र करने के लिए। प्रभु के आगमन का वर्णन बहुत साफ साफ किया गया है।

37

(मूलपाठः १ थिस्सलुनीकियों ४:१३-१८)
"परन्तु हे भाइयों हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में सोते हैं अज्ञात रहो,

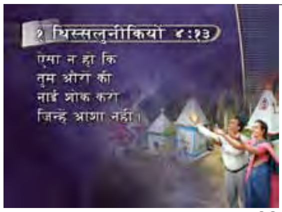

38

ऐसा न हो कि तुम औरों की नाई शोक करो जिन्हें आशा नहीं।

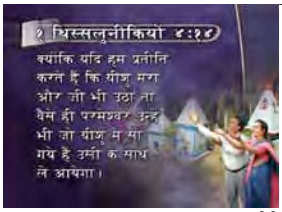

39

क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गये हैं उसी के साथ ले आयेगा।"

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

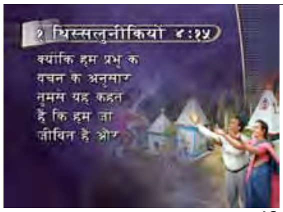

40

क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुमसे यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और

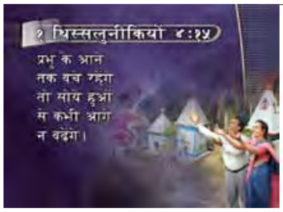

41

प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोये हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे।

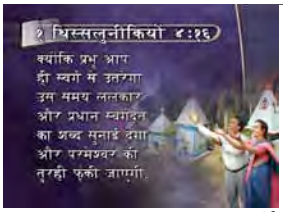

42

क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा उस समय ललकार और प्रधान स्वर्गदूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी,

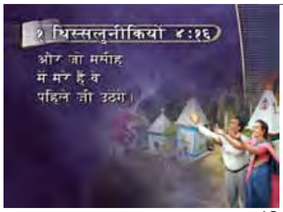

43

और जो मसीह में मरे हैं वे पहिले जी उठेंगे।

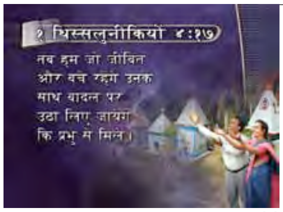

44

तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादल पर उठा लिए जायेंगे कि प्रभु से मिले।

45

और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।

46

इसलिए इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो।"

१ थिस्सलुनीकियों ४:१३-१८

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

47

कृपया यहां व्यक्त की गयी तीन विशेष सच्चाईयों पर ध्यान दीजिएः

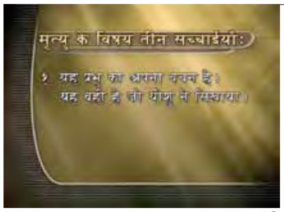

48

१. यह "प्रभु के अपने वचन" के अनुसार है।" यही यीशु ने सिखाया और इसलिए इस विषय पर हमें सन्तोष है।

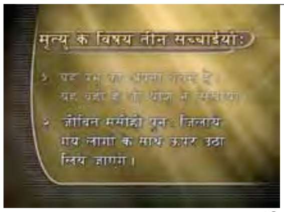

49

२. यीशु के लौटने पर जीवित पाये जाने वाले मसीही उसके दूसरे आगमन के समय मृतकों में से जीवित किये गये लोगों के साथ ऊपर उठा लिए जाएंगे। जीवित लोग उनसे आगे नहीं जायेंगे जो यीशु में सो गये हैं और न ही वे लोग जो मर गये हैं मरते समय ही एक एक कर के आगे जायेंगे।

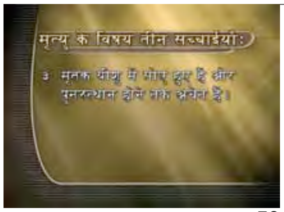

50

३. "नींद" शब्द का प्रयोग यीशु और पौलुस ने पुनरुथान के पहले की मृत्यु के लिये किया हैः "यीशु में सो गए"। यीशु यह स्पष्ट करते हैं कि मृत्यु में कोई अनुभुति नहीं होती। अनुभुति मस्तिष्क की एक प्रक्रिया है और मृत्यु में मस्तिष्क कार्य बन्द कर देता है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

51

(मूलपाठ: सभोपदेशक ९:५)

बाइबिल इसे बहुत साफ करती है: "क्योंकि जीवित तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते।"

सभोपदेशक ९:५

52

मृतक कितना जानते हैं? कुछ भी नहीं।" इसलिए मृतकों का जीवितों के साथ संवाद करना असंभव है। यह विश्वास कि मृत्यु के बाद भी व्यक्ति जीवित रहता है कहाँ से आया?

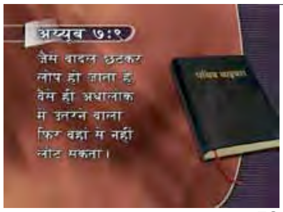

53

(मूलपाठ: अय्यूब ७:९, १०)

बाइबिल मृत्यु में मनुष्य की दशा को अचेत बताती है अय्यूब ने बहुत साफ कहा, "जैसे बादल छटकर लोप हो जाता है, वैसे ही अधोलोक में उतरने वाला फिर वहां से नहीं लौट सकता।"

अय्यूब ७:९

54

"वह अपने घर को फिर लौट न आयेगा, और न अपने स्थान में फिर मिलेगा।"

अय्यूब ७:१०

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

55

यह विश्वास स्वयं शैतान से आता है। उसने अदन की वाटिका में हव्वा को धोखा दिया। उसके पति सहित वह उनके वाटिका के घर को और अन्ततः जीवन को भी खो देने का कारण बना।

उसने सांप के माध्यम से बोलते हुए हव्वा के साथ एक आध्यात्मिक सभा की।

वह एक दक्ष धोखेबाज है।

56

(मूलपाठः उत्पत्ति ३:४)

उसने शैतान के झूठ पर विश्वास कियाः "...तुम निश्चय न मरोगे।"

उत्पत्ति ३:४

57

(मूलपाठः उत्पत्ति २:१७)

यह झूठ परमेश्वर के वचन के एकदम विपरीत थाः

"...तू अवश्य मर जायेगा।"

उत्पत्ति २:१७

प्रश्न यह हैः कि हम किसका विश्वास करें?

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

58

एक आत्मावादी कहता है(और यही बात संसार भर के हजारों आत्मवादियों द्वारा दोहराई जाती है), "हमारे बिछुड़े हुए प्रियजनों के साथ संवाद करना संभव है।"

क्या यह सही है? नहीं।

क्या यह संभव है? नहीं।

59

यीशु की शिक्षाओं से हम निश्चित रूप से जानते हैं कि जीवित मृतकों के साथ संवाद नहीं कर सकते। क्यों नहीं? "मृतक कुछ नहीं जानते।" वे मृत्यु की अचेत नींद में सो रहे हैं।

आप कुछ भय के साथ पूछ रहे होंगे कि क्या आप आत्माओं के साथ संवाद में हैं ...

60

"यदि मृतक सचेत नहीं हैं तो जीवितों के साथ बोलने वाली आत्माएं कौन हैं?"

61

बाइबिल साफ -साफ बताती है कि वे कौन हैं:

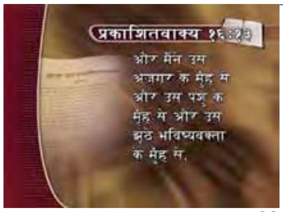

62

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:१३,१४)

"और मैंने उस अजगर के मुँह से और उस पशु के मूँह से और उस झूठे भविष्यवक्ता के मुँह से,

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

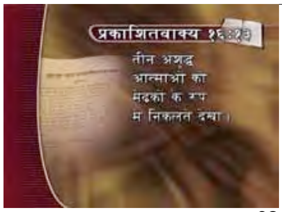

63

तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के रूप में निकलते देखा।

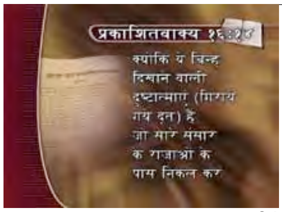

64

क्योंकि ये चिन्ह दिखाने वाली दुष्टात्माएं (गिराये गये दूत) हैं जो सारे संसार के राजाओं के पास निकल कर इसलिए जाती हैं,

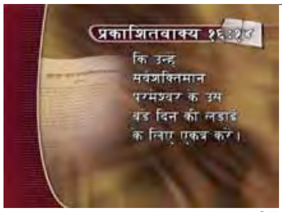

65

कि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन की लडाई के लिए एकत्र करें।"

प्रकाशितवाक्य १६:१३, १४

66

बाइबिल आगे न केवल यह प्रकट करती है कि वे कौन है परन्तु यह भी कि वे कहाँ से आयी:

67

(मुलपाठ: प्रकाशितवाक्य १२:७-९)

"फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले और अजगर और उसके दूत उससे लड़े,

68

परन्तु प्रबल न हुए और स्वर्ग में उनके लिए फिर जगह न रही।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

69

इसलिए वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप जो इबलीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार का भरमाने वाला है;

70

वह पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिये गये।"
प्रकाशितवाक्य १२:७-९

71

वे गिराये गये दूत हैं! मित्रों सावधान! यह सर्वाधिक खतरनाक है कि आप इन आत्माओं से कुछ भी लेना देना रखें।

उनका एक मात्र उद्देश्य मैं दोहराता हूँ, उनका एक मात्र उद्देश्य आप को भरमाना है और आप को यीशु से दूर ले जा कर आपके अनन्त उद्धार से आपको वंचित करना है।

72

इससे आपके रोंगटे खड़े हो जाने चाहिए। आपके शरीर में सिहरन पैदा होनी चाहिए। ताकि आप अपने और आत्माओं के बीच दूरी पैदा रखें। यदि आप विश्वास करते हैं कि मृतक जीवित हैं तो आप पूरी तरह असुरक्षित हैं और धोखे से नाश हो सकते हैं क्योंकि अभी तक आपने कुछ भी नहीं देखा है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

73

परमेश्वर ने अपने वचन में आत्मावाद की स्पष्ट निन्दा की है, और मनुष्य की ओर से मृतकों के साथ संवाद करने के किसी भी प्रयास को वर्जित ठहराया है।
इस चेतावनी पर ध्यान दीजिए जो परमेश्वर ने अपने लोगों को ऐसे व्यक्ति के पास जाने के विषय में दी जो जानी पहचानी आत्मा से बात करने का प्रयास करता है

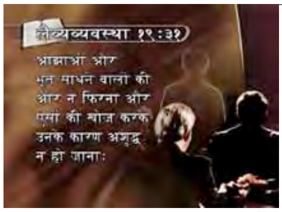

74

(मूलपाठः लैव्यव्यवस्था १९:३१)
लैव्यव्यवस्था १९:३१: "ओझाओं और भूत साधने वालों की ओर न फिरना और ऐसों की खोज करके उनके कारण अशुद्ध न हो जानाः

75

मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

76

(मूलपाठः व्यवस्थाविवरण १८:१०-१२)
कनान में प्रवेश करने से पहिले इस्राएलियों को कठोर निर्देश दिये गये, "तुम में कोई तान्त्रिक,

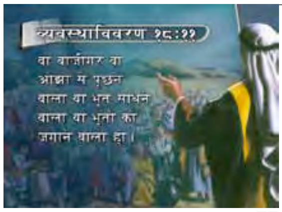

77

वा बाजीगर वा ओझों से पूछने वाला वा भूत साधने वाला वा भूतों को जगाने वाला हो।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

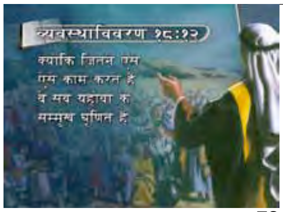

78

"क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित है..."

व्यवस्थाविवरण १८:१० -१२

परमेश्वर जानता है कि भूतों को जगाने वाले लोग उसके लोगों को पथभ्रष्ट कर देंगे, और इसलिए उसने उनसे ऐसा कहा:

79

(मुलपाठ: निर्गमन २२:१८)

"तू डाइन को जीवित रहने न देना।"

निर्गमन २२:१८

80

राजा शाऊल का भूत सिद्धि करने वाली से सम्मति लेने का अनुभव, मृतकों से बात करने की मूर्खता को दिखाता है।

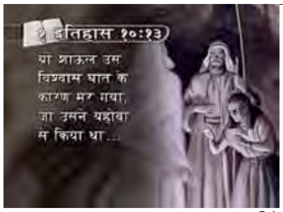

81

(मूलपाठ: १ इतिहास १०:१३)

"यों शाऊल उस विश्वासघात के कारण मर गया, जो उसने यहोवा से किया था ...

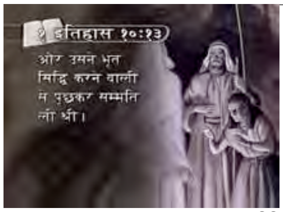

82

और उसने भूत सिद्धि करने वाली से पूछकर सम्मति ली थी।"

१ इतिहास १०:१३

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

83

शैतान स्वयं यीशु का रूप धारण करने की चेष्टा करेगा।

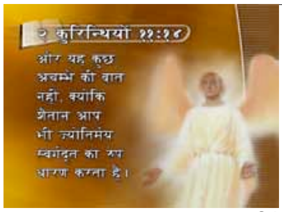

84

(मूलपाठः २ कुरिन्थियों ११:१४)

"और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं, क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रुप धारण करता है।"

२ कुरिन्थियों ११:१४

85

क्या आपने सोचा है कि एक व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति के साथ कैसे बात कर सकता है जो ठीक वैसा ही दिखता है बात करता है, काम करता है जैसा वह मृत्यु के पूर्व था?

बाइबिल कहती है कि यह शैतान और उसके दूतों के छदम वेश से होता है।

86

वे ऐसे किसी भी व्यक्ति का रुप धारण कर सकते हैं जो कभी जीवित रहा। यह सोचना पूरी तरह भयभीत करने वाला है कि भले लोग भी इस तरह धोखे से शैतान के आलिगन में यह सोचते हुए आ सकते हैं कि वे अपने बिछुड़े हुए प्रियजन का आश्वासन प्राप्त कर रहे हैं।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

87

किन्तु यह वचन और भी अधिक दुष्टता को प्रकट करता है: शैतान स्वयं यीशु का रुप धारण करेगा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यीशु के दूसरे आगमन की सच्चाई न जानने के कारण कैसे भीड़ की भीड़ धोखा खायेगी?

क्या इसमें कोई आश्चर्य है कि यीशु ने इसी बात पर इतनी गंभीर चेतावनी दी है?

88

(मूलपाठ: मत्ती २४:४,५)

"और यीशु ने उनको उत्तर दिया, सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाये।"

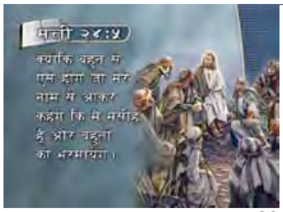

89

"क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे कि मै मसीह हूँ और बहुतों को भरमायेंगे।"

मत्ती २४:४,५

इतना गंभीर है यह विषय कि

90

यीशु ने वही चेतावनी उसी उपदेश में फिर दोहरायी:

91

(मुलपाठ: मती २४:२३-२५)

"उस समय यदि कोई कहे, देखो, मसीह यहाँ है! तो प्रतीति न करना।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

92

"क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखायेंगे,

93

कि यदि हो सके, तो चुने हुओं को भी भरमा दें।"

94

"देखो, मैंने पहिले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है।"

मत्ती २४:२३-२५

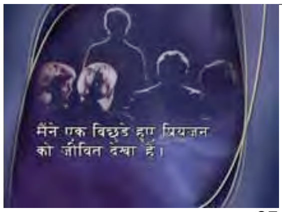

95

किन्तु कोई कह सकता है या आप किसी ऐसे को जानते होंगे जो कहता है, "मैंने एक बिछुड़े हुए प्रियजन को जीवित देखा है।"

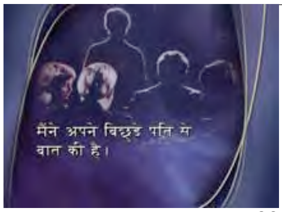

96

कोई और हठ कर सकता है, "मैंने अपने बिछुड़े पति से बात की है।"

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

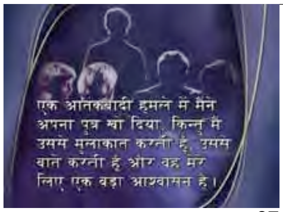

97

एक और, "एक आतंकवादी हमले में मैंने अपना पुत्र खो दिया, किन्तु मैं उससे मुलाकात करती हूँ, उससे बातें करती हूँ और वह मेरे लिए एक बड़ा आश्वासन है।"

यीशु ने क्या कहा?

कि मृतक नींद में है और ये आत्माएं यदि हो सकता तो चुने हुओं को भी भरमायेंगी।

लाखों लोग धोखा खायेंगे।

क्यों? क्योंकि वे अपनी भावनाओं इन्द्रियों और अनुभवों पर परमेश्वर के वचन से बढ़कर भरोसा रखते हैं।

98

चुने हुए लोग धोखा नहीं खाते हैं? क्योंकि वे यीशु पर विश्वास रखते हैं अपनी इन्द्रियों, भावनाओं और अनुभवों पर भरोसा रखने के बजाय वे परमेश्वर के अटल वचन पर भरोसा रखते हैं।

99

प्रश्न यह है:

100

क्या हम परमेश्वर की सच्चाई को स्वीकार करेंगे,

101

क्या हम शैतान के झूठ पर विश्वास करेंगे?

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

102

शैतान के धोखे की लहर सारे संसार को प्रभावित करने लगी है। केवल वे ही इस धोखे की लहर के सामने टिक सकेंगे जिन्होंने बाइबिल के वचनों से अपने मस्तिष्क को सुरक्षित कर लिया है।

हमें ये बातें जाननी चाहिए और उन पर दृढ इच्छा से विश्वास करना चाहिए और किसी अनुभव, भावना या दिखावट को हमें सच्चाई से नहीं हटाने देना चाहिए।

103

संभवतः आपने "निकट मृत्यु" के अनुभव के विषय में सोचा है जिसमें वे लोग जिन्हें मृत घोषित कर दिया गया था पुनः जीवित हो गये हों

104

और उन्होंने कहा कि उन्होने स्वयं को अस्पताल कक्ष में मण्डराते और अपने ही शरीर को निहारते पाया...

105

या उन्होंने एक तेज प्रकाश और यीशु को देखा या एक स्वर्गदूत को जो उनसे आने का आवाहन कर रहा था। कुछ तो यहाँ तक कहते हैं कि उन्होंने मृत्यु के उस पार अपने बिछुडे हुए प्रियजन को देखा है।

हम केवल परमेश्वर के वचन की सच्चाई के साथ ही झूठ को पकड़ सकते हैं और धोखे से सुरक्षित हो सकते हैं।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

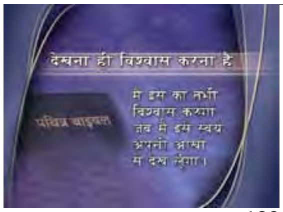

106

यह कहना कि, "देखना ही विश्वास करना है - मैं इस का तभी विश्वास करुंगा जब मै इसे स्वयं अपनी आखों से देख लूँगा," भरमाये जाने का एक निश्चित मार्ग है।

107

हमारा निर्णय प्राण घातक हो सकता है अगर यह निर्णय परमेश्वर के वचन बाइबिल पर आधारित न हो कर हमारी इन्द्रियों, भावनाओं, यो अनुभवों पर आधारित हो।

मृत्यु के विषय में बहुत अधिक झूठे विश्वास संसार भर में प्रचलित हैं।

108

उदाहरण के लिए पुर्नजन्म को ले लीजिए।

लाखों का विश्वास है कि जब एक व्यक्ति मरता है, तो वह किसी दूसरे रुप में पुनः जन्म लेता है, फिर भी कभी नहीं जान पाता कि किसमें। यह संभवतः एक पशु जैसे एक गाय, चूहा या सांप भी हो सकता है।

109

या एक दूसरा व्यक्ति हो सकता है। संभवतः बहुत अमीर, या एक राजा या निर्धन या एक भिखारी या अन्धा या बहरा या लँगड़ा या जिसे एक दर्दनाक और असहाय बीमारी हो।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

110

हिन्दू मत सिखाता है कि जीवन एक चक्र है जो निरन्तर घूमता रहता है, और जब एक व्यक्ति मरता है तो वह पुनः जन्म लेता है और इस पृथ्वी पर इसके अनन्त चक्र चलते रहते हैं।

इसके पीछे वास्तविक सोच-विचार को जाने बिना बहुत से लोग इस षडयन्त्र में फंस जाते हैं।

इस विश्वास में व्यक्ति का कोई नियन्त्रण नहीं, कोई चुनाव नहीं, कोई निर्णय नहीं रह जाता।

111

यहाँ लक्ष्य व्यक्ति, चुनाव, आनन्द और मित्रता के साथ सचेत जीवन नहीं है। फिर भी व्यक्ति अन्त में निर्वाण को प्राप्त होता है –

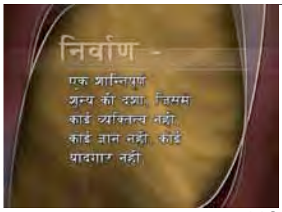

112

"एक शान्तिपूर्ण शून्य की दशा, जिसमें कोई व्यक्तित्व नहीं, कोई ज्ञान नहीं, कोई यादगार नहीं,

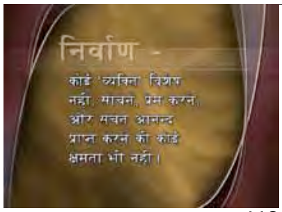

113

एक व्यक्ति जैसे आप भी नहीं सोचने प्रेम करने और सचेत आनन्द प्राप्त करने की कोई क्षमता भी नहीं।

114

स्वयं की पहचान ब्रह्माण्ड में पूरी तरह विलुप्त हो जाती है कि वैसे ही जैसे पानी की एक बूंद समुद्र में जाकर विलीन हो जाती है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

115

बुद्धावाद भी ऐसा ही है।
तब भी बुद्धा ने सिखाया कि आप जीवन के अन्त में जीवन चक्र से छुटकारा पा सकते हैं अर्थात यदि आपके कर्म ठीक हैं तो आपको पुर्नजन्म के अनन्त चक्र से होकर जाना नहीं पड़ेगा।

116

इच्छा के अचेतन नियन्त्रण द्वारा शिक्षा स्वीकार कर एक व्यक्ति अपने जीवन में ऐसे बिन्दु पर आ सकता है, जहाँ इच्छा का पूर्णतया ठहराव है।

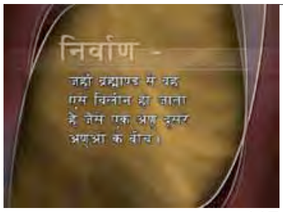

117

जब मन और देह की यह स्थिति प्राप्त हो जाती है, वह मृत्यु के समय सीधे निर्वाण को प्राप्त हो जाता है, जहाँ ब्रह्माण्ड से वह ऐसे विलीन हो जाता है जैसे एक अणु दूसरे अणुओं के बीच।

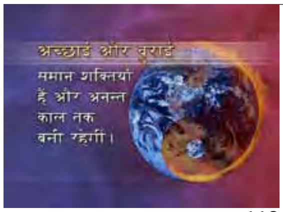

118

इन दोनो मुख्य धर्मो के पास यह विश्वास भी है कि अच्छाई और बुराई समान शक्तियाँ हैं और अनन्त काल तक बनी रहेंगी।

119

इण्डोनेशिया में बाली के टापू पर बारोंग नृत्य देखा जा सकता है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

120

बारोंग एक उबले हुए बड़े अण्डे के आकार की पोशाक पहने छः आदमियों का सामना करता है जो कटार धारण किये हुए होते हैं ये टेडी किन्तु तेज और प्राण नाशक कटारें होती हैं। वे किसी स्थानीय और औषधि के प्रभावाधीन होते हैं।

121

बारोंग उनकी ओर बढ़ता है और वे पीछे हटते हैं। वह संकोच करता और पीछे मुड़ता है और वे आदमी हवा में वार करते हुए और उसे काट डालने का प्रयास करते हुए उसके पीछे दौडते हैं।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

122

बारोंग रुक जाता और उन आदमियों का सामना करने के लिए मुड़ता है। वे रुक जाते हैं। वह एक कदम आगे बढ़ता है और वे एक कदम पीछे हटते हैं।

यह क्रम आगे पीछे बार -बार तब तक चलता रहता है जब तक कि छः आदमी उन मांद की प्रचंड स्थिति में फँस कर नियन्त्रण नहीं खो देते हैं। उनमें से एक या अधिक के लिए आसामान्य नहीं है कि वे पास खडे लोगों पर अपनी कटार फेंक दें और भल्ली से उन पर वार कर दें।

इस बिन्दु पर गांव से आदमी आकर उन पर नियन्त्रण कर भूमि पर गिरा कर पानी डालते हैं जबकि वे मरोड़ खाते रहते हैं।

अन्त में वे इस प्रकार अपने सिर हिलाते हैं मानो अचेतावस्था से निकलें हो और अपनी झोपडियों की ओर चले जाते हैं। और बारोंग विपरीत दिशा में चला जाता है। इसका क्या मतलब है। यह एक धार्मिक पर्व है जिसमें लोग अपने विश्वासों का मंचन करते हैं। बारोंग परमेश्वर का प्रतीक है और छः आदमी बुराई के प्रतीक हैं। हिन्दू विश्वास के अनुसार अच्छाई और बुराई के मध्य में सनातन संघर्ष चलता रहता है। दोनों में से कोई भी नहीं जीतता है यह सदैव बराबरी पर छूटता है।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

123

यह इस विश्वास पर आधारित है कि इतिहास चक्रवत है अर्थात यह निरन्तर स्वयं को ही दोहराता रहता है। इतिहास कहीं नहीं जा रहा है।

प्रेम का कोई अनन्त परमेश्वर नहीं है जो बुराई को समाप्त करे और पृथ्वी पर धार्मिकता और शान्ति की स्थापना करे।

124

पुनरुत्थान और जीवन के लिए मैं यीशु का बहुत आभारी हूँ। क्या आप नहीं हैं?

कितनी अदभुत आशा वे लाते हैं!

बुराई सदैव बनी न रहेगी। इतिहास चक्रवत चलने वाला नहीं है। यह आगे बढ़ रहा है।

सम्पूर्ण इतिहास ऐसे समय की ओर बढ़ रहा है जब परमेश्वर लोगों के लिए एक नई पृथ्वी का निर्माण करेगा – ऐसी पृथ्वी, जिसमें पाप, बिमारी, युद्ध, भुखमरी, दुःख और मृत्यु न रहेगी।

125

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २१:१-)

"फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

126

और समुद्र भी न रहा।

127

"फिर मैंने पवित्र नगर नए यरुशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा,

128

और वह उस दुल्हन के समान थी जो अपने पति के लिए सिंगार किये हो।"

129

"फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में हैं

130

वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा।"

131

"और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा और इसके बाद मृत्यु न रहेगी और न शोक न विलाप।

132

न पीड़ा रहेगी पहिली बातें जाती रहीं।"
प्रकाशितवाक्य २१:१-४

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

133

क्या आप अभी यीशु को चुनेंगे और नया जन्म प्राप्त करेंगे? मृत्यु के बाद नहीं, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। न ही लाखों वर्षों तक जीवन के अनेक रूपों में और असंख्य पुर्नजन्मों में। किन्तु अभी और आज ही!

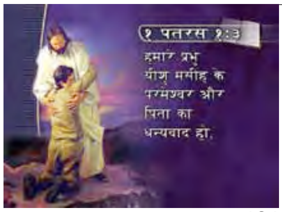

134

(मूलपाठः १ पतरस १:३,४)
"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो,

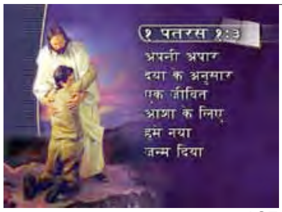

135

अपनी अपार दया के अनुसार एक जीवित आशा के लिए हमें नया जन्म दिया

136

यीशु मसीह के मृतकों में से जिला उठाने के द्वारा,

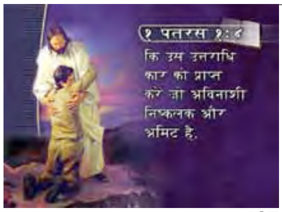

137

कि उस उत्तराधिकार को प्राप्त करें जो अविनाशी निष्कलंक और अमिट है,

138

जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है।"
१ पतरस १:४

139

आप अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं। परमेश्वर चाहता है कि आप आज यह आश्वासन प्राप्त करें।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

140

(मूलपाठः १ यूहन्ना ५ :११,१२)

"और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन उसके पुत्र में है।

141

"जिस के पास पुत्र है उसके पास जीवन है और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।"

१ यूहन्ना ५ :११,१२

हम कैसे जानते हैं? हम कैसे निश्चित हो सकते हैं?

परमेश्वर का वचन इसे स्पष्ट करता हैः

142

(मूलपाठः १ यूहन्ना ५ :१३)

"मैंने तुमको को जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा हैं,

143

कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है..."

१ यूहन्ना ५ :१३

प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रश्न का उत्तर देना ही चाहिएः

"क्या यीशु मेरे पास है?"

आप उसे इसी क्षण पा सकते हैं।

१४ - कब्र से आती आवाज़ें

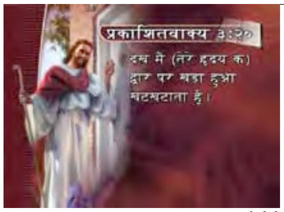

144

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ३:२०)

वह कहता है, "देख मैं (तेरे हृदय के) द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ।

145

यदि कोई मेरी आवाज सुनकर द्वार खोले,

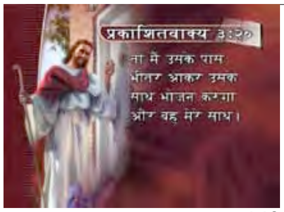

146

तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा और वह मेरे साथ।"

प्रकाशितवाक्य ३:२०

147

अपने हृदय के द्वार को अभी खोलिये और यीशु को अन्दर बुलाइए।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

1

पूर्ण स्वास्थ्य कैसे प्राप्त करें

2

पुर्तगालियों का एक प्राचीन मठ एक पहाड़ की चोटी पर स्थित है जहाँ से भूमध्यसागर का पानी हरा और नीला दिखाई देता है। ऊपर से यह दृश्य अत्यन्त लुभावना है। चारों ओर सुन्दरता है। परन्तु एक समस्या है। चोटी पर पहुँचने का केवल एक ही रास्ता है – बेंत की बनी हुई एक पुरानी टोकरी जिसे एक वृद्ध सन्यासी के द्वारा रस्सी से ऊपर खींचा जाता है।

3

एक दिन एक अतिथि और एक गाइड मठ को छोड़ रहे थे। जब उन्होने टोकरी में कदम रखा और नीचे की ओर उतरने लगे, तो उसी समय रस्सी नुकीली चानों के ऊपर झूल गई। घबराकर पर्यटक ने पूछा, ''इस रस्सी को वे कितनी बार बदलते हैं?"

4

"परेशान मत होइए," गाइड ने आश्वासन देने वाली आवाज में उत्तर दिया, "जब भी यह टूटती है तो हम उसे बदल देते हैं।"

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

5

इस कहानी के समान हजारों लोग अपने स्वास्थ्य के संबंध में चौकस नहीं हैं। वे उस समय तक प्रतीक्षा करते हैं जब तक उनका स्वास्थ्य रस्सी की तरह टूट नहीं जाता और फिर जल्दी से किसी प्रचलित नुस्खे का प्रयोग करने लगते हैं। पर टूटा हुआ स्वास्थ्य रस्सी की तरह सरलता से नहीं बदला जा सकता! स्वास्थ्य अचानक मौके का विषय नहीं है, परन्तु आपके निर्णय का विषय है और प्रकृति के नियमों के पालन का।

6

मित्र, क्या आप टूटे हुए स्वास्थ्य का जोखिम उठा सकते है? लोग इलाज पर करोड़ों रुपये लगा देते हैं। बीमारी संसार की सबसे महँगी चीज़ है जिस पर लोग अपना पैसा खर्च करते हैं। अच्छे स्वास्थ्य का मूल्य क्या है? यह प्रश्न एक कैन्सर से मरते हुए रोगी से या एडस् से पीड़ित व्यक्ति से पूछिये।

7

ल्यूकेमिया से पीड़ित एक बच्चे के माता पिता से पूछिए या शरीर को पंगु बनाने वाले गठिए के वृद्ध रोगी से पूछिए। वे आपको बतायेंगे कि अच्छा स्वास्थ्य अमूल्य है। यह एक ऐसी आशीष है जिसका महत्व इसके खोने के बाद ही जान पड़ता है।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

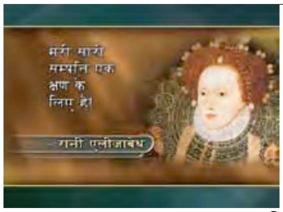

8

जीवन के एक वर्ष का, या केवल एक दिन का, मूल्य क्या है? रानी एलीज़ाबेथ प्रथम ने अपनी मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए कहा कि, "मेरी सारी सम्पति मैं जीवन के एक क्षण के लिए देने को तैयार हूँ।" परन्तु स्वास्थ्य धन से नहीं खरीदा जा सकता। सोचिए, आप स्वास्थ्य -सम्बन्धी साधारण और व्यावहारिक नियमों का पालन कर जीवन के अच्छे और लम्बे दिन पा सकते हैं।

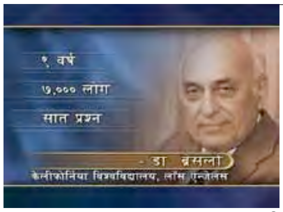

9

यू. सी. एल ए के डा. ब्रेसलो ने नौ वर्ष से भी अधिक समय तक अनुसंधान का अध्ययन किया। उसने ७,००० लोगों से स्वास्थ्य संबंधी आदतों से संबंधित सात प्रश्न पूछे और तब इन बीमारों की जांच की और फिर स्वास्थ्य -संबंधी नियमों का पालन करने वालों की तुलना न पालन करने वालों के साथ की।

10

उसके पूछे गए प्रश्न निम्नलिखित हैं:

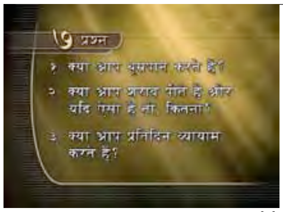

11

१. क्या आप धूम्रपान करते हैं?

२. क्या आप शराब पीते हैं और यदि ऐसा है तो, कितना?

३. क्या आप प्रतिदिन व्यायाम करते हैं?

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

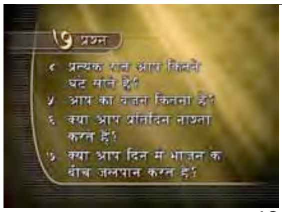

12

४. प्रत्येक रात आप कितने घंटे सोते हैं?

५. आप का वजन कितना है?

६. क्या आप प्रतिदिन नाश्ता करते हैं?

७. क्या आप दिन में भोजन के बीच जलपान करते हैं?

जो लोग नियमित रूप से इन प्रश्नों पर आधारित स्वास्थ्य -संबंधी नियमों का पालन करते हैं वे नियम न पालन करने वालों की अपेक्षा ११.५ साल अधिक जीवित रहे।

13

आप के जीवन में ११.५ वर्ष जोड़ने के लिए आप क्या देना चाहेंगे? इस संदेश से जो आपको इस समय दिया जा रहा है आपके जीवन में अधिक वर्ष जुड़ सकता है –खुशी के और स्वस्थ्य वर्ष। क्या आप सोचते हैं कि ध्यानपूर्वक सुनना आप के लिए लाभदायक होगा? इस बात से बहुत से लोगों को आश्चर्य होता है कि परमेश्वर इस पृथ्वी पर हमारे स्वास्थ्य और प्रसन्नता के विषय में चिन्तित है।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

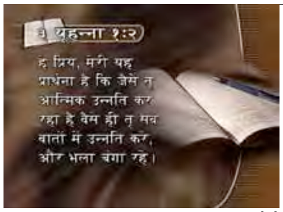

14

(मूलपाठः ३ यूहन्ना १:२)

"हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे, और भला चंगा रहे।"

३ यूहन्ना १:२

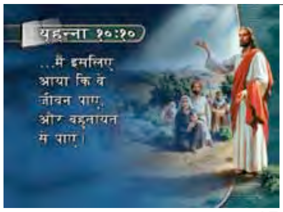

15

(मूलपाठः यूहन्ना १०:१०)

यीशु ने कहा, "मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाए, और बहुतायत से पाएं।"

यूहन्ना १०:१०

16

यीशु चाहते हैं कि हमारे पास आनन्द और स्वस्थ जीवन हो। वे चाहते है कि हम एक पूरा जीवन जीएं!

17

क्या यह जानना संभव है कि हम अच्छा स्वास्थ्य कैसे रख सकते हैं? जी हाँ!

बहुत से लोग यह नहीं जानते कि परमेश्वर ने बाइबिल में हमारे पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहने के नियम और आदेश दिए हैं।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

18

कई वर्षों से पुराने मत के यहूदियों के रहन -सहन और स्वास्थ्य -संबंधी आदतों में अन्वेषण करने वालों की बहुत रुचि रही है। इनमें कैंसर से मृत्यु दूसरों की अपेक्षा बहुत कम है और वे दूसरी जानलेवा बीमारियाँ भी इनमें कम होती हैं। क्या यहूदियों के शरीर में ऐसी कोई बात है जिससे ये प्राणघातक रोगों से बचे रहते हैं? यह पता चला कि यहूदियों कि यह रहस्य उनके स्वास्थ्य -संबधी नियमों का पालन करने में, उनके संतुलित आहार, और उनके रहन सहन में हैं।

19

यह रोचक बात है कि जब यहूदियों ने दूसरों की तरह खाना आरंभ कर दिया तब उनमें कैंसर से और दूसरी बीमारियों से होने वाली मृत्यु दर वैसी ही हो गई जैसी दूसरों की है।

20

(दृश्य)

जब परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र से बाहर लाया, तब उसने उनको कुछ महत्वपूर्ण नियम और व्यवस्था स्मरण दिलाया जो स्वस्थ रहने से संबंधित हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए योजना बताते हुए उसने एक ध्यान देने योग्य प्रतीज्ञा उनसे की जो उसकी आज्ञाओं को मानेंगे।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

21

(मूलपाठ: निर्गमन १५:२६)
उसने कहा: "कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे,

22

उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधियों को माने,

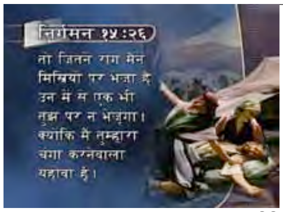

23

तो जितने रोग मैंने मिस्रियों पर भेजा है उन में से एक भी तुझ पर न भेजूंगा। क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करनेवाला यहोवा हूँ।"

निर्गमन १५:२६, उसने यह भी कहा:

24

(मूलपाठ: निर्गमन २३:२५)
"और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा।

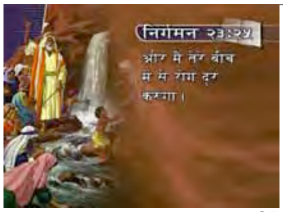

25

और मैं तेरे बीच में से रोग दूर करूंगा।"

निर्गमन २३:२५

क्या आप इसके अभिप्राय को समझते हैं? यदि हम यहोवा के निर्देश को मानते हैं, तो बीमारी का प्रभाव प्रायः उलट सकता है।

यह अमूल्य सूचना है! क्या ही अद्भुत प्रतिज्ञा हैं!

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

26

इस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने पर टिप्पणी करते हुए भजनसंहिता का लेखक हम से कहता है,

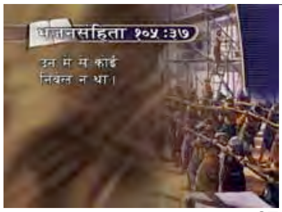

27

(मूलपाठ: भजनसंहिता १०५:३७)

"उन में से कोई निर्बल न था।"

भजनसंहिता १०५:३७

"ठीक है" आप कहते हैं, "हो सकता है कि मिस्रियों के पास वे बीमारियाँ नहीं थीं जो आज हमारे पास हैं।" यह सोचना गलत है!

28

१९७५ में सम्पूर्ण संसार से प्रवीण व्यक्तियों का एक समुदाय मेनचेस्टर मेडिकल स्कूल संग्रहालय में मिस्र की ममीयों पर चीर -फाड़ और परीक्षण करने के लिए एकत्र हुए। ये ममी १९०० ईसवी से पूर्व की थीं।

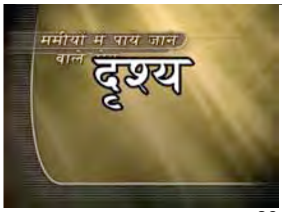

29

(दृश्य)

यह अन्वेषण अद्भुत था। प्राचीन मिस्री बहुत -सी ऐसी बीमारियों से पीड़ित थे जो आधुनिक व्यक्ति के लिए साधारण हैं:

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

30

(दृश्य)

हृदयरोग, कैंसर, वाहकनालियों से संबंधित बीमारियाँ, गठिया, हेपाटाइटिस, टेटनस, ट्रीकीनोसिस, और दूसरे रोग।

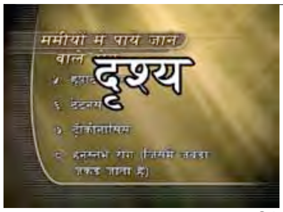

31

(दृश्य)

हेपाटाइटिस, टेटनस, ट्रीकीनोसिस, हनुस्तंभ रोग (जिसमें जबड़ा जकड़ जाता है) और दूसरे रोग।

32

यद्यपि मूसा के जीवनकाल में मिस्र संसार का शिक्षा और संस्कृति का केन्द्र था, परन्तु इसका चिकित्सा संबंधी ज्ञान और चिकित्सा आज के अफ्रीका के कबीले के वैद्ध के समान है!

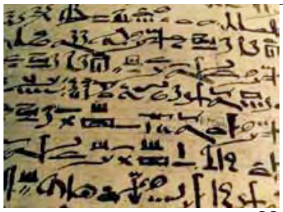
33

१५५२ ईसा पूर्व अर्थात मूसा के जन्म से कुछ पहले मिस्र में पपाइरस एबर्स नाम की एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक पुस्तक लिखी गई थी। इस पुस्तक में बहुत सी बीमारियाँ, संक्रामक रोगों तथा दुर्घटनाओं के लिए इलाज के लिए नुस्खे लिखे थे –ऐसे नुस्खे जिनमें से बहुत कम का प्रयोग आप करना चाहेंगे।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

34

गहरी चोट से लकड़ी के टुकड़े को निकालने के लिए कृमि का रक्त और घोड़े की लीद को घाव पर मसलिए।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि बहुत लोग धनुकबाई से मरते थे। साँप के काटने पर एक मुर्ति पर ड़ाले गए पानी को पीने के लिए कहा गया है।

35

सर के गंजेपन के लिए घोड़े के खुर, खजूर के फूल और कुत्ते के पंजे तेल में उबालकर सिर पर मले।

36

बाइबिल हमें कहती है कि मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई। (प्रेरितों का काम ७:२२)। उसके लेखों में निर्देश भरे हैं कि कैसे स्वच्छता, संगरोधन, व्यक्तिगत स्वच्छता, एवं भोजन पर ध्यान दें। परन्तु उसने पपाइरस एबर्स में से एक भी नुस्खा नहीं लिखा है। मूसा को यह विस्मयकारी स्वास्थ्य सिद्धान्त एवं मार्गदर्शन कहाँ से प्राप्त हुए? परमेश्वर सें!

37

प्लेग और कुष्ठ रोग मध्य युग की दो भयंकर बीमारियाँ थीं।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

38

निर्गमन के बाद परमेश्वर के द्वारा सिखाए गए सार्वजनिक स्वास्थ्य के नियमों ने इन उत्पातों को नियंत्रण में किया। हजारों लोगों का जीवन बच गया जब डाक्टर लोग इन महामारियों में सहायता और इलाज के लिए कलीसिया के अगुवों की ओर मुड़े।

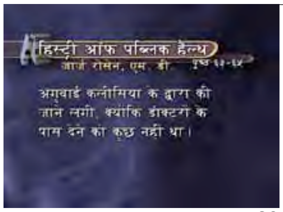

39

जार्ज रोसेन ने लिखाः "अगुवाई कलीसिया के द्वारा की जाने लगी, क्योंकि डॉक्टरों के पास देने को कुछ नहीं था।

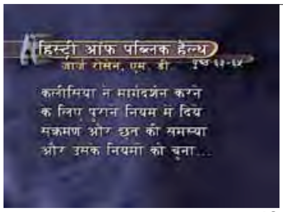

40

कलीसिया ने मार्गदर्शन करने के लिए पुराने नियम में दिये संक्रमण और छूत की समस्या और उसके नियमों को चुना...

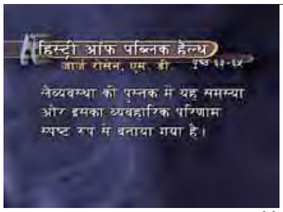

41

लैव्यवस्था की पुस्तक में यह समस्या और इसका व्यवहारिक परिणाम स्पष्ट रूप से बताया गया है।– जार्ज रोसेन, एम डी, सार्वजनिक स्वस्थ्य का इतिहास,पृष्ट ६३ -□६५

42

कितनी लज्जा की बात है कि बाइबिल में सार्वजनिक स्वास्थ्य के सिद्धान्त होते हुए भी छः करोड़ लोग इन महामारियों से मर गए।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

43

परमेश्वर ने हमारे शरीर की रचना की। वह जानता है कि हम किस प्रकार बीमारी से बच सकते हैं और किस प्रकार अपने शरीर का अधिकतम प्रयोग कर सकते हैं! परमेश्वर ने मनुष्य को एक अद्‌भुत शरीर दिया है। इसमें बहुत से कोमल अंग हैं।

44

परमेश्वर ने हमें बनाया और वह निश्चित रुप से जानता है कि हमें स्वस्थ रहने के लिए और कार्यक्षमता के शिखर तक पहुँचने के लिए किन -किन वस्तुओं की आवश्यकता है।

45

एक जवान व्यक्ति ने एक चमकती कार खरीदी जिसके लिए उसने कई वर्षों से पैसे बचाए थे।

46

उसे कार निर्माता की ओर से एक और छोटी पुस्तक दी गई जिसमें बहुत अच्छी तरह से लिखा था कि उसकी नई कार की देखभाल किस प्रकार की जाए ताकि वह बहुत वर्षो तक चलती रहे।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

47

यह एक कीमती कार थी और आप सोच रहे होंगे कि नए मालिक ने कम से कम इसकी देखभाल के विषय में दिए गए निर्देश को पढ़ा होगा। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। केवल एक ही चीज के विषय में वह सोचता था कि वह कितनी जल्दी ६० मील प्रति घंटे की रफ्तार कुछ ही सेकेन्डों में पहुँच सकता था। वह अपनी कार को जितनी तेज हो सके उतनी तेज चलाना चाहता था, और तब ब्रेक लगाता था यह देखने के लिये कि यह कितनी जल्दी रूक सकती है। वह टायरों की आवाज को सुनने में मज़ा आता था।

48

उसने तेल की या पानी या टायरों में हवा की जाँच नहीं की – यह कष्ट उठाना था और अधिक समय लेता था। वह इन 'साधारण' बातों में अपना बहुमूल्य समय नष्ट नहीं करना चाहता था। वह चाहता था कि वह चालक की सीट पर बैठे, विशेष रूप से उन स्थानों पर, जहाँ बहुत से लोग उसे उसकी चमचमाती कार में गति से कार चलाते हुए देख सकें।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

49

शेष कहानी का अनुमान आप लगा सकते हैं। हाँ, उस कार को अधिक समय तक चलने से पहले ही उसे खर्चीले मरम्मत की आवश्यकता पड़ गई। क्या हम भी वैसा ही अपने अद्भुत शरीर के साथ करते हैं जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है? निश्चित रुप से हमें चाहिए कि हम उसके निर्देश का पालन करें!

50

अस्पताल का एक ही चक्कर हमारे जीवन भर की पूंजी को साफ कर सकता है।

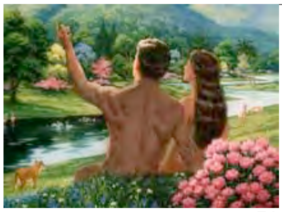
51

निःसन्देह यह हमारे लिये लाभदायक होगा कि हम अदन की वाटिका में वापिस जाएँ। वापस सृष्टि की ओर चलें, और ध्यान दें कुछ बातों पर जो परमेश्वर ने आदम और हव्वा से उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिये कहा था।

एक स्वस्थ आहार

पाप के आने के पूर्व, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को एक सम्पूर्ण आहार दिया था।

52

(मूलपाठः उत्पत्ति १:२९)

"देखो, जितने बीजवाले छोटे -छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं वे सब मैंने तुम को दिए हैं,

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

53

और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं, वे तुम्हारे भोजन के लिए हैं।"

उत्पत्ति १:२९

54

आधुनिक भाषा में हम कह सकते है कि उन्हें फल, अनाज और मेवे दिए गए।

55

यह उनका भोजन था। परमेश्वर ने उन्हें जीवन का वृक्ष भी दिया, जो उनके आहार को पूर्ण करता था और उनकी अनन्त जवानी और स्वास्थ्य को दृढ़ करता था। आदम और हव्वा के पाप करने के बाद परमेश्वर ने उन्हें जीवन के वृक्ष से अलग कर दिया और सब्जियों को उनके आहार में जोड़ दिया।

56

(मूलपाठः उत्पत्ति ३:१८)

"और तू खेत की उपज खाएगा।"

उत्पत्ति ३:१८

यह फल, अन्न और मेवे के साथ जलप्रलय तक मनुष्य का पूर्ण आहार था। क्या यह पर्याप्त था? जी हाँ! सोचिए, जो लोग परमेश्वर के बताए हुए असली आहार लेते थे वे कई सौ वर्ष जीये।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

57

(मूलपाठः उत्पत्ति ५:२७)

सबसे अधिक वृद्ध व्यक्ति जो इस पृथ्वी पर जीवित था वह मतूशेलह थाः "मतूशेलह की कुल अवस्था नौ सौ उनहतर वर्ष की हुईः तत्पश्चात वह मर गया।"
उत्पति ५:२७

58

जलप्रलय के बाद मनुष्य के जीवन की अवधि विशेष रूप से घट गई। नूह का पुत्र शेम ६०० वर्ष तक जीवित रहा। उसका पोता २३९ वर्ष और
उसका परपोता १७५ वर्ष।
राजा दाऊद के समय तक मनुष्य के जीवन की अवधि घटकर ७० वर्ष हो गई और आप मुझसे सहमत होंगे कि यह बहुत बड़ी गिरावट है।

59

महान जलप्रलय के कारण पृथ्वी पर वनस्पति जीवन सीमित हो गया था। नौका पर एक वर्ष से अधिक रहने पर नूह और उसके परिवार का भोजन भंडार समाप्त हो चला था। इस आपातकालीन स्थिति में परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को पशु का मांस खाने की आज्ञा दी। सारे पशु और वनस्पति भोजन के उपयुक्त नहीं थे। अतः परमेश्वर ने जो भोजन मनुष्य के लिए उचित समझा उसके बारे में निर्देश दिए।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

60

"शुद्ध और अशुद्ध पशुओं के बीच भेद बताया गया। यहाँ तक कि परमेश्वर ने नूह को निर्देश दिया कि कौन से पशु जहाज में ले जाने है और प्रत्येक के कितने - कितने।

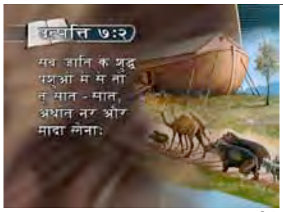

61

(मूलपाठ: उत्पत्ति ७:२)

"सब जाति के शुद्ध पशुओं में से तो तू सात -सात, अर्थात नर और मादा लेना:

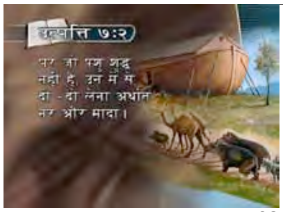

62

पर जो पशु शुद्ध नहीं है, उन में से दो -दो लेना अर्थात नर और मादा।"

उत्पत्ति ७:२

63

यह स्पष्ट है कि नूह जानता था कि किन पशुओं को परमेश्वर ने शुद्ध या अशुद्ध स्वीकृत किया है।

64

बाद में, जब परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र की दासता से छुड़ा कर लाया, तब उसने इस्राएलियों को उनके स्वास्थ्य और दीर्धायु की रक्षा के लिए उचित आहार के नियम दिए थे। परमेश्वर ने यह पहचान कराई कि कौन सा पशु खाने के लिए शुद्ध है और कौन सा अशुद्ध है:

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

65

(मूलपाठः व्यवस्थाविवरण १४:६)

"और जितने पशु चिरे व फटे खुर वाले होते हैं उनका मांस तुम खा सकते हो,

66

पशुओं में से जितने पशु चिरे और फटे खुर वाले और पागुर करने वाले होते हैं।"

व्यवस्थाविवरण १४:६

ध्यान दीजिए कि निर्देश कितने सरल हैं- केवल दो चीजेंः १.) फटे खुर २.) पागुर करने वाले

67

(दृश्य)

पद ४ -६ के अनुसार कुछ थोड़े से सामान्य शुद्ध पशुः गाय, बैल,भेड़, हरिण, बनैली बकरी, सांबर, नीलगाय और बनैली भेड़।

68

(दृश्य)

अशुद्ध पशु जो अब साधारणतया भोजन के लिए प्रयोग किये जाते हैं वे पद ७ और ८ के अनुसार ऊँट, खरहा, सुअर, और शापान हैं। आपको याद है वह दो निर्देश? जो पशु चिरे वा फटे खुर वाले तथा पागुर करते हैं, वे खाने के लिए उचित हैं। यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि कुछ पशु पागुर तो करते हैं पर उनके खुर चिरे नहीं होते।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

69

उदाहरण के लिए, सुअर के खुर फटे तो होते हैं परन्तु वे पागुर नहीं करते, ये अशुद्ध हैं।

बाइबिल में सुअर के लिए कुछ प्रत्यक्ष निर्देश हैं।

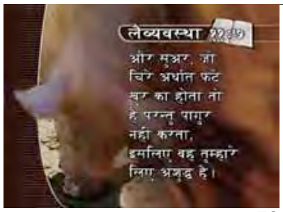

70

(मूलपाठः लैव्यवस्था ११:७,८)

"और सुअर, जो चिरे अर्थात फटे खुर का होता तो है परन्तु पागुर नहीं करता, इसलिए वह तुम्हारे लिए अशुद्ध है।

71

इनके मांस में से कुछ न खाना, और इनकी लोथ को छूना भी नहीं ये तो तुम्हारे लिए अशुद्ध है।"

लैव्यवस्था ११:७,८

बहुत से पशु, जिन्हें परमेश्वर ने अशुद्ध कहा है, कूड़ा साफ करने वालों के वर्ग में आते हैं। ये निर्देश देते समय परमेश्वर ने किसी भी अच्छी वस्तु पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया। वह जानता है कि कौन से स्वास्थ्यवर्धक हैं और कौन से रोग और बीमारी का कारण हो सकते हैं।

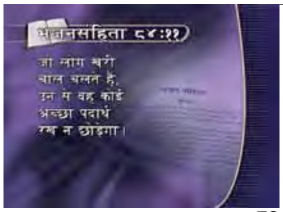

72

(मूलपाठः भजनसंहिता ८४:११)

"जो लोग खरी चाल चलते हैं, उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा।"

भजनसंहिता ८४:११

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

73

सूअर मैल साफ करने वाला पशु है। कूड़ा मिश्रित भोजन सूअर के द्वारा खाया जाता है और वह कुछ ही घंटों में पच जाता है ।दूसरी ओर गाय के पास पेचीदा पाचन क्रिया है। मांस में परिवर्तित होने के लिए इसके भोजन को ४८ घंटे लगते हैं। उसकी निष्कास प्रणाली भी जटिल है, इसलिये शरीर के अधिकांश विकार बाहर निकल जाते हैं।

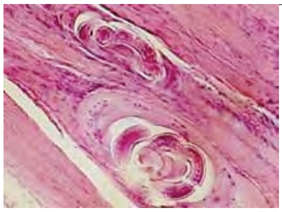

74

सूअर का मांस में प्रायः शरीर में बढ़ने वाला महीन कीड़ा या कीटाणु होते हैं। जब मनुष्य के शरीर मे इनके अंडे फूटते है तो इनके कृमि आंतो को भेद कर रक्त में प्रवेश करके अन्य भागों में पहुँच जाते हैं। ये कृमि शरीर में अंतड़ियों की दीवारों में बिल बना लेते हैं और इनकी संख्या कई गुणा बढ़ जाती है।

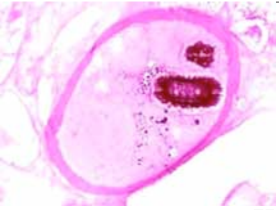

75

ये कीटाणु रक्त प्रवाह में प्रवेश करते हैं और शरीर के दूसरे अंगों में पहुँच जाते हैं। इस कीटाणु का रोग एक प्राणनाशक रोग है, जो कीटाणु की खाई गई संख्या पर आश्रित है। प्रायः इस बीमारी को जोड़ों की सूजन या गठिया या ज़हरीला भोजन समझा जाता है।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

76

ममी के परीक्षण से यह पता चला है कि मूसा के समय के लोग भी ट्रिकिना कृमि से पीढ़ित थे। परमेश्वर अधिक अच्छा जानता है –इसे छोड़ दीजिए। परमेश्वर ने मछलियों के बारे में भी निर्देश दिए:

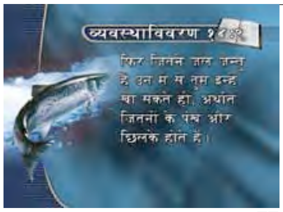

77

(मूलपाठ: व्यवस्थाविवरण १४:९, १०)
"फिर जितने जल जन्तु हैं उन में से तुम इन्हें खा सकते हो, अर्थात जितनों के पंख और छिलके होते हैं।

78

परन्तु जितने बिना पंख और छिलके के होते हैं उन्हें तुम न खाना, क्योंकि वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।"
व्यवस्थाविवरण १४:९,१०

79

यह एकदम स्पष्ट है, और फिर से ध्यान दीजिए कि दो निर्देश हैं जिससे कि वह आसानी से याद रहें ।

80

१. उनके पंख हैं, और

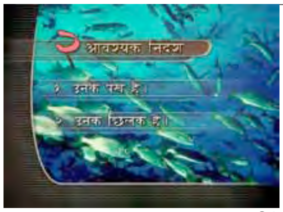

81

२. उनके छिलके हैं।
क्या आप पूरे संसार में खाए जाने वाले उन समुद्री जीवों के विषय में सोच सकते हैं जिनके पंख और छिलके नहीं है?

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

82

लोमालिंडा महाविद्यालय के डा. ब्रूस हाल्सटेड को सरकार के द्वारा कहा गया कि वे सेना के लिए अनुसंधान करें और अपना निर्णय दें कि कौन सी मछली मानव प्राणी के लिए ठीक है और कौन सी जहरीली है।

83

यदि सेना के जवान जहाज के डूबने से कहीं विरानें में असहाए रह जाएँ तो उन्हें पता होना चाहिए कि जीवित रहने के लिए कौन सी मछली वे खा सकते हैं और कौन सी मछली विषैली है। जब उनका कार्य सम्पन्न हुआ तो डॉक्टर हाल्सटेड इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ३५०० वर्ष पूर्व जो मापदण्ड परमेश्वर ने इस्राएलियों को दिया था उसी का प्रयोग जल और थल सेना को करना है।

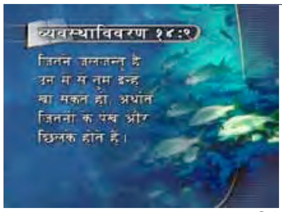

84

(मूलपाठः व्यवस्थाविवरण १४:९)
"जितने जलजन्तु हैं उन में से तुम इन्हें खा सकते हो, अर्थात जितनों के पंख और छिलके होते हैं।"
परमेश्वर जानता था कि वे कैसे बने थे और हम कुछ चीजों को क्यों खाएँ और अन्य कुछ चीजों को क्यों न खाएँ।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

85

आप पूछ रहे होंगे, "पक्षियों के विषय में क्या निर्देश हैं?", बाइबिल यह महत्वपूर्ण निर्देश देती है:

86

(मूलपाठ: व्यवस्थाविवरण १४:११,१२)

"सब शुद्ध पक्षियों का मांस तो तुम खा सकते हो।

87

परन्तु इनका मांस न खाना..."

पद ११, १२

88

(दृश्य)

परमेश्वर उनकी सूची देता है:

गिद्ध, कीट पतंगे, उकाब, बाज, काग, शुतर्मुर्ग, उल्लू, सारस, बगुले, चिमगादड और जो इन्हीं की जाति के है।

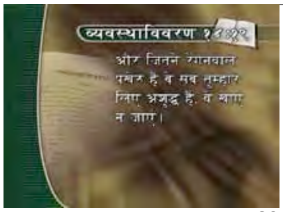

89

(मूलपाठ: व्यवस्थाविवरण १४:१९)

और तब परमेश्वर ने कहा, "और जितने रेंगनेवाले पखेरु हैं वे सब तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं, वे खाएँ न जाएँ।"

पद १९

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

90

(मूलपाठः लैव्यवस्था ३:१७)
परमेश्वर ने आगे के निर्देश दियेः "यह तुम्हारे निवासों में तुम्हारी पीढ़ी– पीढ़ी के लिए सदा की विधि ठहरेगी।"

91

तुम चरबी और लहू कभी न खाओ।"
लैव्यवस्था ३:१७

92

धर्मावलंबी यहूदी आज भी इन निर्देशों का पालन करते हैं। जब वे एक पशु का वध करते हैं, तो वे उसे उलटा लटकाते है ताकि उसका लहू बह जाए। तब उस पशु को काटा जाता है और नमक के घोल में डुबाया जाता है ताकि उसका बचा हुआ लोहू निकल जाए।

93

चर्बी निकाल दी जाती है और नहीं खाई जाती। वर्षो से लोग यह सोचते थे कि चर्बी और लोहू न खाने की आज्ञा केवल एक धार्मिक प्रतिबन्ध था जो परमेश्वर के द्वारा दिया गया था।

94

आधुनिक अनुसंधान परमेश्वर की आज्ञा की बुद्धिमानी को निश्चित करती है।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

95

अब हम जानते हैं कि रक्त में उपद्रव्य, कीटाणु, विषैले तत्व, और शरीर की बेकार चीजें पाई जाती हैं। बहुत सी बीमारियाँ रक्त के द्वारा लगती हैं।

96

हम यह भी जानते हैं कि अधिक मात्रा में पाई जाने वाली चर्बी जो दुग्ध पदार्थों और मांस में पाई जाती हैं रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को बढ़ाती है। यह कोलेस्ट्रॉल नाड़ियों और हृदय के रोगों का प्रमुख कारक है। यदि मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता पर विश्वास करके भोजन का सही चुनाव करें तो कितनी ही बीमारियों से बच सकता है।

97

स्वास्थ्य के लिए व्यायाम

बाइबिल कहती है कि आदम और हव्वा को बनाने के बाद परमेश्वर ने उन्हें कुछ कार्म करने के लिए दिया था। – कुछ उपयोगी कार्य और व्यायामः

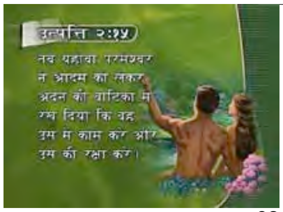

98

(मूलपाठः उत्पत्ति २:१५)

"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया कि वह उस में काम करे और उस की रक्षा करे।"

उत्पति २:१५

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

99

व्यायाम बहुत सी बीमारियों से शरीर की रक्षा करता है!
निष्क्रय शरीर विकृत हो जाता है।

100

व्यायाम मांसपेशियों के आकार को और रक्त शिराओं को बढ़ाता है।

101

फेफड़ों की कार्यक्षमता बढ़ जाती है, और वे कम प्रयत्न के साथ अधिक श्वास लेने में योग्य हो जाते हैं।

102

हृदय की क्षमता बढ़ती है और प्रत्येक धड़कन के साथ अधिक रक्त प्रवाह होता है। इस प्रकार जीवनदायी आक्सीजन की मात्रा भी शरीर में बढ़ती है और शरीर पूर्णरूप से विकसित हो जाता है। शक्ति द्वारा उत्पन्न की गई आक्सीजन कोशिकाओं तक पहुँचाई जाती है, जो शरीर की सम्पूर्ण दशा को सुधारती है। आदम और हव्वा के पाप करने के पश्चात परमेश्वर ने उनका परिश्रम और कार्यभार बढ़ा दिया था।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

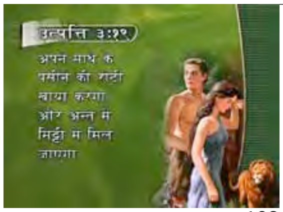

103

(मूलपाठः उत्पत्ति ३:१९)

परमेश्वर ने कहा, "अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा।"

उत्पत्ति ३:१९

उसने यह भी कहा कि भूमि श्रापित होगी। कांटे तथा ऊंटकटारे उत्पन्न होंगे और "तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा।" अध्याय १७, १८

104

परमेश्वर जानता था कि मनुष्य को व्यायाम की आवश्यकता है और इसकी आवश्यकता केवल उसके शरीर के लिए ही नहीं परन्तु उसे परेशानियों से दूर रखने के लिए भी है। किसी ने कहा "आलसीपन शैतान का कारखाना है।"

105

(मूलपाठः निर्गमन २०:९)

परमेश्वर ने कहा, "छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना।"

निर्गमन २०:९

यदि सब लोग छः दिन परिश्रम करे तो उन्हें व्यर्थ की परेशानियों में फंसने का समय ही नहीं मिलेगा।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

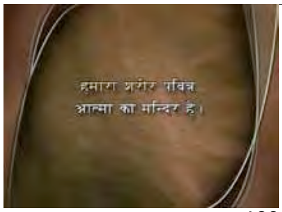

106

हमारा शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है। हमारे शरीर की देखभाल का महत्व तभी समझा जा सकता है जब हम यह जाने कि यह परमेश्वर के लिए कितना महत्वपूर्ण है।

107

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों ६:१९,२०)
पौलुस प्रेरित ने कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है,

108

जो तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है और तुम अपने नहीं हो?

109

क्योंकि तुम दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।"
१ कुरिन्थियों ६: १९,२०

110

सृष्टि के द्वारा और उद्धार के द्वारा मनुष्य परमेश्वर की सम्पत्ति है। परमेश्वर ने हमारे लिए जो मूल्य चुकाया वह कलवरी पर उसके पुत्र का बलिदान था। क्योंकि मनुष्य का उद्धार ऐसा अनन्त मूल्य चुकाकर किया गया है, कि उसे प्रत्येक कार्य में परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

111

(मूलपाठ : १ कुरिन्थियों १०:३१)

"सो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।" १ कुरिन्थियों १०:३१

प्रत्येक व्यक्ति जो परमेश्वर से सच्चा प्रेम करता है अपने शरीर को नाश या अपवित्र करने वाली वस्तुओं से अलग रहेगा।

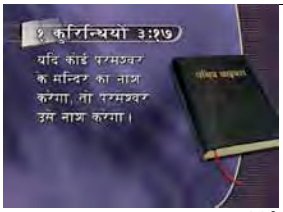

112

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों ३:१७)

"यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा, तो परमेश्वर उसे नाश करेगा।

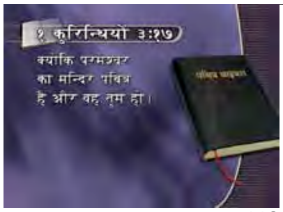

113

क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है और वह तुम हो।"

१ कुरिन्थियों ३:१७

आप सोच रहे हैं कि एक व्यक्ति अपने शरीर का किस प्रकार नाश कर सकता है। पौलुस कुछ चीजों की सूची बनाता है जिनको हमें छोड़ने की आवश्यकता हैः

114

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों ६:९, १०)

"धोखा न खाओ, न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगमन, न लुच्चे, न पुरुषगामी,

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

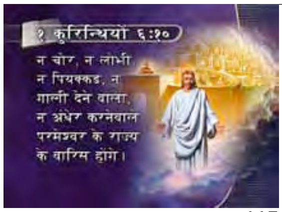

115

न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देने वाला, न अंधेर करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।"

१ कुरिन्थियों ६:९,१०

बाइबिल की सूची में अनैतिक एंव काम विकृति की आदतें शरीर को अशुद्ध करती हैं। इसकी सूची में पियक्कड़पन भी है।

116

(मूलपाठः नीतिवचन २०:१)

सुलेमान ने लिखा है, "दाखमधु ठट्ठा करनेवाला और मदिरा हल्ला मचानेवाली है, जो कोई उसके कारण चूक करता है, वह बुद्धिमान नहीं।"

नीतिवचन २०:१

117

(मूलपाठः नीतिवचन २३:३१-३३)

और फिर सेः "जब दाखमधु लाल दिखाई दे, और कटोरे में उसका सुंदर रंग होता है, तब उसको न देखना;

118

क्योंकि अंत में वह सर्प की नाई डसता है, और करैत के समान काटता है।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

119

तू विचित्र वस्तुएँ देखेगा, और उल्टी -सीधी बातें बकता रहेगा।"

नीतिवचन २३:३१-३३

120

शराब पीना दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्या है। आधे से अधिक मोटर कार दुर्घटना शराब के नशे के प्रभाव में आये चालक या पैदल चलने वाले की गलती से होती है।

121

आधे से अधिक हत्याओं में या तो हत्या करने वाले या चोट को सहने वाला,या फिर दोनो, शराब के नशे में होते हैं!

122

अलकोहल शरीर की विटामिन के प्रयोग की शक्ति खो बैठता है और अलकोहलिक पेय में पाई जाने वाली चीनी (जैसे कि अधिकतर सोफ्ट ड्रिंकस् में) शरीर में संसर्ग दोष से लड़ने की शक्ति को कम कर देती है।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

123

शराबी के यकृत में चर्बी की मात्रा बढ़ जाती है और उसकी यकृत के रोग से मरने की संभावना बहुत अधिक बढ़ जाती है। उसका जीवन लगभग १२ वर्ष छोटा हो जाता है। नए आंकड़ों के अनुसार, दस में से एक व्यक्ति जो पहली बार शराब पीता है उसे शराब की लत लग जाती है।

124

हाल ही में की गई खोज बतलाती है कि शराब के रक्त प्रवाह में पहूँचते ही मस्तिष्क के बहुत से कोष मर जाते हैं और पीने वाले पिता

125

और माताओं के पैदा होने वाले बच्चे न पीने वालों की अपेक्षा अधिक संख्या में अपंग पैदा होते हैं। परन्तु मसीहियों के लिए शराब के प्रयोग के बड़े परिणाम हैं।

126

मसीहियों को शैतान की परीक्षाओं से बचने के लिए अपने मस्तिष्क का पूर्ण रूप से प्रयोग करना चाहिए। उन्हें अपनी इन्द्रियों और विवेक को सदा सजग रखना चाहिए ताकि वे सही और गलत का अन्तर पहचान सकें।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

127

जब क्रूस पर सिपाहियों ने उन्हें सिरका पिलाना चाहा था, जो दर्द कम करने के लिये था, तब यीशु ने मूर्च्छित अवस्था में उस नशीली औषध की एक मात्रा पीने से इन्कार कर दिया था।

128

यद्यपि यीशु ने दुखदायी दर्द को सहा, किन्तु मृत्यु तक उन्होंने वह कुछ भी सेवन नहीं किया जो उनके मस्तिष्क को धुंधला कर दें।

129

बहुत सी दूसरी आदतें अच्छे स्वास्थ्य को गंभीर रूप से हानि पहुँचाती हैं। सिगरेट पीने वालों के फेफड़ों के कैंसर से मरने की संख्या सिगरेट न पीने वालों से बहुत अधिक है। और कैंसर तम्बाकू का केवल एक हत्यारा नहीं है। सिगरेट पीने वालों का हृदय रोग से मृत्यु की सम्भावना न पीने वालों से १०३ प्रतिशत या उससे अधिक होती है।

130

और वातस्फिती जैसी बीमारी प्रत्येक वर्ष ५५,००० जाने ले लेती है! तम्बाकू से बनने वाला जहरीला पदार्थ धमनियों के सिकुड़ने का भी कारण है।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

131

इस प्रकार वसा निर्माण एंव धमनियों का पतलापन हृदय को व शरीर के अन्य हिस्सों तक रक्त का प्रवाह कम कर देता है। ऐसा होने पर धमनी में यदि एक सुक्ष्म सा रक्त का थक्का भी आ जाए तो हृदय गति रुक सकती है या लकवा हो सकता है।

132

धूम्रपान करने वाला मनुष्य बुढ़ापे का प्रथम शिकार होता है क्योंकि मस्तिष्क को आक्सीजन पूर्णरूप से प्राप्त नहीं होती है ।

133

गर्भवती महिलाएं यदि धूम्रपान करती हैं तो वे अपने बच्चे की रक्तवाहिनियों को हानि पहुँचाती हैं। नवजात शिशुओं की मृत्युदर में धूम्रपान करने वाली महिलाओं के शिशुओं की संख्या २७ प्रतिशत अधिक होती है ।।

134

२००१ में केवल अमेरिका में ही सिगरेट पीने वालों की ५००,००० से भी अधिक मौतें हुई थीं।

135

(मूलपाठ: निर्गमन २०:१३)

परमेश्वर ने कहा, "तू खून न करना।"

निर्गमन २०:१३

कितने लोग हैं जो खाने पीने और धूम्रपान जैसी चीजों के द्वारा अपनी हत्या कर रहे हैं?

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

136

किसी ने कहा है कि आत्महत्या करने का सबसे साधारण हथियार चाकू, कांटा, और चम्मच है। तब भी हम प्यालों और बोतलों को भी उसमें जोड़ सकते हैं!

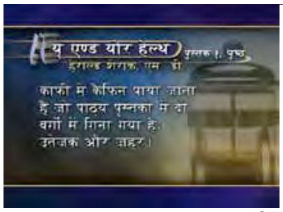

137

"काफी में कैफिन पाया जाता है जो पाठ्य पुस्तकों में दो वर्गो में गिना गया है: उतेजक और ज़हर।
हेराल्ड श्रेयाक, एम. डी. यू एण्ड योर हेल्थ, पुस्तक १, पृष्ठ ४१३

138

चाय और कोला पेय में भी कैफिन पाया जाता है। ये सब पेय अब हृदय रोग से संबधित है।। स्नायु अव्यवस्थित हो जाते हैं, और मूत्राशय में कैंसर हो जाता है।

139

यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो कैफिन का इन्जेक्शन लेने दूसरे कमरे में कुछ ही घन्टे बाद बार -बार जाता है तौ आप उसे उसका अभ्यस्त कहते हैं। परन्तु कितने ऐसे हैं जो ऐसा काफी और कोला पेय के साथ कर रहे हैं

140

सच्चे संयम का अर्थ है उन वस्तुओं से परहेज करना जो नुकसानदायक है, और उसका सही मात्रा में प्रयोग करना जो अच्छा है।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

141

कुछ लोग लाभदायक पदार्थों का भी अत्यधिक प्रयोग करने लगे हैं!

संसार के कई भागों में यह भी लोगों के लिए स्वास्थ्य समस्या बन गई है।

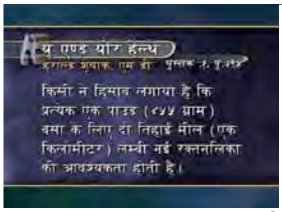

142

"किसी ने हिसाब लगाया है कि प्रत्येक एक पाउंड (४५५ ग्राम) वसा के लिए दो तिहाई मील (एक किलोमीटर) लम्बी नई रक्तनलिका की आवश्यकता होती है।

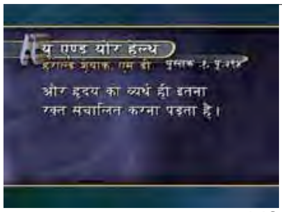

143

और हृदय को व्यर्थ ही इतना रक्त संचालित करना पड़ता है।"

हेराल्ड श्रेयाक, एम. डी.,यू एण्ड योर हेल्थ, पु.१, पृ. ३९५

144

अधिक वजन वाले व्यक्तियों के हृदय, गुर्दे, यकृत, और फेफड़ों को अधिक काम करना पड़ता है। अधिक वजनी व्यक्तियों को सोलह बीमारियों को सहन करना पड़ता है। जब कि उनके पतले मित्रों के साथ यह बात नहीं है।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

145

परमेश्वर हम से चाहता है कि हम अपने शरीर की देखभाल करें ताकि हम उसकी अच्छाई के लिए अपने जीवन का आनन्द ले सकें।

वह हमसे चाहता है कि हम उत्तरदायी, नैतिक, आनन्दायक लोग हों। वह हमसे चाहता है कि हमारे पास बहुतायत से जीवन हो। हमारा कितना लम्बा और कितना स्वास्थ्यपूर्ण जीवन जियेंगे यह उसके आदेश का पालन करने पर निर्भर है।

146

विश्राम और शैथिल्य

यीशु छुट्टियों में और तनाव से छुटकारा पाने में विश्वास करते थे। लोगों की भीड़ के साथ कठिन दिन बिताने के बाद यीशु ने अपने शिष्यों से कहा,

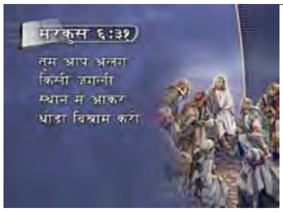

147

(मूलपाठः मरकुस ६:३१)

"तुम आप अलग किसी जंगली स्थान में आकर थोड़ा विश्राम करो।"

मरकुस ६:३१

यीशु चाहते हैं कि हम कार्य को विश्राम और शैथिल्य के साथ संतुलित रखें।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

148

इसलिए उसने हमें सब्त दिया। परमेश्वर जानता है कि हमें अपनी समस्याओं और अपने कार्यों को भूल कर उसके साथ समय बिताने की आवश्यकता है।

149

आपका व्यस्त कार्यों से विश्राम करने का समय मरुस्थल में नहीं हो सकता, जो भी ऐसा करना वर्ष के निश्चित समय में विश्रामदेय हो सकता है। आप शायद पहाड़ों में एकान्त स्थल में, जहाँ पेड़ और गहरी झीलें हों और आप के व्याकुल हृदय को शान्त कर सकती हों, जाना चाहें।

150

जैसा भी हो, आपको इतनी भीड़ और शोर मचाने वाले शहरों से दूर एक जगह तलाश करना आवश्यक है। यदि आप थोड़ा मनोरंजन कर सकते हैं, तो और भी अच्छा है।

151

हाँ, परमेश्वर आप से चाहता है कि आप के पास यहाँ छोटा सा स्वर्ग हो और नई बनी पृथ्वी पर रहने के लिए आप तैयार हों जहाँ सब बीमारियाँ और विपत्तियाँ हमारी संसार से हमेशा के लिए दूर हो जाए।

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

152

"मेरे लिए यह बहुत अच्छी बात है।" आप कहते हैं। मैं वहाँ रहना चाहता हूँ, परन्तु मेरी कुछ आदतें हैं जिनसे मै तुरंत निकल नहीं सकता। आज आपके लिए अच्छा संदेश है। परमेश्वर आप से यह आशा नहीं करता है कि आप स्वयं इसे करें।

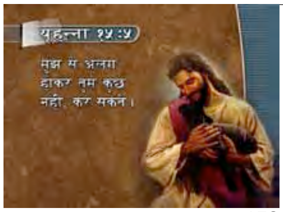

153

(मूलपाठः यूहन्ना १५ :५)

वास्तव में, यीशु ने कहा, "मुझ से अलग होकर तुम कुछ नही, कर सकते।"

यूहन्ना १५ :५

अपनी शक्ति के द्वारा हम गलत आदतों से निकल नहीं सकते। हमारा उद्धारकर्त्ता हमारे साथ है, हमारी सहायता करने के लिए। पौलुस इस भेद को जानता था।

154

(मूलपाठः फिलिप्पियो ४:१३)

उसने कहा, "जो मुझे सामर्थ देता है मसीह में मैं सब कुछ कर सकता हूँ।"

फिलिप्पियो ४:१३

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

155

एक महिला ऐसी सभाओं में आती रही थी। एक शाम जब पादरी साहब उससे मिले तो वे उससे परमेश्वर के परिवार में लौटने की बात करने लगे। उसकी आंखे चमक उठीं जब उसने उत्तर दिया, "मैं चाहती तो हूँ परन्तु मैं कर नहीं सकती। मैं धूम्रपान करती हूँ।" उसने उसे उसके नाम से पुकारा और कहा, "क्या आप विश्वास करती हैं कि यीशु चाहता है कि आप इस आदत पर विजय प्राप्त करें?" "ओह, हाँ मैं विश्वास करती हूँ। परन्तु मैं कर नहीं सकती मै बहुत कमजोर हूँ।" उसने कहा, "क्या मैं बाइबिल के पद पढ़ सकता हूँ?" उसने अपनी बाइबिल खोलकर १ यूहन्ना ५:१४ निकाला,

"उसमें हमारा यही विश्वास है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, वह हमारी सुनता है।" पादरी ने मरियम से पूछा "क्या आप धूम्रपान करना छोड़ सकती हैं?" "नहीं।" उसने उत्तर दिया। "ठीक है, क्योंकि बाइबिल कहती है, कि उसमें हमारा यही विश्वास है। इसलिए विश्वास कहाँ है?" उसने उत्तर दिया, "उसमें" (प्रभु में)

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

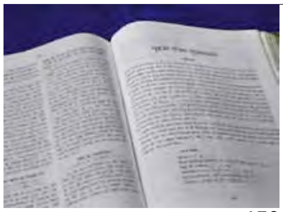

156

उसने एक बार और वह पद पढ़ा, यह जोड़ते हुए: "यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, केवल धूम्रपान छोड़ने के विषय को छोड़कर तो वह हमारी सुनता है।" मरियम की ओर मुड़कर उसने पूछा, "क्या आप मुझे अपनी बाइबिल में यह लिखने के लिए दे सकती हैं?" "नहीं, नहीं" उसने कहा, "मैं बाइबिल बदलना नहीं चाहती।" पादरी ने कहा, "क्या यह आपके लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है कि आप धूम्रपान करना छोड़ दें?"

"हाँ, यह है," उसने उत्तर दिया।

"तब क्या आप विश्वास के साथ यीशु से शक्ति मांग सकती हैं जो उसने प्रतिज्ञा की थी?" "ओह हाँ," उसने उत्तर दिया। "मैं विश्वास करती हूँ मैं कर सकती हूँ।" "मेरे पास एक और प्रश्न है। धूम्रपान छोड़ने के लिए आप कब इस शक्ति को प्राप्त करेंगी? क्या एक सप्ताह में, एक महीना, तीन महीने में? आप कब इस शक्ति को प्राप्त करेंगी?" उसने तब अपनी बाइबिल खोलकर यूहन्ना १:१२ निकाला और पढ़ा, "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया। यीशु को ग्रहण करना अधिकार को ग्रहण करना है।" उसने पढ़ना जारी रखा। "अब आज

१५ - समय को पीछे लौटाएँ

रात हमने देखा कि आप यीशु में विश्वास कर सकती हैं। हमने देखा कि उसकी इच्छा के अनुसार जो कुछ भी हम मांगते हैं वह हमें देता है और हम जानते हैं कि यह उसकी इच्छा है कि आप धूम्रपान करना छोड़ दें हमने अच्छी तरह देखा कि जब आप उसको प्राप्त कर लेंगी, तो उसकी शक्ति को भी प्राप्त कर लेंगी।"

157

उसकी सहायता से आप बहुत लम्बा स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। एक प्रसन्नतापूर्ण जीवन यहाँ और फिर नई बनी पृथ्वी पर अनन्त जीवन का आनन्द ले सकते हैं। यीशु के पास पहुँचिए –वह आपके पास पहुँच रहे हैं!

१६ - एक नया आरम्भ

1

आप फिर से आरम्भ कर सकते हैं

2

(दृश्य)

मार्च १९९२ में, एक मसीही प्रचारक ने मास्को के क्रेमलिन सभागृह में कई धर्म सभाएँ की। एक सभा के बाद वे अपने छोटे से दफ्तर में बैठे थे कि उनका दरवाजा अचानक खुला।

१६ - एक नया आरम्भ

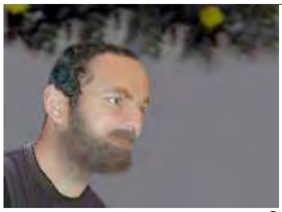
3

और एक उलझी दाढ़ी वाला हट्ठा - कट्ठा नवयुवक कमरे में घुस आया। यह सोचकर कि वह उस पर आक्रमण करने वाला है, प्रचारक पीछे हट गया। अनुवादक ने समझाया कि यह आदमी मास्को का बदनाम अपराधी था। वह अट्ठाईस बार जेल जा चुका था। अपने अपराधों के बोझ से दबा, और भविष्य के प्रति निराश, वह शान्ति की खोज में था। प्रचारक ने शान्त भाव से १ यूहन्ना १ : ९ पढ़ा :"यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।"उसने अशांत व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ाये गये चोर की कहानी सुनाई जिसे क्षमा प्राप्त हुई। उसने उसे विश्वास दिलाया, "यीशु आज भी वही उद्धारकर्ता है।" वह क्षमा प्रदान करता है। वह छुटकारा दिलाता है। वह उद्धार दिलाता है। ले लो ! आनिन्दत रहो। परमेश्वर की महिमा करो। उस नवयुवक की आँखों से आँसू गिरने लगे। उसने घूटने टेके और परमेश्वर से क्षमा प्राप्त की।

१६ - एक नया आरम्भ

4

एक वर्ष बाद प्रचारक मास्को आया। नयी बनी कलीसिया के विश्वासियों के साथ वह परमेश्वर की महिमा कर रहा था जब उसने उस नवधर्मी अपराधी को गाने वालों के दल में देखा।

5

उस पुराने -अपराधी के चेहरे से नयी शान्ति झलक रही थी। यीशु को स्वीकार करने के कारण उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था। बाइबिल की शिक्षा ने उसके जीवन को बदल डाला था और बाइबिल के उसने अनुसार बपतिस्मा ले लिया था। बाइबिल के अनुसार बपतिस्मा परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा जीवन में परिवर्तन आने का प्रतीक है। बपतिस्मा यीशु मसीह में नये जीवन का साक्षी है। शाऊल की कहानी, जो बाद में पौलुस प्रेरित बन गया, यीशु द्वारा जीवन में लाए परिवर्तन का एक शक्तिशाली उदाहरण है।

6

शाऊल जन्म से रोमी नागरिक था और उसने यरूशलेम के अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पायी थी। शाऊल यहूदी धर्म के लिये उत्साही था और अपने विश्वास की रक्षा के लिये पहचाना जाता था।

१६ - एक नया आरम्भ

7

शाऊल के धर्म-परिवर्तन के बाद उसका नाम पौलुस हो गया-वह खुद विवरण देता हैं कि उसने मसीही लोगों को खत्म करने के लिये क्या किया।

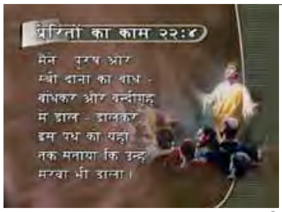

8

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम २२ : ४, ५)

"मैंने .....पुरुष और स्त्री दोनों को बांध -बांधकर और बन्दीगृह में डाल -डालकर, इस पंथ को यहाँ तक सताया कि उन्हें मरवा भी डाला.....

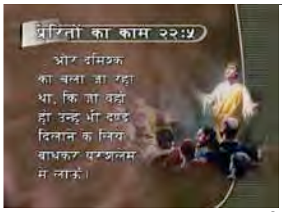

9

और दमिश्क को चला जा रहा था, कि जो वहाँ हों उन्हें भी दण्ड दिलाने के लिये बांधकर
यरूशलेम में लाऊँ।"
प्रेरितों का काम २२ : ४, ५

10

जब वह चलते-चलते दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एकाएक एक बड़ी ज्योति आकाश से उसके चारों ओर चमकी और वह भूमि पर गिर पड़ा।

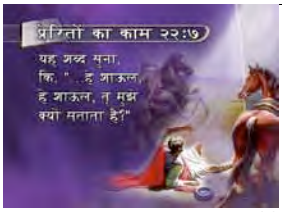

11

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम २२ : ७, ८)

"यह शब्द सुना, कि, "..हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?"

12

और मैंने उत्तर दिया, "हे प्रभु तू कौन है?" और उसने उत्तर दिया

१६ - एक नया आरम्भ

13

"मैं यीशु नासरी हूँ, जिसे तू सताता है।"
प्रेरितों का काम २२ : ७, ८

14

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम २२ : १०)
घमण्डी फरीसी ने नम्रता से परमेश्वर से कहा, ".... हे प्रभु मैं क्या करूँ? प्रभु ने मुझ से कहा ...... उठकर दमिश्क में जा,

15

और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहाँ तुझ से सब कह दिया जाएगा।"
प्रेरितों का काम २२ : १०

16

शाऊल तेज ज्योति के कारण अन्धा हो गया था और दमिश्क के एक घर में उसे पकड़ कर लाया गया।

१६ - एक नया आरम्भ

17

तीन दिन तक शाऊल के पास परमेश्वर के लोगों के लिये सोचने का समय था जिनको उसने सताया और दर्द दिया था। कितनी बार उसने घोषणा की थी कि यीशु उद्धारकर्ता नहीं था और उसके अनुयायी भ्रमित कट्टरपंथी थे। परमेश्वर के लोगों पर दोष लगाते तथा उनके विरुद्ध झूठी गवाही देते हुए उसने जगत के उद्धारकर्ता के विरुद्ध गवाही दी थी! शाऊल के हृदय को किस दुःख ने महसूस करवाया होगा। शाऊल के पास यही सही समय था कि वह अपने परमेश्वर से सबकुछ ठीक कर सकता था।

18

वह तीन दिन तक पूरे अंधकार में बैठा रहा और तब परमेश्वर ने हनन्याह नाम एक भक्त को उसके पास भेजा।

तब हनन्याह ने शाऊल से कहा,

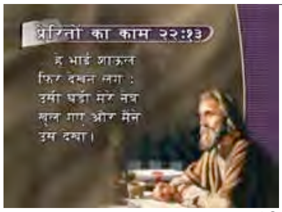

19

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम २२ : १३ - १५)

"...हे भाई शाऊल फिर देखने लग : उसी घड़ी मेरे नेत्र खुल गए और मैंने उसे देखा।"

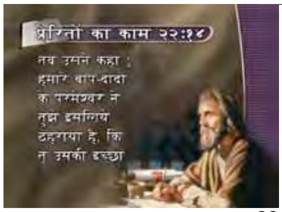

20

तब उसने कहा, "हमारे बाप-दादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिये ठहराया है, कि तू उसकी इच्छा को जाने,

१६ - एक नया आरम्भ

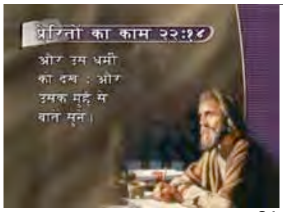

21

और उस धर्मी को देख : और उसके मुहँ से बातें सुने।

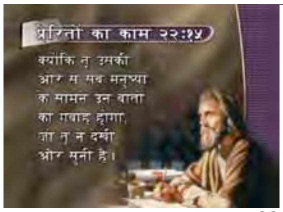

22

"क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह् होगा, जो तू ने देखी और सुनी है।"

प्रेरितों का काम २२ : १३ - १५

तब, शाऊल को आज्ञा मिली कि वह अपने जीवन में आगे बढ़ और बीती हुई बातों को बन्द कर दे,

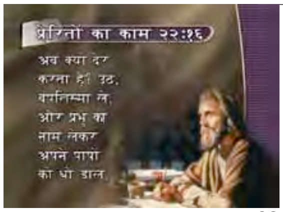

23

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम २२ : १६)

हनन्याह् ने शाऊल से कहा, "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल,

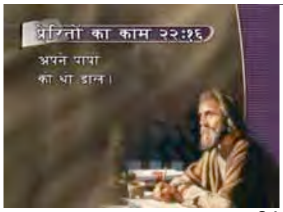

24

अपने पापों को धो डाल।"

प्रेरितों का काम २२ : १६

25

इस प्रकार से शाऊल अपने परमेश्वर से हमेशा के लिये जुड़ गया। शाऊल के नये जीवन के लिये बपतिस्मा एक दरवाजा था। धर्म के नाम पर शाऊल ने जो घृणित कार्य किये थे उनसे उसको छुटकारा पाना था। उसे शुद्व होना था। वह जानता था कि उसे परमेश्वर की महिमा और क्षमा की आवश्यकता है।

१६ - एक नया आरम्भ

26

जब उसका बपतिस्मा हुआ, तब वह जानता था कि परमेश्वर ने उसे क्षमा कर दिया है। सताने वाला शाऊल पौलुस बन गया और यीशु के लिये जीवनपर्यन्त अति उत्साही रहा!

27

क्या आपने कभी यह सोचा है कि आप फिर से नया जीवन आरम्भ कर सकते हैं और जितनी भी गलतियाँ बीते-दिनों में की हैं वे सभी धुल जाएंगी?

28

(दृश्य)

परमेश्वर जानता था कि हमलोगों को यही अनुभव चाहिये। इस कारण उसने बपतिस्मे को चिन्ह के रूप में स्थापित किया जिससे हमलोग उस समय से उसके साथ जुड़ जायें और यीशु में नया जीवन आरम्भ करें। पाप के लिये मृत्यु और नये जीवन के आरम्भ का बपतिस्मे से अच्छा और क्या चिन्ह हो सकता है - पानी के अन्दर नया जीवन पाना?

29

मसीही बपतिस्मा का आरम्भ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला से होता है, एक भविष्यवक्ता जो मन - परिवर्तन पर प्रचार करता यहूदिया के बियाबान में प्रकट हुआ। यरदन नदी को जाते हुए सारे रास्ते यूहन्ना को सुनने जाते लोगों से भरे थे।

१६ - एक नया आरम्भ

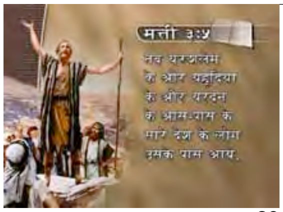

30

(मूलपाठ : मत्ती ३ : ५, ६)

बाइबिल कहती है, "तब यरूशलेम के और यहूदिया के और यरदन के आस-पास के सारे देश के लोग उसके पास आये,

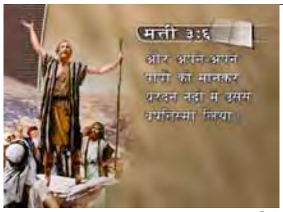

31

और अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया।"

मत्ती ३ : ५, ६

32

अपनी बढ़ई की दुकान बंद करके और अपनी माँ को विदा कह कर यीशु भी यरदन नदी के रास्ते गये। जब यूहन्ना ने यीशु को दूर से आते देखा तब उसने उसे पहचान लिया और प्रचार करना बंद कर दिया।

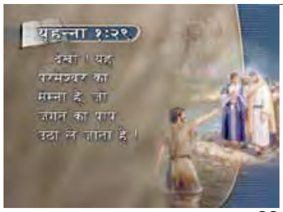

33

(मूलपाठ : यूहन्ना १ : २९)

यीशु की ओर इशारा करते हुए, यूहन्ना ने कहा, "…..देखो! यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है!"

यूहन्ना १ : २९

१६ - एक नया आरम्भ

34

यूहन्ना ने बलि के सच्चे मेम्ने को पहचान लिया था। जो भी उसके बलिदान को स्वीकार करे उन सभी के पापों के लिए वह मरने वाला था।

यूहन्ना हिचकिचा रहा था जब यीशु ने बपतिस्मा देने के लिए कहा।

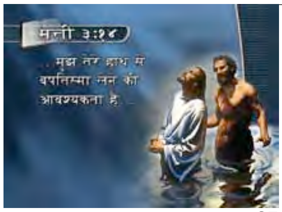

35

(मूलपाठ : मत्ती ३ : १४)

उसने कहा, "......मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है।"

मत्ती ३ : १४

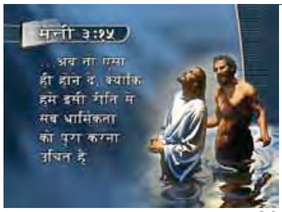

36

(मूलपाठ : मत्ती ३ : १५)

लेकिन यीशु ने दबाव डाला, "......अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।"

पद १५

यूहन्ना जानता था की यीशु के पास पापों को स्वीकार करने के लिए कुछ नहीं है।

और यीशु को अपने जी उठने के विश्वास को दिखाने की आवश्यकता नहीं थीं।

१६ - एक नया आरम्भ

37

यीशु ने बपतिस्मा देने के लिये कहा ताकि वह मनुष्यों के साथ पहचाने जायें। वे चाहते थे कि हमारे सामने उदाहरण प्रस्तुत करे जिससे हम लोग उसका अनुसरण कर सकें। इस कारण यूहन्ना ने यीशु को यरदन नदी में डुबकी लगाई, यही बपतिस्मा का सही अर्थ है।

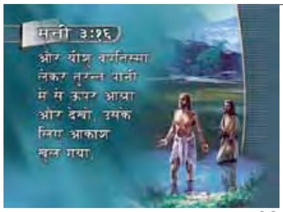

38

(मूलपाठ : मत्ती ३ : १६, १७)
बाइबिल कहती है, "और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया,

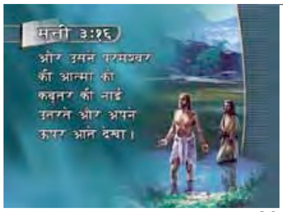

39

और उसने परमेश्वर की आत्मा को कबूतर की नाई उतरते और अपने ऊपर आते देखा।

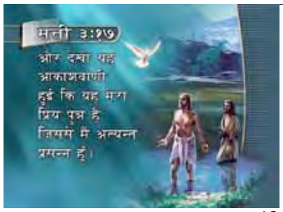

40

"और देखो यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।"
मत्ती ३ : १६, १७
कबूतर के पंखों पर परमेश्वर ने अपना प्रेम और प्रोत्साहन भरे शब्द यीशु को भेजे, और कुछ और भी किया।

१६ - एक नया आरम्भ

41

यीशु जैसे ही पानी से बाहर आये और गीले कपड़ों में यरदन नदी के किनारे खड़े हुए, परमेश्वर ने उन्हें अपना अभिषिक्त पुत्र कह कर परिचय कराया। यीशु का बपतिस्मा उसके सुसमाचार कार्य का आरम्भ था, पतरस ने ऐसा कहा,

42

(मूलपाठ : प्रेरितो का काम १० : ३८)
"....परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया:

43

वह भलाई करता और सबको जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।"
प्रेरितो का काम १० : ३८
यीशु ने स्वयं बपतिस्मा नहीं दिया, पर बाइबिल बताती है कि उसके चेलों ने बपतिस्मा दिया:

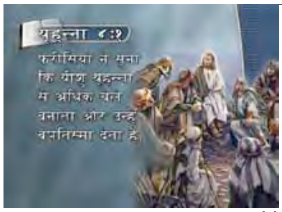
44

(मूलपाठ : यूहन्ना ४ : १,२)
"फरीसियों ने सुना कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता और उन्हें बपतिस्मा देता है,

१६ - एक नया आरम्भ

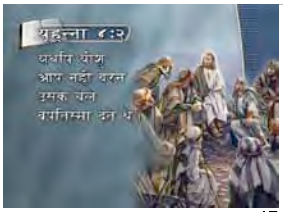

45

"यधपि यीशु आप नहीं वरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे।"

यूहन्ना ४ : १,२

और यीशु के स्वर्ग जाने से पहले दी गई अन्तिम आज्ञा पर ध्यान दें:

46

(मूलपाठ : मत्ती २८ : १९, २०)

"इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओं और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो:

47

उन्हें सब बाते जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ; और देखो मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ।"

मत्ती २८ : १९, २०

48

शायद आप सोच रहे होंगे कि यीशु को मानने वालों ने उसके स्वर्ग चले जाने के बाद किस

प्रकार का बपतिस्मा दिया होगा।

कोई सन्देह नहीं कि, उन्होंने यीशु के उदाहरण को माना, क्योंकि वे उसके शिष्य थे।

१६ - एक नया आरम्भ

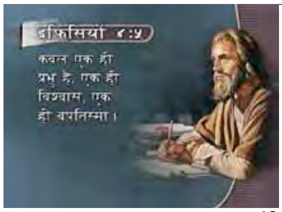

49

(मूलपाठ : इफिसियों ४ : ५)
पौलूस, जो यीशु का अत्यन्त उत्साही अनुयायी था, कहता है कि "केवल एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा।"
इफिसियों ४ : ५

50

क्रूस के बाद बपतिस्मा के बारे में प्रेरितों की पुस्तक में एक प्रचारक फिलिप्पुस के द्वारा दिए गए बपतिस्मे के बारे में लिखा है।

51

फिलिप्पुस गाजा के धूलभरे रास्ते पर अकेला चला जा रहा था, उसने खजांची को देखा, जो उसके खजाने का मालिक था। वह यरूशलेम उपासना करने आया था।

52

वह अपने रथ पर बैठा हुआ था और पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था।
फिलिप्पुस उस आदमी के पास दौड़ा और पूछा

53

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम ८ : ३०, ३१)
जो वह पढ़ रहा था क्या उसे वह समझता भी है।
खाजांची ने जल्दी से जवाब दिया,

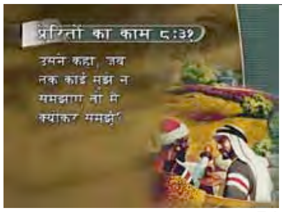

54

"जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर समझूँ?"

१६ - एक नया आरम्भ

55

उसने फिलिप्पुस से विनती की कि वह उसके पास बैठे। फिलिप्पुस ने देखा और समझा कि यह आदमी यशायाह ५३ पढ़ रहा था उस आदमी ने फिलिप्पुस से विनती की कि वह उसे समझाये। वह पाठ यीशु का जीवन और उद्धारकर्त्ता के कूस पर चढ़ने के बारे में विस्तार से बताता है।

56

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ८ : ३५)

बाइबिल बताती है, "तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसने यीशु का सुसमाचार सुनाया।"

प्रेरितों के काम ८ : ३५

57

हिलती डुलती गाड़ी पर बैठ कर किस प्रकार से बाईबिल का अध्ययन किया होगा! फिलिप्पुस ने। उसने न केवल यीशु के बारे में बताया पर बपतिस्मा के महत्व को समझाया। बाईबिल बताती है कि जब वे एक तालाब के पास आये तो खजांची ने फिलिप्पुस से कहा,

१६ - एक नया आरम्भ

58

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ८ : ३६)

"......देख यहाँ जल है अब मुझे बपतिस्मा लेने से क्या कठिनाई?"

प्रेरितों के काम ८ : ३६

59

फिलिप्पुस ने जवाब दिया, "यदि तू हृदय से चाहता है तो हो सकता है।"

60

खोजी ने कहा, "मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है।"

पद ३७।

61

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ८ : ३८)

"तब उस ने रथ रोकने की आज्ञा दी और फिलिप्पुस और खोजा दोनों पानी में उतर पड़े। और उसने उसे बपतिस्मा दिया।"

प्रेरितों के काम ८ : ३८

फिलिप्पुस ने खजांची को पानी में डुबाया, जैसा कि यीशु के बपतिस्मा लेने के समय यूहन्ना ने उसे डुबाया था।

१६ - एक नया आरम्भ

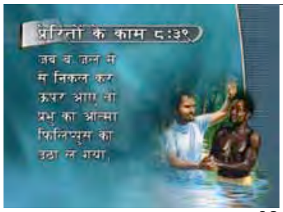

62

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ८ : ३९)
"जब वे जल में से निकल कर ऊपर आए तो
प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया,

63

... और खोजा आनन्द करता हुआ अपने मार्ग को
चला गया।।
प्रेरितों के काम ८ : ३९

64

यही होता है जब हम पाप से भरे पुराने जीवन को यीशु में नया जीवन आरम्भ करते हैं। स्पष्ट है कि पहले के मसीही डुबाकर ही बपतिस्मा स्वीकार करते थे।

65

सचमुच नये नियम में बपतिस्मा का और कोई तरीके का प्रमाण नहीं मिलता। फिलिप्पी में एक गिरजाघर की दीवार पर लगी तस्वीर में पहली शताब्दी के बपतिस्मे को दिखाया गया है। कलीसिया के इतिहासकारों और पुरातत्वेताओं के अनुसार पाया गया है।

66

बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी तक डुबाकर ही बपतिस्मा दिया जाता था।

१६ - एक नया आरम्भ

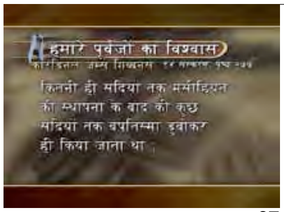

67

कारडिनल जेम्स गिब्बनस् ने लिखा है : "कितनी ही सदियों तक मसीहियत की स्थापना के बाद की कुछ सदियों तक बपतिस्मा डुबोकर ही किया जाता था;

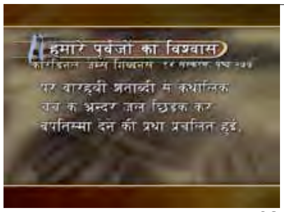

68

पर बारहवीं शताब्दी से केथोलिक चर्च के अन्दर जल छिड़क कर बपतिस्मा देने की प्रथा प्रचलित हुई,

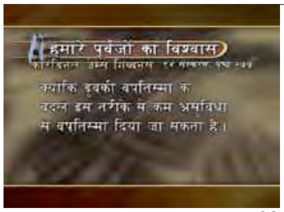

69

क्योंकि डुबकी बपतिस्मा के बदले इस तरीके से कम असुविधा से बपतिस्मा दिया जा सकता है

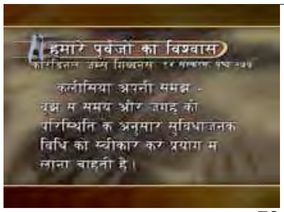

70

"..... कलीसिया अपनी समझ -बूझ से समय और जगह की परिस्थिति के अनुसार सुविधाजनक विधि को स्वीकार कर प्रयोग में लाना चाहती है।"

फेथ आव आवर फादर्स्,

९८ संस्करण पष्ठृ २७७ ।

71

आज बहुत से पर्यटक सेन्ट जॉन की गिरजाघर को देखने जाते हैं, जो टर्की के खण्डहर शहर एफिसस में स्थित है। यह गिरजाघर शिष्य यूहन्ना के यादगार में बनवाया गया था। यहाँ विशेष है बपतिस्मा की हौदी जो आकार में गोल है और व्यास में बारह फीट और चार फीट गहरी है। पवित्र हौदी के दो तरफ नीचे को जाती सीढ़ियाँ है।

१६ - एक नया आरम्भ

72

बहुत से लोगों नै, इटली में, पीसा के मुख्य गिरजाघर के सामने पुरानी घण्टी मीनार के बारे में सुना है जो पीसा की झुकी हुई मीनार के नाम से साधारणतः जानी जाती है।

73

मुख्य गिरजाघर के और झुकी मीनार के साथ जो गोलाकार मंजिल है वह बपतिस्मा का कमरा है

74

चौदहवीं शताब्दी में इसकी हौदी बीस फीट व्यास में और चार फीट गहरी बनाई गई थी। यीशु के स्वर्ग जाने के तेरह सौ वर्ष बाद भी, बपतिस्मे का तरीका डुबाकर ही दिया जाना था!

75

यूरोप में ऐसे बारह से अधिक बपतिस्मा की पवित्र हौदियाँ मुख्य गिरजाघरों के साथ हैं। छियासठ कलीसियाएँ इटली में पाई जाती हैं जिनको चार और चौदह शताब्दियों के बीच बनाया गया था।

76

लेकिन क्या बपतिस्मा का संस्कार इतना विशेष है?

77

क्या बपतिस्मा लेना इतना आवश्यक है?

१६ - एक नया आरम्भ

78

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : ५)
"यीशु ने उत्तर दिया कि मैं तुझ से सच कहता हूँ जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो,

79

वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।"
यूहन्ना ३ : ५

80

यीशु यहाँ सुझाव देते हैं कि पानी से जन्म लेना - डुबकी का बपतिस्मा जैसा हम बाद में देखेंगे - स्वर्ग में जाने के लिये आवश्यक है।

81

यीशु ने यह कथन केवल एक बार नहीं कहा। ध्यान दें कि वे यही बात फिर कहता है मरकुस १६ : १६ में :

82

(मूलपाठ : मरकुस १६ : १६)" जो विश्वास करें कि बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा....."मरकुस १६ : १६
पहला कदम बाइबिल बपतिस्मा की तैयारी में - विश्वास करें कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरे और हमारा उद्धारकर्त्ता परमेश्वर है।

१६ - एक नया आरम्भ

83

खोजे से बात करते हुए फिलिप्पुस ने मसीह पर पूर्ण विश्वास की आवश्यकता पर जोर दिया। जब खोजे ने यह पूछा कि क्या उसका बपतिस्मा हो सकता है तब फिलिप्पुस ने कहा,

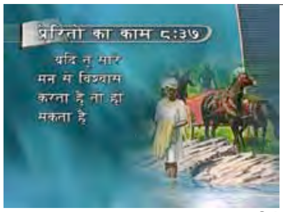

84

(मूलपाठ : प्रेरितो का काम ८ : ३७)

"यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है।"

प्रेरितो का काम ८ : ३७

85

(मूलपाठ : मत्ती २८ : १९)

यीशु ने अपने शिष्यों को दूसरा उपाय दिया,

"जाकर.....और सब जातियों के लोगों को सिखाओ और उन्हें बपतिस्मा दो।"

मत्ती २८ : १९

बपतिस्मा से पहले सिखाओ।

86

(मूलपाठ : मत्ती २८ : २०)

यीशु ने कहा कि बपतिस्मा के उम्मीदवार को सिखाया जाए ".....उन्हें सब बातें जो मै ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ....."

मत्ती २८ : २०

१६ - एक नया आरम्भ

87

दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति बपतिस्मा के पवित्र विधि के लिए तैयारी कर रहा है, उसे यीशु की शिक्षा को समझना और स्वीकार करना है। लेकिन मात्र सिद्धान्तों को जानना काफी नहीं।

88

(मूलपाठ : मत्ती २८ : १९)

"इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

मत्ती २८ : १९

हमें यीशु के लिए वचनबद्ध होना चाहिए। जब एक व्यक्ति यीशु से जुड़ जाता है तो साधारणतः वह यीशु की तरह जिंदगी आरम्भ करता है।

मसीह की इच्छा अपने जीवन से पूरी करता है।

वह ऐसा कुछ नहीं करता जो यीशु मसीह नहीं चाहते।

89

तीसरा कदम पश्चाताप है। पतरस ने कहा,

१६ - एक नया आरम्भ

90

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ३ : १९)

"इसलिए मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाएं जाएं।"

प्रेरितों के काम ३ : १९

पश्चाताप का अर्थ एक जन के लिए पूरे मन से अपने पापों से पछताना और उनसे फिर जाना है।

91

यह केवल एक ऐसे हृदय से ही आ सकता है जो कलवरी तक पहुँचा हो - ऐसा हृदय जो हमारे पापों के लिए क्रूस के बलिदान से नरम किया गया हो।

92

आइये, बपतिस्मे तक के चरणों को संक्षिप्त में देखे;

93

१. बपतिस्मा से पहले व्यक्ति यीशु को उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करे।

94

२. बपतिस्मा से पहले व्यक्ति यीशु की शिक्षा को समझे और उनके पीछे चलने की इच्छा रखे।

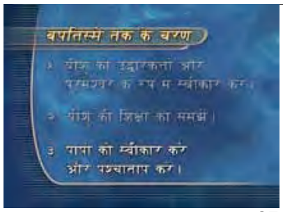

95

३. वह सभी पापों को स्वीकार करे और पश्चाताप करे।

१६ - एक नया आरम्भ

96

हो सकता है एक समय आपने सोचा हो कि आप अच्छाई के लिए अपने जीवन में परिवर्तन लाना चाहते हैं पर ऐसा कैसे हो यह आप नहीं जान पाए। बपतिस्मा की तैयारी के समय इन तीनों चरणों को पार कर आप सचमुच नये व्यक्ति बन सकते हैं - अन्दर से बाहर तक। परमेश्वर की शक्ति से आप में नया जन्म और परिवर्तन हो सकता है और आप बदल सकते हैं।

97

कभी -कभी लोग पूछते हैं: "जब मैं बपतिस्मा लेता हूँ तो क्या कलीसिया का हिस्सा बन जाता हूँ? या यीशु में केवल बपतिस्मा लेता हूँ?" बाइबिल बताती है मसीह में बपतिस्मा लेना मसीह और कलीसिया का हिस्सा बनना है। बाइबिल बताती है पेन्टीकुस्त के दिन भीड़ ने बपतिस्मा लिया,

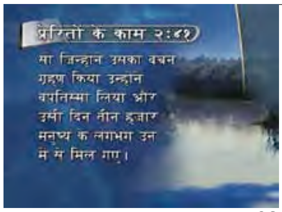

98

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम २ : ४१, ४२)

"सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया और उसी दिन तीन हजार मनुष्य के लगभग उन में से मिल गए।

99

और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने में

१६ - एक नया आरम्भ

100

"रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।"
प्रेरितों के काम २ : ४१, ४२

यह पद स्पष्ट लेते हैं। तब हम बपतिस्मा लेते हैं, हम लोग आत्मिक तौर से अनाथ नहीं हो जाते हैं। हमें अकेला नहीं छोड़ा जाता। प्रेरितों के समय में जिन लोगों ने बपतिस्मा लिया, वे "प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में लगे रहे।" वे परमेश्वर की बाईबिल पर विश्वास रखने वाली कलीसिया का अंग बन गए।

101

(मूलपाठ : १. कुरिन्थियों १२ : १३)

१. कुरिन्थियों १२ : १३ कहता है : "एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया....." पद २८ स्पष्ट करता है कि यह देह कलीसिया है। जब एक स्त्री और पुरुष यीशु को स्वीकार करते हैं और उसके पीछे चलने के लिये ठान लेते हैं तब वे चाहते हैं कि विश्वासीजन के अनुसार उपासना करें। उनका हृदय मसीह की आज्ञाओं का पालन करने वाली कलीसिया का हिस्सा बनने का निश्चय करता है।

१६ - एक नया आरम्भ

102

(मूलपाठ : मत्ती २८ : १९,२०)

इसलिए यीशु ने मत्ती २८ : १९,२० में कहा है -

"इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,

103

उन्हें सब बातें जो मैने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ....."

104

आज रात यीशु आप से अनुरोध कर रहे हैं कि अपना जीवन उनको दे दें। वे अनुरोध कर रहे है कि आप उनके बाईबिल विश्वासी, आज्ञाकारी कलीसिया के सदस्य बन जायें; वे वही निमंत्रण आपको दे रहे हैं जो उन्होंने पौलुस प्रेरित को दिया था :

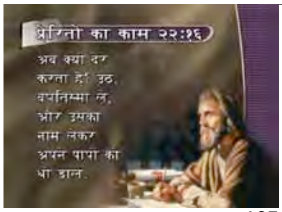

105

(मूलपाठ : प्रेरितो का काम २२ : १६)

"अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल...."

प्रेरितो का काम २२ : १६

१६ - एक नया आरम्भ

106

एक रात यहूदियों का सरदार जिसका नाम निकुदेमुस था यीशु के पास आया।

वह नहीं चाहता था कि उसके मित्र जाने कि वह यीशु को मानने का इच्छुक था।

107

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : २)

वह यह कहकर यीशु की चापलूसी करने लगा। कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है "हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आया है;

108

क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।"

यूहन्ना ३ : २

यीशु उस व्यक्ति के हृदय को पढ़ सकते थे, इसलिए सही बात पर आये और नीकुदेमुस को दिखाया वह जो उसे चाहिए था।

109

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : ३)

"यीशु ने उसको उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं,

१६ - एक नया आरम्भ

110

कि मैं तुझे से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।"

यूहन्ना ३ : ३

111

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : ४)

नीकुदेमुस ने उससे कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है?

112

क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है?"

यूहन्ना ३ : ४

113

(मूलपाठ : यूहन्ना ३ : ५)

तब यीशु ने संकेत दिये कि वह आत्मिक रीति से दूसरे जन्म के बारे में बात कर रहे थे। तब उसने कहा;□"कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे,

१६ - एक नया आरम्भ

114

तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" यूहन्ना ३ : ५

यहाँ यीशु आत्मिक जन्म के बारे में बात कर रहे थे जिसकी गवाही बपतिस्मा द्वारा होगी। यहाँ इस बात का संकेत है कि बपतिस्मा से व्यक्ति पानी में धुल जाता है।

115

इसमें सन्देह नहीं कि नीकुदेमुस, एक घमण्ड़ी फरीसी, अपने सच्चे यहूदी होने के बल पर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहता था।

116

किसी भी तरीके से, पर यीशु ने स्पष्ट किया कि पवित्र आत्मा की शक्ति से जीवन का पूरी तरह बदल जाने के अलावा जैसा बपतिस्मा द्वारा दिखाया जाये, और कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

117

इस तरीके से व्यक्ति पिता द्वारा दिए गए और पुत्र द्वारा पूरा किए गए बलिदान को स्वीकार करने पर मुहर लगाता है।

118

यह मसीह में नए जीवन की आरम्भ है।

१६ - एक नया आरम्भ

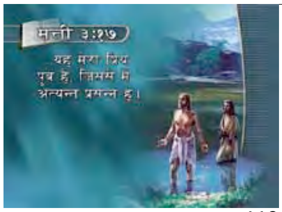

119

(मूलपाठ : मत्ती ३ : १७)

मसीह के बपतिस्मा के समय परमेश्वर की आवाज सुनी गयी थी, जो कह रही थी, "...... यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।"

मत्ती ३ : १७

120

यह वह समय था, जब परमेश्वर की आत्मा ने कबूतर के रूप में यीशु का अभिषेक किया था, जिससे वह अभिषेक किया हुआ मसीह या उद्धारकर्त्ता बन जाए।

121

यह घटना यीशु मसीह की लोगों में पुरोहिताई की आरम्भ को दिखाता है।

इसी तरह, विश्वासी का बपतिस्मा उसके उद्धारकर्त्ता के रूप में मसीह के साथ नए जीवन की शुरूआत को दिखाता है।

यह घटना विश्वासी की आत्मगवाही को उसके बपतिस्मा द्वारा दिखाता है कि वह मसीह से जुड़ गया है, कि उसने मसीह को पहन लिया है।

122

(मूलपाठ : गलतियों ३ : २७)

गलतियों ३ : २७ कहता है,

"तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।"

१६ - एक नया आरम्भ

123

(दृश्य)

बपतिस्मा, उनके लिये जो मसीह को अपने बलिदान के लिये स्वीकार करते है, मसीह के बलिदान के तीन महान तथ्यों पर उसके विश्वास को दिखाता है।

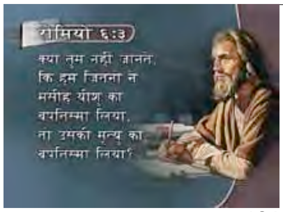

124

(मूलपाठ : रोमियो ६ : ३,४)

पौलुस कहता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?"

रोमियो ६ : ३

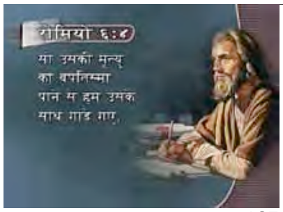

125

तब वह अगले चरण की ओर संकेत करता है जिसे मसीही को इस विधि में लेना है : सो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, पद ४ । लेकिन इस विश्वास के कार्य का एक तीसरा चरण है।

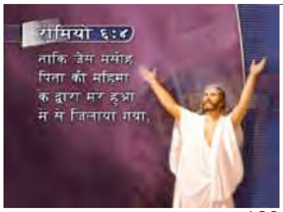

126

(मूलपाठ : रोमियो ६ : ४)

"ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया,

१६ - एक नया आरम्भ

127

वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।"

पद - ४

यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि जो व्यक्ति बपतिस्मा लेता है उसका नया जन्म पानी और आत्मा से होता है!

128

हमलोग आमतौर पर अपना विश्वास यीशु मसीह की मृत्यु पर, दफनाने पर, और जी उठने पर दिखाते हैं।

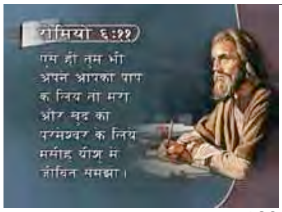

129

(मूलपाठ : रोमियो ६ : ११) पौलुस तब हमलोगों से कहता है, "ऐसे ही तुम भी अपने आपको पाप के लिये तो मरा परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो। "अब आप देख सकते हैं क्यों यह मसीही जिन्दगी का एक बहुत ही सुन्दर भाग है?

130

यह सगाई किए हुए जोड़े के लिए विवाह विधि के समान है। यह उनकी आम गवाही का मौका है कि जब तक जीवन रहेगा तब तक के लिए वे एक साथ जुड़ गये हैं।

१६ - एक नया आरम्भ

131

(मूलपाठ : इफिसियो ४ : ५)

बाइबिल बताती है कि वहाँ "एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास है, एक ही बपतिस्मा।"

इफिसियो ४ : ५

फिर भी कलीसिया में ऐसा लगता है कि बपतिस्मा के कई तरीके प्रयोग में लाये जाते हैं।

132

कुछ छिड़कते हैं, कुछ डालते हैं, और कुछ डुबोतें हैं।

कैसे एक बपतिस्मा हो सकता है, जबकि सही तरीके पर लोगों में विवाद है?

133

हमें केवल इतना पूछने की आवश्यकता है कि, "यीशु ने क्या किया?"

134

हम लोग पाते है कि बाइबिल कहती है, कि यूहन्ना यरदन नदी में बपतिस्मा दे रहा था।

जब यीशु को बपतिस्मा दिया गया, वह "पानी से बाहर आया।"

उसे डुबोकर बपतिस्मा दिया गया।

१६ - एक नया आरम्भ

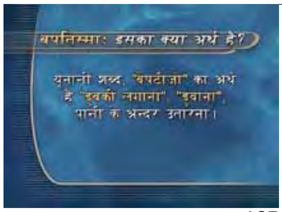

135

वास्तव में, युनानी शब्द बेपटीजो का यही अर्थ है। वही इसका भी है। डुबकी लगाना, डुबाना या पानी से ऊपर तक ढ़क देना। यही एक तरीका है बपतिस्मा का जो मसीह की मृत्यु, दफनाना और जी उठने को दर्शाता है।

136

एक समय पौलुस और उसके साथी सीलास मकिदुनिया के एक आदमी के निमंत्रण पर फिलिप्पी शहर पहुँचे, जिसे पौलुस ने स्वप्न में देखा था।

137

उनके प्रचार के द्वारा, पौलुस और सिलास ने फिलिप्पी लोगों के अन्दर प्राण डाल दिए।

138

यहाँ तक कि भीड़ ने उन पर चढ़ाई कर दी और उन का जीवन खतरे में पड़ गया। भीड़ ने उन दोंनो के कपड़े फाड़ दिये और अधिकारियों ने उन्हें मारने की आज्ञा दी।

139

उनको बन्दीगृह में डाला गया, और जेलर से कहा गया कि उनको कठोर कारावास में रखें कि वे बचकर भागने न पाएं।

१६ - एक नया आरम्भ

140

आधी रात को, पौलुस और सीलास गा और प्रार्थना कर रहे थे, तब अचानक भुईड़ोल आया और बन्दीगृह की दीवारें हिल गई - उसी समय बन्दीगृह का दरवाजा खुल गया और सबके बन्धन खुल गये। रखवाला भाग कर आया, और, दरवाजा खुला देखकर सोचा सभी बन्धुए भाग गये होंगे।

141

उसने तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा क्योंकि यह निश्चित था कि कैदियों को जाने देने पर उसे मृत्युदण्ड मिलेगा।

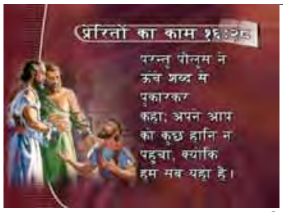

142

(मूलपाठ : प्रेरितों का काम १६ : २८)
परन्तु पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा; अपने आप को कुछ हानि न पहुंचा, क्योंकि हम सब यहां है।"
प्रेरितों का काम १६ : २८

१६ - एक नया आरम्भ

143

बेचारा जेलर विस्मय में पड़ गया था! ये लोग पौलुस और सीलास जेलर के हाथो दुःख सह रहे थे, फिर भी उन्होने किसी प्रकार की नाराजगी नहीं दर्शायी और न उनमें बदले की भावना ही थी।

जेलर जानता था कि ये लोग बेगुनाह हैं। वह दौड़कर बत्ती ले आया, उनकी कोठरी के अन्दर गया और उनके पैरो पर गिरा और माफी मांगने लगा।

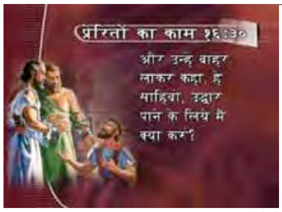

144

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १६ : ३०, ३१)

"और उन्हें बाहर लाकर कहा, हे साहिबो, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं?"

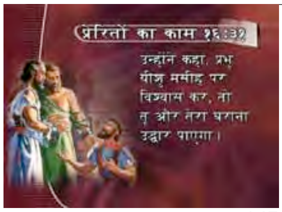

145

इस प्रकार परमेश्वर के दो लोगों ने उत्तर दिया, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।"

146

जेलर पौलुस और सीलास को अपने घर ले गया और उनके पैर और पीठ के घावों को धोया।

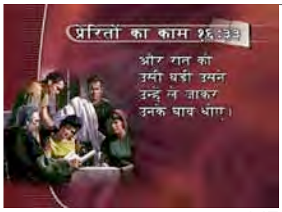

147

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १६ : ३३)

"और रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए।

१६ - एक नया आरम्भ

148

और उसने अपने सब घराने समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।"

प्रेरितों के काम १६ : ३३

149

मित्रों, यदि आप पहले बपतिस्मा का अर्थ और विशेषता नहीं समझे या आपको डुबकी बपतिस्मे द्वारा यीशु के अनुसरण का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है तो वही प्रश्न और निमंत्रण आपके पास भी आता है जो हनन्याह ने शाऊल से पूछा :

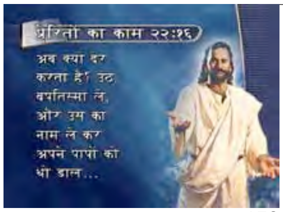

150

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम २२ : १६)

"और अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उस का नाम ले कर अपने पापों को धो डाला......."

प्रेरितों के काम २२ : १६

१६ - एक नया आरम्भ

151

जब यीशु का बपतिस्मा हुआ था, तब आकाश से एक आवाज आयी जो कह रही थी, "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।" जब आप भी बपतिस्मा लेते हैं तो परमेश्वर आपके हृदय से भी बात करता है कि आप मेरे प्रिय पुत्र हैं, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ जब आप भी बपतिस्मे के लिए पानी के अन्दर जाते है, परमेश्वर अपने हृदय से बात करता है कि आप मेरे प्रिय पुत्र है। मैं आपसे अति प्रसन्न हूँ। जीवन की सबसे बड़ी खुशी इसी में है कि आप परमेश्वर को प्रसन्न रखें।

जब आप बपतिस्मा लेते हैं तब आपके पास अच्छी समझ से पूर्ण परमेश्वर की शक्ति होगी है। आप परमेश्वर के पुत्र है। बपतिस्मा को विवाह के समान माना गया है। विवाह से पहले दुल्हा और दुल्हन प्रेम में पड़ते हैं। विवाह पुरूष के हृदय में स्त्री व स्त्री के हृदय में पुरूष के लिए प्रेम उत्पन्न नहीं करता है। विवाह उस प्रेम का प्रमाण है। विवाह परिवार और मित्रों के बीच एक सार्वजनिक वचनबद्धता है। बपतिस्मा भी इसी तरह का ही है। बपतिस्मा परमेश्वर के लिए हमारे हृदय में प्रेम उत्पन्न नहीं करता है। बपतिस्म लेने का मुख्य कारण यह है कि हम पहले से ही उन्हें प्रेम

करते हैं।

बपतिस्मा - परिवार, मित्रों और कलीसिया के सामने एक वचनबद्धता है कि हम लोग उस पर विश्वास करते हैं। जब हम यह सार्वजनिक वचनबद्धता करते हैं, हमारा भूतकाल सांकेतिक रूप से बपतिस्मा के द्वारा प्रतीक के रूप में पानी में दफना दिया जाता है और मसीह में नयी जिंदगी जीने के लिए उठता है। भूतकाल समाप्त हो चुका है - दफन हुआ - फिर से हमें याद नहीं आएगा। परमेश्वर वचन देते है कि वह हमें पवित्र आत्मा देगें जिससे हम मसीह जीवन बिता सकें।

कुछ लोग हिचकिचाते हैं। वे रोके रखते हैं। वे विश्वास नहीं करते कि वे तैयार हैं। बपतिस्मा का अर्थ यह नहीं है कि आप पूर्ण हैं। इसका अर्थ है कि आप वचनबद्ध हैं।

यीशु आपसे अनुरोध कर रहे हैं कि पानी में दफन बपतिस्मा को उसके पदचिन्ह समझकर अपनाएं। वे आप को आपके दोषों से आजादी देगें और पवित्र आत्मा के द्वारा नई जिंदगी जीने के लिए ताकत देते है।

क्या आप अब यीशु को हाँ कहेंगे? बाइबिल बपतिस्मा के द्वारा यीशु के पीछे चलना चाहेंगे, सभा ग्रह के

सामने आ जाएं जिससे आपके लिए खास प्रार्थना हो सके।

मैं आप सभी को प्रार्थना के लिए खड़े होने का निमंत्रण देता हूँ। इससे पहले कि मैं प्रार्थना

करूं, अगर आप यह कहना चाहते हैं कि, हाँ, प्रभु, मैं बपतिस्मा लेना चाहता हूँ," बीच में से चलकर आए और अपना सिर झुकाकर खड़े हो जाएं जिससे मैं आपके लिए प्रार्थना कर सकूं। हिचकिचाए नहीं .. आए ...इसी समय आए, जिससे मैं आपके लिए प्रार्थना कर सकूं। आप परमेश्वर के पुत्र है। बपतिस्मा को विवाह के समान माना गया है। विवाह से पहले दुल्हा और दुल्हन प्रेम में पड़ते हैं। विवाह पुरुष के हृदय में स्त्री व स्त्री के हृदय में पुरुष के लिए प्रेम उत्पन्न नहीं करता है।

विवाह उस प्रेम का प्रमाण है। विवाह परिवार और मित्रों के बीच एक सार्वजनिक वचनबद्धता है। बपतिस्मा भी इसी तरह का ही है। बपतिस्मा परमेश्वर के लिए हमारे हृदय में प्रेम उत्पन्न नहीं करता है। बपतिस्म लेने का मुख्य कारण यह है कि हम पहले से ही उन्हें प्रेम करते हैं।

बपतिस्मा - परिवार, मित्रों और कलीसिया के सामने

१६ - एक नया आरम्भ

एक वचनबद्धता है कि हम लोग उस पर विश्वास करते हैं। जब हम यह सार्वजनिक वचनबद्धता करते हैं, हमारा भूतकाल सांकेतिक रूप से बपतिस्मा के द्वारा प्रतीक के रूप में पानी में दफना दिया जाता है और मसीह में नयी जिंदगी जीने के लिए उठता है। भूतकाल समाप्त हो चुका है - दफन हुआ - फिर से हमें याद नहीं आएगा। परमेश्वर वचन देते है कि वह हमें पवित्र आत्मा देगें जिससे हम मसीह जीवन बिता सकें।

कुछ लोग हिचकिचाते हैं। वे रोके रखते हैं। वे विश्वास नहीं करते कि वे तैयार हैं। बपतिस्मा का अर्थ यह नहीं है कि आप पूर्ण हैं। इसका अर्थ है कि आप वचनबद्ध हैं।

यीशु आपसे अनुरोध कर रहे हैं कि पानी में दफन बपतिस्मा को उसके पदचिन्ह समझकर अपनाएं। वे आप को आपके दोषों से आजादी देगें

१७ - झूठ की पहचान

1

संसार का सबसे बड़ा धोखा

2

संसार के सबसे बड़े धोखों में से एक १९६० में हुआ था। डेविड स्टीन नाम के एक चतुर फ्रांसीसी युवक ने पिकासो, शागाल्स, रीनोए, और वेनगो जैसे महान चित्रकारों की ४०० से अधिक तैलचित्रों की नकल की। उसने इन प्रसिद्ध कलाकारों के वास्तविक नाम उन आम रचनाओं पर लिखे और उन्हें असली के समान प्रस्तुत किया।

ये नकली चित्र धोखे के अति उाम उदाहरण बने। इतना ही नहीं, विशेषज्ञों ने उन्हें विश्वसनीय घोषित किया!

3

(दृश्य)

आज तक उन नकली चित्रो में से केवल ११० की ही पहचान हो पाई है। स्टीन को १९७२ में सजा हुई और उसने सिंग सिंग जेल और पेरिस, फ्रांस में जेल काटी। वह १९८० में जेल से रिहा हुआ। जब वह जेल में था तब उसका हृदय परिवर्तित हो गया और उसने अपने ही नाम से चित्रकारी करने का निर्णय किया।

१७ - झूठ की पहचान

4

(दृश्य)

आज स्टीन संसार का प्रसिद्ध कलाकार और कला प्रवक्ता है। और क्या आप जानते हैं कि वह किस विषय पर प्रवचन देता है? जी हाँ, "नकल को कैसे पकड़ें"। आप सहमत होंगे किं स्टीन ने निश्चय यह दिखाया कि नकल को पकड़ना सदैव आसान नहीं होता चाहे पकड़ने वाला कितना ही निपुण क्यों न हो।

किन्तु वह जितना भी चालाक रहा हो जब उसकी उन सबके परदादा शैतान से तुलना की जाए तो वह वास्तव में इस क्षेत्र में एक बालक जैसा है।

5

(दृश्य)

जब ठगी, धोखा और नकल करने की बात आती है तो शैतान की बराबरी करने वाला कोई नहीं। वास्तव में शैतान खुले रुप में काम नहीं करता।

वह दूसरे लोगों व दूसरी शक्तियों और अभिकर्त्ताओं के द्वारा कार्य करता है।

यदि वह परमेश्वर और सत्य का खुला शत्रु होता तो किसी मसीही के धोखा खाने का खतरा काफी कम होता। इसलिए वह भेष बदलकर काम करता है कभी -कभी तो धर्म के ही लिबास में होकर निष्कपट ढोंग करते हुए –

१७ - झूठ की पहचान

6

सत्य और झूठ को मिलाकर मनुष्यों को परमेश्वर की सच्ची आराधना करने से दूर करता है हजारों वर्षो से उसकी यही एक तीव्र लालसा रही है।

7

परमेश्वर हमें इस महान धोखेबाज की दया पर नहीं छोड़ता किन्तु अन्त समय के महानतम धोखों के विषय में बाइबिल के द्वारा हमें चिताया है।

8

बाइबिल कहती है स्वयं दानिय्येल ने स्वप्न में जन्तुओं को समुद्र में से बाहर आते हुए देखा।

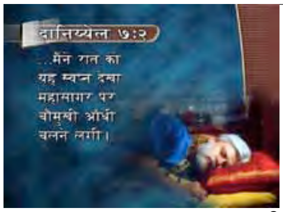

9

(मूलपाठः दानिय्येल ७:२,३)

"...मैंने रात को यह स्वप्न देखा", दानिय्येल ने लिखा, "और देखो, महासागर पर चौमुखी आँधी चलने लगी।

10

और समुद्र में से चार बड़े -बड़े जन्तु जो एक-दूसरे से भिन्न थे निकल आये।"

दानिय्येल ७:२,३

11

समुद्र से निकले जन्तु? इन सबका क्या अर्थ हो सकता है?

१७ - झूठ की पहचान

12

आइए हम बाइबिल को ही इस प्रतीकात्मक भविष्यवाणी को खोलने की चाबी दे दें।

सर्वप्रथम इस स्वप्न में जल है।

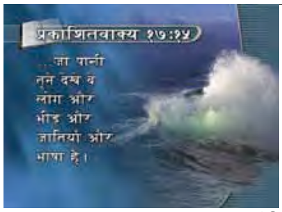

13

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य १७:१५)

प्रकाशितवाक्य १७:१५ कहता है : "...जो पानी तूने देखे वे लोग और भीड़ और जातियाँ और भाषा है।"

उसी अध्याय में परमेश्वर दानिय्येल से कहता है कि ये जन्तु किसे दर्शाते हैं:

14

(मूलपाठ: दानिय्येल ७:१७,२३)

"उन चार बड़े - बड़े जन्तुओं का अर्थ चार राज्य है जो पृथ्वी पर उदय होंगे।

15

...उस चौथे जन्तु का अर्थ एक चौथा राज्य है जो पृथ्वी पर होकर।"

दानिय्येल ७:१७,२३

परमेश्वर का वचन स्पष्ट करता है कि एक जन्तु एक राजा या राज्य को दर्शाता है।

१७ - झूठ की पहचान

16

पृथ्वी की आबादी भरे क्षेत्र से निकलने वाले जन्तु विशेष राष्ट्रों को दर्शाते थे जो कि अस्तित्व में आएंगे। ध्यान दीजिए उसने दानिय्येल ७:३ में उनका किस प्रकार वर्णन करता ह :

17

(मूलपाठ : दानिय्येल ७:३)

"और समुद्र में से चार बड़े -बड़े जन्तु जो एक दूसरे से भिन्न थे निकल आये।"

18

(मूलपाठः दानिय्येल ७:४)

"पहिला जन्तु सिंह के समान था और उसके पंख उकाब के से थे ... "

दानिय्येल ७:४

19

(मूलपाठः दानिय्येल ७:५)

"फिर मैंने एक और जन्तु को देखा जो रीछ के समान था और एक पांजर के बल उठा हुआ था,

20

और उसके मुँह में दातों के बीच तीन पसुली थीं ..."

दानिय्येल ७:५

१७ - झूठ की पहचान

21

(मूलपाठ: दानिय्येल ७:६)

"इसके बाद मैंने दृष्टि की और देखा, कि चीते के समान एक और जन्तु है जिसकी पीठ पर पक्षी के से चार पंख हैं ..."

दानिय्येल ७:६

22

(मूलपाठ: दानिय्येल ७:७)

"फिर इसके बाद मैंने दृष्टि की और देखा कि एक चौथा जन्तु है जो भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है।"

23

उसके बड़े -बड़े लोहे के दांत हैं वह सब कुछ खा डालता है और चूर चूर करता है और जो बच जाता है उसे पैरों से रौंदता है।

24

और वह सब पहिले जन्तुओं से भिन्न हैं और उसके दस सींग है।"

दानिय्येल ७:७

25

कितनी अद्‌भुत जन्तुशाला! आप देखेंगे कि इनमें से कोई जन्तु सामान्य जन्तु नहीं हैं।

उन सबमें कुछ विशेषताएँ हैं जो स्वप्न को समझने में हमारी सहायता करती हैं।

१७ - झूठ की पहचान

26

दानिय्येल ने जब चार जन्तुओं के स्वप्न को याद किया होगा तो उसने अवश्य ही महान राजा नबूकदनेस्सर के विशाल धातु पुरुष के स्वप्न तुलना की होगी। दोनों ही स्वप्नों के प्रतीकों ने प्राचीन संसार के चार साम्राज्यों को दर्शाया है,

27

(दृश्य)
यह बाबुल से आरम्भ होकर मादी और फारसी का साम्राज्य यूनान का राज्य, रोमन साम्राज्य,

28

और जिसका अन्त यीशु के आगमन और उनके सनातन राज्य की स्थापना से है।

29

आइए हम पुनः वापस चलकर पृथ्वी की आबादी वाले क्षेत्र से निकलने वाले जन्तुओं या राष्ट्रों में से प्रत्येक को देखें:

30

(मूलपाठ: दानिय्येल ७:४)
"पहला जन्तु सिंह के समान था और उसके पंख उकाब के से थे। और मेरे देखते-देखते उसके पंख के पर नीचे गिर गए;

१७ - झूठ की पहचान

31

और वह भूमि पर से उठाकर मनुष्य की नाई पावों के बल खड़ा किया गया और उसको मनुष्य का हृदय दिया गया।"

दानिय्येल ७:४

32

जन्तुओं के राजा सिंह से बेहतर प्रतीक विश्व के प्रथम साम्राज्य बाबुल (ऊँची मूर्ति में सोने का सिर) के लिए और क्या हो सकता था?

33

प्राचीन बाबुल के लोग अपने साम्राज्य के प्रतीक के लिए सिंह का प्रयोग करते थे? पुरातत्ववोओं ने बाबुल के खण्डहरों में से उकाब के से पंखो वाले सिंह के प्रतीक को खुदाई करके निकाला था।

34

जिस प्रकार सिंह अपनी शक्ति और दूसरे जन्तुओं को बलपूर्वक अधीन करने के लिए माना जाता है, उसी प्रकार बाबुल की सेना की दूसरों को बलपूर्वक अपने अधीन करने में कोई बराबरी में न था। जिस तीव्र गति से बाबुल ने शक्ति प्राप्त की और अपने साम्राज्य को बढ़ाया उसका उचित प्रतीक उकाब के पंख ही हो सकते हैं। ध्यान दीजिए कि परमेश्वर बाबुल के लिए उसी प्रतीक -- सिंह -- का प्रयोग करता है:

१७ - झूठ की पहचान

35

(मूलपाठः यिर्मयाह ४:७)
"एक सिंह अपनी झाड़ी से निकला जाति - जाति का नाश करने वाला चढ़ाई करके आ रहा है।

36

वह अपने स्थान से इसलिए निकला है कि तुम्हारे देश को उजाड़ दे ..."
यिर्मयाह ४:७

37

घमण्डी और आडम्बरी बाबुल के राजा ने कल्पना की कि उसका राज्य सदा बना रहेगा। उसने कभी सोचा भी नहीं कि कोई और राष्ट्र भी संसार पर शासन कर सकता था। उसने अपने भवन की ईटों पर खुदवाया "यह सदैव तक बना रहे"।

38

(दृश्य)
१३ अक्टूबर, ५३९ ईसा पूर्व को बाबुल राज्य का (धातु की मूर्ति में सोने का सिर और दानिय्येल के स्वप्न में उकाब के पंख वाले सिंह) लज्जाजनक अन्त हो गया।

१७ - झूठ की पहचान

39

(दृश्य)

दूसरे जन्तु रीछ द्वारा दर्शाया गया साम्राज्य विजयी मादी फारस वही राज्य है जिसे धातु के विशाल पुरुष में चाँदी की छाती और भुजाओं के रूप में दर्शाया गया है इसके अतिरिक्त कोई अन्य राष्ट्र नहीं हो सकता है। जब दानिय्येल ने अपने स्वप्न में रीछ को देखा, तो उसने कहा,

40

(मूलपाठः दानिय्येल ७:५)

"...एक पांजर के बल उठा हुआ था और उसके मुँह में दाँतों के बीच तीन पसली थीं।"

दानिय्येल ७:५

41

दानिय्येल ने कहा कि रीछ के मुँह में दाँतों के बीच तीन पसुली थीं किन्तु बाइबिल उनका अर्थ नहीं बताती।

42

यद्यपि अधिकतर बाइबिल के ज्ञाता विश्वास करते हैं कि तीन पसलियाँ

43

लीदिया, बाबुल और मिस्र -- इन तीन राष्ट्रों को दर्शाते हैं जिन्हें मादी फारस की सेना ने निगल लिया था।

१७ - झूठ की पहचान

44

फारसी साम्राज्य ने दो शताब्दी तक शासन किया। इसके क्रूर और शक्तिशाली होते हुए भी परमेश्वर ने दानिय्येल को स्वप्न में प्रकट किया कि एक और दूसरा पशु या राज्य आयेगा:

45

(मूलपाठ: दानिय्येल ७:६)
"इसके बाद मैंने दृष्टि की और देखा कि चीते के समान एक और जन्तु है जिसकी पीठ पर पक्षी के जैसे चार पंख हैं;

46

और उस जन्तु के चार सिर थे और उसको अधिकार दिया गया।"
दानिय्येल ७:६

47

जैसे धीमे चलने वाले रीछ की तेज दौड़ने वाले चीते से कोई बराबरी नहीं होती उसी तरह फारसी सेनाएँ भी वेग से आगे बढ़ने वाले सिकन्दर महान के सामने टिक न सकीं।

48

(दृश्य)
नबूकदनेस्सर के स्वप्न में पीतल का पेट और जांघे और दानिय्येल के स्वप्न का चीता दोनों ही संसार के तीसरे साम्राज्य यूनान को दर्शाते हैं।

१७ - झूठ की पहचान

49

चार पंख सिकन्दर के विजय अभियान की तीव्र गति को दिखाते हैं। उसने ३३१ ईसा पूर्व में अरबेला के युद्ध में दारा तृतीय को पराजित किया और बारह से भी कम वर्षों में संसार के सबसे विशाल साम्राज्य का शासक बन बैठा। चीते के चार सिंह यूनान के चार विभाजनों को दिखाते हैं।

50

(मूलपाठः दानिय्येल ८:२२)

"उस जाति से चार राज्य उदय होंगे।"

दानिय्येल ८:२२

51

इतिहास बताता है कि यूनान का साम्राज्य वास्तव में चार भागों में बटँ गया। अरबेला की महान विजय के मात्र सात वर्ष के बाद सिकन्दर की बत्तीस वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई।

उसे दफन करने से पहले ही उसके सम्बन्धियों में और उसके सेनापतियों में सत्ता के लिए संघर्ष होने लगा।

अन्ततः सिकन्दर के चार सेनापतियों ने साम्राज्य पर नियन्त्रण कर लिया।

52

(दृश्य)

अब चीते या यूनान के चार सिर थे!

कैसेन्डर, लाइसीमेकस, टोलेमी और सेल्यूकस।

१७ - झूठ की पहचान

53

अधिकतर लोग एक सिर रखकर सही दिशा में चलने में कठिनाई अनुभव करते हैं। सोचिए तो क्या होगा यदि आपके चार सिर हों? संघर्ष!

प्रत्येक सिर प्रथम होने का प्रयास करेगा!

यूनान के साम्राज्य के साथ भी यही हुआ॥ सिकन्दर के चारों सेनापति महत्वाकांक्षी और लालची पुरूष थे जो साम्राज्य पर शासन करना चाहते थे।

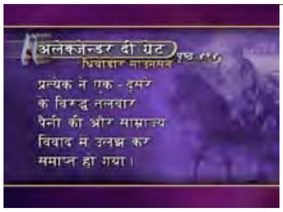

54

"प्रत्येक ने एक- दूसरे के विरुद्ध तलवार पैनी की और साम्राज्य विवाद में उलझ कर समाप्त हो गये।"

सिकन्दर महान, पृष्ठ ४९४

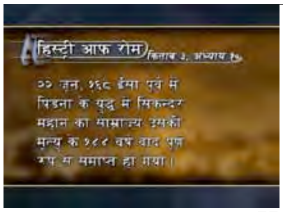

55

व्यग्रता और विवाद साम्राज्य के चारों भागों में अन्त तक बने रह।

"२२ जून, १६८ ईसा पूर्व मे, पिडना के युद्ध में सिकन्दर महान का साम्राज्य उसकी मृत्यु के १४४ वर्ष बाद पूर्ण रूप से समाप्त हो गया।"

- हिस्ट्री आफ रोम, किताब ३, अध्याय १०।

56

परन्तु उस चौथे खूंखार जन्तु का क्या जिसका उदय दानिय्येल के अनुसार यूनान के साम्राज्य के बाद होना था?

१७ - झूठ की पहचान

57

स्वर्गदूत ने दानिय्येल को बताया कि चौथा राज्य शेष राज्यों से भिन्न होगा। इसका प्रतीक यह है कि वह अत्यधिक सामर्थी था और उसके बहुत से लोहे के दाँत थे जिससे वह शिकार को चीरता था। यह एक निर्दयी दुष्ट शक्ति का चित्रण है।

58

रोमन साम्राज्य के उदय के लिए इससे सही वर्णन नहीं मिल सकता था।

59

रोम अपने पूर्व के सभी साम्राज्यों से अधिक क्रूर और निर्दयी था।

उन्होंने पूरे राष्ट्रों का या तो नाश किया या फिर उनके लोगों को दासता में बेच दिया।

60

(दृश्य)

इस भयानक जन्तु के दाँत लोहे के थे जब कि धातु की मूर्ति में चौथे राज्य की टांगे लोहे की थीं।

इस पशु न, और विशेषकर इसके दस सींगो ने दानिय्येल की जिज्ञासा बढ़ा दी।

१७ - झूठ की पहचान

61

(मूलपाठः दानिय्येल ७:८)

उसने कहा "मैं उन सींगों को ध्यान से देख रहा था तो क्या देखा कि उनके बीच एक और छोटा सा सींग निकला,

62

और उसके बल से उन पहले सींगो में से तीन उखाड़े गये ..."

दानिय्येल ७:८

63

(मूलपाठः दानिय्येल ७:२४)

स्वर्गदूत ने दानिय्येल को बताया कि "उन दस सींगों का अर्थ यह है कि उस राज्य में से दस राजा उठेंगे।"

दानिय्येल ७:२४

64

(दृश्य)

कोई सन्देह नहीं कि दानिय्येल का ध्यान उस धातु की विशाल मूर्ति पर अवश्य गया होगा जिसके पैर लोहे और मिट्टी के बने थे, जो रोमी साम्राज्य के विभाजन के प्रतीक थे।

१७ - झूठ की पहचान

65

(दृश्य)

४७६ ईसवी तक उत्तरी यूरोप की जंगली जातियां रोमी साम्राज्य को अधिकांश रुप से नाश कर चुकी थीं।

इनमें से सात राज्य आज भी यूरोप में हैं।

66

किन्तु दानिय्येल को जो सर्वाधिक रुचिकर लगा वह था वह छोटा सींग जो दस सींगों के बीच में से निकला तथा स्वयं को शक्तिशाली बनाने के संघर्ष में जिसने तीन सींग उखाड़ डाले।

67

(मूलपाठः दानिय्येल ७:८)

दानिय्येल ने देखा कि "इस छोटे सींग में मनुष्य की सी आंख और बड़ा बोल बोलने वाला मुँह भी है।"

दानिय्येल ७:८

68

इस छोटे सींग ने दानिय्येल को परेशान कर दिया।

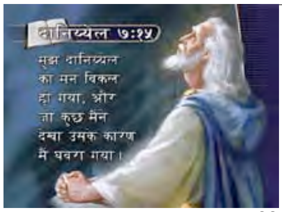
69

(मूलपाठः दानिय्येल ७:१५)

उसने लिखा "मुझ दानिय्येल का मन विकल हो गया, और जो कुछ मैंने देखा उसके कारण मैं घबरा गया।"

दानिय्येल ७:१५

१७ - झूठ की पहचान

70

इस छोटे सींग ने दानिय्येल को चिन्तित क्यों किया?

71

(मूलपाठः दानिय्येल ७:२१,२५)

क्योंकि "वह सींग पवित्र लोगों के संग लड़ाई करके उन पर प्रबल हो गया।"

72

"और वह परम प्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा,

73

और परम प्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा और समयों और व्यवस्था को बदलने की आशा करेगा :

74

वरन साढ़े तीन काल तक वे सब उसके वश में कर दिए जाएंगे।"

दानिय्येल ७:२१,२५

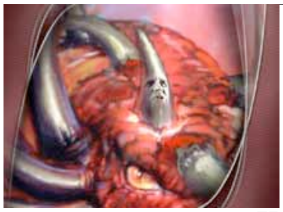
75

दानिय्येल ने पहचान लिया कि यह विधान अब केवल सांसारिक इतिहास नहीं रहा किन्तु इसका सम्बन्ध परमेश्वर के लोगों से था।

१७ - झूठ की पहचान

76

इस छोटे सींग ने परमेश्वर के पवित्र लोगों के विरुद्ध लड़ाई करके वास्तव में उन्हें एक समय तक के लिए अपने वश में कर लिया।

निश्चय ही इसका एक निष्ठूर, सताने वाली शक्ति का होना था जिसका प्रयोग शैतान द्वारा परमेश्वर के लोगों और उसके सत्य के विरुद्ध होना था।

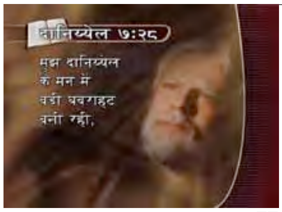

77

(मूलपाठः दानिय्येल ७:२८)

दानिय्येल ने कहा "मुझ दानिय्येल के मन में बड़ी घबराहट बनी रही,

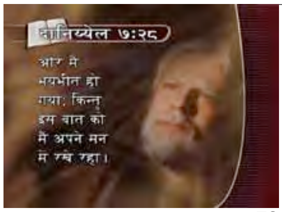

78

और मैं भयभीत हो गया; किन्तु इस बात को मैं अपने मन में रखे रहा।"

दानिय्येल ७:२८

79

यह छोटा सींग कौन है?

80

आइए इस छोटे सींग के विषय बाइबिल के वर्णन का अवलोकन करके देखें कि इसके पूरा होने के लिए इतिहास में क्या लिखा है।

दानिय्येल ने चौथे जन्तु या चौथे विश्व साम्राज्य रोम का वर्णन ऐसे किया कि

१७ - झूठ की पहचान

81

(मूलपाठः दानिय्येल ७:७)

"जो भयंकर और डरावना और बहुत सामर्थी है और उसके दस सींग हैं।"

दानिय्येल ७:७

82

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २४)

दानिय्येल ७ : २४ बताता है कि दस सींग, "दस राजा जो उदय होंगे" का प्रतीक हैं।

83

चौथे के पतन के बाद इतिहास के पर्दे पर कोई और विश्व साम्राज्य उदय होने की बजाय भविष्यवाणी ने घोषणा की कि रोमन साम्राज्य दस छोटे -छोटे राज्यों में बंट जाएंगे।

इतिहास दानिय्येल की भविष्यवाणी के उस भाग को प्रमाणित करती है।

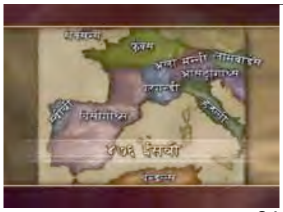

84

इतिहासकार बताते हैं कि रोम का विभाजन ४७६ ईसवी तक पूरा हो गया। अंग्रेज इतिहासकार एडवर्ड ईलीएट की पुस्तक होरे एपोकेलेप्टिक के अनुसार निम्नलिखित जंगली जातियों ने रोमन सामाज्य को ३५१ -४७६ ईसवीं तक रौंद डाला।

१७ - झूठ की पहचान

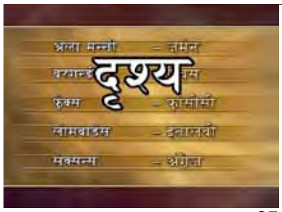

85

(दृश्य)

निम्नलिखित सूची जर्मन जातियों के नाम और उनके आधुनिक प्रतिरुप देती है;

अलमानी – जर्मन

बरगन्डियस –स्विस

फ्रैंक्स - फ्रैंच

लोम्बार्डस –इटैलिंयस

सैक्सन्स - इंगलिश

सूवी – पुर्तगीस

विसिगोथस – स्पैनिश

हेरुली -समाप्त

ओस्ट्रोगोथस – समाप्त

वैन्डल्स - समाप्त

86

दानिय्येल द्वारा देखे गये चौथे जन्तु के ये दस सींग हैं। भविष्यवाणी के अनुसार दस सींगो या रोमन साम्राज्य के विभाजन के पश्चात छोटे सींग को अत्यधिक शक्तिशाली होना था।

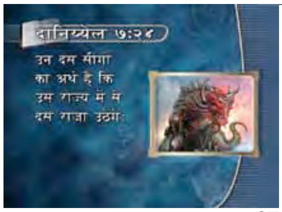
87

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २४)

"उन दस सींगों का अर्थ है कि उस राज्य में से दस राजा उठेंगे:

१७ - झूठ की पहचान

88

उन पहलों से भिन्न एक और राजा उठेगा जो तीन राजाओं को गिरा देगा।"

दानिय्येल ७ : २४

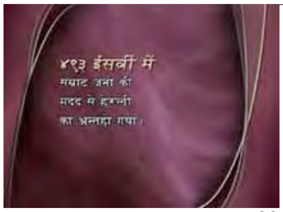

89

४९३ ईसवीं में सम्राट जेनो की मदद से हेरुल्ली का अन्त हो गया।

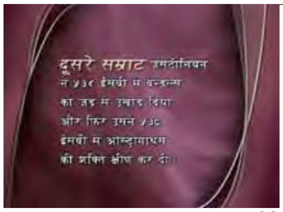

90

दूसरे सम्राट जसटीनियन ने ५३४ ईसवी में वेन्डल्स को जड़ से उखाड़ दिया और फिर उसने ५३८ ईसवी में ओस्ट्रोगोथस की शक्ति क्षीण कर दी।

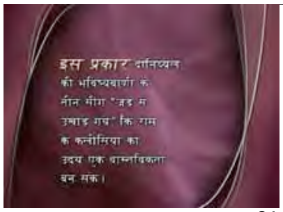

91

इस प्रकार दानिय्येल की भविष्यवाणी के तीन सींग "जड़ से उखाड़े गये" कि रोम के कलीसिया का उदय एक वास्तविकता बन सके।

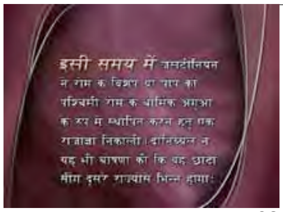

92

इसी समय में जसटीनियन ने रोम के बिशप या पोप को पश्चिमी रोम के धार्मिक अगुआ के रुप में स्थापित करने हेतु एक राजाज्ञा निकाली।

दानिय्येल ने यह भी घोषणा की कि वह छोटा सींग दूसरे राज्यों से भिन्न होगा:

93

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २४)

"वह उन पहिलों से भिन्न होगा " दानिय्येल ७ : २४।

क्या यह जन्तु भिन्न था? वास्तव में!

१७ - झूठ की पहचान

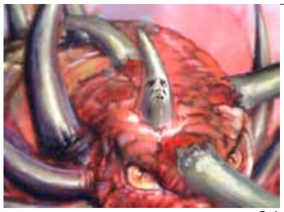
94

दूसरे राज्य राजनीतिक शक्तियाँ थी किन्तु छोटा सींग एक कलीसिया थी जिसने राजनीतिक शक्ति को नियन्त्रण में रखा।

95

जैसाकि प्रोटेस्टेन्ट सुधारक ने दावा किया भविष्यवाणी संबंधी उंगली बिना कोई गलती किए मध्य युग की रोमन कलीसिया की ओर उठती है जो दानिय्येल ७ का छोटा सींग है। दानिय्येल ने इस छोटे सींग को पहचानने के लिए इसका दूसरा गुण बताया।

96

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २१)
"मैंने देखा कि छोटा सींग पवित्र लोगों के संग लड़ाई करके उन पर प्रबल हो गया।"
दानिय्येल ७ : २१

97

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २५)
उसने यह भी कहा कि यह शक्ति "पवित्र लोगों को पीस डालेगी"
पद २५ ।

१७ - झूठ की पहचान

98

क्या मध्य युग की कलीसिया ने मसीहियों को सताया? दुर्भाग्य से, हाँ! जांच परख, पवित्र धर्म युद्ध, हयूगीनोटस्, वालडेनसेस, एलबीगेन्सेस, तीस वर्ष का युद्ध, जेल खाने की काल कोठरी,

99

और शहीदों को खम्बों से बांधकर जलाती ज्वाला – ये सब मण्डली के अन्धकार युग के शासन से जुड़े हैं किन्तु हम इस छोटे सींग के और भी महत्वपूर्ण चरित्र को पाते हैं।

100

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २५)
भविष्यवाणी ने कहा कि यह "समयों और व्यवस्था को बदलने की सोचना"
दानिय्येल ७ : २५
क्या पोपियत ने मध्य युग में परमेश्वर की स्वर्गीय व्यवस्था और नियमों को बदलने का
प्रयास किया?

101

हाँ, यह दावा करती है कि इसने सब्त को परम्पराओं के कारण शनिवार से रविवार में बदल दिया।

१७ - झूठ की पहचान

१७ - झूठ की पहचान

102

अन्तिम गुण जो हम अध्ययन करेंगे, बताता है कि कब यह शक्ति महाशक्ति बनेगी और वह समय सीमा जिसमें यह परमेश्वर के पवित्र लोगों को सतायेगीः

103

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २५)
"और वे समय, समयों और आधे समय तक उसके अधीन कर दिये जाएंगे।"
दानिय्येल ७ : २५
यहाँ हम बाइबिल के कुछ और चिन्ह प्राप्त करते हैं।

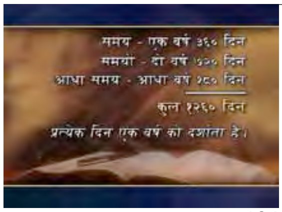

104

'समय' का अर्थ एक वर्ष और 'समयों' का अर्थ दो वर्ष या ७२० भविष्यवाणी के दिन हैं। समय का भाग आधा वर्ष या १८० दिन होगा।

जब हम इनको जोड़ते हैं अर्थात (३६० दिन), समयों (७२० दिन) और समय का आधा भाग (१८० दिन) को जोड़ते हैं तो हमें कुल १,२६० भविष्यवाणी के दिन या वर्ष प्राप्त होते हैं।

१७ - झूठ की पहचान

105

(मूलपाठ : यहेजकेल ४ : ६)

यहेजकेल के अनुसार भविष्यवाणी का एक दिन का अर्थ एक वर्ष होता है। "मैंने तेरे लिए एक दिन की सन्ती एक दिन ठहराया है।

यहेजकेल ४ : ६, किंग जेम्स का अनुवाद

छोटे सींग की शक्ति को १,२६० वर्ष तक महान रहना था!

इतिहास समय के इस भाग की पुष्टी करता है।

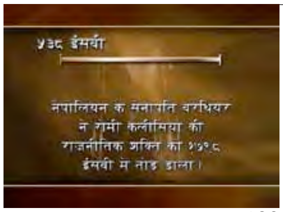

106

रोमी कलीसिया का विरोध करने वाली दस जातियों में से अन्तिम ओस्ट्रोगोथस ५३८ ईसवी में पूरी तरह पराजित हो गयी। जिससे रोमन कलीसिया को अपनी राजनीतिक और धार्मिक शक्ति का विकास करने का मार्ग साफ हो गया।

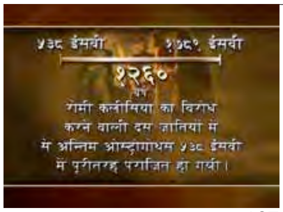

107

ठीक १,२६० वर्ष बाद १७९८ में नेपोलियन के सेनापति बरथियर के द्वारा रोमन कलीसिया की राजनीतिक शक्ति तोड़ दी गयी।

१७ - झूठ की पहचान

108

इस प्रकार हमने दानिय्येल ७ और उस छोटे सींग की भविष्यवाणी का अध्ययन किया है जोकि चौथे जन्तु के सिर से निकला था, हमने निम्न चिन्हों को खोजा है जो यह प्रमाणित करते हैं कि यह शक्ति क्या है। आइए इन चिन्हों पर ध्यान दें।

109

१. यह छोटा सींग पश्चिम यूरोप में रोम के बिखरने के बाद बने दस राज्यों में से निकलेगा। दानिय्येल ७ : ८

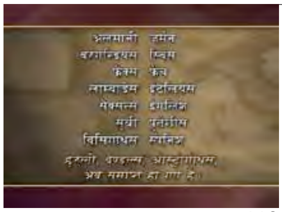
110

२. शक्ति प्राप्त करने के लिए छोटे सींग ने अपने से पहले के तीन राज्यों को जड़ से उखाड़ दिया। ये तीन राज्य हेरुली, ओस्ट्रोगोथस् और वैन्डल्स थे। ये तीनो राष्ट्र विश्वास में एरियान थे और इन्होंने पोप को कलीसिया का मुखिया मानने से इन्कार कर दिया था। दानिय्येल ७ : ८

111

३. भविष्यवाणी कहती है कि यह छोटा सींग उन स्थापित हुए सींगो के बीच में से निकलेगा। दानिय्येल ७ : २० इसका अर्थ है कि यह राज्य ४७६ ईसवी के बाद स्थापित होगें।

112

४. यह शक्ति दूसरे राज्यों से भिन्न होगी॥ यह राजनीतिक और धार्मिक दोनों ही राज्य था।

दानिय्येल ७ : २४

113

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २१,२५)

५. यह छोटा सींग सतायेगा या पवित्र लोगों को पीस डालेगा। "मैंने देखा वह सींग पवित्र लोगों के संग लड़ाई करके उन पर प्रबल हो गया।"

दानिय्येल ७ : २१, २५

114

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २५)

६. "यह शक्ति समय और व्यवस्था को बदलने की सोचेगी। दूसरे शब्दों में, यह कलीसिया स्वयं को परमेश्वर के समयों और उसकी आज्ञाओं को बदलने के योग्य समझ लेगी।"

दानिय्येल ७ : २५

115

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २५)

७. भविष्यवाणी संकेत करती है कि यह शक्ति १,२६० वर्ष के समय तक महान शक्ति के रुप में शासन करेगी। क्योंकि बाइबिल कहती है : "और वे समय समयों और आधे समय तक उसके अधीन कर दिए जाएंगे।

दानिय्येल ७ : २५

१७ - झूठ की पहचान

116

आप इस भविष्यवाणी से देख सकते हैं कि संसार में केवल एक ही ऐसी शक्ति है जो सही समय पर सही स्थान में इन चिन्हों को पूरा करने के लिए उदय हुई। यह रोमी कलीसिया है।

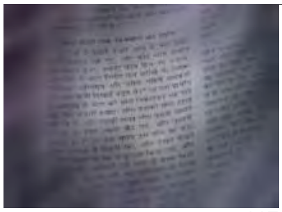
117

दानिय्येल की महान भविष्यवाणी के अंत तक पहुँचने के लिए अब आइए आगे छलांग लगायें क्योंकि इसका अन्त परमेश्वर के लोगों के लिए प्रसन्नता भरा है।

118

दर्शन में जैसे दानिय्येल ने देखा कि पृथ्वी पर शक्तियाँ राजनीतिक और धार्मिक प्रभुता पाने के लिए संघर्ष कर रही थीं,

119

अचानक उसका ध्यान पृथ्वी पर से स्वर्ग की ओर चला गया।

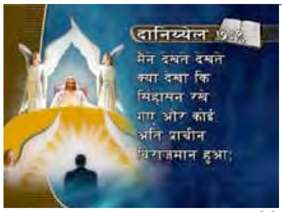

120

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : ९, १०)
"मैंने देखते देखते क्या देखा कि सिंहासन रखे गए और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ;

121

उसका वस्त्र हिम सा उजला था और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे।

१७ - झूठ की पहचान

122

उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिए धधकती हुई आग के से थे;

123

उसके सम्मुख से आग की धारा निकल कर बह रही थी।

124

हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे;

125

और लाखों लाख लोग उसके सामने हाजिर थे। फिर न्यायी बैठ गये और पुस्तकें खोली गयीं।"

दानिय्येल ७ : ९, १०

126

दानिय्येल ने परमेश्वर पिता को, जिसे यहाँ अति प्राचीन कहा गया, आते और महिमामय सिंहासन पर विराजमान होते देखा।

127

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २२) ध्यान दीजिए दानिय्येल इस घटना का वर्णन कैसे करता है। "जब तक वह अति प्राचीन दिन आए!

दानिय्येल ७ : २२

अब अदालत न्याय आरम्भ करने के लिए तैयार है।

१७ - झूठ की पहचान

128

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : १०)

"न्यायी बैठ गए और पुस्तकें खोली गईं।"

दानिय्येल ७ : १०

दानिय्येल को स्वर्ग में हो रहे न्याय को दिखाया गया जहाँ उस छोटे सींग की शक्ति का परमेश्वर के द्वारा न्याय होते दिखाया गया जिसने पवित्र लोगों के विरुद्ध लड़ाई की थी।

दानिय्येल ने इस न्याय का परिणाम भी देखा:

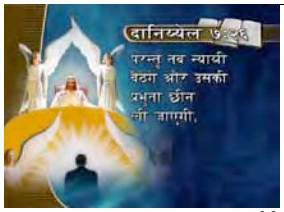

129

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २६)

"परन्तु तब न्यायी बैठेंगे और उसकी प्रभुता छीन ली जाएगी,

130

यहाँ तक कि उसका अन्त ही हो जाएगा।"

दानिय्येल ७ : २६

131

पिता परमेश्वर के विराजमान होने के बाद और न्याय आरम्भ ही होने वाला था, दानिय्येल ने कुछ बहुत ही विशेष, अत्यंत सुन्दर घटते हुए देखा :

132

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : १३)

"मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो मनुष्य के सन्तान सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था,

१७ - झूठ की पहचान

133

और वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा, और उसको वे समीप लाए।"

दानिय्येल ७ : १३

134

यह विशिष्ठ व्यक्ति "मनुष्य की संतान" कौन है जो सनातन न्यायी के समक्ष प्रस्तुत किया गया?

135

यीशु ने अपने चकित चेलों के लिए नये नियम में इस शब्द का प्रयोग चालीस से अधिक बार स्वयं के लिए किया।

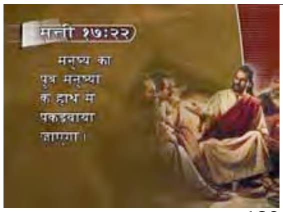

136

(मूलपाठ : मत्ती १७ : २२,२३)

उसने कहा, "मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा :

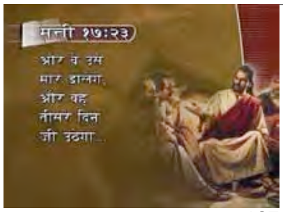

137

और वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।"

मती १७ : २२,२३

यहूदा, धोखेबाज चेले से यीशु ने पूछा,

१७ - झूठ की पहचान

138

(मूलपाठ : लूका २२ : ४८)

"क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?"

लूका २२ : ४८

किन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात वह है जो मसीह की जाँच के समय न्याय आसन पर बैठे महायाजक के लिए कही गयी:

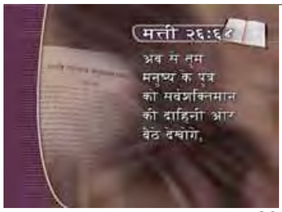

139

(मूलपाठ : मत्ती २६ : ६४)

"अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे देखोगे,

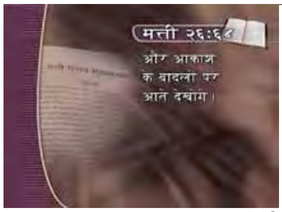

140

और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।"

मत्ती २६ : ६४

यहाँ यीशु बिना गलती किए स्वयं को मनुष्य के पुत्र रुप में पहचान करवाता है जिसे दानिय्येल ने अपने दर्शन में देखा – वह जो आकाश के बादलों के साथ आता हुआ दिखा।

१७ - झूठ की पहचान

141

मसीह न्याय में सब पापियों का, जिन्होंने उसे अपना वकील और मध्यस्त स्वीकार कर लिया है, प्रतिनिधित्व करने के लिए आते हैं।

उस अदालत में हमारे न्यायी के रुप में उन्होंने कभी कोई मुकद्दमा नहीं हारा!   वचन कहता है कि पुस्तकें खोली गई।

142

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : १०)

"न्यायी बैठ गए और पुस्तकें खोली गयीं।"

दानिय्येल ७ : १०,अन्तिम भाग

143

पुस्तकों में हमारे जीवन का प्रत्येक कार्य - चाहे बुरा हो या अच्छा हो –लिखा होगा।

उनमें जो सुअवसर परमेश्वर ने हमें दिये है और जिस प्रकार हमने उन सुअवसरों का उत्तर दिया है वह भी लिखा होगा।

144

यदि हमने मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार कर लिया है तब जब हमारा न्याय परमेश्वर के सामने आता है मसीह आगे बढ़कर घोषणा करेगा कि उसकी मृत्यु ने हमारे द्वारा किए गए प्रत्येक पाप की कीमत चुका दी है!

१७ - झूठ की पहचान

145

उसी दिन स्वर्ग के अभिलेख में उसका पापरहित जीवन हमारे पापपूर्ण जीवन का स्थान ले लेता है, और जब पिता हमारा अभिलेख देखता है तो वह केवल मसीह के पापरहित जीवन को, जो हमें मिला है, देखता है।

146

हमें अनन्त जीवन मिलेगा, इसलिए नहीं कि हमने कुछ किया है परन्तु इसलिए कि मसीह ने क्रूस पर हमारे लिये कुछ किया है।

शायद दानिय्येल ने छोटे सींग और उसके अन्त में इतनी अधिक रुचि ली कि उसने छलांग लगाकर इसकी पूरी कहानी बता दी जो वास्तव में मसीह के आगमन से पूर्व घटती है,

147

जब पृथ्वी पर जीवन के कार्यो की जाँच होती है और यह निर्णय हो जाता है कि कौन परमेश्वर के सनातन राज्य में होंगे, तब राज्य और प्रभुता मसीह को दिये गयेः

148

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : १४)

"तब उसको ऐसी प्रभुता महिमा और राज्य दिया गया,

149

कि सब जातियों और भाषाओं के लोग उसकी सेवा करें :

१७ - झूठ की पहचान

150

उसकी प्रभुता सदा तक अटल रहे,

151

और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।"

दानिय्येल ७ : १४

दानिय्येल इस राज्य के विषय में और अधिक सुसमाचार बताता है :

152

(मूलपाठः दानिय्येल ७:२७)

"राज्य और प्रभुता परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी।"

दानिय्येल ७:२७

परमेश्वर की प्रजा, उसके पवित्र लोग, सनातन राज्य के मसीह के साथ संयुक्त रुप से उत्तराधिकारी होंगेः

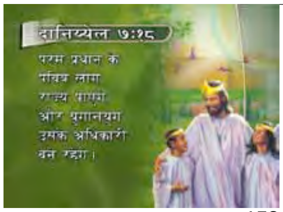

153

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : १८)

"परम प्रधान के पवित्र लोग राज्य पाएंगे, और युगानयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे।"

दानिय्येल ७ : १८ ।

१७ - झूठ की पहचान

154

भविष्यवाणी का यह भाग नबूकदनेस्सर के स्वप्न की शिला के समानान्तर है जो बिना किसी के हाथ लगाये काटी गयी और मूर्ति के पैरों पर लगी और विशाल पहाड़ बन गयी

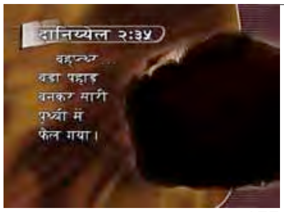

155

(मूलपाठ: दानिय्येल २:३५)

"...वह पत्थर... बड़ा पहाड़ बनकर सारी पृथ्वी में फैल गया।"

दानिय्येल २:३५

इन दो समानान्तर भविष्यवाणियों में –नबूकदनेस्सर के स्वप्न की विशाल मूर्ति और

156

दानिय्येल के जन्तुओं के स्वप्न द्वारा परमेश्वर ने पृथ्वी के इतिहास को प्राचीन बाबुल से लेकर उस महान दिन तक जब यीशु महिमा के साथ बादलों में प्रेम और धार्मिकता के अनन्त राज्य की स्थापना हेतु आएगा, उसका सारांश दे दिया है।

१७ - झूठ की पहचान

157

आज हम लोहे और मिट्टी के पैरों के समय में रह रहें हैं।

पृथ्वी और इसके निवासियों के लिए समय समाप्त होने वाला है!

यही संदेश है जो परमेश्वर अपनी महान भविष्यवाणियों द्वारा हममें से प्रत्येक को देने का प्रयास कर रहा है।

158

शताब्दियों के विश्व इतिहास को बाइबिल के केवल दो छोटे अध्यायों में व्यक्त करने का यह क्या ही विल्क्षण तरीका है।

सोचिए क्या दानिय्येल को बाबुल में इतने समय पहले उस रात को दिया गया स्वप्न परमेश्वर के लोगों के लिए उसके प्रेम और रुचि को व्यक्त नहीं करता?

159

आपने देखा, यरुशलेम बर्बाद था।

परमेश्वर की प्रजा बाबुल की दासत्व में थी।

स्थिति काफी निराशाजनक थी।

परन्तु परमेश्वर इस सर्वाधिक अनोखे तरीके से दानिय्येल को बता रहा था, "मैं अभी भी शासक हूँ।

१७ - झूठ की पहचान

160

शासक आयेंगे और शासक चले जायेंगे। साम्राज्यों का उदय और पतन होगा किन्तु मैं अपने बच्चों को पृथ्वी पर या उनके लिए मेरी योजना को भूला नहीं हूँ। किसी दिन सब कुछ ठीक हो जाएगा।" और मित्र, राजा और राज्य आए और गए। मूर्ति और जन्तुओं की दोहरी भविष्यवाणियाँ लगभग पूर्णरुप से पूरी हो चुकी हैं। यीशु न्याय करने के लिए और बहुत पहले आदम और हव्वा द्वारा खोई हुई प्रभुता की पुनःस्थापना करने के लिए बहुत शीर्घ आ रहे हैं।

161

परमेश्वर चाहता है कि पृथ्वी पर उसके बच्चे उस राज्य का एक भाग हों और उस महिमामय क्षण के लिए तैयार हों जब हमारा उद्धारकर्त्ता वापस आयेगा! क्योंकि उस महिमामय दिन में हम अपने उद्धारकर्त्ता और प्रभु को देखें!

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

1

पशु की छाप प्राप्त करने से कैसे बचें

2

यह एक विशेष दिन था; एक महान दिन जो विशेष उत्सव के लिए शाही बैंड -बाजे के साथ एकत्र होने का दिन था। राजा नबूकदनेस्सर उतेजित था।

3

उसने समस्त विस्तृत बाबुल साम्राज्य से उच्च पदाधिकारियों को बुलाया था। यह वह दिन था जिसकी वह तीव्र उत्सुकता से प्रतिक्षा कर रहा था और ऐसा दिन जिसे वह जीवन भर कभी भुला न सकेगा।

4

कुछ समय पहले राजा ने एक विचित्र स्वप्न देखा था। उसने धातु की एक विशाल मूर्ति देखी थी।

5

पर दूसरे दिन वो याद ना कर सका कि उसका स्वप्न क्या था, इसलिए दानिय्येल को अर्थ के साथ - साथ राजा को उसका स्वप्न भी बताना पड़ा। नबुकदनेस्सर अपने स्वप्न के अलावा और कुछ सोच नहीं पा रहा था।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

6

वह सोने का सिर था!

उसका राज्य संसार में अद्वितीय था!

अब प्रत्येक व्यक्ति देखेगें की बाबुल वास्तव में कितना महान था और वह स्वयं कितना महान था -का सजीव प्रदर्शन!

7

यह एक विशेष दिन था; एक महान दिन जो विशेष उत्सव के लिए शाही बैंड -बाजे के साथ एकत्र होने का दिन था। राजा नबूकदनेस्सर उतेजित था।

8

यह मूरत पूरी सोने की थी केवल सिर ही नहीं किन्तु पूरी देह भी। हर कोई शोभायमान मूरत की चौंकने वाली सूरत को देखकर चकित था। संसार पर यह प्रकट करने के लिए राजा का तरीका था कि उसका राज्य सदा बना रहेगा।

9

इसदिन राजा के साम्राज्य के हजारों महत्वपूर्ण अधिकारी नबूकदनेस्सर की सोने की मूरत के समर्पण को देखने के लिए एकत्र हुए।

10

अचानक विशाल भीड़ पर एक शान्ति छा गई। तुरहियाँ बजीं, और राजा के प्रतिनिधि ने ऊंचे शब्द से घोषणा की,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

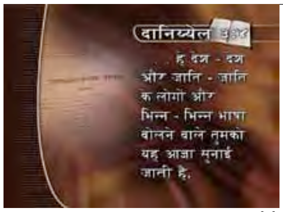

11

(मूलपाठ : दानिय्येल ३ : ४ -६)

दानिय्येल ३ : ४ -६

"---हे देश -देश और जाति -जाति के लोगों और भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले तुमको यह आज्ञा सुनाई जाती है,

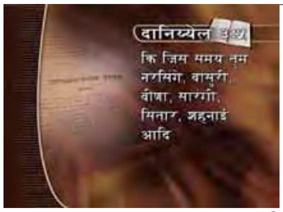

12

कि जिस समय तुम नरसिंगे, बांसुरी, वीणा, सारंगी, सितार, शहनाई आदि

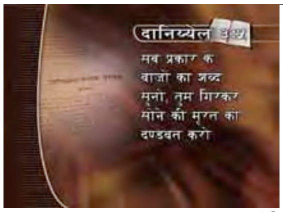

13

सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो, तुम गिरकर सोने की मूरत को दण्डवत करो

14

जो नबूकदनेस्सर राजा ने खड़ी कराई है;

15

और जो कोई गिरकर दण्डवत न करेगा

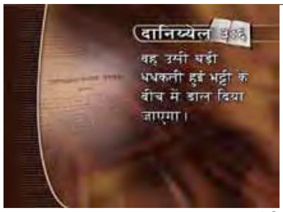

16

वह उसी घड़ी धधकते हुए भट्ठे के बीच में डाल दिया जाएगा।"

दानिय्येल ३ : ४ -६

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

17

संगीत बजा। सब लोगों ने नीचे गिरकर मूरत को दण्डवत किया।

लगभग सब लोगों ने।

18

घुटनों पर झुकी विशाल भीड़ में तीन यहूदी -शद्रक, मेशक और अबेदनगो खड़े थे जिन्होंने मूरत के सामने झुकने और दण्डवत करके परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना स्वीकार नहीं किया। यह समाचार शीघ्र ही राजा तक पहुँच गया।

19

(दृश्य)

कोई उसके सीधे आदेश को तुच्छ जानने का साहस कर सकता था इससे क्रोधित होकर नबूकदनेस्सर ने अपराधियों को उसके सामने लाने का आदेश दिया।

20

(दृश्य)

राजा ने जैसे ही तीनो यहूदियों को देखा, उसने उन्हें तुरन्त पहचान लिया।

वे असामान्य युवक थे, जो महान ज्ञान और अनेक गुणों से सम्पन्न थे।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

21

(दृश्य)

उसने बीते दिनों में उन्हें अनेक उत्तरदायित्व सौंपे थे जो उन्होंने ईमानदारी और कुशलता से पूरे किये थे। उनके लिए कुछ दया का भाव रखते हुए उसने उन्हें दूसरा अवसर देने का निश्चिय किया।

उनमें से प्रत्येक को नाम से पुकार कर राजा ने कहा,

22

(मूलपाठ : दानिय्येल ३ : १५)

"यदि तुम अभी तैयार हो कि जब सब प्रकार के बाजों का शब्द सुनो,

23

और उसी क्षण गिरकर मेरी बनवाई हुई मूरत को दण्डवत करो, तो बचोगे! किन्तु यदि तुम दण्डवत न करो,

24

तो उसी घड़ी धधकते हुए भट्टे के बीच में डाले जाओगे।"

दानिय्येल ३ : १५

एक बार जब राजा घोषणा कर दी तो उसे पूरा करना था अन्यथा उसे सब लोगों के सामने शर्मिन्दा होना पड़ता।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

25

शद्रक, मेशक और अबेदनगो विशाल भट्टे से निकलती ज्वालाओं को देख सकते थे। राजा के इरादे के विषय में कोई सन्देह नहीं हो सकता था।

26

वे क्या करें? आप क्या करते?
क्या वे परमेश्वर की सीधी आज्ञा का उल्लंघन करें?
ओह! यह तर्क देना आसान रहा होता कि इन परिस्थितियों में केवल एक बार मूरत को दण्डवत करना कोई हानिकारक नहीं होगा। सोचा जाये तो उनके जीवन दाव पर थे! क्या राजा का सम्मान करना महत्वपूर्ण नहीं रहा होगा?

27

स्पष्टतया ऐसे विचार उनके मन में कभी नहीं आए, क्योंकि परमेश्वर की आज्ञाकारिता उन्हें बचपन से सिखाई गई थी और उनमें से एक आज्ञा कहती थी,

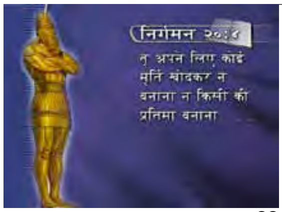

28

(मूलपाठ : निर्गमन २० : ४, ५)
"तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना न किसी की प्रतिमा बनाना ---

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

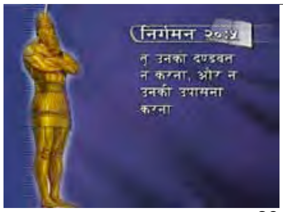

29

तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना ---"

निर्गमन २० : ४,५

शान्तिपूर्वक निःसंकोच उनका उत्तर आया :

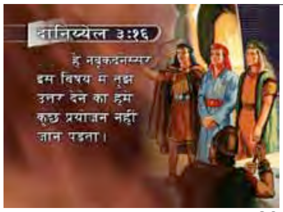

30

(मूलपाठ : दानिय्येल ३ : १६ -१८)

"---हे नबूकदनेस्सर इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता।"

31

यदि ऐसा है तो हमारा परमेश्वर जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है,

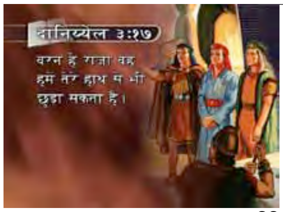

32

वरन हे राजा वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।

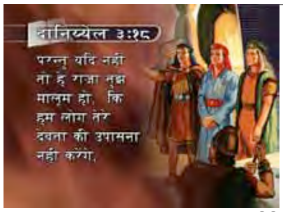

33

परन्तु यदि नहीं तो हे राजा तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

34

और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत करेंगे।"

दानिय्येल ३ : १६ -१८ ।

कहानी का शेष भाग उत्तेजनापूर्ण है। राजा बहुत क्रोधित हुआ और आदेश दिया कि भट्ठे को सामान्य से सात गुणा अधिक धधकायी जाए।

35

तब राजा ने आज्ञा दी कि शद्रक, मेशक और अबेदनगों को बांधकर उन्हें धधकते हुए भटट् में डाल दो। आग इतनी तीव्र थी कि सिपाही जिन्होंने उन तीनों जवानों को आग में फेंका जल मरे।

36

अचानक राजा अपने पैरों पर भटट् के द्वार की ओर दौड़ते हुए जो कुछ उसने देखा अपने सलाहकारों से चिल्लाकर कहा कि चार पुरुष ज्वालाओं के बीच टहल रहे है और चौथे का स्वरूप परमेश्वर के पुत्र के समान था!

37

हमारा प्रभु धधकते भट्ठे में प्रवेश कर गया। वह तीन यहूदियों के साथ ज्वालाओं के बीच में था। वह सर्वशक्तिमान छुड़ाने वाला है।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

38

नबूकदनेस्सर ने उन यहूदियों को भटट् से बाहर आने की आज्ञा दी और प्रत्येक अत्यधिक आश्चर्यचकित था कि न तो उन तीनों के सिर का कोई बाल ही झुलसा और न ही उनके वस्त्रों से धुए की गन्ध ही पाई गई! सोने की विशाल मूरत भूला दी गयी। उसदिन के समाचारों का शीर्षक और आने वाले कई वर्षो तक उन तीन जवानों का आश्चर्यजनक अनुभव ही रहा होगा।

39

उनके परमेश्वर ने उन्हें ज्वालाओं से बचा लिया था! उसके विश्वास योग्य अनुयायियों के लिए परमेश्वर के प्रेम और उनका ध्यान रखने की क्या जबरदस्त गवाही है!

क्या भविष्य में किसी दिन यह संभव है कि कोई हमें यह आज्ञा देगा कि आराधना कैसे करें।

क्या यह संभव है कि उपासना के विषय पर इन तीन यहूदियों के समान हमें मृत्युदण्ड का सामना करना पड़े।

40

आप सही कहते हैं कि मैं खुश हूँ कि हमें कोई आज्ञा देने वाला नहीं है वह बहुत भयानक होता यदि आपको मृत्यु का सामना करना पड़ता जब हमें कोई और आज्ञा देता है कि उपासना कैसे करें।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

41

क्या आप नहीं जानते कि बाइबिल की भविष्यवाणी के अनुसार इतिहास का महानतम संकट हमारे ठीक सामने है? इस अन्तिम संकट का मुख्य विषय उपासना ही है?

42

तीन यहूदियो के समान पृथ्वी के अन्तिम समय में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे ही चुनाव का सामना करना होगा? एक चुनाव जो सदैव के लिए उनके भाग्य का फैसला करेगा!

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

43

बाबुल के शक्तिशाली शासक नबूकदनेस्सर ने एक झूठी मूरत स्थापित की जिसे प्रत्येक व्यक्ति को दण्डवत करना था। वास्तविक विषय आराधना था। मूरत पूजा की मनाही करने वाली दूसरी आज्ञा, सच्चे परमेश्वर की अराधना और झूठे देवताओं की उपासना के बीच वफादारी की जांच थी।

भट्ठे को सामान्य से सात गुणा अधिक धधकाया गया था। किसी भी संकट के समय से अधिक संकट का समय था।

जो भी कलीसिया राजा की आज्ञा उल्लंघन करेगी उसको मृत्यु दण्ड दिया जायेगा।

अन्तिम दिनों में, परमेश्वर का वचन प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रकट करता है कि एक शक्तिशाली विश्व शासक कलीसिया और राज्य को पुनः एकीकृत करेगा। मुख्य विषय उपासना होगा। पृथ्वी के अन्तिम संकटकाल के समय आज्ञाओं की वफादारी की परिक्षाएँ होंगी जब एक बार फिर एक विश्वव्यापी मृत्यु की घोषणा की जाएगी।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

44

पृथ्वी के रहने वालों के लिए दी गयी सर्वाधिक गंभीर चेतावनी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दर्ज है। प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर इस संदेश को अति महत्वपूर्ण समझता है, क्योंकि उसने कहा :

45

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : ९)

"जिसके कान हों वह सुने।"

प्रकाशितवाक्य १३ : ९

हमें इस सर्वाधिक आवश्यक संदेश को अवश्य सुनना चाहिए!

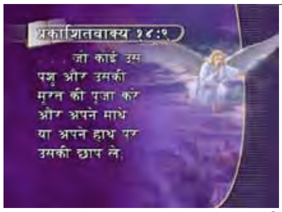

46

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : ९, १०)

"---जो कोई उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले,

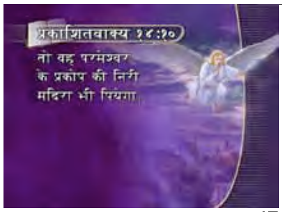

47

तो वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा भी पियेगा,

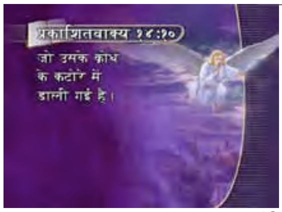

48

जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

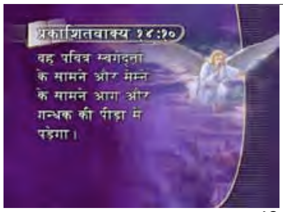

49

वह पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा।"

प्रकाशितवाक्य १४ : ९, १०

50

प्रत्येक व्यक्ति को इस भविष्यवाणी का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना चाहिए और निश्चित कर लेना चाहिए कि उसे पशु या उसकी छाप से कुछ सम्बन्ध नहीं है।

51

बाइबिल की भविष्यवाणी के अनुसार अन्तिम समय में पृथ्वी के वासी दो समूहों में बांटे जायेंगेः

एक वे जो परमेश्वर के प्रतिवफादार होंगे और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं और दूसरे वे जो पशु की पूजा करते और उसकी छाप लेते हैं।

52

जो लोग पशु की छाप लेने और उसकी पूजा करने से इन्कार कर देते हैं उन पर अत्यधिक दबाब डाला जाएगा। यह संकट उतना ही गंभीर होगा जितना की तीन यहूदियों को जब नबूकदनेस्सर के सामने खड़े थे और सामना किया था।

53

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७)

"और उसने छोटे -बड़े, धनी -कंगाल, स्वतंत्र सबके दाहिने हाथ या उन के माथे पर एक एक छाप करा दी,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

54

कि उसको छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो और कोई लेनदेन न कर सके।"

प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७

55

अन्त में उनके लिए मृत्युदण्ड के लिए एक राजाज्ञा निकाली जायेगी जो पशु और उसकी मूरत की पूजा करने से मना कर देंगे।

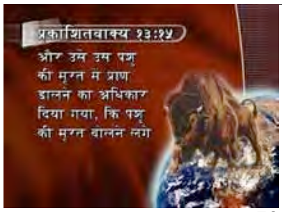

56

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १५)

प्रकाशितवाक्य के दूसरे पशु के विषय में बाइबिल कहती है – "और उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि पशु की मूरत बोलने लगे

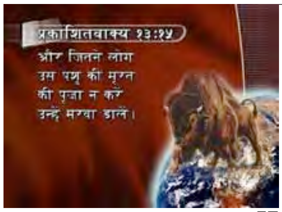

57

और जितने लोग उस पशु की मूरत की पूजा न करें उन्हें मरवा डालें।"

प्रकाशितवाक्य १३ : १५

58

मनुष्य कहता है, "यदि तुम पशु की पूजा नहीं करोगे, तो न तो हम तुम से कुछ खरीदेंगे और न ही तुम्हारे लिए कुछ बेचेंगे, और अन्त में हम तुम्हें मार डालेंगे।"

59

परमेश्वर कहता है, "यदि तुम पशु की पूजा करोगे तो तुम परमेश्वर के क्रोध की मदिरा पिओगे।"

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

60

पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के सर्वाधिक कठिन फैसले का सामना करना पड़ेगा जो कभी उन्होंने किए हों।

परमेश्वर के ये निर्णय क्या हैं जो दुष्टों पर उंडेले जाने को हैं?

उत्तर प्रकाशितवाक्य में है :

61

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १५ : १)

"फिर मैंने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिन्ह देखा :

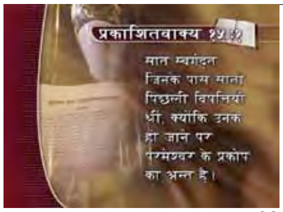

62

सात स्वर्गदूत जिनके पास सातों पिछली विपत्तियाँ थीं, क्योंकि उनके हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का अन्त है।"

प्रकाशितवाक्य १५ : १

63

अन्तिम सात विपत्तियों में से तीन का निशाना विशेष रुप से पशु और उसके पुजारियों पर है। निश्चिय ही परमेश्वर बिना चेतावनी के लोगों को दण्ड की आज्ञा नहीं भेजेगा।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

64

यही वह बात है जो परमेश्वर के बारे में इतनी अद्भुत है!

वह अन्तिम सात विपत्तियाँ मनुष्य जाति पर पहले प्रत्येक को यह जानने का अवसर दिये बिना कि पशु की छाप क्या है और इसे लेने से कैसे बचें, कोई विपत्ति नहीं डालेगा।

65

उसकी अन्तिम चेतावनी संदेश के साथ परमेश्वर भविष्यवाणी को खोलने की चाबी देता है, जिससे कि हम समझ सकें कि यह किसके विषय में है। किसी को भी आने वाले संकट का सामना बिना तैयारी करने की आवश्यकता नहीं है। हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि यह पशु शक्ति कौन है? और हम कैसे इस की छाप लेने से बच सकते हैं?

66

आइए हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाई जाने वाली भविष्यवाणी को खोलें और इस पशु शक्ति के विषय में पढ़ें।

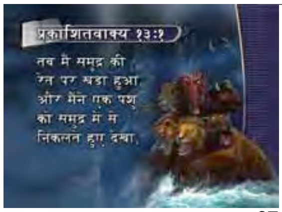

67

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १ -८)

यीशु के चेले यूहन्ना ने लिखाः "तब मैं समुद्र की रेत पर खड़ा हुआ, और मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

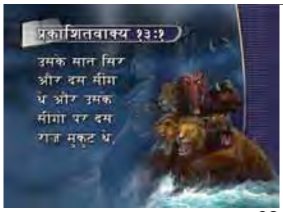

68

उसके सात सिर और दस सींग थे और उसके सींगो पर दस राज मुकुट थे,

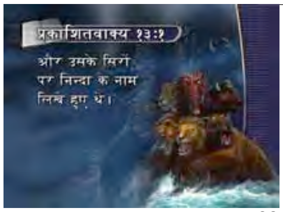

69

और उसके सिरों पर निन्दा के नाम लिखे हुए थे।

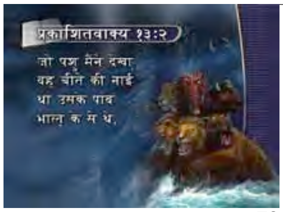

70

जो पशु मैंने देखा वह चीते की नाई था उसके पांव भालू के से थे,

71

और उसका मुँह सिंह का सा था।

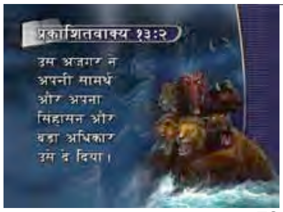

72

उस अजगर ने अपनी सामर्थ और अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार उसे दे दिया।"

प्रकाशितवाक्य १३ : १,२

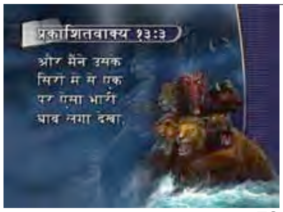

73

"और मैंने उसके सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा,

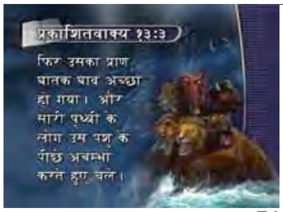

74

फिर उसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया। सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे अचम्भा करते हुए चले।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

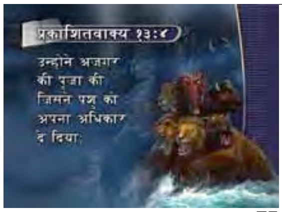

75

"उन्होंने अजगर की पूजा की जिसने पशु को अपना अधिकार दे दिया;

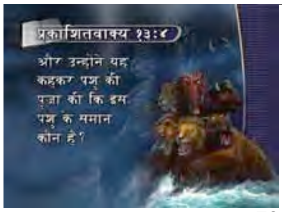

76

और उन्होंने यह कहकर पशु की पूजा की कि इस पशु के समान कौन है?

77

कौन उस से लड़ सकता है?"

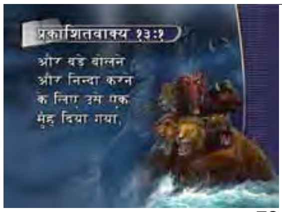

78

और बड़े बोलने और निन्दा करने के लिए उसे एक मुँह दिया गया,

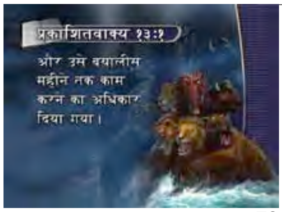

79

और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया।"

प्रकाशितवाक्य १३ : ३ -५

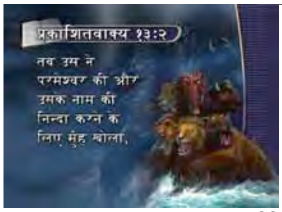

80

"तब उस ने परमेश्वर की और उसके नाम की निन्दा करने के लिए मुँह खोला,

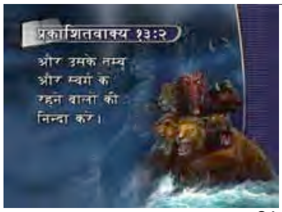

81

और उसके तम्बू और स्वर्ग के रहने वालों की निन्दा करें।"

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

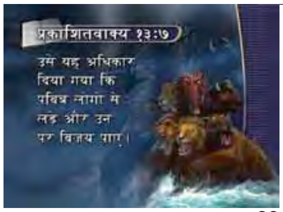

82

उसे यह अधिकार दिया गया कि पवित्र लोगों से लड़े और उन पर विजय पाए।

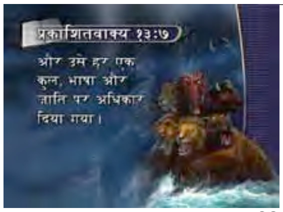

83

और उसे हर एक कुल, भाषा और जाति पर अधिकार दिया गया।

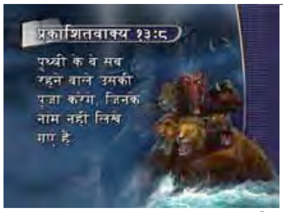

84

पृथ्वी के वे सब रहने वाले उसकी पूजा करेंगे, जिनके नाम नहीं लिखे गए हैं

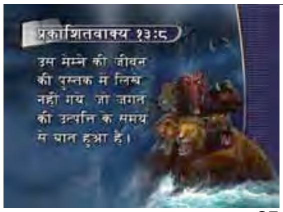

85

उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गये, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है।"
प्रकाशितवाक्य १३ : ६ -८

86

हमें इस भविष्यवाणी को एक एक बिन्दु करके देखने की आवश्यकता है। परमेश्वर यहाँ पुनः संसार के लिए उसकी चेतावनी की रुपरेखा बनाने के लिए भविष्य सूचक प्रतीकों का प्रयोग करता है।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

87

और पशु किसका प्रतीक है?
दानिय्येल ७ हमें सिखाता है कि पशु राज्यों या शासक शक्तियों का प्रतीक हैं।
यहाँ प्रकाशितवाक्य में हमें वास्तव में कुछ चमत्कारी चित्रण एक संयुक्त पशु जो दानिय्येल के चार महान पशुओं से मिलकर बना है, मिलता है। आपने ऐसा पशु कभी नहीं देखा होगा। दानिय्येल की चारों पशुओं का पुनः अवलोकन शिक्षाप्रद होगा और पशु शक्ति जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं, समझने में सहायक होगी।

88

सिंह किसको दर्शाता है? हाँ बाबुल को!

89

रीछ? बिल्कुल ठीक : मादी -फारस।

90

और चीता? यूनान, ठीक।

91

और भयानक दस सींगो वाला पशु? आपको भली प्रकार याद है। हाँ, यह रोमन साम्राज्य को दर्शाता है।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

92

प्रकाशितवाक्य १३ एक शक्ति है जो इन चारों महान विश्व साम्राज्यों के बाद आती है हमें अब एक विशेष बात मिलती है पृथ्वी पर केवल एक ही शक्ति है जिसमें भविष्यवाणी में बताये गए सब गुण पाए जाते हैं। पवित्रशास्त्र और लौकिक इतिहास पहचान को निश्चित करता है। पशु के बारे में बोलते हुए, यूहन्ना ने लिखा,

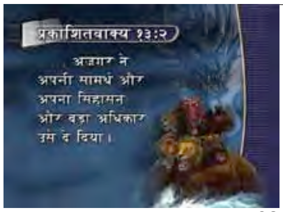

93

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : २)

"अजगर ने अपनी सामर्थ और अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार उसे दे दिया।"

प्रकाशितवाक्य १३ : २

हम पाते हैं कि अजगर शैतान का प्रतीक है क्योंकि बाइबिल कहती है,

94

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १२ : ७ -९)

"और स्वर्ग में लड़ाई हुई ----

95

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप जो इबलीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार का भरमाने वाला है पृथ्वी पर गिरा दिया गया ---"

प्रकाशितवाक्य १२ : ७ -९

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

96

वास्तव में शैतान कभी भी प्रत्यक्ष रूप से लड़ाई में कदम नहीं रखता वह छल से पर्दे के पीछे से दूसरे व्यक्तियों द्वारा शक्तियों और लोगों द्वारा कार्य करवाता है।

प्रकाशितवाक्य शैतान और कलीसिया के बीच राक्षस तुल्य संघर्ष का चित्रण करता है:

97

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १२ : ३ -५)
"और एक और चिन्ह स्वर्ग पर दिखाई दिया और देखो एक बड़ा लाल अजगर,

98

जिसके सात सिर और दस सींग थे और उसके सिरों पर सात राज मुकुट थे -----

99

और वह अजगर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी खड़ा हुआ था,

100

कि जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए।

101

और वह एक बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिए हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था :

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

102

और उसका बच्चा परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया।"
प्रकाशितवाक्य १२ : ३ -५

103

यह पुरूष बालक कौन है?
उत्तर है यीशु मसीह !
पर्दे के पीछे से अजगर या शैतान एक विश्व के द्वारा यीशु को नाश करने के लिए उदण्डता से प्रयासरत दिखाई देता है। ठीक ऐसा ही हुआ। मसीह के जन्म के समय शैतान किस राष्ट्र के द्वारा कार्य कर रहा था?

104

लौकिक इतिहास के पन्ने पलटने पर हम पाते हैं कि कैसर के अधीन मूर्तिपूजक रोम मसीह के जन्म के समय शासन कर रहा था।

105

जब यीशु पैदा हुआ तो हेरोदेश ने यीशु को मारने के प्रयास में बैतलहम में दो वर्ष तक के नर बालकों को मार डालने के लिए राजाज्ञा निकाली।

106

रोमी राज्यपाल पोन्तुस पीलातुस ने मसीह को मृत्युदण्ड दिया।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

107

रोमी सिपाहियों ने क्रूस पर ठोंका, और उसकी कब्र पर रोमी मुहर लगाई गयी। शैतान ने यीशु को नाश करने के लिए मूर्तिपूजक का काम रोम के द्वारा काम किया।

108

यीशु जी उठे और स्वर्ग पर ठीक उसी तरह उठा लिये गये जैसे कि भविष्यवाणी ने घोषणा की थी। क्या यह बाइबिल भविष्यवाणी आप में विश्वास को बढ़ाती है?

109

भविष्यवाणी ने आगे बताया कि यह शक्ति मूर्तिपूजक रोम

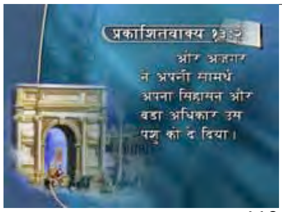

110

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : २)

अपना सामर्थ, अपना सिंहासन और बड़ा अधिकार पशु को दे देगा।

क्या मूर्तिपूजक रोम ने इस भविष्यवाणी को पूरा किया?

यदि हाँ, तो यह किसको दिया गया?

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

111

अनेक शताब्दियों तक रोमी कलीसिया ने रोम नगर पर अपना अधिकार प्रमाणित करने के लिए एक प्रमाण पत्र का प्रयोग किया जिसका शीर्षक था, 'कान्सटेनटाइन का दान'। इस प्रमाण पत्र ने, जो बाद में झूठा साबित हुआ, उन्हें पश्चिमी रोम पर राजनीतिक और धार्मिक दोनों ही रूप में शासन करने का अधिकार दे दिया। इस प्रमाण पत्र को आधार बनाकर राज्य के रूप में उनकी शक्ति को और पोप को उनका राजा स्थापित किया गया।

112

३०० ईसवी में कान्सटेन्टाइन अपनी राजधानी बाइजान्टीयम ले गया और इसका नाम अपने सम्मान में कान्सटेन्टीनोप्ल बदल दिया।

113

जब कान्सटेन्टाइन ने रोम छोड़ा तो उसने अपना सिंहासन रोम के बिशप को दे दिया।
रोम का बिशप कलीसिया का मुखिया होने के साथ -साथ सिंहासन पर राजा भी हो गया।
कलीसिया और राज्य का एक संघ बना और कलीसिया राज्य पर शासन करने लगी।

114

वैटीकन सिटी रोम के बीच में है जो पुराने रोमन साम्राज्य का केन्द्र था।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

115

रोमन कलीसिया आज भी न केवल धार्मिक शक्ति किन्तु एक राजनीतिक शक्ति के रूप में भी वहीं बना हुआ है। संसार का लगभग
प्रत्येक देश वेटीकन को राजदूत भेजता है।

116

यह बात दिमाग में रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि भविष्यवाणी एक संस्था या धर्म विज्ञान की पद्धति के विषय में चर्चा कर रही है। यह किसी व्यक्ति विशेष की आलोचना नहीं कर रही है!

117

बहुत बड़ी संख्या में सच्चे लोग है जो परमेश्वर की उपासना करते हैं किन्तु अभी तक जो आप बाइबिल भविष्यवाणी से इस शक्ति के बारे में आज सीख रहे हैं नहीं जानते हैं।

118

प्रकाशितवाक्य १३ में पशु शक्ति की पहचान चिन्हों का ध्यान पूर्वक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह वही शक्ति है जिसे दानिय्येल ७ में छोटे सींग से बोध कराया गया था जिसे हम पहले ही देख चुके हैं।

119

यूहन्ना भविष्यवक्ता ने कहा इस पशु शक्ति को एक भेद करने वाली छाप होगी जिसे यह प्रत्येक के ऊपर बलपूर्वक लगाने का प्रयास करेगा !

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

120

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७)
"उसने छोटे और बड़े, धनी और कंगाल, स्वतन्त्र और दास सब के दाहिने हाथ पर उनके माथे पर एक -एक छाप करा दीः

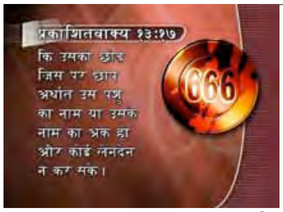

121

कि उस को छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो और कोई लेन देन न कर सके।"
प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७

122

परमेश्वर के वचन के अनुसार इस छाप को परमेश्वर के शासन के प्रति विद्रोह या भक्तिहीनता का प्रतीक होना चाहिए। बाइबिल दूसरे समूह के विषय स्पष्टता से बताती है जो पशु की छाप नहीं लेगा।

123

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : १२)
"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं।"
प्रकाशितवाक्य १४ : १२

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

124

कोई गलती न करें, जिसका संसार सामना करेगा वह महान विषय परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता पर केंद्रित होगा।

लोगों का एक समूह पशु की छाप ले लेता है, जबकि दूसरा परमेश्वर की सब आज्ञाओं का पालन करते हुए और यीशु में विश्वास बनाए रखते हुए परमेश्वर के प्रति सच्चे और वफादार है।

125

परमेश्वर के लोग भी एक छाप लेंगे किन्तु यह परमेश्वर की छाप परमेश्वर की मुहर होगी।

126

यह उसके अनुयायियों के माथे पर लगायी जाएगी।

127

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ७ : २,३)

"फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को जीविते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूरब से ऊपर की ओर आते हुए देखा :

128

उसने उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें पृथ्वी और समुद्र की हानि करने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

129

पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुँचाना,

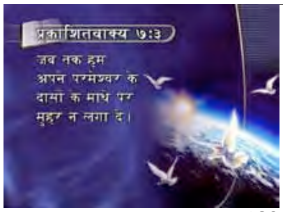

130

जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें।"

प्रकाशितवाक्य ७ : २, ३

131

मैं वह मुहर चाहता हूँ, क्या आप नहीं ? उससे बढ़कर कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है विश्व इतिहास का अन्तिम संघर्ष परमेश्वर की मुहर या पशु की छाप को लेकर है। यह परमेश्वर के चिन्ह और झूठे चिन्ह के बीच है। जब हम परमेश्वर की मुहर या छाप खोज लेते हैं तो झूठी छाप को खोजना आसान होगा जो कि पशु शक्ति द्वारा लगाई जाएगी। परमेश्वर बताता है कि उसका चिन्ह या मुहर क्या है?

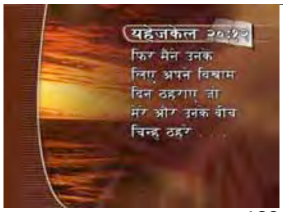

132

(मूलपाठ : यहेजकेल २० : १२)

"फिर मैंने उनके लिए अपने विश्राम दिन ठहराए जो मेरे और उनके बीच चिन्ह ठहरे ----"

यहेजकेल २० : १२

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

133

(मूलपाठ : निर्गमन ३१ : १३)

परमेश्वर कहता है, "तू इस्राएलियों से यह भी कहना कि निश्चय तुम मेरे विश्राम दिनों को मानना,

134

क्योंकि तुम्हारी पीढ़ी -पीढ़ी में और मेरे और तुम लोगों के बीच यह एक चिन्ह ठहरा है,

135

जिससे तुम यह बात जान रखो कि यहोवा हमारा पवित्र करने हारा है।"

निर्गमन ३१ : १३

136

परमेश्वर ने कहा कि सब्त उसके अधिकार का चिन्ह या छाप है। पशु शक्ति क्या कहती है कि इसके अधिकार की छाप क्या है?

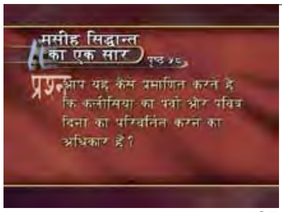

137

निम्नलिखित कथन कैथोलिक केटेक्जिम से लिया गया है :

प्रश्नः– कैसे आप यह प्रमाणित करते हैं कि कलीसिया को पर्वो और पवित्र दिनों को परिवर्तित करने का अधिकार है?

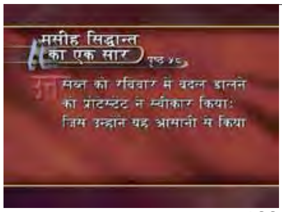

138

उत्तरः– "सब्त को रविवार में बदल डालने को प्रोटेस्टेंट ने मंजूर किया : जिससे उन्होंने यह आसानी से किया

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

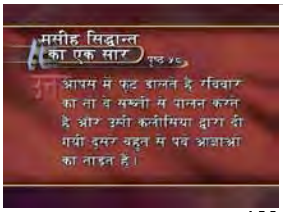

139

आपस में फूट डालते है रविवार का तो वे सख्ती से पालन करते हैं और उसी कलीसिया द्वारा दी गयी दूसरे बहुत से पर्व आज्ञाओं को तोड़ते हैं।

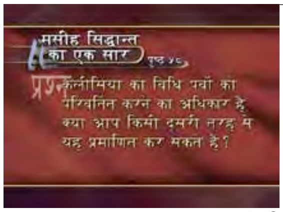

140

प्रश्नः - क्या आप किसी दूसरी तरह से यह प्रमाणित कर सकते हैं कि कलीसिया को पर्वो और पवित्र दिनों को परिवर्तित करने का अधिकार है?

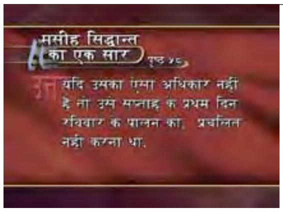

141

उत्तर

"यदि उसका ऐसा अधिकार नहीं है तो उसे सप्ताह के प्रथम दिन रविवार के पालन को,

प्रचलित नहीं करना था,

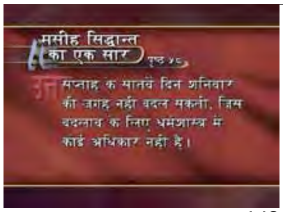

142

सप्ताह के सातवें दिन शनिवार की जगह नहीं बदल सकती, जिस बदलाव के लिए धर्मशास्त्र में कोई अधिकार नहीं है।"

 - मसीह सिद्धान्त का एक सार, हेनरी टयूबरविले पृष्ठ ५८

143

उसकी अपनी साक्षी के अनुसार रविवार रोमन कलीसिया के धार्मिक अधिकार की छाप है।

वह स्वयं स्वीकार करती है कि उसने उपासना के दिन को शनिवार से रविवार में बदला और आगे,

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

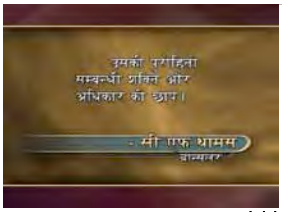

144

"वो कहती है कि यह बदलाहट उसकी शक्ति और अधिकार का चिन्ह है।"

(२८ अक्टूबर, १८९५ में कार्डिनल गिब्बन्स को चान्सलर सी एफ. थामस का पत्र,)

रोमी कलीसिया प्रोटेस्टेंट कलीसियाँ को यह बताने की चुनौती देती है कि उन्होंने परमेश्वर के पवित्र दिन को क्यो अपवित्र किया है?

145

(दृश्य)

क्यों बाईबिल के सब्त को छोड़ कर उस दिन को मानने लगे जिसकी स्थापना,

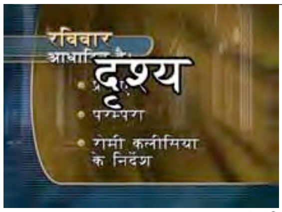

146

(दृश्य)

प्रथाएं, परम्परा और रोमी कलीसिया द्वारा बदले दिन को मानते है।

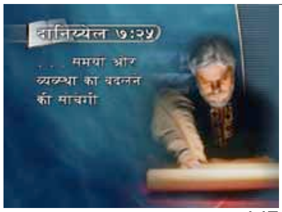

147

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : २५)

दानिय्येल ने बताया कि यह पशु शक्ति

"---समयों और व्यवस्था को बदलने की सोचेगी --"

दानिय्येल ७ : २५

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

148

(मूलपाठ : दानिय्येल ८ : १२)

उसने यह भी बताया कि यह शक्ति "उसने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया और वह यह काम करते करते सफल हो गया।"

दानिय्येल ८ : १२

149

यूहन्ना ने बताया कि शैतान प्रत्येक को पशु की छाप लेने के लिए विवश करेगा:

150

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७)

"उसने छोटे और बड़े, धनी और कंगाल, दास और स्वतंत्र सबके दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक छाप करवा दी,

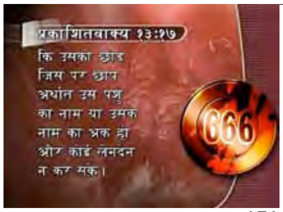

151

कि उसको छोड़ जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम या उसके नाम का अंक हो और कोई लेन देन न कर सके।"

प्रकाशितवाक्य १३ : १६, १७

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

152

यह शक्ति इस भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए अन्त समय में राजनीतिक सरकारों का प्रयोग करके अपने अधिकार की छाप को प्रत्येक के ऊपर लगाने का प्रयास करेगी।
ध्यान दीजिए परमेश्वर कितनी स्पष्टता से इस शक्ति की पहचान करवाता है:

153

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १३ : १८)
"ज्ञान इसी में है जिसे बुद्धि हो, वह पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है:

154

उसका अंक ६६६ है।"
प्रकाशितवाक्य १३ : १८

155

आप पूछेंगें "पशु के अंक का अर्थ क्या है?"
अनेक लोग यह प्रश्न पूछ चुके हैं।

156

हम कैथोलिक कलीसिया को उत्तर देने देंगे। कैथोलिक कलीसिया की राजकीय भाषा लैटिन है कैथोलिक धर्म विज्ञान में पोप सम्पूर्ण कलीसिया का प्रतीक है।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

157

पोप की पदवियों में से एक बताई जाती है विकेरियस फिली डी जिसका अर्थ है "परमेश्वर के पुत्र के स्थान पर"

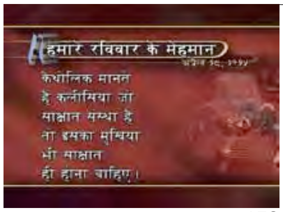

158

"कैथोलिक मानते हैं कलीसिया जो साक्षात संस्था है तो इसका मुखिया भी साक्षात ही होना चाहिए।"

159

(दृश्य)

आप देखेंगे कि लैटिन अक्षरों की सख्या -सूचक की गणना करना आसान है

विकेरियस ५, १, १००, ०, ०, १, ५० = ११२

फिली ०, १, ५०, १, १ = ५३

डेल ५०००१ = ५०१

= ६६६

यह पहचान का दूसरा स्पष्ट चिन्ह है कि रोम की कलीसिया की पशु शक्ति है।

160

परमेश्वर के वचन की भविष्यवाणियों के अध्ययन से हम क्या निष्कर्ष निकालेंगे? हम देख सकते हैं कि समय आ रहा है, दूर नहीं है, जब परमेश्वर की आज्ञा का सीधा उल्लंघन करते हुए, सभी से सप्ताह के पहले दिन को मानने पर जोर दिया जायेगा।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

161

हाल में एक निर्देश -पत्र को, जिसका शीर्षक "एपोस्टोलिक लेटर डाइस डामिनी, आफ दी होली फादर, जॉन पाल सेकेन्ड़ टू दी बिशप कल्र्जी एंड फेथफुल आफ दी चर्च आन कीपिंग दी लार्डस डे होली" है, कलीसिया के अधिकारियों को भेजा गया है यह निर्देश देते हुए कि वे रविवार को उपासना और विश्राम का दिन मानने के लिए दबाव डालें। क्या यह हो सकता है कि यह स्पष्ट उद्देश्य पत्र बाइबिल सब्त के बजाय रविवार पालन के लिए भूमिका तैयार कर रहा है?

162

इसने तो यहां तक सलाह दे डाली कि व इसे वास्तविक बनाने के लिए नागरिक कानून का सहारा लें। क्या यह परिचित लगता है? ठीक वैसा ही जैसा भविष्यवाणी कहती है !

163

एक प्रश्न जो बहुत लोग पूछते हैं कि क्या अभी किसी को पशु की छाप लगी है?

नहीं, अभी तक एक भी व्यक्ति को पशु की छाप नहीं लगी है।

प्रत्येक कलीसिया में परमेश्वर के सच्चे भक्त हैं।

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

164

जब नागरिक कानून द्वारा पशु की छाप बलपूर्वक लगायी जाएगी उस समय प्रत्येक को परमेश्वर की आज्ञानुसार सब्त का पालन करने के द्वारा परमेश्वर की भक्ति, या मनुष्य के बनाए दिन को मान कर पशु की भक्ति, इनमें से एक को चुनना पड़ेगा।

केवल तब ही कोई पशु की छाप लेगा। प्रत्येक आत्मा के समक्ष एक जाँच करने वाली परीक्षा आएगी!

मैं परमेश्वर की आज्ञा पालन करूँ या मनुष्य की? यह केवल दिनों का विषय नहीं है यह स्वामियों का विषय है !

165

(मूलपाठ : रोमियो ६ : १६)

पौलुस ने लिखा: - "क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आपको दासों की नाई सौंप देते हो,

166

तुम उसी के दास हो जिसकी तुम मानते हो चाहें पाप के, जिसका अन्त मृत्यु है,

167

या आज्ञा मानने के, जिसका अन्त धार्मिकता है?"
रोमियो ६ : १६

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

168

पृथ्वी के प्रत्येक निवासी को शीघ्र ही एक अत्यधिक गंभीर क्षण का सामना करना होगा।
कोई भी जिस पर पशु की छाप नहीं होगी लेन -दिन न कर सकेगा।

169

पहले बहिष्कार होगा, फिर मृत्यु का आदेश। जो पशु की छाप लेंगे उन पर अन्तिम सात विपतियाँ आएंगी।
क्या आपने देखा हैं कि यह विषय इतना महत्वपूर्ण क्यों है?
यह जीवन और मृत्यु का विषय क्यों है? यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है कि हम अब परमेश्वर की महिमा करना चुने?

170

उनके लिए अच्छी खबर है जो परमेश्वर का आदर करने और उसकी मुहर लेने का चुनाव करते हैं।

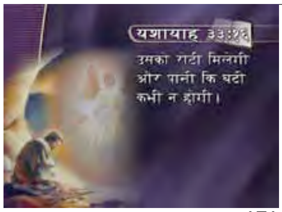

171

(मूलपाठ : यशायाह ३३ : १६)
भले ही वे लेन -दिन न कर सकें किन्तु परमेश्वर कहता है, "उसको रोटी मिलेगी और पानी कि घटी कभी न होगी।"
यशायाह ३३ : १६

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

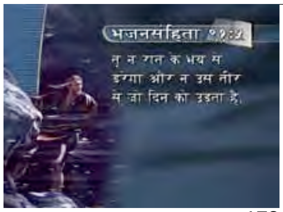

172

(मूलपाठ : भजनसंहिता ९१ : ५ –८)

पृथ्वी पर उड़ेली जाने वाली विपत्तियों के बारे में परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है: "तू न रात के भय से डरेगा और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है,

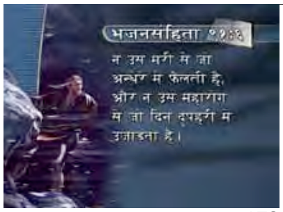

173

न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी में उजाड़ता है।"

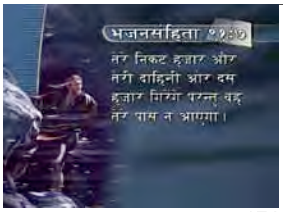

174

तेरे निकट हजार और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे परन्तु वह तेरे पास न आएगा।"

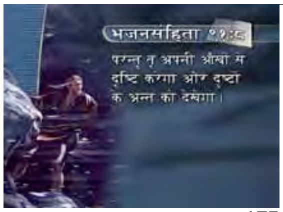

175

"परन्तु तू अपनी आँखों से दृष्टि करेगा और दुष्टों के अन्त को देखेगा।"

भजनसंहिता ९१ : ५ -८

और आप अभी भी सोच सकते हैं कि क्या होगा, बाइबिल कहती है,

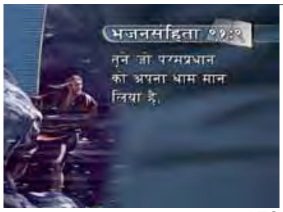

176

(मूलपाठ : भजनसंहिता ९१ : ९ -११)

"तूने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,

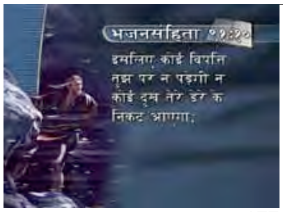

177

इसलिए कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी न कोई दुख तेरे डेरे के निकट आएगा;

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

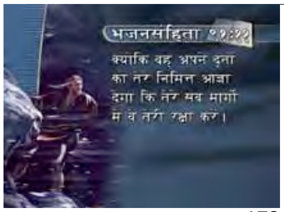

178

क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा कि तेरे सब मार्गों में वे तेरी रक्षा करें।"

भजनसंहिता ९१ : ९ -११

परन्तु परमेश्वर की अद्‌भुत प्रतिज्ञाएँ उनके लिए ही है जो उसके पीछे चलना चुनते हैं:

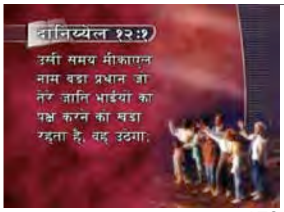

179

(मूलपाठ : दानिय्येल १२ : १)

"उसी समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान जो तेरे जाति भाईयों का पक्ष करने को खड़ा रहता है, वह उठेगा।

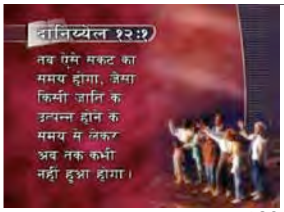

180

तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी नहीं हुआ होगा।

181

परन्तु उस समय तेरे लोगों में से हर एक जिसका नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखा होगा हैं वे बच निकलेंगे।"

दानिय्येल १२ : १

यूहन्ना को उनका दर्शन दिखाया गया जिन्होंने पशु पर जय पायी थी:

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

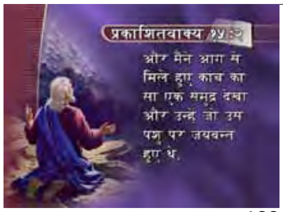

182

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १५ : २)
"और मैंने आग से मिले हुए कांच का सा एक समुद्र देखा और उन्हें जो उस पशु पर जयवन्त हुए थे,

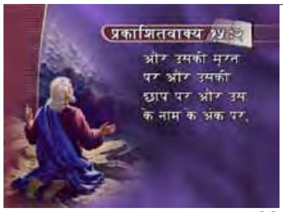

183

और उसकी मूरत पर और उसकी छाप पर और उस के नाम के अंक पर,

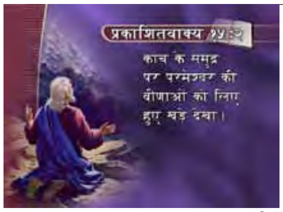

184

कांच के समुद्र पर परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा।"

प्रकाशितवाक्य १५ : २

अभी भी परमेश्वर अपने सच्चे भक्तों से पूरी तरह उसके पीछे चलने के लिए झूठे धार्मिक तन्त्र में से बाहर निकल आने के लिए विनती कर रहा है।

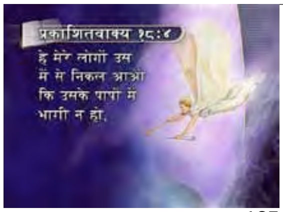

185

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १८ : ४)
"हे मेरे लोगों उस में से निकल आओ कि उसके पापों में भागी न हो,

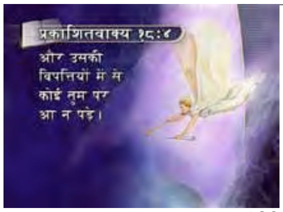

186

और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े।"

प्रकाशितवाक्य १८ : ४

१८ - सदैव के लिए चिन्हित

187

परमेश्वर के पीछे चलने की कुछ कीमत देनी पड़ती है। याद करिये उन तीन यहूदियों को जिन्होंने मृत्यु की निश्चितता की दशा में भी तर्क किये बिना और कोई समय गवाये बिना, परमेश्वर के लिए निर्णय लिया?

188

परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा द्वारा इन सभाओं के दौरान आप से बोलता रहा है। मरते हुए संसार को वह अन्तिम बार बुला रहा है कि उसके पुत्र के दूसरे आगमन के लिए तैयार हो जायें।

वह उन्हें अपने साथ स्वर्ग ले जाने ले लिए आ रहा है जिन्होंने उसके पीछे चलने फैसला कर लिया है। क्या आप भी उन तीन यहूदियों के समान, परमेश्वर और उसकी सच्चाई के लिए आज रात खड़े होना चाहेंगे?

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

1

आप कैसे निश्चित रह सकते हैं कि आपका धन सुरक्षित है

2

धन के विषय में यीशु ने विस्तारपूर्वक कहा। उसके ३८ दृष्टान्तों में से १६ दृष्टांत धन और सम्पत्ति का प्रबंध कैसे करते हैं इससे संबंधित है। चार सुसमाचार मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में आश्चर्यजनक रूप से दस पदों में से एक पद या सब में २९९ पद धन और सम्पत्ति पर है। वह हम से नहीं चाहता कि हम इसके विषय में परेशान हों वह चाहता है कि हमारी आवश्यकताओं को प्रदान करने के लिए हम उस पर विश्वास करें।

3

बहुत से लोग धन की समस्याओं के विषय में परेशान रहकर अपना बहुत सा समय व्यय करते हैं किस प्रकार वे उन वस्तुओं के पैसे चुकाए जिन्हें वे चाहते और जिनकी उन्हें आवश्यकता है वे भविष्य के विषय में भी परेशान रहते हैं।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

4

जब वे अवकाश प्राप्त कर लेंगे तो क्या उनके पास जीने के लिए पर्याप्त धन होगा? क्या होगा जब कुछ भी काम करने के लिए वे बहुत बूढे हो जाएंगे या बहुत बीमार हो जाएंगे। लोग स्थिर होने या चिरस्थाई होने की अभिलाषा कर रहे हैं परन्तु वर्तमान और भविष्य के लिए सुरक्षा कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं?

5

परमेश्वर कभी नहीं चाहता कि आपको और मुझे वर्तमान या भविष्य के लिए परेशान होना पड़े। यदि हम उस पर विश्वास करेंगे तो हमें इस विषय में परेशान होने की आवश्यकता नहीं होगी कि हमारे साथ क्या होगा।

6

(मूलपाठः मत्ती ६:३१,३१)
"इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे?

7

क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए।"
मत्ती ६:३१,३२
आइए देखते हैं कि परमेश्वर की हमारे लिए अनन्त सुरक्षित योजना क्या है।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

8

यह सब अदन की वाटिका में आरम्भ हुआ।

9

सृष्टिकर्त्ता के हाथों से बनाई गई पृथ्वी वास्तव में इतनी सुन्दर थी जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

10

परमेश्वर कलाकार के प्रत्येक कार्य ने हर मोड़ पर आखों को लुभाया था। अद्भुत सूर्योदय के बाद मनोहारी सूर्यास्त।

11

शान्त झीलें पहाड़ियों के मध्य स्थिर थीं।

12

प्रत्येक रंग के सुन्दर फूलों और अंगूरों के फूल इंद्रियों को आनन्दित कर रहे थे।

13

वृक्ष प्रत्येक प्रकार के स्वादिष्ट फलों के भार से लटक रहे थे।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

14

गाने वाले पक्षियों ने अपने सुरीले गीतों से वायुमण्डल को भर दिया था। पशु चारागाह में मस्ती से खेल रहे थे और बिना डर के घूम रहे थे। झरने और झीलें सुन्दर रंगीन मछलियों से भरी थीं। एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक कितना सुन्दर स्वर्ग था!

15

आदम और हव्वा ने इस सम्पूर्ण दुनिया का कितना अधिक आनन्द लिया होगा जिसे परमेश्वर ने उनके लिए बनाया था।

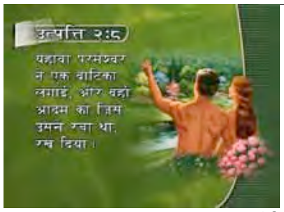

16

(मूलपाठः उत्पत्ति २:८)

परन्तु कुछ और भी था!

"यहोवा परमेश्वर ने एक वाटिका लगाई, और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया।" उत्पत्ति :८

17

जरा सोचिए! नई पैदा हुई आश्चर्य और सुन्दरता से भरी दुनिया के बीच कहीं परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए एक वाटिका रूपी घर बनाया।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

18

पृथ्वी पर अत्यधिक सजे घर की तुलना वास्तविक वाटिका रूपी घर से नहीं की जा सकती। परमेश्वर ने न केवल उनको एक प्यारा घर दिया परन्तु उसने उन्हें बहुत अच्छे भोजन के विषय में समझाया जो उसने उन्हें दिया था।

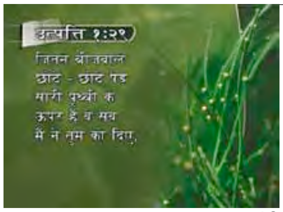

19

(मूलपाठः उत्पत्ति १:२९)
"जितने बीजवाले छोटे - छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं वे सब मैं ने तुम को दिए,

20

और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं वे तुम्हारे भोजन के लिए हैं।"
उत्पत्ति १:२९

21

आदम और हव्वा को किराया नहीं देना पड़ता था। कोई कर देने के लिए परेशान नहीं होना पड़ता था। कोई ताले -चाबी की आवश्यकता नहीं थीं। सुन्दरता को नष्ट करने वाले या चोर नहीं थे। कोई अस्पताल या दवाई की दुकान नहीं थी।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

22

उन्होंने पूर्ण स्वास्थ्य और अनन्त जवानी का आनन्द लिया और एक दूसरे के साथ समर्पण का और परमेश्वर के लिए असीमित प्रेम का आनन्द लिया। परमेश्वर चाहता था कि वे ये आशीषें बाटें, इसलिए उसने कहा,

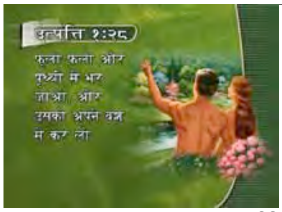

23

(मूलपाठः उत्पत्ति १:२८)

"फूलो फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो ..."

उत्पत्ति १:२८

24

हम परमेश्वर की सम्पत्ति के भण्डारी हैं

25

यह परमेश्वर की योजना थी कि एक बड़ा प्रसन्न स्वस्थ परिवार पृथ्वी पर निवास करे। परमेश्वर यह भी जानता था कि मनुष्य के पास काम करने के लिए काम होना चाहिए जिन्हें वह आनन्द से करे।

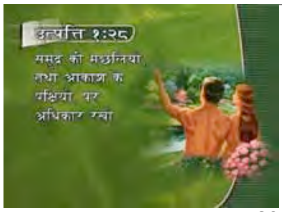

26

(मूलपाठः उत्पत्ति १:२८)

और उसने आदम और हव्वा से कहाः "समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, पर अधिकार रखो,

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

27

और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर ...

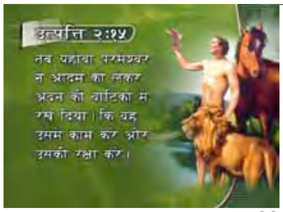

28

(मूलपाठः उत्पत्ति २:१५)

"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया। कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे।"

उत्पति १:२८ ; २:१५

29

दुनिया की प्रत्येक चीजें परमेश्वर की हैं, फिर भी उसने मनुष्य जाति को पृथ्वी के भण्डारीपन का कार्य सौंपा। परमेश्वर मालिक है, हम भण्डारी हैं, परमेश्वर की सम्पत्ति का प्रबंध कर रहें हैं।

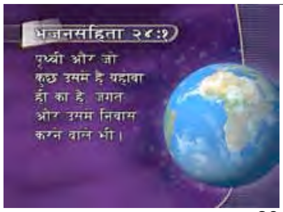

30

(मूलपाठः भजनसंहिता २४:१)

बाइबिल कहती है, "पृथ्वी और जो कुछ उसमें है यहोवा ही का है, जगत और उसमें निवास करने वाले भी।"

भजनसंहिता २४:१

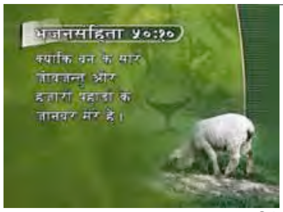

31

(मूलपाठः भजनसंहिता ५०:१०, ११)

फिर से परमेश्वर कहता है,"क्योंकि वन के सारे जीवजन्तु और हजारों पहाड़ों के जानवर मेरे हैं।"

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

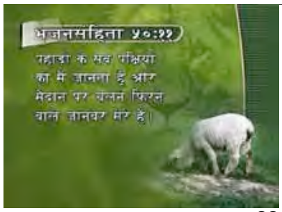

32

पहाड़ों के सब पक्षियों को मैं जानता हूँ और मैदान पर चलने फिरने वाले जानवर मेरे हैं।"
भजनसंहिता ५०:११

33

वह परमेश्वर है जो हमें पैसा कमाने का सामर्थ देता है। हम वास्तव में किसी भी चीज के अधिकारी नहीं हैं! हमारे सृष्टिकर्त्ता के रूप में, परमेश्वर हमारी सम्पत्ति और जीवन पर दावा करता है।

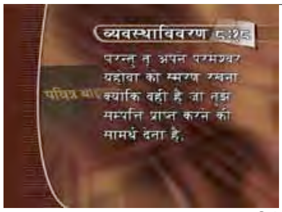

34

(मूलपाठः व्यवस्थाविवरण ८:१८)
"परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने की सामर्थ देता है,

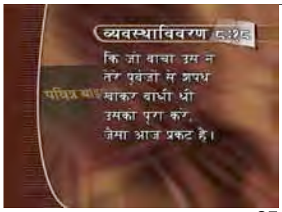

35

कि जो वाचा उस ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बांधी थी उसको पूरा करे, जैसा आज प्रकट है।"
व्यवस्थाविवरण ८:१८

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

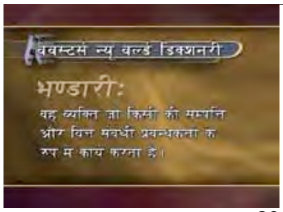

36

वेबस्टर की न्यू वर्ल्ड डिक्शनरी भण्डारी शब्द की परिभाषा यह बताती है कि "वह व्यक्ति जो किसी की सम्पत्ति और वित्त संबंधी प्रबंधकर्त्ता के रूप में कार्य करता है।" आज जब एक व्यक्ति भण्डारीपन के परस्पर संपर्क में आता है तो वह जानना चाहता है कि उसका मालिक उससे क्या आशा करता है। यही एक समझौता था जो परमेश्वर ने आदम के साथ किया, क्योंकि बाइबिल कहती है,

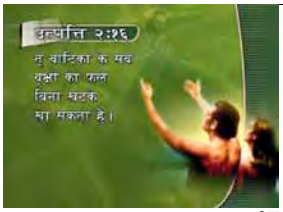

37

(मूलपाठः उत्पत्ति २:१६,१७)

"तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है;

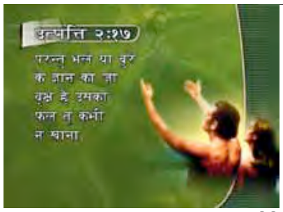

38

परन्तु भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू कभी न खाना,

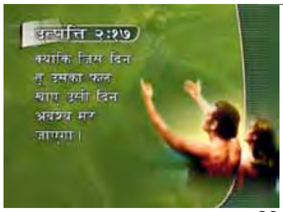

39

क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

उत्पत्ति २: १६,१७

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

40

(दृश्य)

परमेश्वर ने मनुष्य के प्रेम और स्वामी भक्ति की परीक्षा ली। आदम और हव्वा वाटिका के सभी दूसरे फल खा सकते थे, परन्तु एक विशेष पेड़ का फल वे नहीं खा सकते थे। परमेश्वर के आज्ञापालन के द्वारा वे उसके स्वामित्व को स्वीकृति दे सकते थे। यदि वे ईमानदार भण्डारी होते और परमेश्वर की स्वामीभक्ति बनाए रखते, तो वे दुनिया में जो स्वर्ग था सदा के लिए रहते! आदम और हव्वा एक साधारण सी परीक्षा में असफल हो गए। वे बेईमान भण्डारी थे, और उन्होंने सब कुछ खो दिया — अपना वाटिका रूपी घर, अमरत्व, प्रेम, प्रसन्नता, सुरक्षा, स्पष्ट और सच्चा विवेक और परमेश्वर के साथ आमने सामने बात -□चीत करना और चलना।

41

वे राजस्व से गुलामी की ओर गिर गए और इन सबके पीछे शैतान सबसे अधिक संतुष्ट हुआ वह उपद्रवी स्वर्गदूत जो पृथ्वी को हमेशा के लिए अपने नियंत्रण में रखने की आशा करता था

42

तब भी शैतान का शासन दुनिया में कुछ सदियों बाद मसीह के आने से टूट गया।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

43

शैतान की यह योजना थी कि वह परमेश्वर के स्वर्गीय पुत्र को धोखा दे जिस प्रकार उसने सरलता से आदम और हव्वा को धोखा दिया था। शैतान ने यीशु के चालीस दिन के उपवास तक प्रतीक्षा की।

44

(मूलपाठः मत्ती ४:८,९)

फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया ...

45

और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर ...

46

और उसने उससे कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रमाण करें तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।"

मत्ती ४:८,९

47

शैतान ने यीशु को इस दुनिया के राज्यों से ललचाने की आशा की परन्तु सफल न हुआ। वे वस्तुएं जिन्हें शैतान ने मसीह को देने की बात की थी वे उसकी नहीं थी। उसने एक ग्रह को धोखे और छल से चुराया था और यीशु अपने और पिता के साथ सम्बंध को समस्त दुनिया की सम्पत्ति और चमक के लिए नहीं बेच सकता था।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

48

अन्त में कलवरी पर शैतान के भाग्य पर हमेशा के लिए मुहर लग गई। क्रूस पर मसीह की मृत्यु ने शैतान को हरा दिया! मसीह की मृत्यु ने पृथ्वी को पूर्व अवस्था में लाना सम्भव बना दिया।

49

हम जो कुछ भी हैं और जो कुछ भी हमारे पास है मसीह के अनन्त दान के द्वारा मनुष्य जाति के परिवार को संभव हुआ है। चाहे हम उसे प्रेम करें या ना करे, हमारे जीवन और हमारी सारी सम्पत्तियाँ उसकी सम्पत्ति है।

50

वह केवल हमारा सृष्टिकर्ता नहीं है, वह हमारा उद्धारकर्ता है !

और आदम और हव्वा की तरह परमेश्वर हमें जो सौपता है उसके हम भण्डारी हैं। तो वह हम से क्या चाहता है?

51

(मूलपाठ : १. कुरिन्थियों ४ : २)

"फिर यहाँ भंडारी में बात देखी जाती है, कि विश्वास योग्य निकले।"

१. कुरिन्थियों ४ : २

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

52

हम परमेश्वर के जीवन के वरदान के भण्डारी हैं। परमेश्वर के सभी वरदानों में से सबसे महत्वपूर्ण वरदान जीवन है। पौलुस प्रेरित यह घोषणा करता है :

53

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १७ : २४, २५)
"परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया ----"

54

सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है।"
प्रेरितों के काम १७ : २४, २५

55

हमारा जीवन परमेश्वर से आरम्भ होता है, और वह उसे जीवित रखता है। प्रत्येक धड़कन प्रत्येक श्वास हमारे शरीर की प्रत्येक धमनी का स्पन्दन परमेश्वर से आया हुआ वरदान है।

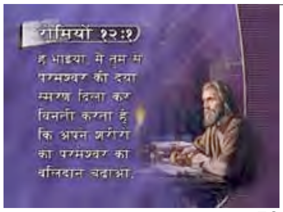

56

(मूलपाठ : रोमियों १२ : १)
पौलुस ने लिखा: "हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को परमेश्वर को बलिदान चढ़ाओ,

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

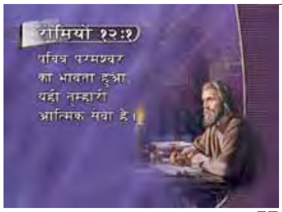

57

पवित्र परमेश्वर को भावता हुआ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।" रोमियों १२ : १ एक "शरीर का बलिदान" का अर्थ है स्वतंत्र वाचा या वचनबद्धता अपने जीवन में उसकी अगुवाई ।

58

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १० : ३८)
मसीह "जो भलाई करता फिरा",
प्रेरितों के काम १० : ३८

59

वह हमारे लिए उदाहरण है हमें उसके उदाहरण का अनुसरण करना है निःस्वार्थ सेवा भाव से।

60

हम परमेश्वर के दिए हुए समय के भण्डारी है। हम केवल धन के भण्डारी नहीं हैं, हम अपने समय के भी भण्डारी हैं।

किसी ने कहा है कि समय वह चीज है जिससे जीवन बना हुआ है।

भजनसंहिता के लेखक ने परमेश्वर से अनुरोध किया ,

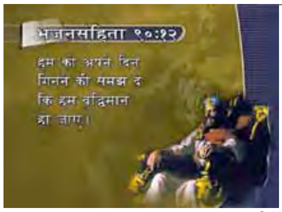

61

(मूलपाठ : भजनसंहिता ९० : १२)
"हम को अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाए।"
भजनसंहिता ९० : १२

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

62

(दृश्य)

समय को नष्ट करना जीवन को नष्ट करना है उस वरदान को जिसे परमेश्वर ने स्वयं प्रत्येक पुरुष और स्त्री को दिया है उसका अपव्यय करना है। प्रत्येक व्यक्ति के पास एक दिन में जितने घंटे होते हैं उनकी संख्या एक समान है इन घंटों में जितने मिनट होते हैं उनकी संख्या एक समान है और उन घन्टों में आपने जो कुछ किया है उनका लेखा जोखा होगा।

63

परमेश्वर यह आशा करता है कि हम अपने समय का प्रयोग बुद्धिमानी से करें, वह हमसे यह भी आशा करता है कि हम एक असामान्य समय निकालें -सब्त, सप्ताह का सांतवां दिन जो कि उस पर हमारे विश्वास को व्यक्त करने का साधन है कि वह हमारा सृष्टिकर्त्ता है।

64

जब हमारा सम्पूर्ण समय परमेश्वर का है तो वह कहता है कि सातवां दिन सब्त उसकी संगति में समर्पित कर दे, उसके वचन के अनुसार विश्राम करें और उसकी प्रतिज्ञाओं में से विश्रान्ति लाए। वह हमें खरीदारी और सांसारिक व्यवसाय को दूर करने का निमंत्रण देता है, और कहता है कि हम उसे अपने सृष्टिकर्त्ता और उद्धारकर्त्ता के रूप में स्मरण करें।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

65

हम परमेश्वर के दिये विशेष योग्यताओं के भंडारी है। "अच्छा, आप पूछते हैं" विशेष योग्यता क्या है जिसके लिए हम परमेश्वर के भंडारी होने के जिम्मेदार हैं? मैं नहीं सोचता कि मेरे पास कोई योग्यता है।

66

आज, योग्यता शब्द का अर्थ सामान्य रुप से अच्छा गाने का गुण, कोई यंत्र बजाना, तस्वीर बनाना, कपड़ा सीना लिखना या संगठन करना है।

67

ये निश्चित रुप से योग्यताएं हैं, परन्तु परमेश्वर के मस्तिष्क में जो योग्यता थी वे इनसे सीमित नहीं थीं। परमेश्वर की योग्यताओं के अनुसार, हम प्रत्येक वस्तुओं के लिए जिम्मेदार हैं जो उसने हमें दी हैं जिनमें जीवन, समय, योग्यताएं और अधिकार सम्मिलित हैं। एक दिन परमेश्वर हमसे धनी बनने के लिए कहेगा और हमारी चपलता और अभिलाषा के लिए संतुष्ट होगा या दूसरों को आशीष देने के लिए कहेगा! यीशु ने कहा, "मेरे पीछे हो ले"। वह बिना स्वार्थ के रहता था।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

68

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १० : ३८)

बाइबिल कहती है यीशु ही वह था "जो भलाई करता फिरा ---"

प्रेरितों के काम १० : ३८

69

हमारी योगयता का प्रयोग व्यक्तियों की प्रशंसा प्राप्त करने के लिए नहीं है या परमेश्वर से श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए नहीं हैं। वे हमारे लिए दूसरों को आशीष देने के लिए ऋणी हैं।

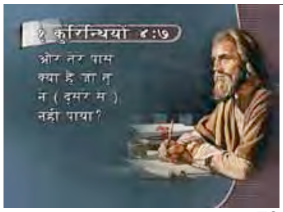

70

(मूलपाठ : १. कुरिन्थियों ४ : ७)

पौलुस ने लिखा है: "और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया?

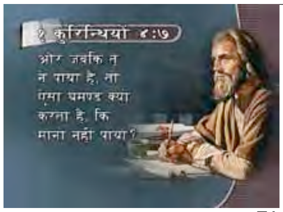

71

और जबकि तू ने पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है, कि मानो नहीं पाया?"

१. कुरिन्थियों ४ : ७

72

हम धन के भण्डारी हैं जो परमेश्वर हमें देता है

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

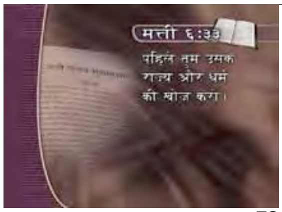

73

(मूलपाठ : मत्ती ६ : ३३)

जैसे हम "पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो।"

(मत्ती ६ : ३३)

हम यह पाते हैं कि परमेश्वर की आशीषों की हम पर वर्षा हुई है।

74

अपने समय को देने के साथ हम बाइबिल में यह पाते हैं कि परमेश्वर की शारीरिक सुख संबंधी आशीषों के एक भाग को उसे समर्पण सहित लौटाना है।

75

(दृश्य)

एक दिन इब्राहिम का भतीजा लूत और उसका परिवार शत्रु जाति के द्वारा सदोम में अपने घर से बन्दी बना कर ले जाए गए। जब यह समाचार इब्राहिम तक पहुँचा, तब उसने लूत और दूसरे लोगों को छुड़ाने का निश्चिय किया। उसने परमेश्वर से प्रार्थना की वह उसके साथ हो और उसे सफलता दे। परमेश्वर उसके साथ था। लूत और उसका परिवार छुड़ा लिए गए और शत्रुओं का खजाना वापिस लाया गया।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

76

जब इब्राहिम सदोम के समीप पहुँचा, राजा उससे मिलने के लिए बाहर आया, जो खजाना उसने फिर से प्राप्त किया था उसे रखने का आग्रह किया, केवल बंदियों को लौटाने कहा। परन्तु इब्राहिम ने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया। मल्कीसिदक, परमेश्वर का एक याजक था, वह इब्राहिम के लिए भोजन लाया और उसे आशीष दी।

77

(मूलपाठ : उत्पत्ति १४ : २०)
तब अब्राहम ने "---उसको सब का दशमांश दिया।"
उत्पत्ति १४ : २०

78

लूत को छुड़ाने और रक्षा करने में परमेश्वर ने जो सहायता की थी उसकी इब्राहिम प्रशंसा व्यक्त करना चाहता था उसने परमेश्वर का
प्रभुत्व और आशीषें स्वीकार की।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

79

एक सौ पचास साल के बाद इब्राहिम के पोते ने भी उसी प्रकार परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। याकूब जिस समय अपने क्रोधी भाई से भाग रहा था, वह पूर्णरूप से अकेला और भयभीत हो गया था। उसे परमेश्वर की रक्षा की बहुत आवश्यकता थी, परन्तु वह अपने भाई एसाव को लूटने के कारण अत्यधिक अपराध बोध से भर गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया था और उसे क्षमा नहीं कर सका था।

80

पश्चाताप के अभिप्राय से, याकूब ने परमेश्वर के समक्ष अपनी गलतियों को स्वीकार कर लिया था और तब थकावट से भूमि पर लेट गया और सो गया।

81

(मूलपाठ : उत्पत्ति २८ : १२, २२)
"तब उस ने स्वप्न में क्या देखा, कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिर स्वर्ग तक पहुँचा है;

82

और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं।"
उत्पत्ति २८ : १२
जब याकूब जागा, तब उसने जाना कि परमेश्वर के मार्गदर्शन करने और रक्षा करने की प्रतिज्ञा थी।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

83

बहुत प्रभावित होकर, उसने कृतज्ञता से प्रतिज्ञा की, "---जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूँगा।"

पद २२

84

दाऊद राजा ने भी वही अनुभव किया जब उसने कहा,

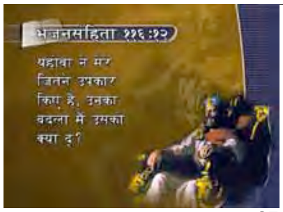

85

(मूलपाठ : भजनसंहिता ११६ : १२)

"यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको क्या दूं?" क्या आप को भी आश्चर्य हुआ है कि आपके लिए उसके अविश्वसनीय अच्छाई के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किस प्रकार करें। जीवनदान के लिए, परिवार, स्वास्थ्य शरीर सुख संबंधी आशीशों के लिए? क्या कभी आप यह सोचते हैं कि धन्यवाद पर्याप्त है? बाईबिल के भंडारीपन का सिद्धान्त यहोवा ने हमारे लिए जो उपकार किए हैं उसकी प्रशंसा करने का स्पष्ट रास्ता नियुक्त करता है।

86

याकूब ने कहा वह परमेश्वर को दशमांश या दसवां हिस्सा लौटाएगा, जो भी उसने प्राप्त किया है, जैसाकि उसके दादा, इब्राहिम ने किया।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

87

दशमांश के संबंध में सबसे प्रथम लिखित निर्देश या यहोवा को दसवा हिस्सा लौटाना लैव्यवस्था की पुस्तक में लिखा है।

88

(मूलपाठ : लैव्यवस्था २७ : ३०)
"फिर भूमि की उपज का सारा दशंमाश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल वह यहोवा ही का है।"

89

वह यहोवा के लिए पवित्र ठहरे।"
लैव्यवस्था २७ : ३०

90

जब हम यहोवा को दशमांश लौटते हैं तो हम निरंतर सच्चाई से प्रभावित हो जाते हैं कि परमेश्वर ही सृष्टिकर्त्ता है और सभी आशीषों का स्त्रोत है और दशमांश का प्रयोग किस प्रकार होता है?

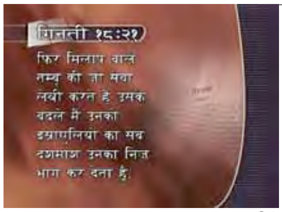

91

(मूलपाठ : गिनती १८ : २१)
गिनती की पुस्तक स्पष्ट उदाहरण देती है: "फिर मिलाप वाले तम्बू की जो सेवा लेवी करते हैं उसके बदले मैं उनको इस्राएलियों का सब दशमांश उनका निज भाग कर देता हूँ,

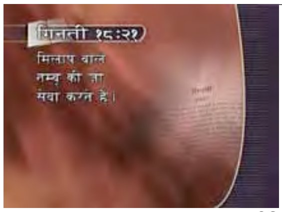

92

मिलाप वाले तम्बू की जो सेवा करते हैं।"
गिनती १८ : २१

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

93

पूरी बाइबिल में हम पाते हैं कि दशमांश ने हमेशा परमेश्वर के कार्य को सहारा दिया।

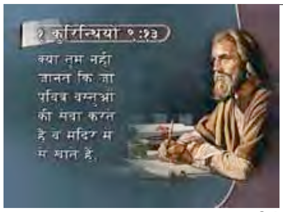

94

(मूलपाठ : १. कुरिन्थियों ९ : १३, १४)
नये नियम में पौलुस समझाता है "क्या तुम नहीं जानते कि जो पवित्र वस्तुओं की सेवा करते हैं वे मंदिर में से खाते हैं,

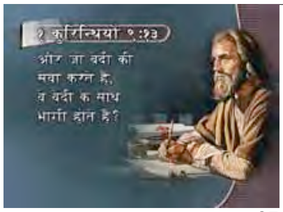

95

और जो वेदी की सेवा करते हैं, वे वेदी के साथ भागी होते हैं?

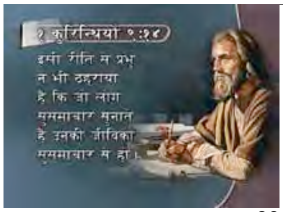

96

इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया है कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं उनकी जीविका सुसमाचार से हो।"

१. कुरिन्थियों ९ : १३, १४

97

जिस समय मसीह ने दशमांश देने के संबंध में आज्ञा दी उसी समय उसने लेखकों और फरीसियों को उनके धर्म के मूल्य के संबंध में उनके संकीर्ण विचारों को झिड़का :

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

98

(मूलपाठ : मत्ती २३ : २३)

"तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दशमांश देते हो परन्तु तुम ने व्यवस्था की गंभीर बातों को छोड़ दिया है :

99

न्याय और दया और विश्वास चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते।"

मत्ती २३ : २३

100

आप सोच रहे होंगे कि आप यहोवा को अपनी आय का दसवां हिस्सा किस प्रकार दे सकने में समर्थ हैं। बहुत से लोगों ने इसके विषय में सोचा परन्तु किसी प्रकार उन लोगों ने परमेश्वर के मार्गदर्शन और बुद्धि पर विश्वास किया और उसे दशमांश लौटाने का निर्णय लिया?

101

कई सप्ताह बाद इन्हीं लोगों ने बड़े उत्साह से साक्षी दी कि उनके जीवन में आश्चर्य हुआ है! किसी न किसी प्रकार, उनकी आय का नौ दसवां अंश, दस -दसवां अंश की अपेक्षा अधिक आय हुई! यहाँ पर वित्त संबंधी सुरक्षा का रहस्य है!

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

102

कुछ लोग कहते हैं, "क्या दशमांश केवल यहूदियों के लिए है? उन लोगों से हम पूछ सकते हैं","क्या स्वर्गीय आशीषें केवल यहूदियों के लिए है?"

103

एक जिम नामक व्यक्ति था जो ईमानदारी से कम वेतन चेक में से निकालकर दशमांश देता था। आरंभ में उसे ऐसा करना कठिन जान पड़ा, परन्तु बाद में उसे अपने व्यवसाय में आशीष मिली और जिसे वित्त संबंधी सुरक्षा में लगा देता है।

104

अपनी वित्त संबंधी सफलता और अति सुखी होने के लिए परमेश्वर के कार्य के लिए पेशगी देने में अब वह परमेश्वर को श्रेय देता है।

105

या एड का ही उदाहरण ले लीजिए जिसने सब्त के दिन अपने व्यवसाय को बन्द रखने के द्वारा विश्वास को प्राप्त किया -केवल सप्ताह के छः दिन अपने व्यवसाय को बढ़ाने के द्वारा इनाम प्राप्त किया! परमेश्वर प्रतिज्ञा रखने वाला है!

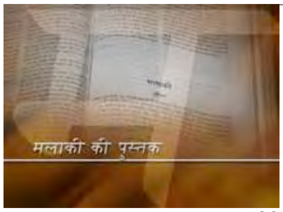

106

ऐसे मसीही मलाकी में दी गई आशीषों के प्रथम अधिकारी ठहरे :

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

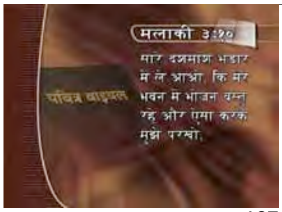

107

(मूलपाठ : मलाकी ३ : १०)

"सारे दशमांश भंडार में ले आओ, कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे और ऐसा करके मुझे परखो,

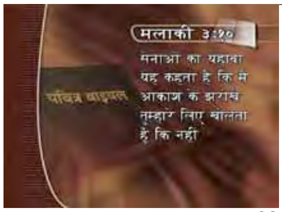

108

सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलता हूँ कि नहीं

109

और तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नहीं।"

मलाकी ३ : १०

110

यहोवा कहता है प्रत्येक वस्तु का दसवां हिस्सा उसके लिए पवित्र है। वह हमें उसे वापिस करने का विशेष अधिकार देता है हमारे भंडारीपन की जांच करने के लिए यह देखने के लिए कि हम उसके प्रभुत्व को आदर देंगे और उसका स्वामित्व स्वीकार करेंगे या नहीं।

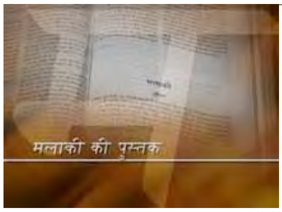

111

यदि हम ऐसा करने के लिए इन्कार कर देते हैं तो बाइबिल के अनुसार वास्तव में हम परमेश्वर को लूटते हैं।

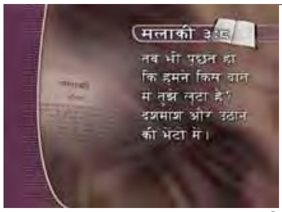
112

(मूलपाठ : मलाकी ३ : ८)

"तब भी पूछते हो कि हमने किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और उठाने की भेंटो में।" मलाकी ३ : ८

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

113

जब दशमांश या हमारी आय का दसवां भाग परमेश्वर का है, तो हम उसे उसके अधिकार के भाग के अतिरिक्त और अधिक देने के लिए आमंत्रित हैं। दान देने के साथ, यह सब हम पर निर्भर करता है कि हम विचार करें कि हमारी दानशीलता कितनी बढ सकती है।

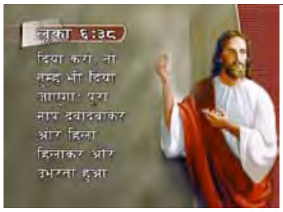

114

(मूलपाठ : लूका ६ : ३८)

जबकि बाइबिल में कुछ सलाह दी हुई हैं। यीशु ने कहा, "दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: पूरा नाप दबादबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ ----"

लूका ६ : ३८

115

पृथ्वी पर उसके वित्तसंबंधी कार्य की योजना साधारण और सुन्दर है। वह अपने लोगों से कहता है कि वे अपने हृदय से दें, अपने स्वयं की आवश्यकताओं के लिए कभी न डरें जो कि अन्त में उन्हें उनकी आशा से भी अधिक मिलेगा।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

116

आप सोच रहें होंगे कि यदि सब कुछ परमेश्वर का अपना है सोना, चांदी, पशु और भूमि और हम, तो उसे क्यों मेरी सम्पत्ति की आवश्यकता है? दशमांश देने का सिद्धान्त पृथ्वी पर उसके कार्य को आगे बढ़ाने की योजना का हिस्सा है।

117

उसका यह मतलब कभी नहीं था कि लाटरी, बिंगो खेल या चिट्ठी डालकर माल बेचने के द्वारा कलीसिया का वित्त संबंधी कार्य हो!
 और क्या दशमांश देना वित्त संबंधी सेवा की एक जिम्मेदारी का रास्ता है।

118

प्रत्येक व्यक्ति जो प्राप्त करता है उसी के अनुसार देता है।

119

यदि आप एक हजार डालर कमाते हैं (या लगभग १००० रुपय कमाते हैं),

120

आप १०० रुपये परमेश्वर को लौटाते हैं।

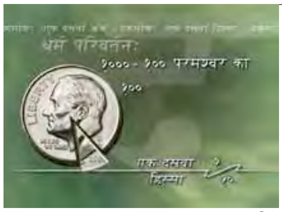

121

यदि आप एक सौ कमाते हैं,

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

122

आप १० रुपये लौटाते हैं। क्या इससे भी अधिक कुछ और अच्छा हो सकता है?

123

जो कुछ भी हम परमेश्वर को देते हैं वह हमें और अधिक देता है। हम हमेशा जो देते हैं उसकी तुलना में अधिक पाते हैं। जब हम परमेश्वर को दशमांश लौटाते हैं, जो कुछ भी उसने हमारे लिए किया उसकी प्रशंसा हम व्यक्त करते हैं और हम कम अपस्वार्थी और लालची हो जाते हैं।

124

हम दूसरों के लिए अधिक चिंतित हो जाते हैं और जब हम अपनी आशीषें उनके साथ बांटते हैं तब हम प्रेम में और दयालुता में बढ़ने लगते हैं और यीशु की तरह हो जाते हैं। यह मसीह में हमारे बढ़ने के लिए परमेश्वर की योजना है। यीशु ने आश्चर्यजनक कहानियां बताई थीं जो उसकी शिक्षा को दृष्टांत देकर स्पष्ट करती हैं।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

125

यहाँ पर एक अत्यन्त मनोरंजक बात है एक परिश्रमी उद्योगी किसान अत्यधिक परिश्रम करता था और कटनी के समय आश्चर्यजनक रूप से अनाज उत्पन्न हुआ। कटनी बहुत अधिक थी वह उसके खलीहान में जमा न हो सकी। वे पहले से ही फटकर उड़ रहे थे और अनाज अभी पूरा अन्दर नहीं था। वह क्या कर सकता था? यह संकट की स्थिति थी। वह निर्णय लेने में संघर्ष कर रहा था। क्या वह अतिरिक्त अनाज गरीबों को दे दे? परन्तु वह उसका था।

126

क्या वह ऐसा नहीं है जिसने सावधानी से योजना बनाई और अपनी बुद्धि का प्रयोग किया और कृषि संबंधी निपुणता से घाटी में सब से अधिक सफल खेत बनाए? वह अपने आप में निश्चित था कि क्या करना है :

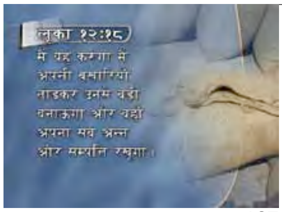

127

(मूलपाठ : लूका १२ : १८ -२१)
"मैं यह करूंगा मैं अपनी बखारियाँ तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊंगा और वहाँ अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूंगा।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

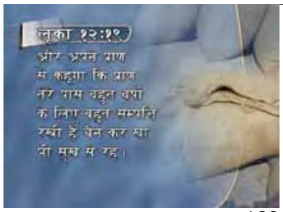

128

"और अपने प्राण से कहूंगा कि प्राण तेरे पास बहुत वर्षो के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है चैन कर खा पी सुख से रह।"

लूका १२ : १८, १९

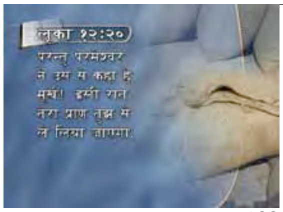

129

"परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा;

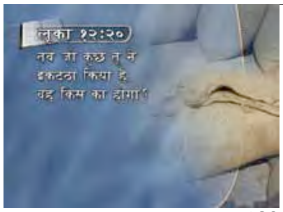

130

तब जो कुछ तू ने इकटठा किया है, वह किस का होगा?

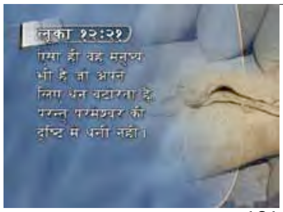

131

ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।"

लूका १२ : २०, २१

132

इस धनवान किसान को यह नहीं ज्ञात हुआ कि उसकी आशीषें कहाँ से आई थीं। उसने अपने सृष्टिकर्त्ता के उपकार को भंडारी की तरह नहीं पहचाना। वह पूर्णरूप से गरीबों को अनाथों को विधवाओं को या बेघर वालों को भूल गया। उसने केवल अपने विषय में ही सोचा। इस व्यक्ति के पास हृदय समस्या थी।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

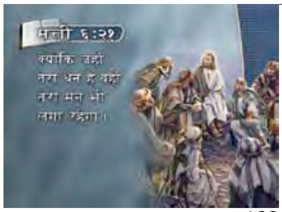

133

(मूलपाठ : मत्ती ६ : २१)

यीशु ने कहा, "क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।"

मत्ती ६ : २१

यीशु सम्पत्ति के प्रति हमारे स्वभाव को लेकर बहुत गंभीर था, क्योंकि यदि हम उन्हें यीशु को समर्पित न करें तो वे हमें परमेश्वर से दूर कर सकते हैं, यहाँ तक कि हमारे अनन्त जीवन को भी नुकसान पहुँच सकता है।

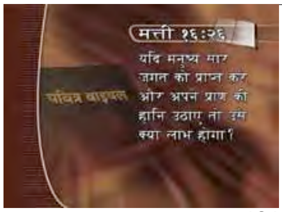

134

(मूलपाठ : मत्ती १६ : २६)

उसने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा?"

मत्ती १६ : २६

135

आधुनिक मनुष्य के साथ यह समस्या है कि उसका जीवन पेंचीदा हो गया है और उसकी दिनचर्या बहुत व्यस्त हो गई है कि इस कारण वह या तो उद्धारकर्त्ता को भूल गया है या उसके लिए उसके पास समय नहीं है कि उसकी सारी आशीषें कहाँ से आई हैं।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

136

(दृश्य)

मूल्य को समझने में वह असफल हो गया है जो कि उसके पापों से बचाने के लिए चुकाया गया था और इसका परिणाम यह हुआ कि वह अपने समय, गुण और अपने खजाने से सच्चे परमेश्वर का तिरस्कार करने लगा है। हम सबको प्रतिदिन इसे स्मरण करने की आवश्यकता है –

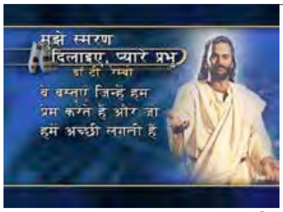

137

"वे वस्तुएं जिन्हें हम प्रेम करते हैं और जो हमें अच्छी लगती हैं

138

वे उधार पर दी गई हैं; वे पूर्णतः हमारी नहीं हैं।

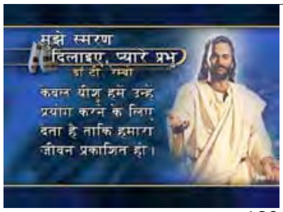

139

केवल यीशु हमें उन्हें प्रयोग करने के लिए देता है ताकि हमारा जीवन प्रकाशित है

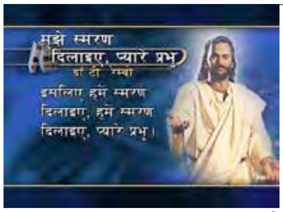

140

इसलिए हमें स्मरण दिलाइए, हमें स्मरण दिलाइए, प्यारे प्रभु।"

- डॉ टी. रेम्बो से लिया गया, "मुझे स्मरण दिलाइए, प्यारे प्रभु।"

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

141

प्रत्येक वस्तु जो हमारे पास है वह परमेश्वर का वरदान है। हमारा स्वास्थ्य परमेश्वर का वरदान है। प्रत्येक श्वास जो हम लेते हैं परमेश्वर का वरदान है। जो भोजन हम खाते हैं जो कपड़े हम पहनते हैं वह घर जिसमें हम रहते हैं परमेश्वर को लौटाते हैं तो हम कहते हैं, "जो कुछ तूने मुझे दिया है उसके लिए प्रभु तेरा धन्यवाद हो, क्या आप यह कहना पसन्द करेंगे, "प्रभु" मैं तुझे अपने वित्त संबंधी विषय में और अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तुझे प्रथम स्थान देना चाहता हूँ? यदि आप ऐसा करते हैं, आप अपना हाथ ऊपर करेंगे जब हम प्रार्थना करते हैं?

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

1

आज हम इसे कहाँ प्राप्त कर सकते हैं?

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

2

यह कहानी प्राचीन यूनान में रहने वाले नवयुवक की है जो सच्चाई को खोजना चाहता था। उसने एक वृद्ध व्यक्ति के साथ सम्पर्क किया जो उस शहर में सबसे बुद्धिमान पुरूष माना जाता था। उस जवान पुरूष ने वृद्ध व्यक्ति से पूछा, 'श्रीमान कृपया मुझे बताइए, मैं सच्चाई को किस प्रकार खोज सकता हूँ? क्या आप उसके लिए अगुवाई कर सकते हैं? वह वृद्ध खड़ा हुआ और उसने चलना आरंभ किया उस नवयुवक पुरूष ने उसका अनुसरण किया। वे शहर की गलियों को पार कर के समुद्र के किनारे गए। वह वृद्ध पुरुष पानी के अन्दर चलता गया। जब पानी लगभग उनकी कमर तक आ गया, तो उस वृद्ध ने जवान से कहा। अपने हाथ को अपने सिर के ऊपर रखने के लिए कहा और उसे पानी के अन्दर डुबा दिया। तीन बार वह नवयुवक हवा में श्वास लेने के लिए ऊपर आया। तीन बार उस वृद्ध व्यक्ति ने उसके सिर को फिर से नीचे की ओर धक्का दिया। तीसरी बार, वह नवयूवक पुरुष चिल्लाया, "मैं केवल सच्चाई खोजना चाहता था।" उस वृद्ध ने जवाब दिया, '

"जिस प्रकार आप ने हवा में श्वास लेने की इच्छा की उसी प्रकार सच्चाई को जानने की इच्छा करने से आप

सच्चाई को जान जाएँगे।"

परमेश्वर हमसे सच्चाई को नहीं छुपा रहा है।

यिर्मयाह भविष्यवक्ता कहता है,

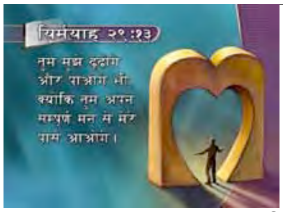

3

(मुलपाठ : यिर्मयाह २९ : १३)
"तुम मुझे ढूढ़ोगे और पाओगे भी, क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।"
यिर्मयाह २९ : १३

4

यह कहा गया है कि हम सब का जन्म हमारे अन्दर एक परमेश्वर -रूपी खालीपन लेकर हुआ है। ऐसा लगता है कि हम सब में किसी ऐसी वस्तु की अभिलाषा है जो हमारे पास नहीं। उपचेतन रूप से, हम उस वस्तु को ढूंढ़ते रहते हैं जिसका हम वर्णन नहीं कर सकते परन्तु हम जानते हैं कि हमें इसकी आवश्यकता है!

5

इसलिए बेचैनी और बोरियत में हम जीवन की इस शून्यता को प्रसिद्धि, धन, नशीले पदार्थ, शराब, सम्पत्ति, और मनोरंजन से भरने की चेष्टा करते हैं। पर ये सब वस्तुएँ पूर्ण सन्तोष नहीं दे सकतीं।

6

और कभी न कभी, एक नींद न आने वाली रात में प्राचीन भविष्यवक्ता का यह प्रश्न हमारे मस्तिष्क में गूजेंगा:

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

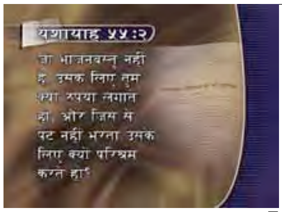

7

(मूलपाठ : यशायाह ५५ : २)

"जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके लिए तुम क्यों रुपया लगाते हो, और जिस से पेट नहीं भरता उसके लिए क्यों परिश्रम करते हो?"

यशायाह ५५ : २

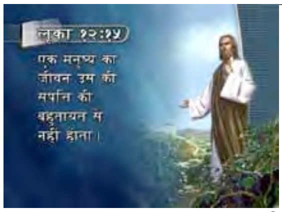

8

(मूलपाठ : लूका १२ : १५)

उसने कहा, "एक मनुष्य का जीवन उस की सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।"

लूका १२ : १५

9

आज लोग अपने बाहर की एक शक्ति की आवश्यकता को अनुभव कर सकते हैं।

यह कुछ भी नया नहीं है।

10

जब से मनुष्य ने अदन की वाटिका में अपनी राह पर चलने को चुना है, तब से उसके पास यह अनोखा खालीपन है जिसे केवल परमेश्वर ही भर सकता है।

11

जंगल में भटकने वाले इस्राएलियों को परमेश्वर ने भूखा रखने की अनुमति दी ताकि वे उसकी आवश्यकता को पहचान सकें। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों से बातें की, वह कहता है,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

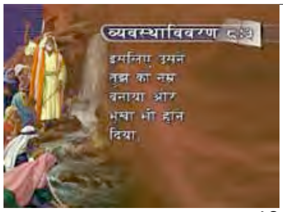

12

(मूलपाठ : व्यवस्थाविवरण ८ : ३)

"इसलिए उसने तुझ को नम्र बनाया और भूखा भी होने दिया,

13

...इसलिए कि वह तुम को सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता;

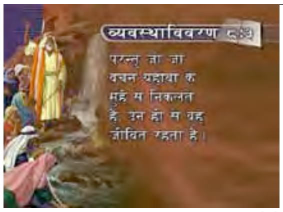

14

परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुहँ से निकलते हैं, उन ही से वह जीवित रहता है।"

व्यवस्थाविवरण ८:३

15

प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर हमें हमारे अन्दर की भूख और बेचैनी का अनुभव करने देता है, ताकि हम परमेश्वर की ओर हाथ बढ़ाएँ और उसे हमारी इच्छाओं को सन्तुष्ट करने दें।

16

आज हम अनेक प्रकार के धर्मो में अत्यधिक रुचि दिखाते हैं। हम देखते हैं कि आज धर्मों को एक करने के लिए और सम्प्रदाय की दीवारों को गिराने के लिए बहुत जोर दिया जा रहा है। विभिन्न प्रकार के धर्मो और कलीसियाओं पर अध्ययन और विचार हो रहा है।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

17

नई कलीसियाएं बड़ी तेजी से संसार के चारो ओर उभर रही हैं। प्रत्येक कलीसिया परमेश्वर के विशेष लोग होने का दावा करती है जिसके पास इस पृथ्वी पर सबके लिए सच्चाई का संदेश है। तब भी उन दावों का ध्यान करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सारे दावे सच्चे नहीं हो सकते।

18

प्रत्येक का यह दावा है कि बाइबिल उनके विश्वास की नींव है, परन्तु उनकी शिक्षाएँ एकदम भिन्न हैं।

19

आज्ञाकारी लोग धर्मो के इन दावों को किस प्रकार जाँच सकते हैं यह जानने के लिए कि सच्चाई क्या है। क्या मसीही संसार के अन्दर परमेश्वर के कुछ विशेष लोग हैं जिन्हें वह अपनी कलीसिया के रूप में पहचानता है? ऐसा है, क्योंकि पौलुस ने लिखाः

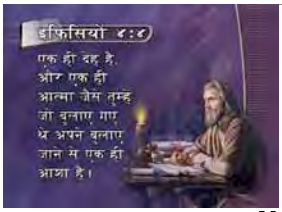

20

(मूलपाठः इफिसियों ४:४)
"एक ही देह है, और एक ही आत्मा जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।

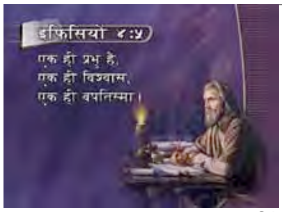

21

एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा;

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

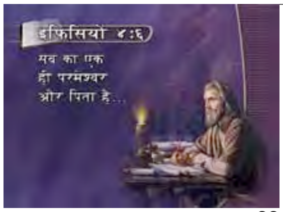

22

सब का एक ही परमेश्वर और पिता है।"

इफिसियों ४:४-६

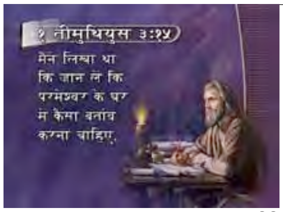

23

(मूलपाठः १ तीमुथियुस ३:१५)

पौलुस ने अपने जवान मित्र तीमुथियुस को लिखा और कहा, "मैंने लिखा था कि जान लें कि परमेश्वर के घर में कैसा बर्ताव करना चाहिए,

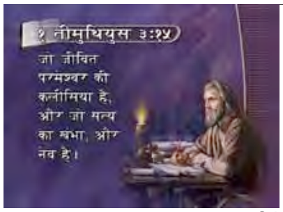

24

जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है।"

१ तीमुथियुस ३:१५

पौलुस स्पष्ट रूप से कहता है कि परमेश्वर की कलीसिया आज सत्य का खंभा और नेव है। परन्तु हम किस प्रकार जाने कि कौन सी कलीसिया सच्ची है?

25

बहुत से सम्प्रदाय हैं, बहुत वादविवाद है, और धार्मिक समाज में बहुत गड़बड़ है।

26

मित्रों, बाइबिल के अनुसार यीशु कभी भी किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं चाहते थे और ना ही इतनी सारी कलीसियाएँ। उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने से थोड़ी देर पूर्व यीशु ने प्रार्थना कीः

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

27

(मूलपाठः यूहन्ना १७:२१)

"कि वे सब एक हों, जैसे तू हे पिता मुझ में, और मै तुझ में हूँ;

28

वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिए कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा है।"

यूहन्ना १७ : २१, नया किंग जेम्स अनुवाद

यीशु चाहता था कि दुनिया उसके अनुयायियों को उनकी एकता और प्रेम के द्वारा पहचानने में समर्थ हों। मसीह अपनी कलीसियों में कोई विभाजन नहीं चाहता था।

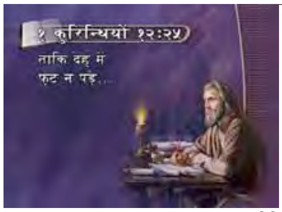

29

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १२:२५)

वास्तव में, पौलुस ने लिखा "ताकि देह में फूट न पड़े।"

१ कुरिन्थियों १२:२५

30

परन्तु पौलुस ने कहा कि स्वधर्मत्यागी आएंगे और उनके साथ विभाजन आएगा!

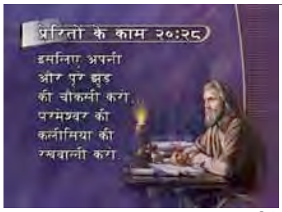

31

(मूलपाठः प्रेरितों के काम २०:२८-३)

हमने पढ़ाः "इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो ... परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो ...

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

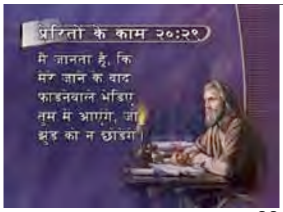

32

मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेडिए तुम में आएंगे, जो झुंड़ को न छोडेंगे।

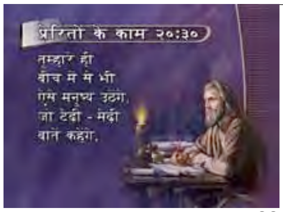

33

तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो टेढ़ी -मेढ़ी बातें कहेंगे,

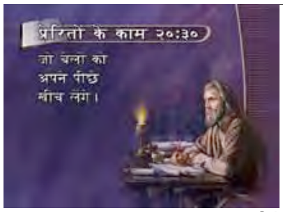

34

जो चेलों को अपने पीछे खींच लेंगे।"
प्रेरितों के काम २०:२८-३०

35

जब हम कलीसिया के इतिहास के पृष्ठों को पलटते हैं, तो हम यह पाते हैं कि ऐसा ही हुआ। झूठे शिक्षक उठे, और कुछ लोगों ने अपनी गलतियाँ स्वीकार की और कलीसिया को छोड़ दिया। दूसरे भ्रमित हो गए। शिष्यों को बहकाया गया और लोग यीशु की शिक्षा से धीरे- धीरे दूर हो गए। परन्तु इनता होते हुए भी परमेश्वर की एक कलीसिया थी जो उसकी शिक्षाओं के प्रति विश्वस्त थी।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

36

परन्तु कुछ लोग कहते हैं, "प्रत्येक धर्म की शिक्षाओं का अध्ययन करने में पूरा जीवन लग जाएगा यह जानने के लिए कि परमेश्वर की सच्ची कलीसिया कौन सी है?

परन्तु एक सरल रास्ता है।

परमेश्वर का रास्ता!

37

सरकार के अधिकारी हमें बताते हैं कि एक बनावटी नोट से एक सच्चा नोट बहुत आसानी से पहचाना जा सकता है। वे सच्चे बिल की विशेषताएं गहराई से जानते हैं।

38

उस सच्चे नोट के कागज के रेशे की बनावट को पहचानते हैं, और स्याही के रंग को, चिन्ह, और नम्बरों के सही क्रमांक को जानते हैं। (नोट का वर्णन कीजिए) जब वे नोट को देखते हैं,तो वे शीघ्र ही उसकी सच्चे नोट की विशेषताओं से तुलना कर सकते हैं। यदि उस नोट में एक भी विशेषता की कमी है, तो वह नकली है।

39

और यही सच्चाई के साथ भी है।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

40

यदि हम परमेश्वर की सच्ची कलीसिया की बाइबिल में दी गई विशेषताएं जानते हैं, तो हमें लम्बे समय तक सभी कलीसियाओं की शिक्षाओं का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर मनुष्य को अनुमान लगाने के लिए नहीं छोड़ देता, क्योंकि उसने अपने वचन में सच्चाई दी है।

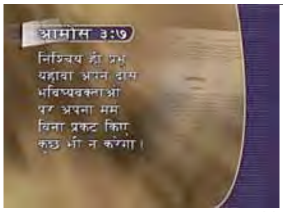

41

(मूलपाठः आमोस ३:७)
"निश्चिय ही प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यवक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रकट किए कुछ भी न करेगा।"
आमोस ३:७

42

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बाइबिल में पाई जाने वाली सारी भविष्यवाणियों का सारांश है। यह लोगों को अंतिम दिनों की विशेष झलक दिखाती है। यहाँ पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में पाए जाने वाले स्वधर्म त्यागी और धार्मिक भ्रम में पड़े हुओं की बातें बताई गई हैं। प्रकाशितवाक्य मसीह की कलीसिया और शैतान के बीच के संघर्ष की भविष्यवाणी करती है। अध्याय १२ मसीह के समय से ले कर दुनिया के अंत तक का कलीसिया का इतिहास दिखाता है।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

43

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:१,२)

"फिर स्वर्ग पर एक बड़ा चिन्ह दिखाई दिया, अर्थात एक स्त्री जो सूर्य ओढ़े हुए थी,

44

और चांद उसके पावों तले था और उसके सिर पर बारह तारों का मुकुट थाः

45

और वह गर्भवती हुई और चिल्लाती थी, क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी थी और वह बच्चा जनने की पीड़ा में थी।"

प्रकाशितवाक्य १२ : १, २

46

यहाँ परमेश्वर एक स्त्री का चित्र देता है जो सूर्य की श्वेत पोशाक और बारह तारों का मुकुट पहने चाँद पर खड़ी है। इन सब का क्या अर्थ है? बाइबिल की भविष्यवाणी में एक शुद्ध स्त्री परमेश्वर के लोगों का प्रतीक है – उसकी कलीसिया। यिर्मयाह भविष्यवक्ता ने लिखाः

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

47

(मूलपाठः यिर्मयाह ६:२)

"सिय्योन की सुन्दर और सुकुमार बेटी को मैं नाश करने पर हूँ।"

यिर्मयाह ६:२

और सिय्योन कौन है? यशायाह द्वारा परमेश्वर ने कहा,

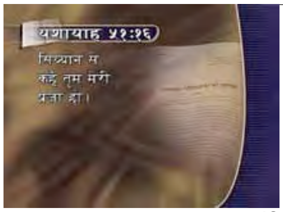

48

(मूलपाठः यशायाह ५१:१६)

"सिय्योन से कहूँ तुम मेरी प्रजा हो।"

यशायाह ५१ : १६

जब हम इन दोनों पदों को मिलाते हैं, तो हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अपनी सच्ची कलीसिया को दर्शाने के लिए एक निर्दोष स्त्री का प्रयोग किया है।

पौलुस प्रेरित ने कुरिन्थियों की कलीसिया का वर्णन करने के लिए इसी शब्द का प्रयोग किया है।

49

(मूलपाठः २ कुरिन्थियों ११:२)

"इसलिए कि मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है कि तुम्हे पवित्र कुंवारी की नाई मसीह को सौप दूं।"

२ कुरिन्थियों ११:२

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

50

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १७:३-५)

यद्यपि यूहन्ना को एक अन्य स्त्री दिखाई गई जिसका उसने प्रकाशितवाक्य के १७ अध्याय में वर्णन किया है : "और मैंने किरमिजी रंग के पशु पर जो निन्दा के नामों से छिपा हुआ था एक स्त्री को बैठे हुए देखा... "

51

"यह स्त्री बैंजनी और किरमिजी, कपड़े पहने थी और सोने और बहुमूल्य मणियों और मोतियों से सजी हुई थी,

52

उसके हाथ में एक सोने का कटोरा था जो घृणित वस्तुओं से और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ था।

53

और उसके माथे पर यह नाम लिखा था :

54

भेद बड़ा बाबुल पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता।"

प्रकाशितवाक्य १७:३-५

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

55

यह सांकेतिक भाषा अशुद्ध स्त्री का वर्णन करती है -झूठी कलीसिया।

गिरी हुई कलीसिया मसीह के साथ ईमानदार नहीं थी और उसने बाइबिल की सच्चाई के साथ समझौता कर लिया।

याकूब ने उन लोगों को जिन्होंने परमेश्वर की शिक्षाओं को छोड़ दिया है और दुनिया के लोगों से मिल गए हैं उनका वर्णन करने के लिए उसने समान शब्दों का प्रयोग किया है :

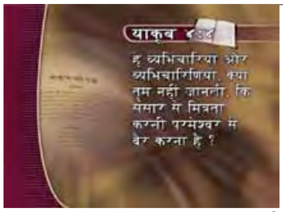

56

(मूलपाठः याकूब ४:४)

"हे व्यभिचारियों और व्यभिचारिणियों, क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है ?।"याकूब ४:४

57

एक गिरी हुई स्त्री एक झूठी कलीसिया को दर्शाती है, और एक शुद्ध स्त्री एक सच्ची कलीसिया को दर्शाती है। आइए, एक बार फिर शुद्ध स्त्री की भविष्यवाणी को देंखे।

शुद्ध स्त्री =शुद्ध कलीसिया

गिरी हुई स्त्री =झूठी कलीसिया

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

58

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:२,४)

"वह चिल्लाती थी, क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी थी और वह बच्चा जनने की पीड़ा में थी

59

और वह अजगर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ,

60

कि जब वह बच्चा जने तो उसके बच्चे को निगल जाए।"

प्रकाशितवाक्य १२:४

यह अजगर कौन है जो उस स्त्री के समक्ष खड़ा हुआ कि जैसे ही वह बच्चा जने तो वह उसे निगल जाए?

61

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:७-९)

"फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकलने, और अजगर और उसके दूत उससे लड़े,

62

परन्तु प्रबल न हुए और स्वर्ग में उन के लिए फिर जगह न रही।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

63

और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इबलीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, गिरा दिया गया;

64

वह पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।"

प्रकाशितवाक्य १२:७-९

65

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:५)

प्रकाशितवाक्य भी उस बच्चे का वर्णन करता हैः "और वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिए हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था।

66

और उसका बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुंचा दिया गया।"

प्रकाशितवाक्य १२:५

67

दुनिया के इतिहास में केवल एक ही बच्चा था जो लोहे का दण्ड लिए हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था और जिसे "परमेश्वर और उसके सिंहासन के पास पहुंचा दिया गया।।" और वह यीशु था।

मसीह के दूसरे आगमन के विषय में बात करते हुए,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

68

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १९:१५)

यूहन्ना के कहा, "और जाति जाति को मारने के लिए उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है।

69

और वह लोहे का राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य करेगा ..."

प्रकाशितवाक्य १९:१५

पौलुस कहता है कि कैसे यीशु "परमेश्वर के सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया था,"

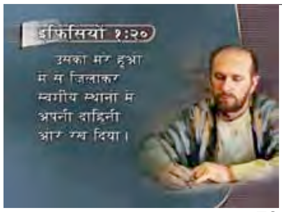

70

(मूलपाठः इफिसियों १:२०)

जब परमेश्वर ने "...उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर रख दिया।"

इफिसियों १:२०

71

वह युद्ध जो स्वर्ग में आरम्भ हुआ था वह हमारे संसार में आ गया। मूर्तिपूजक रोमियों के द्वारा शैतान ने यह प्रयत्न किया कि वह यीशु के प्राण उसके जन्म के बाद ही ले ले। हेरोदेस रोम का राज्यपाल था। उसने यह राजाज्ञा निकाली कि जितने भी बालक दो साल के हैं या उससे छोटे है, वे मार डाले जाएँ। परन्तु एक स्वर्गदूत ने यूसुफ और मरियम को चेतावनी दी कि वे यीशु को साथ लेकर मिस्र को भाग जाएँ।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

72

शैतान ने यीशु को उसके सेवा कार्य के समय में परीक्षा में डाला। वह परमेश्वर की पापी संसार को बचाने की योजना में विघ्न डालने की चेष्टा कर रहा था। मसीह के क्रूस पर लटके शरीर को देख कर शैतान ने सोचा कि उसने युद्ध में विजय प्राप्त कर ली है। परन्तु एक खाली कब्र निश्चित रूप से शैतान की हार थी।

73

मसीह जी उठे और अपने पिता के सिंहासन पर बैठ गये। भविष्यवाणी अपने समय में पूरी हुई। परमेश्वर के पुत्र को नाश करने के प्रयत्न में असफल होकर शैतान ने अपना क्रोध स्त्री या मसीही कलीसिया पर उतारा।

74

एक शिष्य को छोड़ कर बाकी सभी चेलों की शहीदों की मृत्यु हुई। यदि आप किसी माता -पिता को चोट पहुँचाना चाहते हैं तो आप किस प्रकार उन्हे सबसे गहरी चोट पहुँचा सकते हैं? उनके बच्चों को चोट पहुँचाने के द्वारा। शैतान यीशु को नहीं छू सकता था क्योंकि वे अब स्वर्ग में थे। इसलिए उसने यीशु के अनुयायियों पर धावा बोला।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

75

और पौलुस प्रेरित का सिर रोम की दीवारों के बाहर काट दिया गया। मसीहियों को सताया गया और काल कोठरियों में डाला गया। उनमें से बहुतों ने अपने रक्त से अपनी गवाही पर मुहर लगायी।

76

जब तक शिष्य जीवित थे, तब तक कलीसिया सच्चाई के लिए स्थिर खड़ी थी। शिष्यों की मृत्यु के बाद, समय बीत जाने पर, कुछ मसीहियों ने अपने विश्वास के साथ समझौता कर लिया और झूठी शिक्षाएं कलीसिया के अन्दर आ गई।

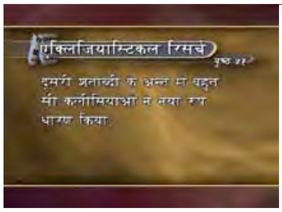

77

"दूसरी शताब्दी के अन्त में बहुत सी कलीसियाओं ने नया रूप धारण किया;

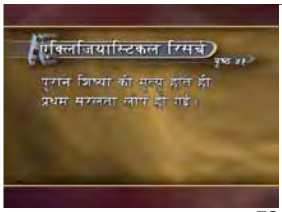

78

पुराने शिष्यों की मृत्यु होते ही प्रथम सरलता लोप हो गई।"

एक्लिजियास्टिकल रिसर्च,पृष्ठ ५१

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

79

चौथीं शताब्दी में सम्राट कांस्टेनटाइन ने रोमी राज्य को स्थिर करने के लिए मूर्तिपूजकों और मसीहियों को एक साथ करके एक महान धर्म का निर्माण करने का प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप मसीहियत बहुत प्रसिद्ध हो गई। मूर्तिपूजकों को कलीसिया में बपतिस्मा दिया गया और वे अपने बहुत से विश्वासों और व्यवहारों को साथ लेकर आए। जैसे ही कलीसिया ने इन गलत विश्वासों को अपनाया, उसने अपने उद्देश्य को खो दिया।

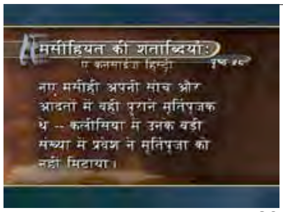

80

एक इतिहासकार ने लिखा, "नए मसीही अपनी सोच और आदतों में वही पुराने मूर्तिपूजक थे -- कलीसिया में उनके बड़ी संख्या में प्रवेश ने मूर्तिपूजा को नहीं मिटाया।

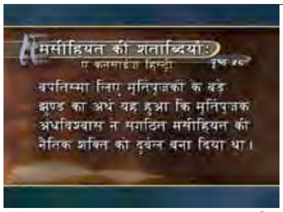

81

बपतिस्मा लिए मूर्तिपूजकों के बड़े झुण्ड का अर्थ यह हुआ कि मूर्तिपूजक अंधविश्वास ने संगठित मसीहियत की नैतिक शक्ति को दुर्बल बना दिया था।"
सेन्चुरिज़ आफ क्रिश्चियानिटीः ए कनसाइज़ हिस्ट्री, पृ० ५८

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

82

तब भी इस बीच बहुत से मसीही परमेश्वर की सच्चाई के प्रति विश्वस्त रहे और कलीसिया में आते बदलाव का विरोध किया। बहुत से मसीही अपने स्थान पर दृढ़ होने के कारण सताए गए। शीघ्र ही रोमी सम्राटों ने घोषणा जारी की कि राज्य की कलीसिया के झूठी रीतियों को स्वीकार न करने का अपराध मृत्यु दण्ड के योग्य है।

83

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:१३)
यह सब आगे से विचार लेने के बाद यूहन्ना ने लिखा,"अजगर ने...उस स्त्री को जो बेटा जनी थी, सताया।"
प्रकाशितवाक्य १२:१३
और उस स्त्री का क्या हुआ?

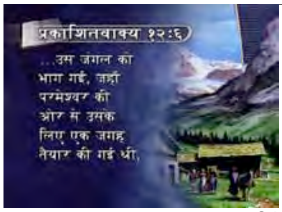

84

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:६)
वह "...उस जंगल को भाग गई, जहाँ परमेश्वर की ओर से उसके लिए एक जगह तैयार की गई थी,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

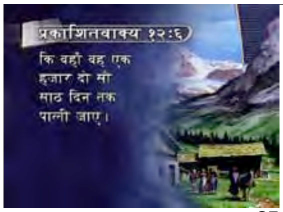

85

कि वहाँ वह एक हजार दो सौ साठ दिन तक पाली जाए।"

प्रकाशितवाक्य १२:६

ध्यान दीजिए कि परमेश्वर उस समय को प्रकट करता है जब कि उसके लोग सताए जाएंगे: १,२६० दिन। हमने पहले देखा है कि बाइबिल में यह भविष्यवाणी की गई है कि एक दिन एक साल के बराबर हैं।

86

(मूलपाठ: यहेजकेल ४:६)

यहेजकेल ने लिखा है, "मैंने तेरे लिए एक वर्ष की सन्ती एक दिन ठहराए हैं।"

यहेजकेल ४:६।

87

इस प्रकार परमेश्वर के विश्वस्त लोगों पर की जाने वाली सताहट को १२६० वर्षों के लिए होना था जैसे कि प्रकाशितवाक्य में भविष्यवाणी की गई थी।

88

इतिहास बाइबिल की इस भविष्यवाणी को प्रमाणित करता है। रोमी सम्राट जस्टीनियन ने रोम के सेनापति बेलिसारियस को यह आज्ञा दी थी कि अंतिम दो एरियान शक्तियों को, जो रोम में कलीसिया का विरोध करती थीं, समाप्त कर दिया जाय।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

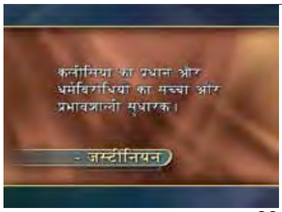

89

५३८ ईसवी में अन्तिम एरियान शक्ति को समाप्त कर दिया गया और जस्टीनियन ने रोम के बिशप को "कलीसिया का प्रधान और धर्मविरोधियों का सच्चा और प्रभावशाली सुधारक।" होने का अधिकार दिया। अब

'धर्म विरोधी' कहे जाने वाले लोगों की सताहट का काम आरम्भ हुआ।

90

और विश्वस्त मसीही जिन्होंने परमेश्वर के वचन में पाई जाने वाली सच्चाई को मानना जारी रखा उन्होंने यह पाया कि अपने विश्वास को बचाने का सर्वोतम उपाय केवल भाग जाना था जैसा प्रकाशितवाक्य में भविष्यवाणी की गई थी। सो वह 'स्त्री' जंगल को भाग गई।

91

वाल्डेनसेस, अलबिगेनसेस और दूसरे विश्वासी मसीही उत्तरी इटली और दक्षिण फ्रांस में आल्पस् पर्वत की चोटियों पर भाग गए, और ह्यूगनाट्स पूरे फ्रांस में फैल गए। वे निर्जन घाटियों, सुदूर गुप्त गुफाओं, और ऊँचे पर्वतों में बस गए। उन्हें साधारण अपराधियों की तरह ढूढ़ा गया और बहुत से लोग मार डाले गए। उनका अपराध? वे यीशु की शिक्षाओं को नहीं त्यागना चाहते थे।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

92

हजारों मसीहियों ने अपने विश्वास से समझौता करने की अपेक्षा मरना अच्छा समझा। कुछ इतिहासकार इनकी संख्या का अनुमान लगभग ५०,०००,००० लगाते हैं और उनमें से बहुत लोग ऐसे मसीहियों के द्वारा मारे गए जो यह विश्वास करते थे कि वे ऐसा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कर रहे थे!

93

परमेश्वर की सच्चाई की अन्त में विजय हुई। बाइबिल का लोगों की भाषाओं में अनुवाद किया गया और छापने के यंत्र के अविष्कार के द्वारा पूरी दुनिया में फैलाया गया।
अब परमेश्वर की सच्चाई को छुपना नहीं था। अब इसका प्रकट होना था!

94

निडर सुधारकों ने परमेश्वर के वचन को लोगों तक पहुँचाया। हस्स और जेरोम जैसे कुछ सुधारकों को खूंटे से बाँध कर जलाया गया।

95

दूसरे, जैसे लूथर, विक्लिफ और टिन्डेल को ढूंढ़ कर उन्हें सताया गया।

96

पर अमेरिका की खोज से यूरोप के सताए मसीहियों को नई स्वतंत्रता और नई शरण दी गई।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

97

एक नए राष्ट्र के किनारों पर नागरिक और धार्मिक स्वतंत्रता की नींव रखी गई।

98

(दृश्य)
समझौते और सताहट का यह काल, जिसकी प्रकाशितवाक्य के १२ अध्याय में भविष्यवाणी की गई थी, अन्ततः १७९८ में समाप्त हुआ जब नेपोलियन ने सेनापति बर्थियर को पोप को बन्दी बनाने के लिये भेजा – ५३८ ईसवी में सताहट आरम्भ होने के ठीक १२६० वर्षों के बाद।

99

जब इस भविष्यवाणी का समय पूरा होने को आया, तब परमेश्वर के पास एक विश्वासियों का समूह था जो बाइबिल के प्रति और इसकी शिक्षा के प्रति विश्वस्त था ।भविष्यवाणी में था कि शैतान परमेश्वर की उस कलीसिया पर अपना क्रोध दिखाएगा जो इस भविष्यवाणी के समय के बाद शेष थीः

100

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:१७)
"और अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ और उसकी शेष सन्तान से लड़ने को गया,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

101

जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं।"

प्रकाशितवाक्य १२:१७

102

एक बचा हुआ टुक़डा किसी कपड़े का अंतिम भाग है जिसे एक बड़े टुकड़े से अलग कर दिया गया है। वैसे ही, परमेश्वर की "बची हुई" कलीसिया वह कलीसिया है जो समय के अन्तिम भाग में यीशु के पृथ्वी पर वापस लौटने से पहले होगी।

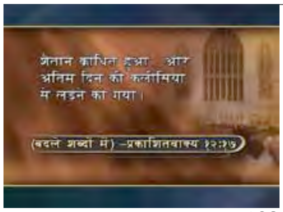

103

इस प्रकार इस पद का शाब्दिक अनुवाद करके हम कह सकते हैं कि शैतान क्रोधित हुआ...और अंतिम दिन की कलीसिया से लड़ने को गया।" शैतान कुपित है क्योंकि परमेश्वर के लोग इन अंतिम दिनों में भी परमेश्वर की सच्चाई के पीछे चलते हैं।

104

यूहन्ना दो विशिष्ट गुणों का वर्णन करता है जिसके द्वारा हम इस अंतिम दिन की कलीसिया को पहचान सकते हैं

"अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ और उसकी शेष सन्तान से लड़ने को गया,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

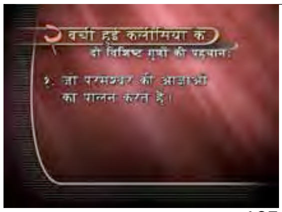

105

जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर है।"
प्रकाशितवाक्य १२:१७
यह बची हुई कलीसिया वह है जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानती है।

106

२. जो यीशु की गवाही देते हैं।

107

परन्तु क्या प्रत्येक कलीसिया यह शिक्षा नहीं देती कि मसीही लोगों को परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना चाहिए?
ठीक ऐसा नहीं, परन्तु आज बहुत सी धार्मिक संस्थाएँ अपने सदस्यों को किसी न किसी रूप में परमेश्वर की कुछ आज्ञाओं का उल्लंघन करना सिखाते हैं। उदाहरण स्वरूप, कुछ कलीसियाओं के सदस्यों को मूर्तियों के समक्ष झुकने के लिए सिखाया जाता है। दूसरे परमेश्वर के नाम की पवित्रता पर ध्यान नहीं देते।

108

(मूलपाठ: निर्गमन २०:८ -१०)
और धार्मिक संसार के बहुत से लोगों ने चौथी आज्ञा को, जो सृष्टि का स्मारक है, भुला दिया है।
"विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

109

छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना,

110

परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्रामदिन है।"

निर्गमन २०:८-१०

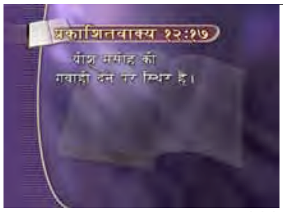

111

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १२:१७)

न केवल परमेश्वर की बची हुई, या अंतिम दिन की कलीसिया, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानती है परन्तु भविष्यवाणी यह भी कहती है कि यह "यीशु मसीह की गवाही देने पर स्थिर है।"

(प्रकाशितवाक्य १२:१७)

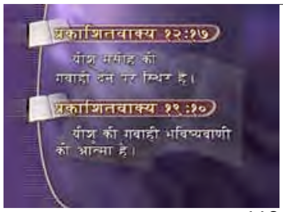

112

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १९:१०)

प्रकाशितवाक्य १९:१० में कहता है, "यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है।"

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

113

परमेश्वर के अन्तिम दिन की कलीसिया के पास आत्मा का वरदान होगा और भविष्यवाणी की आत्मा भी होगी। बाद में हम इस विशेष वरदान का अधिक गहराई से अध्ययन करेंगे। परमेश्वर हमें अपनी अंतिम कलीसिया को ढूंढने के लिए बहुत से चिन्ह देता है। उसके लोग दुनिया में सुसमाचार पहुँचाने के लक्ष्य में व्यस्त होंगे, क्योंकि यीशु ने अपनी कलीसिया को आज्ञा दी है:

114

(मूलपाठः मत्ती २८:१९,२०)
"इसलिए जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ,

115

उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,

116

उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ,

117

मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ ...
आमीन।"
मत्ती २८:२९, २०

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

118

पूरे संसार में अनन्त सुसमाचार के प्रचार की आज्ञा का संकेत प्रकाशितवाक्य १४ में आकाश में उड़ते हुए तीन स्वर्गदूतों द्वारा दिया गया है। इस तिगुने सुसमाचार का पहला भाग दो महान सच्चाइयों को सामने लाता है जिसको हमें प्रत्येक व्यक्ति के साथ बांटना है।

119

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १४:६,७)
"फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच उड़ते हुए देखा,

120

जिसके पास पृथ्वी पर के रहने वालों को सुनाने के लिए सनातन सुसमाचार था-

121

हर एक जाति और कुल और भाषा और लोगों को -

122

उस ने बड़े शब्द से कहा, "परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है;

123

उसका भजन करो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।"
प्रकाशितवाक्य १४:६,७

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

124

पृथ्वी के अंतिम समय में रहने वालों के लिए यह चेतावनी है कि वे यह स्मरण रखें कि न्याय का दिन आ पहुँचा है। यह परमेश्वर की सृष्टि की महान स्मृति, सातवें दिन के सब्त को भी स्मरण कराता है। इस तिगुने समाचार का दूसरा भाग आठवें पद में पाया जाता है:

125

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य १४:८)

"फिर इसके बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, कि गिर पडा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा,

126

जिसने अपने व्यभिचार की कोपमयी मदिरा सारी जातियों को पिलाई है।"

प्रकाशितवाक्य १४:८

यह सुसमाचार परमेश्वर के सच्चे लोगों को बुलाता है कि वे भ्रमित धर्मी संसार से अलग हो जाएं। उनका ध्यान स्वधर्म त्यागियों की बढ़ती संख्या की ओर भी किया गया है। अंतिम, ओर गम्भीर बुलावा इस भविष्यवाणी के तीसरे भाग में दिया गया है:

127

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य १४:९, १०)

"फिर तीसरा स्वर्गदूत उनका अनुसरण करते हुए बड़े शब्द से यह कहते हुए आया,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

128

"जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करें, और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले

129

वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा पिएगा।"
प्रकाशितवाक्य १४:९, १०

130

उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करने या उसकी छाप लेने के विरुद्ध दुनिया को चेतावनी दी जाती है।

131

(मूलपाठः यूहन्ना १०:१६)
यीशु ने कहा, "और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं, मुझे उनका भी लाना अवश्य है,

132

और वे मेरा शब्द सुनेगी, तब एक ही झुंड और एक ही चरवाहा होगा।"
यूहन्ना १०:१६

133

सभी कलीसियाओं में परमेश्वर के विश्वस्त अनुयायी हैं, परन्तु एक समय आएगा जब एक ही भेड़शाला – सच्ची कलीसिया होगी। यीशु ने कहा कि उनकी भेड़ें उन दूसरी भेड़शालाओं से बाहर निकल आने के लिए बुलाई जायेंगी जहाँ लोग परमेश्वर की शिक्षाओं पर सावधानी से नहीं चलते.।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

134

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १८:४)

प्रकाशितवाक्य के लेखक ने उस समय के उद्देश्य के विषय में कहा :–"फिर मैंने स्वर्ग से किसी और का शब्द सुना, कि हे मेरे लोगों, उसमें से निकल आओ,

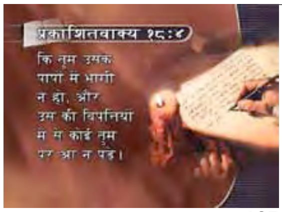

135

कि तुम उसके पापों में भागी न हो, और उस की विपत्तियों में से कोई तुम पर आ न पड़े।

प्रकाशितवाक्य १८:४

परमेश्वर के विश्वस्त अनुयायी अन्तिम दिनों के धार्मिक गलतियों और भ्रम से बाहर बुलाए जायेंगे। आप ध्यान देना चाहेंगे कि बाइबिल किस प्रकार उन लोगों का वर्णन करती है जो उस धार्मिक भ्रम से बाहर बुलाए जायेंगे जो यीशु के लौटने से पहले होगी।

136

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १४:१२, १४)

"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं..."

137

"और मैंने दृष्टि की, और देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

138

जिसके सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है।"

प्रकाशितवाक्य १४:१२,१४

139

आइए, संक्षेप में बाइबिल में दी गई परमेश्वर की अंतिम कलीसिया के विशिष्ट गुणों को दोहराएं:

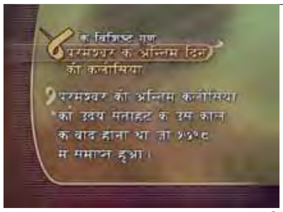

140

परमेश्वर की अन्तिम कलीसिया का उदय सताहट के उस काल के बाद होना था जो १७९८ में समाप्त हुआ।

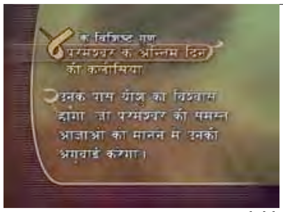

141

उनके पास यीशु का विश्वास होगा, जो परमेश्वर की समस्त आज्ञाओं को मानने में उनकी अगुवाई करेगा।

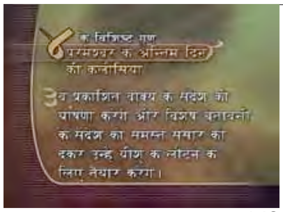

142

वे प्रकाशितवाक्य के संदेश की घोषणा करेंगे और विशेष चेतावनी के संदेश को समस्त संसार को देकर उन्हें यीशु के लौटने के लिए तैयार करेंगे।

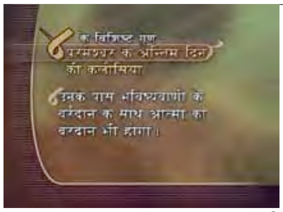

143

उनके पास भविष्यवाणी के वरदान के साथ आत्मा का वरदान भी होगा।

144

पहली दृष्टि में सारी कलीसियाएं एक सी जान पड़ती हैं,

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

145

परन्तु जब आप परमेश्वर के पवित्र वचन में सच्च के वर्णन का अध्ययन करते हैं, तो उन कलीसियाओं को जानना अधिक सरल हो जाता है जिनके पास ये विशिष्ट गुण नहीं हैं। शायद आप इन सब कलीसियाओं के बीच परमेश्वर की सच्ची और अंतिम कलीसिया को ढूंढ़ पाने का प्रयत्न करते रहे हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि केवल एक ही सच्ची कलीसिया है। वह है बाइबिल पर विश्वास करने वाली, सब्त का पालन करने वाली, तथा मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करने वाली संसार -व्यापी कलीसिया। इसी लिए मैं एक सेवेन्थ-डे एडवेन्टिस्ट हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि इस कलीसिया में सच्ची कलीसिया के सारे विशिष्ट गुण हैं।

146

जैसे हमने इस अनोखी भविष्यवाणी का अध्ययन किया है तो आप स्पष्ट देख सकते हैं कि परमेश्वर के पास एक विशेष संदेश है और उस संदेश को देने के लिए विशेष लोग हैं।

परन्तु इन बाइबिल की सच्चाईयों को जानना ही पर्याप्त नहीं है।

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

147

वह शांति और प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए जो यीशु मसीह के साथ पूरी तरह चलने से आती है, आप के लिए यह भी आवश्यक है कि आप आगे बढ़ें और परमेश्वर के वचन में प्रकट की गई सच्चाई का अनुसरण करें, जैसा कि यीशु ने कहा था,

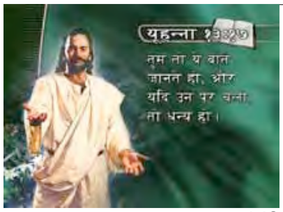

148

(मूलपाठः यूहन्ना १३:१७)

"तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।"

यूहन्ना १३:१७

२० - सच्चाई के द्वारा मुक्ति

149

परमेश्वर आप को निमंत्रण देता है कि आप अपने जीवन का अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय लें। क्या आप विश्वास करते हैं कि इन सभाओं में आपने परमेश्वर का वचन सुना है? क्या आप विश्वास करते हैं कि इन सभाओं में आपने परमेश्वर की सच्चाई सुनी है? क्या आप विश्वास करते हैं कि इन सभाओं में पवित्र आत्मा ने आपके हृदय को प्रभावित किया है? जब हम परमेश्वर का वचन और उसकी सच्चाई को सुनते हैं, तब पवित्र आत्मा निर्णय लेने में हमारे मनों को प्रभावित करता है।

अब निर्णय लेने का समय है। क्या आप कहना चाहेंगे, "हाँ प्रभु, मैं आपकी सच्चाई का अनुसरण करना चाहता हूँ। हाँ, यीशु मैं पवित्र आत्मा की अपील को स्वीकार करता हूँ। अब मैं सभी प्रकार से आपके पीछे चलूंगा। मैंने सच्चाई के रास्ते पर चलना स्वीकार किया है।" यदि यह आपका निर्णय है तो क्या आप इसी समय खड़े होना चाहेंगे जब हम प्रार्थना करते हैं?

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

1

परमेश्वर अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा अब भी कहता है।

2

दुनिया के विभिन्न भागों में वैज्ञानिक रेडियो दूरबीनों का प्रयोग कर रहे हैं जो कि बाहरी अंतरिक्ष से ध्वनि सुनने के लिए है।

3

वे यह आशा करते हैं कि हो सकता है कि किसी दिन, वे किसी दूसरी दुनिया पर रहने वाले बुद्धिमान प्राणी का संदेश सुनेंगे।

4

यहाँ एक गवाही है कि अभी हजारों वर्षो के लिए पृथ्वी को एक संदेश प्रकाशित हुआ है - परन्तु इसे कुछ लोग ही सुन रहे हैं। यह संदेश इस ग्रह के सृष्टिकर्त्ता से आया है प्रेम का संदेश परमेश्वर से आया है जो कि अपने उपद्रवी बच्चों को फिर से जीतने का प्रयत्न कर रहा है।

5

यह पृथक्करण परमेश्वर और मनुष्य जाति के बीच स्थायी नहीं था। पृथ्वी पर आरंभ की गई प्रत्येक वस्तु सुन्दर थी। एक पूर्ण दुनिया के लिए दो सिद्ध लोग परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

6

(दृश्य)
और उनके बगीचे रूपी घर में परमेश्वर आता था और उनके साथ चलता था तथा आमने सामने बातें करता था। अभी उनकी कल्पना कीजिए संध्या के समय में उनके साथ पैदल घूमता था।

7

यही वह तरीका है जिसकी परमेश्वर ने योजना बनाई थी धार्मिकता की एक सुन्दर सहभागिता। उनको पृथक रखने के लिए कुछ भी नहीं था। उनका एक साथ मिलकर रहना अवश्य ही आनन्द देने वाला हुआ होगा।

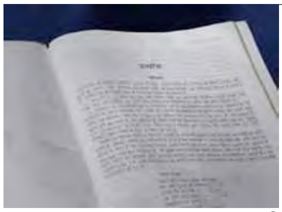
8

परन्तु अत्यन्त दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि यह प्रेम और एक साथ की सहभागिता बाइबिल में केवल दो अध्याय में ही रही।

9

उत्पत्ति का तीसरा अध्याय एक दुःखदायी कहानी कहता है। आदम और हव्वा ने पाप किया।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

10

उन्होंने परमेश्वर के पवित्र प्रेम के नियम के विरुद्ध विद्रोह किया या उल्लंघन किया। पाप पृथक करता है पाप का परमेश्वर से कोई मेल नहीं है। आदम और हव्वा परमेश्वर के साथ अब प्रत्यक्ष रूप से बातचीत और सहभागिता न रख सके।

11

उन्होंने सर्प लूसीफर की बातें सुनी और परमेश्वर के बदले उसकी आज्ञा मानी और यह पाप है।

12

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : ८)

बाइबिल कहती है, "तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठन्ड़े समय वाटिका में फिरता था उसका शब्द उनको सुनाई दिया।

13

तब आदम और उसकी पत्नी यहोवा से छिप गए

14

वाटिका के वृक्षों के बीच।"

उत्पत्ति ३ : ८

आदम और हव्वा छिपे थे! वे परमेश्वर का सामना नहीं करना चाहते थे वे केवल छिपना चाहते थे। यह सब पाप करता है।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

15

यह परमेश्वर और मनुष्य के बीच और मनुष्य और दूसरों के बीच प्रेम के संबंध को पृथक और टुकड़े - टुकड़े कर देता है या नष्ट कर देता है।

16

(मूलपाठ : यशायाह ५९ : २)

यशायाह भविष्यवक्ता ने लिखा: "परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है;

17

और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुँह तुम से छिपा है ------"

यशायाह ५९ : २

हाँ, पाप हमें परमेश्वर से पृथक करता है, परन्तु इसने हमें उसके प्रेम से पृथक नहीं किया। परमेश्वर ने पापी मनुष्य के साथ संबंध बनाए रखने का एक रास्ता ढूढ़ा। प्रेम हमेशा संबंध बनाए रखने का एक रास्ता ढूंढ लेता है!

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

18

उसने पृथ्वी पर अपने बच्चों के साथ बातचीत करने का दूसरा रास्ता स्थापित किया -मार्गदर्शन का और निर्देश देने का और अपनी योजना का। उसने स्त्री और पुरूष को चुना अपने प्रेम को बताने और मनुष्य की भलाई की योजना को कहने के लिए जिन पर विश्वास कर सकता था।

19

उनके बीच में से उसने मूसा मिरियाम, शमूएल, हुल्दा, डबोरा, यशायाह, यिर्मयाह और इससे भी अधिक लोगों को चुना।

20

भविष्यवक्तां और भविष्यवक्तिन परमेश्वर की ओर से बोलने वाले लोग थे!

21

यह परमेश्वर के कहने का तरीका था, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, मुझे तुम्हारी चिन्ता है और तुम्हारी सहायता करने के लिए मेरे पास एक योजना है।"

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

22

बाइबिल में यहोवा और बहुत से लोगों के बीच वार्तालापों का उल्लेख है, परन्तु ये वार्तालाप और सहभागिता वैसी नहीं थी जैसा कि अदन की वाटिका में आदम, हव्वा, और परमेश्वर के बीच बाइबिल में परमेश्वर और बहुत से लोगों के बीच वार्तालापों का उल्लेख है, परन्तु ये वार्तालाप और सहभागिता वैसी नहीं थी जैसा कि अदन की वाटिका में आदम, हव्वा, और परमेश्वर के बीच थी।

23

कभी परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा, कभी स्वर्गदूतों के द्वारा, और कभी चुने गए संदेशवाहकों के द्वारा अपना संदेश देता था। अब तक की जानकारी के अनुसार मानव इतिहास के प्रथम २५०० वर्षों में परमेश्वर से आने वाला कोई लिखित प्रकाशितवाक्य नहीं था। जिन्होंने परमेश्वर से सीखा था उन्होंने दूसरों को बताया। परन्तु परमेश्वर ने अपने लोगों को अपना संदेश देने के लिये जिस तरीके का सर्वाधिक प्रयोग किया वह

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

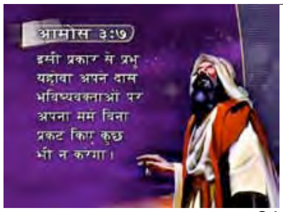

24

(मूलपाठ : आमोस ३ : ७)

वह था भविष्यवक्ता और भविष्यवक्तिन द्वारा संदेश। ये पुरुष और स्त्रियां जो पवित्र आत्मा के वश में हो कर परमेश्वर के लिए बोलते थे। इसमें अधिक आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि बाइबिल स्पष्ट कहती है, "इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यवक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रकट किए कुछ भी न करेगा।"

आमोस ३:७

25

आइए ध्यान दें कि ये भविष्यवक्ता किस प्रकार संदेश प्राप्त करते थे:

26

(मूलपाठः २ पतरस १:२१)

"क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी पुराने समय में की इच्छा से कभी नहीं हुई :

27

पर भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।"

२ पतरस १:२१

यहाँ तक कि नूह के दिन के महान जलप्रलय से पहले भी परमेश्वर के पास भविष्यवक्ता थे।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

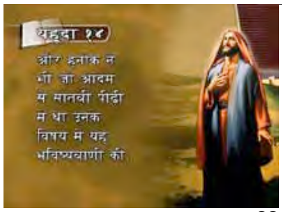

28

(मूलपाठः यहूदा १४)

"और हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था उनके विषय में यह भविष्यवाणी की,

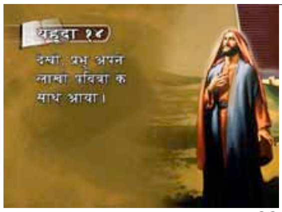

29

"देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया।"

यहूदा १४

हनोक पहला व्यक्ति था जिसकी चर्चा बाइबिल में है जिसके पास भविष्यवाणी का दान था। परन्तु और भी दूसरे हैं!

30

(मूलपाठः प्रेरितों के काम ३:२१)

बाइबिल कहती है, "परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुख से की है, जो जगत की उत्पत्ति से होते आए हैं।"

प्रेरितों के काम ३:२१

दूसरे भविष्यवक्ता नूह ने संसार के जलप्रलय से नाश होने की १२० वर्ष पूर्व इसकी भविष्यवाणी कर दी थी।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

31

जलप्रलय के बाद, हम बहुत से भविष्यवक्ता और भविष्यवक्तिन जैसे मिरियम, डबोरा, यिर्मयाह, यशायाह, यहेजकेल और दूसरे भविष्यवक्ताओं के विषय में जानते हैं। वे धार्मिकता के शिक्षक थे और नैतिकता तथा आत्मिकता के मार्गदर्शक जो परमेश्वर के लिए बोलते थे।

32

कभी कभी परमेश्वर दर्शन के द्वारा भविष्यवक्ताओं और भविष्यवक्तिनों पर अपनी इच्छा प्रकट करता था, कभी स्वप्न और कभी वचन के द्वारा।
परन्तु हमेशा पवित्र आत्मा के द्वारा।

33

(मूलपाठ: गिनती १२:६)
यहोवा ने कहा: "...यदि तुम में कोई नबी हो, तो उस पर मै यहोवा दर्शन के द्वारा अपने आप को प्रकट करूंगा;

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

34

मैं स्वप्न में उस से बात करूँगा।"

गिनती १२:६

कभी-कभी परमेश्वर के संदेशवाहकों को परमेश्वर के लिए बोलने का निर्देश दिया जाता था, कभी -कभी वे लिखते थे या उससे प्राप्त संदेश का लेखा-जोखा रखते थे। वास्तव में, बाईबिल भविष्यवक्ताओं के सेवा कार्य की उपज है। प्रत्येक लेखक परमेश्वर की योजना का एक भाग था।

35

सभी ने "पवित्र आत्मा द्वारा उभारे जाने से" उसके लिए बोला या लिखा। उनके द्वारा परमेश्वर ने पृथ्वी पर रहने वाले अपने बच्चों को प्रेमपत्र भेजा।

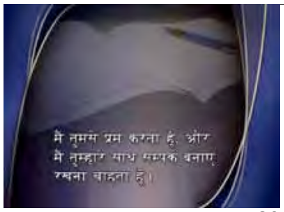
36

यह उसके कहने का तरीका है,

"मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, और मैं तुम्हारे साथ सम्पर्क बनाए रखना चाहता हूँ।"

और विशेष रूप से वह बताना चाहता है कि उस दिन की उसे प्रतीक्षा है जब हम और वह आमने-सामने उसके साथ सहभागिता करेंगे!

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

37

नए नियम के सभी लेखक -- मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना, पौलुस याकूब पतरस और यहूदा -- उस योजना के भाग थे। सबके पास भविष्यवाणी का वरदान था। दूसरे और भी थे जो परमेश्वर की बातें कर रहे थे जैसे शमौन, अगैबस, बरनाबास, और हन्ना,

38

(मूलपाठः प्रेरितों के काम २१:९)
और फिलिप की चार पुत्रियाँ थीं "जो भविष्यवाणी करती थीं।"
ये सभी अंग थे जिनका परमेश्वर ने अपनी इच्छा को प्रकट करने तथा प्रथम मसीही कलीसिया के प्रोत्साहन के लिये प्रयोग किया।

39

उसके बाद यीशु स्वयं व्यक्तिगत रूप से शब्दों और कार्यों के द्वारा यह दिखाने आए थे कि वास्तव में परमेश्वर कैसा है। संसार को परमेश्वर के प्रेम और चिन्ता को प्रकट करने वाला उनसे अच्छा माध्यम नहीं मिला है।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

40

कलवरी के समय से अब तक उन्नीस सदियाँ बीत चुकी हैं, परन्तु अब भी पुरुष और स्त्रियाँ और लड़के और लड़कियाँ क्रूस के नीचे अब भी घुटने टेकते हैं और संसार के उद्धारकर्त्ता के प्रति न खत्म होने वाली वफादारी और भक्ति की शपथ खाते हैं। बाईबिल कहती है कि जब यीशु स्वर्ग में वापिस गए तो उन्होंने अपने अनुयायियों को प्रोत्साहित करने के लिये विशेष वरदान दिए।

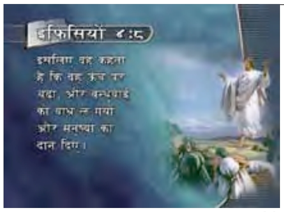

41

(मूलपाठः इफिसियों ४:८)

"इसलिए वह कहता है कि वह ऊँचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बांध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।"

इफिसियों ४:८

वे दान क्या हैं?

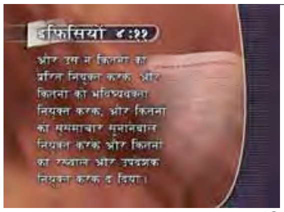

42

(मूलपाठः इफिसियों ४:११-१५)

बाइबिल कहती है, "और उस ने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यवक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया।"

इफिसियों ४:११

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

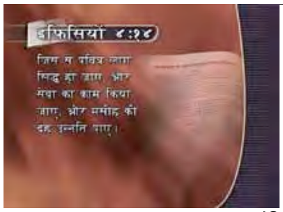

43

मसीह ने कलीसिया को उपहार क्यों दिये? बारहवाँ पद कहता है, "जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाए और मसीह की देह उन्नति पाए।"

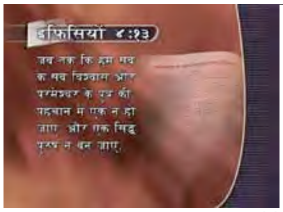

44

कलीसिया में कितनी देर तक ये वरदान रह सकते हैं?"

जब तक हम सब विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में और एक सिद्ध मनुष्य एक हो जाएँ,

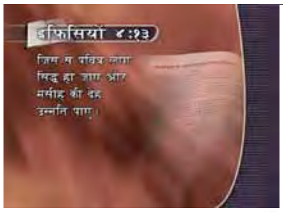

45

और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।" पद १३

बाइबिल कहती है कि ये वरदान कलीसिया को स्थिरता और लोगों को दृढता देंगे।

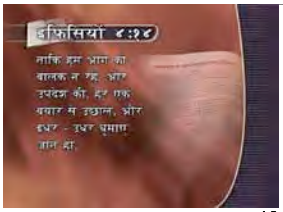

46

ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्य की ठग-विद्या और चतुराई से

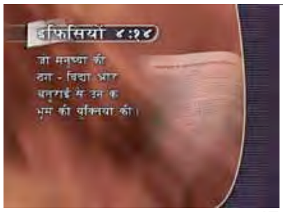

47

उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हैं।" पद १४।

ध्यान दीजिए कि भविष्यवाणी के वरदान का "आत्मिक वरदानों" मे कहाँ है? पौलुस लिखता है,

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

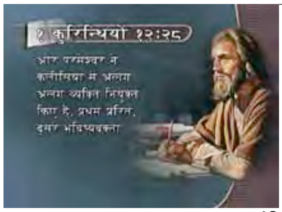

48

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १२:२८)

"और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं, प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यवक्ता ..."

१. कुरिन्थियों १२ : २८

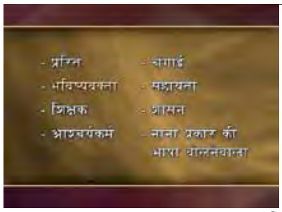

49

भविष्यवाणी का दान प्रेरिताई के बाद दूसरी श्रेणी में था, परन्तु इसे एक बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक वरदान होना था जिससे कलीसिया के कार्य में सहायता मिले।

50

पौलुस ने आत्मा के दानों की मनुष्य के शरीर के विभिन्न अंगों से तुलना की। उसने दिखाया कि जिस प्रकार आंखें, सिर, मुँह और शरीर के दूसरे सभी अंग शरीर के कार्य के लिए आवश्यक हैं इसी प्रकार आत्मिक दान कलीसिया के लिये हैं। उदाहरण के लिए, बिना दर्शन के कलीसिया अंधी है!

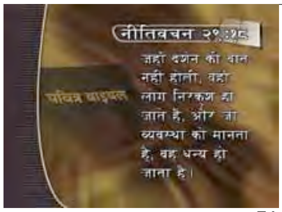

51

(मूलपाठः नीतिवचन २९:१८)

"जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है, वह धन्य हो जाता है।"

नीतिवचन २९:१८

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

52

परन्तु आप कहते हैं, "मसीह के वापिस स्वर्ग जाने के बाद और उसके सभी शिष्यों के मरने के बाद भविष्यवाणी के दान का क्या हुआ?"

53

बहुत समय नहीं बीता था जब कलीसिया लापरवाह और परमेश्वर के नियमों के प्रति अविश्वासी हो गई। यिर्मयाह बताता है कि जब इस्राएलियों ने कुछ समय के लिये धर्म त्याग दिया था तो उसका क्या फल हुआः

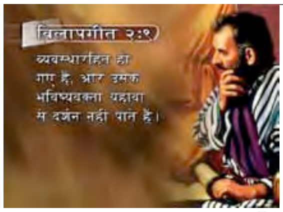

54

(मूलपाठः विलापगीत २:९)
"व्यवस्थारहित हो गए हैं, और उसके भविष्यवक्ता यहोवा से दर्शन नहीं पाते हैं।"
विलापगीत २:९

55

जब प्रथम कलीसिया ने मूर्तिपूजकों की रीति-रिवाजों को अपनाया और बाइबिल की मौलिक सच्चाईयों से छोड़ दिया, तब परमेश्वर ने एक-एक कर सारे आत्मिक दान वापस ले लिये।

56

कलीसिया के धर्म त्याग के बीच के समय या अंधकार के युग में बाईबिल का प्रयोग मठों तक ही सीमित था। साधारणतः ये इब्रानी, यूनानी और रोमन भाषाओं में लिखी जाती थीं।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

57

साधारण लोगों को बाइबिल रखना या पढ़ना मना था। केवल याजकों को ही बाइबिल को पढ़ने और उसकी व्याख्या करने का अधिकार था।

कुछ ईमानदार मसीही ही बाइबिल और उसकी सच्चाई को पकड़े हुए थे।

विरोध होने पर भी उन्होंने मिशन के कार्य को जारी रखा और बाइबिल के भागों को, जो उन्हें प्राप्त थे, एक दूसरे में बांटा। सुधार के बीज को उन्होंने विक्लिफ, लूथर और हस से पहले लगाया।

58

(दृश्य)

मार्टिन, लूथर और दूसरों ने लोगों की साधारण भाषा में बाइबिल का अनुवाद किया। बाधाएं आई, परन्तु इसने केवल परमेश्वर के वचन के लिए और अधिक इच्छा जगाई।

59

और जैसे लोग परिश्रम से बाइबिल में सत्य की खोज करने लगे तो उन्हें शताब्दियों से छिपी पुरानी सच्चाईयाँ मिलीं। इन सच्चाईयों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया गया और एक महान धार्मिक जागृति आई।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

60

इस समय एक नया धार्मिक आन्दोलन आरम्भ हुआ -- समर्पित मसीहियों का एक समूह जिसमें कुछ बैप्टिस्ट, कुछ मेथोडिस्ट, कुछ प्रेसबाइटेरियन और दूसरे और थे, बाइबिल का अध्ययन और सत्य के प्रकाश के लिये प्रार्थना करने लगा।

61

जब वे बाईबिल की खोज कर रहे थे तब उन्हें परमेश्वर के चौथे नियम में उसकी सृष्टि का महान स्मरण चिन्ह मिला। परमेश्वर ने अपने लोगों से इस दिन को स्मरण रखने के लिए कहा है। उन्होंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को पढ़ा और देखा कि परमेश्वर के अंतिम दिन के लोग कैसे होंगें:

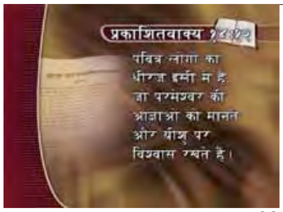

62

((मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य १४:१२)
"पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं।"
प्रकाशितवाक्य १४:१२

जब उन्होंने दूसरी पुस्तकों को पढ़ा और उनका अध्ययन किया। वे प्रभावित हुए कि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का अर्थ है बाइबिल के सब्त को मानना।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

63

सृष्टि के इस स्मरण चिन्ह को उन्होने ग्रहण किया, और संसार के सामने सब्त की सच्चाई को प्रकाशित किया।

64

(दृश्य)

और भविष्यवाणी का वरदान? क्या परमेश्वर सब्त का पालन करने वालों को इस अंतिम समय में भविष्यवाणी के विशेष वरदान को फिर से देगा? क्या परमेश्वर के पास कुछ विशेष दान है? क्या यह सोचना गलत होगा कि इस पीढ़ी के लिये परमेश्वर के पास कोई विशेष दान है?

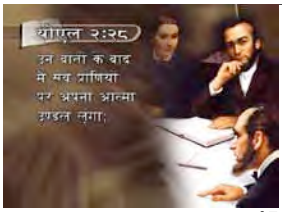

65

(मूलपाठः योएल २:२८,३१)

सुनिए: "उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेल लूंगा;

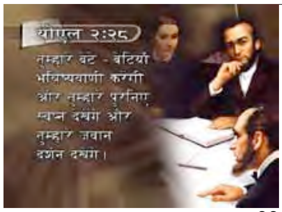

66

तुम्हारे बेटे -बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगें और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।"

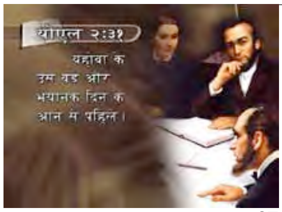

67

"...यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले।"

योएल २:२८,३१

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

68

ध्यान दीजिए कि परमेश्वर ने कहा कि यह प्रभु के महान और भयानक दिन से पूर्व होगा -- या मसीह के दूसरे आगमन के ठीक पहले होगा। परमेश्वर के लोगों के पास संसार के अंतिम समय में भविष्यवाणी का वरदान होगा। कोरिन्त की कलीसिया को लिखते हुए पौलुस ने परमेश्वर के अनुयायियों के विषय में कहा:

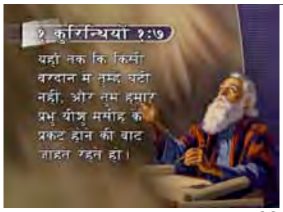

69

(मूलपाठ: १ कुरिन्थियों १:७)

"यहाँ तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने की बाट जोहते रहते हो।"

१ कुरिन्थियों १:७

70

हमने पहले देखा है कि अन्त के दिनों में परमेश्वर के लोगों की पहचान होगी: "जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं।"

प्रकाशितवाक्य १२:१७

71

"पवित्र लोगों का धीरज

72

और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानें"

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

73

और उनके पास यीशु की गवाही होगी।

74

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १९:१०)

हम कह चुके हैं, "यीशु की गवाही भविष्यवाणी की आत्मा है।"

प्रकाशितवाक्य १९:१०

दूसरे शब्दों में, यीशु की गवाही का अर्थ है भविष्यवाणी के वरदान के द्वारा यीशु की गवाही देना।

प्रकाशितवाक्य के अनुसार, अन्त के दिनों की परमेश्वर की कलीसिया जो उसका प्रकाश जगत को देगी उसकी विशेषता होगी कि वह यीशु की गवाही देगी, सारी आज्ञाएँ मानेगी, और भविष्यवाणी के वरदान का आशीष पायेगी।

75

हाँ, परमेश्वर अब भी "सर्म्पक" में रहना चाहता है।"

उसके पास इस पीढ़ी को कहने के किये अभी कुछ है।

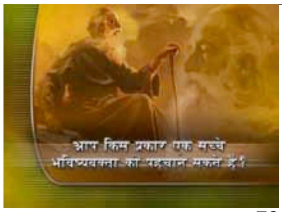

76

परन्तु आप पूछ सकते हैं, "धोखे की संभावना के विषय में क्या किया जाए?

हम कैसे एक सच्चे भविष्यवक्ता और एक झूठे भविष्यवक्ता के बीच के अन्तर को बता सकते हैं?"

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

77

धोखे की संभावना सदा रही है। पूरे इतिहास में सच्चे और झूठे भविष्यवक्ता होते रहे हैं। यदि हम सच्चे भविष्यवक्ता को पहचानना जानते हैं तो हमें झूठे भविष्यवक्ताओं की चिन्ता नहीं करनी है।

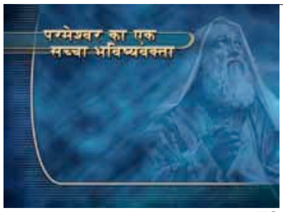

78

बाइबिल एक सच्चे भविष्यवक्ता की पहचान कराती है:

79

एक सच्चे भविष्यवक्ता का संदेश परमेश्वर के वचन और उसके नियम के साथ पूर्ण एकता में होगा।

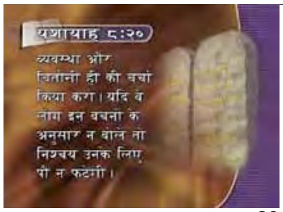

80

(मूलपाठ: यशायाह ८:२०)

"व्यवस्था और चितौनी ही की चर्चा किया करो। यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिए पौ न फटेगी।"

यशायाह ८:२०

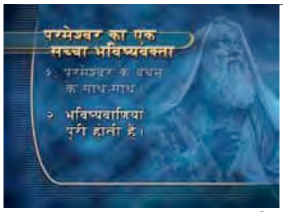

81

एक सच्चे भविष्यवक्ता की भविष्यवाणी अवश्य पूरी होनी चाहिए।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

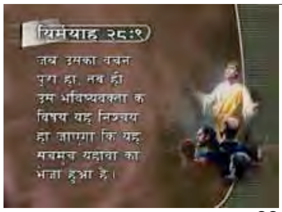

82

(मूलपाठः यिर्मयाह २८:९)

"...जब उसका वचन पूरा हो, तब ही उस भविष्यवक्ता के विषय यह निश्चय हो जाएगा कि यह सचमुच यहोवा का भेजा हुआ है।"

यिर्मयाह २८:९

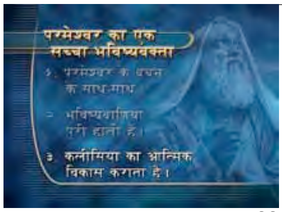

83

एक सच्चे भविष्यवक्ता की भविष्यवाणियाँ कलीसिया का आत्मिक विकास कराती हैं। भविष्यवाणी का वरदान दिए जाने का एक उद्देश्य कलीसिया का निर्माण है। यदि हम सच्चे दान की खोज करना चाहते हैं तो हमें सच्ची कलीसिया की खोज करनी चाहिए। वे एक दूसरे से संबंधित है।

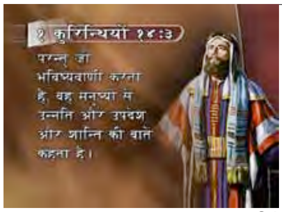

84

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १४:३,४)

"परन्तु जो भविष्यवाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति और उपदेश और शान्ति की बातें कहता है।"

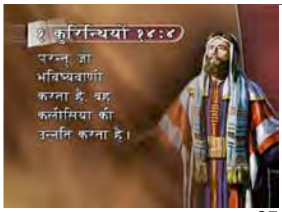

85

"परन्तु जो भविष्यवाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है।"

१ कुरिन्थियों १४:३,४

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

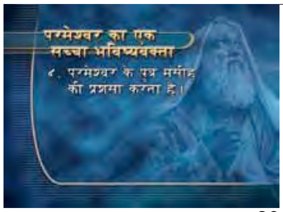

86

एक सच्चा भविष्यवक्ता मसीह की परमेश्वर के पुत्र और मनुष्य जाति के उद्धारकर्त्ता के रूप में प्रशंसा करेगाः

87

(मूलपाठः १ यूहन्ना ४:१,२)
"हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन् आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं;"

88

क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।"

89

"जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है।"
१ यूहन्ना ४:१,२

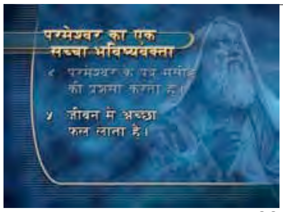

90

एक सच्चा भविष्यवक्ता या भविष्यवक्तिन अपने जीवन और कार्यों के द्वारा पहचाने जा सकते हैं।

91

(मूलपाठः मत्ती ७:१६,१८)
"उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे ..."

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

92

अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है।"
मत्ती ७:१६,१८

93

इन पदों के आधार पर इस सच्चाई का पता लगता है कि हर एक जो भविष्य की बातें बताता है वह परमेश्वर का सच्चा भविष्यवक्ता नहीं है।

94

एक सच्चे भविष्यवक्ता का संदेश, उसके जीवन, और कार्य द्वारा बाइबिल की भविष्यवाणी के संदेश और परमेश्वर की आज्ञाओं की पुष्टि होनी चाहिए। इसलिए जो परमेश्वर के भविष्यवक्ता होने का दावा करते हैं, उन्हें परखिए। यदि वे सही हैं तो परमेश्वर का धन्यवाद करें। यदि नहीं, तो मसीह की चेतावनी का अनुसरण करें कि उनके लिए "चौकसी करो"।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

95

मैं बताना चाहता हूँ कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों से सर्म्पक बनाए रखने का निर्णय किया। यह वह समय था जब वे शताब्दियों से छुपी सच्चाईयों को संसार के सामने ला रहे थे। यह १९वीं शताब्दी की उस बड़ी धार्मिक जागृति का समय था। बाइबिल और प्रार्थना में लोगों की बहुत अधिक रुचि हो गई थी। दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की भविष्यवाणियाँ विशेष आकर्षण थीं।

96

बाइबिल के विश्वासी विद्यार्थियों ने इन भविष्यवाणियों का अध्ययन किया और अन्त में इस परिणाम पर पहुँचे कि यीशु उनके दिनों में आएगें।

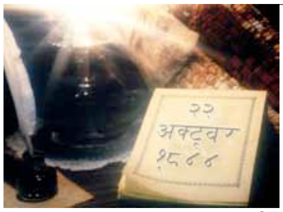

97

जब उन्होंने लगातार अध्ययन किया तो उन्होंने २२ अक्टूबर १८४४ का दिनांक निश्चित किया। परन्तु २२ अक्टूबर का दिन बीत गया और यीशु का महिमायुक्त आगमन उस दिन नहीं हुआ।

98

यह बहुत ही कड़वी निराशा थी। इस घटना ने उत्तेजना, उपहास, ठट्ठा और असत्य कथन को बढ़ोत्तरी दी।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

99

(दृश्य)

बाद में, अत्यधिक प्रार्थना और बाइबिल का अध्ययन करने के बाद उस समूह ने यह पाया कि वह दिन सही था परन्तु घटना गलत थी। दानिय्येल ८:१४ में जिस पवित्र स्थान का वर्णन है वह पृथ्वी नहीं, पर स्वर्ग था। उन्होंने सोचा था कि पृथ्वी आग से शुद्ध की जाएगी, पर असल में स्वर्ग का पवित्र स्थान शुद्ध किया जाना था। इसमें परमेश्वर के चरित्र और उसके शासन का सही ठहराया जाना था ।

100

लोग निराश हो गए थे। निराशा असहनीय जान पड़ी। परन्तु एक प्रेमी परमेश्वर सच्चाई को खोजने वाले को कभी नहीं छोड़ता और वह मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करने वाले इन विश्वासियों को इस संकट की घड़ी में नहीं भूला। वह चाहता था कि वे जानें कि वह उन की देखभाल करता है और उनसे प्यार करने के कारण उनकी सहायता करना चाहता था। इसलिए इस अत्यन्त कठिन क्षण में परमेश्वर ने अपने लोगों को भविष्यवाणी के वरदान को फिर से दे दिया। यह आरंभ से ही बड़ी मनोहारी कहानी है।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

101

उसने १७ साल की एक दुर्बल लड़की को चुना और उसे परमेश्वर की विजय का दर्शन दिया। एलन हारमन को दिसम्बर १८४४ में उस बड़ी निराशा के एकदम बाद पहला दर्शन दिया गया। उसने देखा कि मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करने वाले लोग स्वर्ग को जाने वाले एक चमकदार रोशनी वाले ऊचें रास्ते पर यात्रा कर रहे हैं।

102

इस संदेश ने उस छोटे और बिखरे हुए समूह को बड़ा प्रोत्साहित किया जो मसीह के दूसरे आगमन में विश्वास करते थे और जो बाद में सेवन्थ -ड एडवेन्टिस्ट के नाम से जाने जाएंगे।

103

यह युवती, जो एडवेन्टिस्ट मार्गदर्शक जेम्स व्हाइट के साथ विवाह करने के द्वारा एलन व्हाइट बनी, अपनी बुलाहट के प्रति विश्वस्त रही। सत्तर से अधिक वर्षो तक उसने परमेश्वर की ओर से व्याख्यान दिये, लिखा, सिखाया और कलीसिया को सलाह दी। यद्यपि उसकी सेवकाई और योग्यता चकित करने वाली है, उसका महानतम कार्य जैसा वह स्वयं कहती है, "स्त्री पुरुषों का अधिक बड़े प्रकाश बाइबिल की ओर नेतृत्व करना" था।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

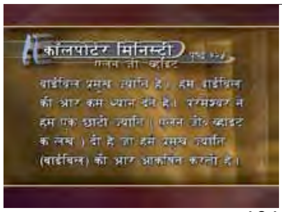

104

उसने लिखाः "बाईबिल प्रमुख ज्योति हैं। हम बाईबिल की ओर कम ध्यान देते हैं। परमेश्वर ने हमें एक छोटी ज्योति (एलन जी० व्हाइट के लेख) दी है जो हमें प्रमुख ज्योति (बाईबिल) की ओर आकर्षित करती है।
कालपोर्टर मिनिस्ट्री, पृष्ठ १२५

105

उसने बाईबिल को प्रमुख स्थान दिया जहाँ हम बाईबिल संबंधी सिद्धान्तों के सभी प्रश्नों का उतर पा सकते हैं। उसने परमेश्वर के वचन की निन्दा करने वालों को यह लिखाः

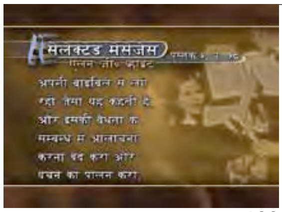

106

अपनी बाइबल से लगे रहो जैसा यह कहती है, और इसकी वैधता के सम्बन्ध में आलोचना करना बंद करो और वचन का पालन करो,

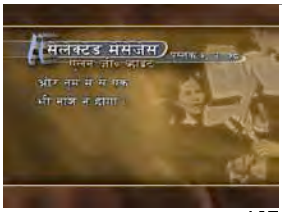

107

और तुम में से एक भी नाश न होगा।"
सेलेक्टेड मेसेजेस, पुस्तक १, पृष्ठ १८

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

108

किसी और लेखिका ने इतना अधिक धार्मिक साहित्य नहीं लिखा जितना कि एलन व्हाइट ने पुस्तकों, पत्रिकाओं, छोटे-छोटे लेख, पर्चो, और व्यक्तिगत पत्रों में लिखा। सारा जीवन उसने परमेश्वर के द्वारा दी गई सलाह और झिड़की के संदेश को परमेश्वर के लोगों तक पहुँचाया।

109

उसके लेखों में इन बातों पर सलाह दी गईः विजयी मसीही जीवन, भोजन, स्वास्थय, बच्चों की देखभाल, नशा, विवाह और परिवार, बच्चों का मार्गदर्शन, और शिक्षा। उसके अनेक लेख अब १०० वर्ष से अधिक पुराने हैं और आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के द्वारा प्रमाणित किए जा चुके हैं। शिक्षक, डॉक्टर, समाचारपत्रों के टीकाकार, और दूसरों ने इन क्षेत्रों में उसकी प्रवीणता को स्वीकार किया है।

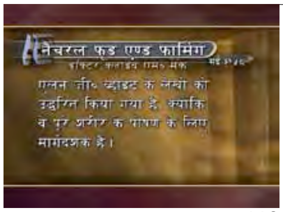

110

डॉक्टर क्लाइव एम० मेके, कोरनेल यूनीवर्सिटी के भूतपूर्व प्राध्यापक ने कहाः–"एलन जी० व्हाइट के लेखों को उद्धरित किया गया है, क्योंकि वे पूरे शरीर के पोषण के लिए मार्गदशक हैं।"– नैचरल फूड एण्ड फार्मिंग,मई १९५८।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

111

१८६४ में एलन व्हाइट ने लिखाः "तम्बाकू एक सर्वाधिक धोखेबाज और जीवन के लिए हानिकारक विष है ..."

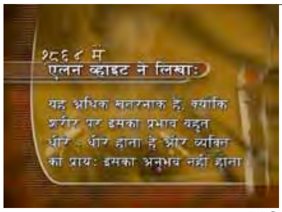

112

"यह अधिक खतरनाक है, क्योंकि शरीर पर इसका प्रभाव बहुत धीरे-धीरे होता है और व्यक्ति को प्रायः इसका अनुभव नहीं होता।"

113

उसकी मृत्यु के बहुत बाद, १९५७ में अमेरिकन कैंसर सोसाइटी और अमेरिकन हार्ट एसोसियेशन ने यह मान लिया कि धूम्रपान फेफड़ों के कैंसर का एक कारक था। उसके दिनों में चिकित्सा–जगत के लोगों ने अवश्य उसके कथन को गलत माना होगा, क्योंकि तब तम्बाकू के धुंए को फेफड़ों के रोगों का इलाज समझा जाता था।

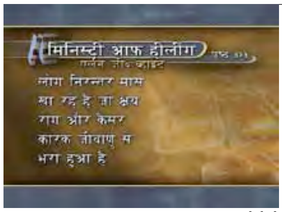

114

१९०५ में श्रीमती व्हाइट ने लिखा कि कैंसर उत्पादक "जीवाणु" थे।

उसने कहा "लोग निरन्तर मांस खा रहे हैं जो क्षयरोग और कैंसर कारक जीवाणु से भरा हुआ है।...

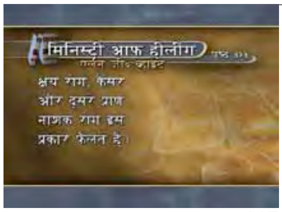

115

क्षय रोग, कैंसर और दूसरे प्राण नाशक रोग इस प्रकार फैलते हैं।"

– मिनिस्ट्री आफ हीलिंग, पृष्ठ ३१३

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

116

हम आज के युग में "वाइरस" शब्द सही प्रयोग करेंगे। ९३ वर्षो के बाद, न्यूजवीक पत्रिका ने एक लेख छापा जिसका शीर्षक था "कैंसर में वाइरस क्रियाशील कारक हैं।"

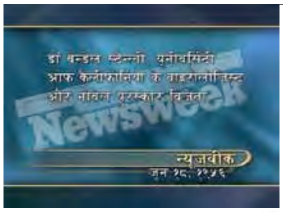

117

"डा. वेन्डेल स्टैन्ली, यूनीवर्सिटी आफ कैलीफोर्निया के वाइरोलोजिस्ट और नोबेल पुरस्कार विजेता,"

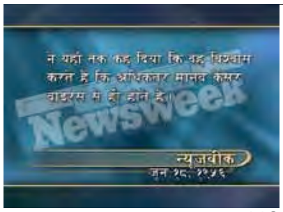

118

ने यहाँ तक कह दिया कि वह विश्वास करते हैं कि अधिकतर मानव कैंसर वाइरस से ही होते हैं।" न्यूजवीक, जून १८, १९५६

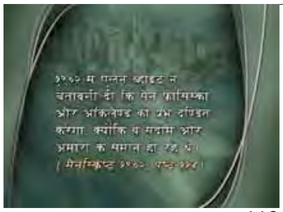

119

१९०२ में एलन व्हाइट ने चेतावनी दी कि सैन फ्रांसिस्को और ऑकलैण्ड को प्रभु दण्डित करेगा, क्योंकि वे सदोम और अमोरा के समान हो रहे थे। (मैनुस्क्रिप्ट १९०२, पृष्ठ ११४)

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

120

१८ अप्रेल १९०६ को प्रात: ५ :१२ बजे सैन फ्रांसिस्को में महान भूकम्प आया। भविष्यवाणी सही थी। विनाश ठीक वैसा ही घटित हुआ जैसा कहा गया था।

श्रीमती व्हाइट की प्राप्तियाँ और भी अधिक चकित करती हैं जब हम उन प्रबल बाधाओं और असुविधाओं पर ध्यान करते हैं जिनका उसने अपने जीवन भर सामना किया।

121

कोई सोच हो रहा होगा कि यह एलन व्हाइट कौन थी और कैसी थी?

उत्तर हमें पीछे नवम्बर २६, सन् १८२७ वर्ष में ले जाता है।

122

उस दिन एलीजाबेथ और एलन, दो जुड़वा बहनें, गोरहम गाँव के निकट यूनिस और राबर्ट हारमन के घर पैदा हुई। एलन आठ बच्चों में सबसे छोटी थी।

123

९ वर्ष की आयु में एक दुर्घटना ने उसके जीवन को सदा के लिए बदल दिया।

स्कूल से घर लौटते समय एक सहपाठिन द्वारा फेंके गये पत्थर से एलन की नाक टूट गई और वह गंभीर रूप से घायल हो गई।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

124

तीन सप्ताह तक वह बेहोश रही। वह अपनी शिक्षा जारी रखने में असमर्थ थी। ऐसा लगता था कि वह अधिक दिन जीवित नहीं रहेगी।

वह अपनी प्रारम्भिक शिक्षा से कभी भी आगे नहीं बढ़ सकी।

125

वर्षों बाद एलन ने अपने जीवन के उस नौवें वर्ष को मिश्रित भावनाओं से देखा।

स्कूल जाने में और भाई -बहनों के साथ खेलने-कूदने में असमर्थता सचमुच बड़ी हृदय -विदारक थी।

किन्तु जैसे कि उसके जीवन के एक पहलू का अन्त हुआ, एक दूसरा पहलू आरम्भ हुआ।

एलन बाइबिल की एक जिज्ञासू विद्यार्थी बन गयी।

वह शिविर, जागृति और घरेलू सभाओं में नियमित रूप से जाने लगी।

126

बक्सटन, मेन, में एक मैथोडिस्ट शिविर सभा में भाग लेने के उपरान्त जून २६, १८४२ को एलन का बपतिस्मा हुआ। वह मैथोडिस्ट कलीसिया की सदस्या बन गयी।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

127

बाद में एलन और उसके परिवार ने पोर्टलैण्ड, मेन, में कुछ सभाओं में सहभागिता की। वक्ता सेना का पूर्व कप्तान विलियम मिलर था जो मनोयोग से बाइबिल का अध्ययन करता रहा था।

चूंकि उसने मसीह के शीघ्र आगमन का संदेश दिया, वह और उसके अनुयायी "एडवेन्ट्स" या "मिलेराइटस" कहलाने लगे। हारमन परिवार ने मिलर के सन्देश की सच्चाई ग्रहण कर ली।

128

तब भी २२ अक्टूबर, १८४४ की महान निराशा के दिन के बाद वे भी पूरी तरह हताश हो गये। एलन अत्यधिक निराश थी। वह रोई, उसने प्रार्थना की, और उत्तर पाने के लिए दूसरे 'एडवेन्टिस्ट' विश्वासियों के समान उसने परमेश्वर के वचन का अध्ययन किया। तभी परमेश्वर ने उसे अपनी नबिया होने के लिए बुलाया। शारीरिक रुप से वह नबिया होने के योग्य नहीं थी। वह १७ वर्ष की एक लड़की थी, जो क्षयरोग और हृदय रोग से संघर्ष कर रही थी। फिर भी दिस्म्बर १८४४ में परमेश्वर ने एलन से एक दर्शन में बात की। वह अपने ही शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया के विषय में बताती है:

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

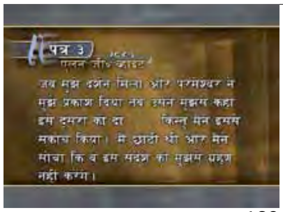

129

"जब मुझे दर्शन मिला और परमेश्वर ने मुझे प्रकाश दिया तब उसने मुझसे कहा इसे दूसरों को दो... किन्तु मैंने इससे संकोच किया। मैं छोटी थी और मैने सोचा कि वे इस संदेश को मुझसे ग्रहण नहीं करेंगे।" -एलन जी० व्हाइट लेटर ३, १८४७

130

यद्यपि वह परमेश्वर की इस बुलाहट के प्रति स्वंय को अपर्याप्त और शारीरिक रूप से असमर्थ अनुभव कर रही थी, फिर भी उसने विश्वास से परमेश्वर के बुलावे को स्वीकार किया जो उसके जीवन भर बना रहा।

131

एलन और उसके पति जेम्स व्हाइट साथ -साथ कार्य करते हुए परमेश्वर के दिए हुए प्रकाश को लोगों में बांटते रहे।

132

उनकी सफलता और उनकी धर्म निष्ठा उसके अनेक लेखों में पायी जाती है। एलन व्हाइट अपने जीवन भर एक समर्पित मसीही, परमेश्वर की एक अथक सेविका, और एक अच्छी माता बनी रही। उसे पति, परिवार, और संसार के हजारों लोगों का प्रेम प्राप्त था।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

133

६ अगस्त, १८८१ को एलन के पति जेम्स की बैटल क्रीक, मिशीगन, में मृत्यु हो गयी। उसकी कब्र के पास खड़ी एलन उस काम को आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा कर रही थी जो वे दोंनो ३५ से अधिक वर्षो में बलिदान और दृढ़ निश्चय के साथ करते आए थे।

134

एलन के कुछ सर्वाधिक सुन्दर और प्रेरणादायक लेख इस तिथि के बाद सामने आये। उसने अगले ३४ वर्षो तक अकेले कार्य किया। उसकी सेवकाई उसे अनेक देशों में विश्वासियों के मार्गदर्शन और आत्मिक विकास के लिए ले गई।

135

एलन गोल्ड व्हाइट का जीवन और सेवाकाला १६ जुलाई, १९१५ को समाप्त हो गया। वह ८७ वर्ष से अधिक आयु की थी। मिशिगन के बैटल क्रीक में ओकहिल नामक कब्रस्थान में उसे अपने पति के बराबर दफन किया गया। उसकी मृत्यु के कुछ सप्ताह बाद एक समाचार पत्र ने यह कथन छापा:

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

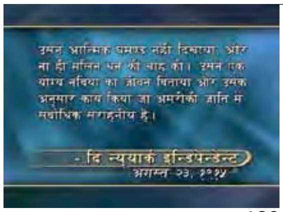

136

"उसने आत्मिक घमण्ड नहीं दिखाया, और ना ही मलिन धन की चाह की। उसने एक योग्य नबिया का जीवन बिताया और उसके अनुसार कार्य किया जो अमरीकी जाति में सर्वाधिक सराहनीय हैं।"

- दि न्यूयार्क इन्डिपेन्डेन्ट, अगस्त २३, १९१५ ।

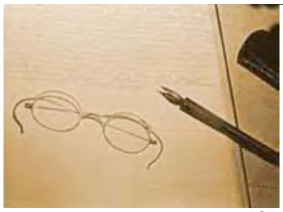

137

जी हाँ उसकी आवाज मौन है और उसकी कलम रूक गयी है। परन्तु परमेश्वर की इस विश्वस्त वक्ता के चेतावनी, निर्देश, और प्रोत्साहन के अनमोल शब्द परमेश्वर के लोगों का अंतिम विजय तक मार्ग-दर्शन करते रहेंगे।

138

(दृश्य)

संसार के लिए उसकी वसीयत प्रेम का एक उपहार है --एक प्रेमी परमेश्वर का पृथ्वी के लिये प्रेम -संदेश। परमेश्वर अब भी चाहता है कि मसीह के लौटने तक अपने बच्चों से "सम्पर्क" बनाए रखे। तब यह छोटा प्रकाश मंद पड़ जाएगा जब हम उसकी उपस्थिति के महिमामय प्रकाश में खड़े होंगे ताकि परमेश्वर को फिर से देख सकें और सदा उसकी संगति में रहें।

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

139

अनेक वर्षो पूर्व दक्षिण अफ्रीका के बेचुआनालैण्ड के विशाल रेगिस्तान सुकूबा नामक एक अनपढ़ व्यक्ति रहता था। भ्रमणकारी जाति का सदस्य होने के नाते वह एकान्त जीवन जी रहा था। जाड़े की एक रात वह अपने शरण स्थल में रेंग कर घुसा और सोने की तैयारी की। किन्तु अचानक रात दिन से भी अधिक प्रकाशमान हो गयी। एक चमकदार व्यक्ति उसे दिखाई दिया और उसने सुकूबा को बताया कि उसे पुस्तक के लोगों को ढूंढ़ना था। उसे ऐसे लोगों की खोज करनी थी जो परमेशवर की उपासना करते हैं। सुकूबा को इस निर्देश का अर्थ नहीं जान पड़ा। यह पुस्तक क्या थी? और यदि उसे वह मिल भी जाये तो वह पढ़ेगा कैसे? उसकी भाषा अन्य अफ्रीकी जातियों की भाषाओं से एकदम अलग थीं जो कभी लिखी नहीं गयी हैं। किन्तु यह प्रकाशमान व्यक्ति कह रहा था, "वह पुस्तक बोलती है तुम उसे पढ़ सकोगे।"

सुकूबा ने अपने परिवार के साथ उस पुस्तक की खोज में कई दिनों तक यात्रा की। वह कुछ बन्टू किसानो की झोपड़ी तक पहुँचा और पूछा कि क्या वे पुस्तक वाले लोगो को जानते थे। कबीला का आदमी यह सुन कर दंग रह गया कि झाड़ियों मे रहने वाला व्यक्ति किसी

प्रकार उसकी बन्टू भाषा बोल सकता था। वह सुकूबा को तुरन्त ही अपने पादरी के पास ले गया। पादरी सुकूबा की कहानी से अत्यधिक द्रवित हुआ। और उसने कहा, "तुम्हारी यात्रा पूरी हुई।" सुकूबा बहुत खुश हुआ, परन्तु उस रात वह प्रकाशमान व्यक्ति उसे फिर दिखाई दिया। उसने कहा ये वे लोग नहीं थे जिनको उसे ढूंढ़ना था। उसे सब्त मानने वाली कलीसिया और पादरी मोए को ढूंढ़ना होगा। पादरी मोए के पास एक किताब होगी और चार भूरी पुस्तकें भी जो वास्तव में नौ हैं। अगले दिन सुकूबा ने एक चिन्ह के लिए प्रार्थना की। उसे अपनी यात्रा के लिए कुछ निर्देशन चाहिए था। जब उसने प्रार्थना की तो आकाश में एक बादल प्रकट हुआ। सुकूबा उसके पीछे चलने लगा और सात दिन तक उसका पीछा किया। वह एक गांव विशेष के ऊपर लुप्त हो गया। वहाँ सुकूबा ने पास्टर मोए के लिए पूछा और तुरन्त उसे उसके घर का रास्ता दिखाया गया।

जब सुकूबा ने अपनी कहानी स्थानीय भाषा में सुनायी तब पादरी मोए ने अपनी पुरानी बाईबिल निकाली। "यही है! " सुकूबा चिल्ला उठा, "यही है। लेकिन यह पुस्तकें चार नही, वे तो वास्तव में नौ हैं?" यह स्पष्ट

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

हुआ कि एलन व्हाइट ने वर्षों पहले परमेश्वर की कलीसिया हेतु दिशा निर्देश की नौ पुस्तकें लिखी थीं जिन्हें "टेस्टीमोनीज़ टू दी चर्च " कहा गया। लेकिन बाद में वे चार (पुस्तकों) में बदल दी गई। सुकूबा की खोज समाप्त हो गयी थी। उसने सब्त को मानने वाले और भविष्यवाणी के वरदान से आशीषित लोगों को पा लिया था। अन्त में उसने और उसके परिवार ने मसीह को स्वीकार किया और बपतिस्मा लिया। वह अपने लोगों के लिए मिशनरी बना। परमेश्वर स्त्री पुरुषों को अपनी सच्ची कलीसिया में लाने के लिए आश्चर्यजनक ढंग से काम कर रहा है। आप अकस्मात ही इस कहानी को नहीं सुन रहे हैं। सुकूबा के समान आपका मार्गदर्शन हो रहा है। परमेश्वर अपनी सच्चाई की ओर आपका मार्ग दर्शन कर रहा है। परमेश्वर भविष्य का सामना करने के लिए आपको साहस दे रहा है। शायद आप सत्य की खोज कई वर्षों से कर रहे हैं। मेरा विश्वास है कि आपकी खोज आज पूरी हो चुकी है। परमेश्वर का अदृश्य हाथ आपको यहाँ लाया है। आप सुकुबा के समान कह सकते हैं कि "यही है परमेश्वर की कलीसिया।" क्या आप उनके साथ जुड़ना नहीं चाहेंगे जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और

२१ - तारों के आगे से आते संदेश

यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं? क्या आप परमेश्वर के अन्तिम समय के लोगों के साथ जुड़ना नहीं चाहेंगे? इस समर्पण पर सावधानी पूर्ण विचार कीजिए। यह आपके जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्णय हो सकता है।

२२ - इतने सारे चुनाव

1

सही कलीसिया आपको कैसे मिलती है?

2

कभी आपने सोचा है कि इतनी अधिक भिन्न भिन्न कलीसियाएं क्यों है? सामान्य आदमी भ्रमित है। अधिकतर कलीसियाएं सिखाती हैं कि केवल उनके पास ही सत्य है। कभी आपने विचार किया है कि कौन सी कलीसिया वास्तव में परमेश्वर के विषय में सत्य सिखाती और उसपर विश्वास करती हैं?

3

मित्र, हमारे प्रश्नो के उत्तर बाइबिल के पास हैं। भ्रम के संसार में सत्य क्या है और झूठ क्या है इनके बीच भेद करने हेतु परमेश्वर के वचन पर सदैव भरोसा किया जा सकता है।

4

इसलिए इस समय हमारे अध्ययन का विषय है, "इतनी अधिक भिन्न भिन्न कलीसियाएँ क्यों?"

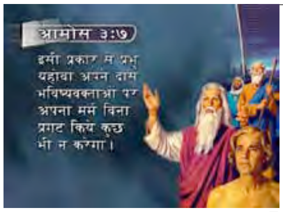

5

(मूलपाठः आमोस ३:७)

बाइबिल कहती है,"इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यवक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रगट किये कुछ भी न करेगा।" आमोस ३:७

२२ - इतने सारे चुनाव

6

(दृश्य)

आइए हम परमेश्वर के वचन में जाए। याद रखे मैं क्या सोचता हूँ इसका कोई महत्व नहीं। महत्व इस बात का है कि क्या यह बाइबिल में है। यदि है मैं इस पर विश्वास करता हूँ। यदि यह बाइबिल में नहीं है यह मेरे लिए नहीं है।

7

अध्ययन आरम्भ करने के लिए आइए, बाईबिल की अन्तिम पुस्तक - प्रकाशितवाक्य का ६ठा अध्याय देखें जहां चार घुड़सवारों के विषय में बताया गया है।

8

वे चार घुड़सवार मसीही कलीसिया के इतिहास में अलग कालों का बोध करवाते हैं। समय के उन कालों में हम आज की अलग -अलग कलीसियाओं का विकास देखते हैं।

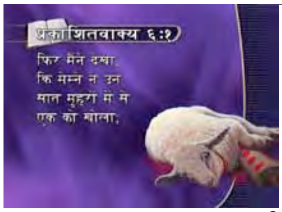
9

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य ६:१)

"फिर मैंने देखा, कि मेम्ने ने उन सात मुहरों में से एक को खोला;

२२ - इतने सारे चुनाव

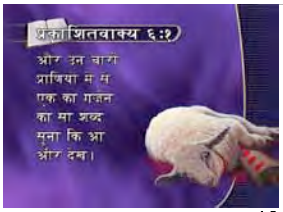

10

और उन चारों प्राणियों में से एक का गर्जन का सा शब्द सुना कि आ और देख।"

प्रकाशितवाक्य ६:१

अब मसीहियत का इतिहास यहाँ अध्याय ६ में प्रकट होता है।

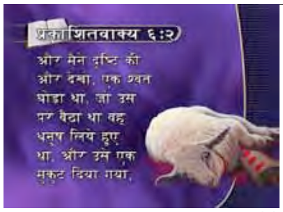

11

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ६:२)

"और मैंने दृष्टि की और देखो, एक श्वेत घोड़ा है और उसका सवार धनुष लिये हुए है और उसे एक मुकुट दिया गया,

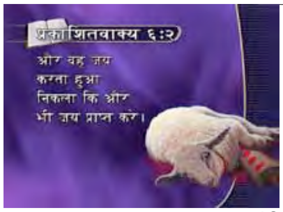

12

और वह जय करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त करे।"

प्रकाशितवाक्य ६:२

13

इस प्रकार पहली कलीसिया विजयी विश्वास की कलीसिया है। यह एक श्वेत घोड़ा है।

श्वेत शुद्ध विश्वास का प्रतीक है।

14

यीशु के स्वर्गारोहण के ठीक बाद पहली शताब्दी में कलीसिया का जीवन बहुत रोमांचकारी रहा होगा।

२२ - इतने सारे चुनाव

15

चेले साहस और विश्वास से अत्यधिक भरे हुए थे क्योंकि वे यीशु के साथ चले थे और उन्होंने यीशु से बातें की थीं। उन्होंने उन्हें जी उठने के बाद देखा था। उन्होंने उन्हें स्वर्ग में जाते हुए देखा था। वे जानते थे कि वे वापस आयेगें। वे अपने पूरे हृदय से उनकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करते थे।

16

उन्होंने सुसमाचार को बड़े साहस और बड़े उत्साह के साथ पूरे संसार को सुनाया।

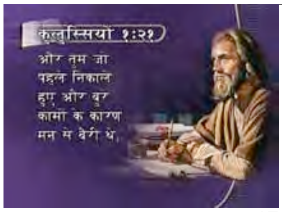

17

(मूलपाठः कुलुस्सियों १:२१-२३)
यथार्थ में उद्धार का सुसमाचार उस समय ज्ञात संसार के प्रत्येक भाग में प्रचार किया गया। पौलुस कहता हैः -"और तुम जो पहले निकाले हुए और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे,

18

उसने तुम्हारा भी मेल कर लिया

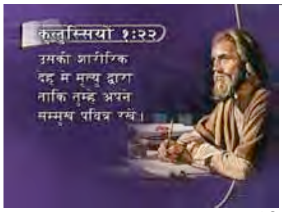

19

उसकी शारीरिक देह मे मृत्यु द्वारा ताकि तुम्हे अपने सम्मुख पवित्र रखे।

२२ - इतने सारे चुनाव

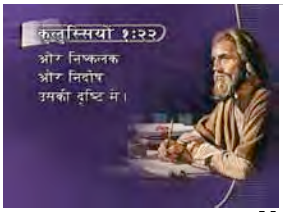

20

और निष्कलंक और निर्दोष उसकी दृष्टि में।

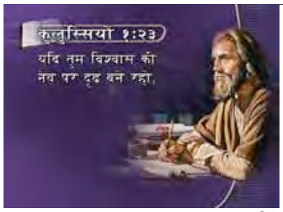

21

यदि तुम विश्वास की नेव पर दृढ़ बने रहो,

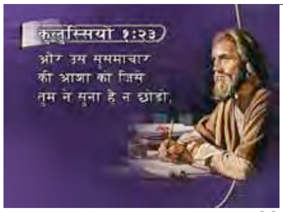

22

और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोडो,

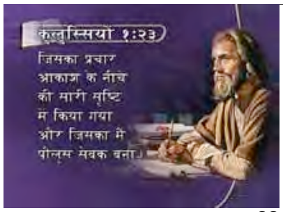

23

जिसका प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया और जिसका मैं पौलुस सेवक बना।" कुलुस्सियों १:२१-२३

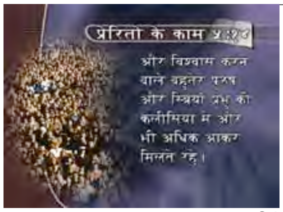

24

(मूलपाठः प्रेरितो के काम ५:१४)

"और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियाँ प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।" प्रेरितो के काम ५ : १४

प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें बताती हैं कि प्रतिदिन हजारों लोग बपतिस्मा लेते थे।

२२ - इतने सारे चुनाव

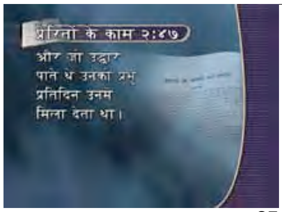

25

(मूलपाठः प्रेरितों के काम २:४७)

"और जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।"

प्रेरितों के काम २:४७

कलीसिया मसीह की देह थी।

26

लोग मसीह में बपतिस्मा पाते थे। वे उसकी देह में जो कि उसकी कलीसिया थी बपतिस्मा पाते थे। आरम्भिक चेलों के लिए यीशु के प्रति विश्वासी रहना बहुत महत्वपूर्ण था। जब चेलों को यीशु के नाम में प्रचार न करने की चेतावनी दी गयी, तो बाइबिल बताती है:

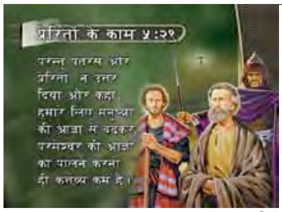

27

(मूलपाठः प्रेरितों के काम ५:२९)

"परन्तु पतरस और प्रेरितों ने उत्तर दिया और कहाः हमारे लिए मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है।"

प्रेरितों के काम ५:२९

आप देखते हैं कि परमेश्वर का कहा मानना मनुष्यों की रीतियों को मानने से अधिक महत्वपूर्ण था।

२२ - इतने सारे चुनाव

28

इस प्रकार उनका विश्वास निर्मल था क्योंकि वे यीशु के साथ रहे थे।

उनका विश्वास यीशु का विश्वास था।

उनकी शिक्षाएं यीशु की शिक्षाएं थीं।

29

आज हमारे अन्दर भी वैसा ही विश्वास होना चाहिए। एक साधारण शुद्ध विश्वास जो यीशु के आगमन की प्रतीक्षा करता है। एक ऐसा विश्वास जो मुक्ति के सुसमाचार को सबको सुनाने के लिए व्याकुल रहता है, अपने मित्रों को, अपने पड़ोसियों को और समस्त संसार को। क्योंकि यीशु ने यह आज्ञा दी है। यही शुद्ध विश्वास है जो प्रथम शताब्दि की कलीसिया के विश्वासियों का था।

30

प्रथम कलीसिया के विजयी विश्वास को श्वेत घोड़े से दिखाया गया है।

यह समय काल १०० ईसवी में समाप्त हो गया।

31

यीशु ने जब दूसरी मुहर खोली तब यूहन्ना ने क्या देखा?

२२ - इतने सारे चुनाव

32

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ६:४)

"तब लाल रंग का एक और घोड़ा निकला। उसके सवार को यह अधिकार दिया गया, कि वह पृथ्वी पर से मेल -मिलाप उठा ले,

33

ताकि लोग एक दूसरे को घात करे और उसे एक बड़ी तलवार दी गयी।"

प्रकाशितवाक्य ६:४

इस प्रकार हम यहाँ एक रक्त रंजित विश्वास पाते हैं।

34

हम जानते हैं कि १०० ईसवी के बाद मसीहियों को उठा कर रोम ले जाया गया जहाँ उन्हें मार डाला गया।और उनमें से बहुतों को रोमी साम्राज्य के विशाल मादों में फेंक कर सिहों को खिला दिया गया।

२२ - इतने सारे चुनाव

35

मसीही कलीसिया के लिए यह कितना भयानक समय था! किन्तु फिर भी कलीसिया बढ़ती गयी। उस समय के एक कलीसिया के इतिहासकार ने कहा कि ऐसा लगता था कि मसीहियों का खून बीज के समान था। जैसे लोग मरते और यीशु के लिए बलि होते थे तो ऐसा लगता था जैसे एक बीज रोपा गया हो क्योंकि दूसरे उनका स्थान लेने के लिए खड़े हो जाते थे। उद्धार का सुसमाचार पूरे रोमी साम्राज्य में और उस समय के संसार में फैल गया,

36

इस प्रकार लाल घोड़ा रक्त रंजित विश्वास को दिखाता है। दूसरी मुहर १०० से ३२३ ईसवी तक की मसीही कलीसिया है।

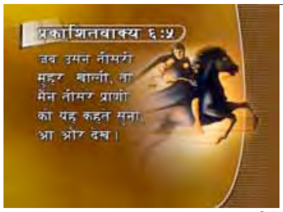

37

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ६:५)

अब यीशु ने तीसरी मुहर खोली -- मसीही कलीसिया के तीसरे काल का समय।

"जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना, 'आ और देख'

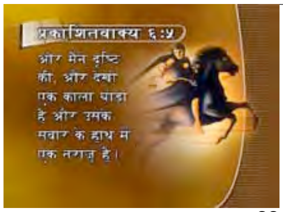

38

और मैंने दृष्टि की, और देखो एक काला घोड़ा है और उसके सवार के हाथ में एक तराजू है।"

प्रकाशितवाक्य ६:५

२२ - इतने सारे चुनाव

२२ - इतने सारे चुनाव

39

यह काला घोड़ा एक निर्बल, अशुद्ध, और समझौतों से भरा विश्वास दिखाता है।

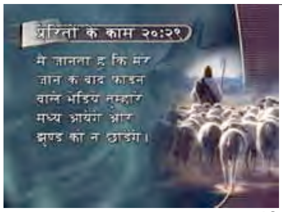

40

(मूलपाठः प्रेरितों के काम २०:२९,३०)

"मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िये तुममें आयेंगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे।"

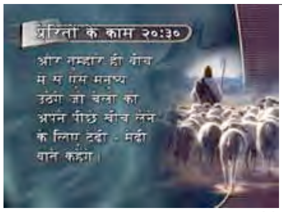

41

"और तुम्हारे ही बीच में से ऐसे ऐसे मनुष्य उठेगें जो चेलो को अपने पीछे खींच लेने टेढ़ी - मेढ़ी बातें कहेंगे।"

प्रेरितों के काम २०:२९,३०

मसीही कलीसिया में यह बहुत दुःख का समय है।

42

यह अशुद्ध विश्वास का काल है --जब सांसारिक मूर्तिपूजकों की रीतियाँ मसीही धर्म से मिल गई। दानिय्येल ने इसकी पूर्ण घोषणा की थी।

43

(मूलपाठः दानिय्येल ८:१२)

"और लोगों के अपराध के कारण नित्य होम बलि के साथ सेना भी उसके हाथ में कर दी गयी;

44

और उस सींग ने सच्चाई को मिट्टी में मिला दिया और वह काम करते करते सफल हो गया।"

दानिय्येल ८:१२

२२ - इतने सारे चुनाव

45

पहली मुख्य सच्चाई जो इस काल में मिट्टी में मिलाई गई वह थी केवल यीशु में विश्वास द्वारा उद्धार। मसीह द्वारा उद्धार का स्थान कलीसिया की रीति -रिवाज़ों ने ले लिया था।

46

आप याद करेंगे कि जैसा हमने पहले अध्ययन किया है, बाइबिल के अनुसार उद्धार एक मुफ्त उपहार है। यह एक उपहार है क्योंकि हम सबने पाप किया है और इसके हकदार नहीं हैं। हम मृत्यु के हकदार हैं, क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है।
किन्तु परमेश्वर का वरदान अनन्त जीवन है।

47

जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिये मरे। यही है सरल सुसमाचार।

48

उस मुफ्त वरदान को पाने के लिए हमें यीशु को अपने दिलों में बुलाने की आवश्यकता है।

49

तब वह हमारे सारे पापों को क्षमा कर देता है।

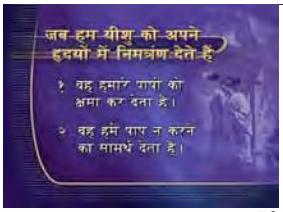

50

और दूसरे, वह हमें पाप न करने का सामर्थ देता है। वह हमें उसके पदचिन्हों पर चलने की शक्ति देगा।

२२ - इतने सारे चुनाव

51

किन्तु उद्धार की इस सरल सच्चाई का, इस सरल सुसमाचार का स्थान इस काल में कलीसिया के रीति -रिवाज़ों ने ले लिया।

52

परमेश्वर के सिंहासन के सामने बेहिचक जाकर उसका अनुग्रह और क्षमा प्राप्त करने की बजाय, और पाप स्वीकार करने के बजाय, मसीहियों को कहा गया कि पाप क्षमा के लिये उन्हें धन देना पड़ेगा।

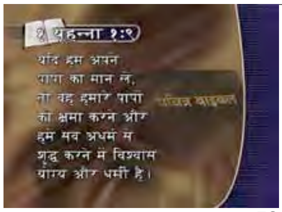

53

(मूलपाठः १ यूहन्ना १:९)
किन्तु बाइबिल कहती है, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।"
१ यूहन्ना १:९

54

मसीहियों को बताया जाता था कि उन्हें याजक के पास जाना होगा। उन्हें एक मनुष्य के पास जाना होगा। अब वे साहस के साथ परमेश्वर के सिंहासन के सामने नहीं जा सकते। उद्धार जटिल हो गया था। और लोगों ने इसको स्वीकार कर लिया क्योंकि उनके पास परमेश्वर का वचन नहीं था।

२२ - इतने सारे चुनाव

55

यर्थाथ में इस काल में परमेश्वर का वचन रखना कानून के विरुद्ध था। छपाई मशीनों का आविष्कार नहीं हुआ था इसलिए धर्मशास्त्र का छोटा -सा भाग भी प्राप्त करना कठिन था। जो कुछ कलीसिया ने बताया उसे बहुत लोगों ने स्वीकार कर लिया और मसीही विश्वास अत्यधिक भ्रष्ट हो गया।

56

बाइबिल की दूसरी सच्चाई जिसमें समझौता किया गया वह था लकड़ी या पत्थर से बनी वस्तुओं की आराधना करना। सृष्टिकर्ता परमेश्वर दस आज्ञाओं में कहता है:

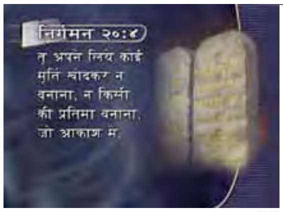

57

(मूलपाठ: निर्गमन २०:४,५)

"तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में,

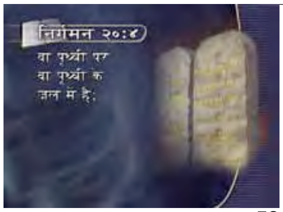

58

वा पृथ्वी पर वा पृथ्वी के जल में है;

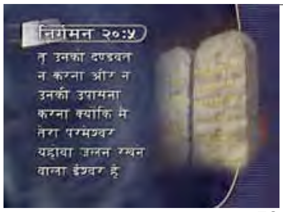

59

तू उनको दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना।

क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूँ,

२२ - इतने सारे चुनाव

२२ - इतने सारे चुनाव

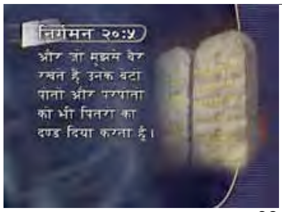

60

और जो मुझसे बैर रखते हैं उनके बेटों पोतों और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ।"
निर्गमन २०:४,५

61

यही समय था जब मूर्तियाँ कलीसिया में प्रवेश कर गयीं। दस आज्ञाओं में बहुत स्पष्ट लिखा है कि परमेश्वर को छोड़ किसी दूसरी वस्तु को दण्डवत करना गलत है।

62

बाइबिल की तीसरी सच्चाई जो समझौते में आ गयी वह चौथी आज्ञा और आराधना से सम्बंधित थी। ध्यान दें बाइबिल दानिय्येल के विषय क्या कहती है जब उसने इसे देखा:

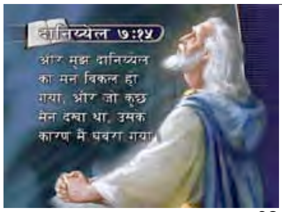

63

(मूलपाठ: दानिय्येल ७:१५)
"और मुझ दानिय्येल का मन विकल हो गया, और जो कुछ मैंने देखा था, उसके कारण मैं घबरा गया।"
दानिय्येल ७:१५

64

आप देख चुके हैं किस प्रकार कांस्टेटाइन ने जबरदस्ती पहले रविवार नियम को सातवें दिन के सब्त के स्थान पर सप्ताह के प्रथम दिन रविवार में परिवर्तित कर दिया।

२२ - इतने सारे चुनाव

65

(मूलपाठः यूहन्ना १४:१५)

किन्तु याद रखे, यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

यूहन्ना १४:१५

इस अशुद्ध विश्वास के काल में यीशु के लिये प्रेम ठण्डा पड़ गया, और लोग परमेश्वर को मानने के बजाय रीतियों को मानने लगे।

66

कलीसिया ने सब्त के समझौते को स्वीकार कर लिया और आराधना के दिन को बदलने का प्रयास किया। २१ मई, १९९५ को सन्त कैथरीन के कैथलिक चर्च सेन्टीनल नामक पत्रिका ने कहा,

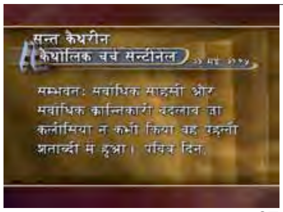

67

"सम्भवतः सर्वाधिक साहसी और सर्वाधिक क्रान्तिकारी बदलाव जो कलीसिया ने कभी किया वह पहली शताब्दी में हुआ। पवित्र दिन,

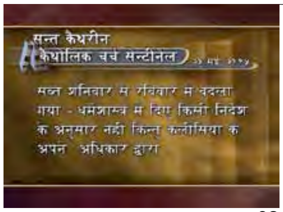

68

सब्त शनिवार से रविवार में बदला गया - धर्मशास्त्र में दिए किसी निर्देश के अनुसार नहीं किन्तु कलीसिया के अपने अधिकार द्वारा ...

२२ - इतने सारे चुनाव

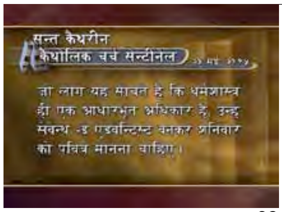

69

जो लोग यह सोचते हैं कि धर्मशास्त्र ही एक आधारभूत अधिकार है, उन्हे सेवेन्थ -□ड एडवेन्टिस्ट बनकर शनिवार को पवित्र मानना चाहिए।"

70

रविवार, सप्ताह के पहले दिन, की आराधना बाइबिल में नहीं है। इस बात को संसार भर के विद्वान स्वीकार करते हैं।

71

जैसा कि हमने देखा है कि यह बदलाव रोमी साम्राज्य के सम्राट कान्सटेनटाइन ने ३२० ईसवी में किया और कलीसिया ने इसे स्वीकार कर लिया।

72

जैसा कि हमने देखा है कि यह बदलाव रोमी साम्राज्य के सम्राट कान्सटेनटाइन ने ३२० ईसवी में किया और कलीसिया ने इसे स्वीकार कर लिया।

73

द हिस्ट्री आफ दि ईस्टर्न चर्च, पृ. १८४ पर लिखा है, "कान्सटेनटाइन के सिक्कों पर एक ओर मसीह के नाम का अक्षर और दूसरी ओर सूर्य देवता का चित्र था ...

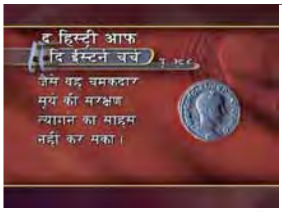

74

जैसे वह चमकदार सूर्य की संरक्षण त्यागने का साहस नहीं कर सका।" क्या यह रुचिकर नहीं है?

२२ - इतने सारे चुनाव

75

परमेश्वर अपनी आज्ञाओं में इसे बहुत स्पष्ट शब्दों में कहता है:

76

(मूलपाठ: निर्गमन २०:११)

"क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है सबको बनाया,

77

और सातवें दिन विश्राम किया इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशीष दी और उस को पवित्र ठहराया।"

निर्गमन २० : ११

78

परमेश्वर यह स्पष्ट करता है कि वह चाहता है कि उसके लोग सातवें दिन सब्त को पवित्र माने। आरम्भ में बाइबिल कहती है,

79

(मूलपाठ: उत्पत्ति २:३)

"और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया,

80

क्योंकि उस में उस ने अपनी सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया।"

उत्पत्ति २:३

२२ - इतने सारे चुनाव

81

यदि सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर

82

ने एक दिन को आशीष दी,

83

यदि उसने एक दिन अलग रखा,

84

यदि उस ने दूसरे दिनों से बढ़कर एक दिन को पवित्र ठहराया तब मेरे मित्रों, मनुष्य के पास इसे बदलने के लिए कोई अधिकार, कोई शक्ति नहीं है। यह आराधना का एक विषय बन जाता है, आज्ञाकारिता का एक विषय कि या तो हम मनुष्य की रीतियों का पालन करेंगे या फिर वह करेंगे जो परमेश्वर ने कहा है।

85

यह निर्बल, अशुद्ध विश्वास का काल है, विश्वास के समझौते का काल जो ३२३ से ५३६ ईसवी तक है।

86

अब हम मसीही कलीसिया के चौथे युग की ओर बढ़ते हैं जो कि पीला घोड़ा है।

२२ - इतने सारे चुनाव

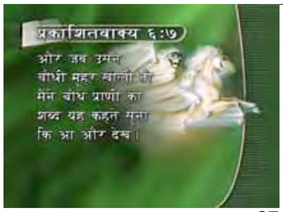

87

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य ६:७,८)
"और जब उसने चौथी मुहर खोली तो मैंने चौथे प्राणी का शब्द यह कहते सुना कि आ और देख।

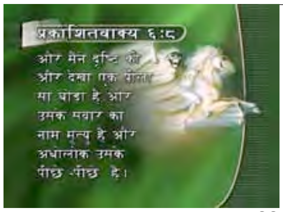

88

और मैंने दृष्टि की और देखो एक पीला सा घोड़ा है और उसके सवार का नाम मृत्यु है और अधोलोक उसके पीछे - पीछे है।

89

और उन्हें पृथ्वी की एक चौथाई पर यह अधिकार दिया गया कि तलवार,

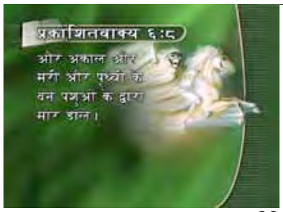

90

और अकाल और मरी और पृथ्वी के वन पशुओं के द्वारा लोगों को मार डाले।"
प्रकाशितवाक्य ६:७,८

91

एक मृत विश्वास – चौथी मुहर।
यह कलीसिया और सरकार की संयुक्ति का समय था। अब तक पवित्र रोमी साम्राज्य पूरी तरह विकसित हो चुका था और यह केवल एक धार्मिक सरकार ही नहीं परन्तु एक राजनीतिक शक्ति भी बन चुकी थी। अब धार्मिक और राजनैतिक शक्तियों का गठबन्धन हो गया था।

२२ - इतने सारे चुनाव

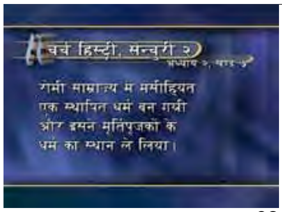

92

संक्षेप में इस कथन पर ध्यान दीजिएः "रोमी साम्राज्य में मसीहियत एक स्थापित धर्म बन गयी और इसने मूर्तिपूजकों के धर्म का स्थान ले लिया।

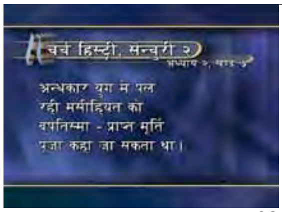

93

अन्धकार युग में पल रही मसीहियत को बपतिस्मा-प्राप्त मूर्ति पूजा कहा जा सकता था।"
चर्च हिस्ट्री, सेन्चुरी २, अध्याय २, खण्ड ७

94

याद रहे इस समय में परमेश्वर के वचन तक लोगों की पहुँच नहीं थी। यर्थाथ में यह कानून के विरुद्ध था और जैसा हम कह चुके हैं कि छपाई मशीन का आविष्कार अभी तक नहीं हुआ था।

95

लोग परम्परा की रीतियों का पालन करते थे। वे मूर्तिपूजा और उन संस्कारों को मानते थे जो कलीसिया में घुस आये थे। यह ऐतिहासिक सच्चाई है जो मैं आप को बता रहा हूँ।

२२ - इतने सारे चुनाव

96

(दृश्य)

एक मात्र कलीसिया इस समय रोमन कलीसिया ही थी। पुनः, यह किसी व्यक्ति विशेष की आलोचना नहीं, किन्तु एक पद्धति की आलोचना है। संसार में अनेक कैथोलिक विश्वासी और पुरोहित और बहनें है जो यीशु से बहुत प्रेम करते हैं और सत्य की खोज कर रहे हैं। यह समझना महत्वपूर्ण है कि आज हम जहाँ हैं वहाँ क्यों हैं।

97

यह समझौते का भयानक समय और परमेश्वर के लोगो की सताहट का भयानक समय था।

98

यही कारण है कि इसे "अंधकार का युग" कहा जाता है। ५०० लाख मसीही उनके विश्वास के कारण मार डाले गए।

99

यहां समझौते के कदमों पर ध्यान दें:

100

रीतियाँ,

२२ - इतने सारे चुनाव

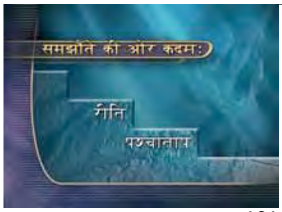

101

पश्चाताप,

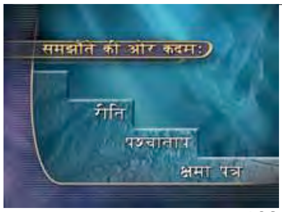

102

और दान के बदले क्षमा प्राप्ति की रीतियों ने कलीसिया में प्रवेश किया। आप धन देकर अपने मृत सम्बन्धियों के पाप क्षमा करवा सकते थे जिससे उन्हें पाप मोचन स्थान में नहीं भुगतना पड़ता। या आप अपने लिए क्षमा खरीद सकते थे जिससे मृत्यु पश्चात आप पाप मोचन स्थान से बच सकें। यह अंधविश्वासी धार्मिकता का एक और उदाहरण है।

103

परमेश्वर के वचन में पाप मोचन स्थान जैसी कोई वस्तु नहीं है। मूर्तियों के साथ साथ पुरोहितों का शासन और धर्मनीति भी कलीसिया में घुस गयीं।
क्या परमेश्वर का वचन सदैव पैरों से रौंदा जाता रहेगा? बिल्कुल नहीं, क्योंकि सत्य का प्रकाश अंधकार को चीर देगा। और उन सच्चाईयों को जो अंधकार युग में खो गयी थी पुनः खोजने के लिए कदम उठायें जाएंगे।

104

धर्म सुधार के दौरान यीशु का निर्मल विश्वास पुनः प्रकट होना आरम्भ हो गया।

२२ - इतने सारे चुनाव

105

१४०० की अन्धकार युग से बाहर कदम रखने वालों में वॉलडेन्सियेन्स प्रथम थे।

106

उन्होंने परमेश्वर के वचन बाइबिल में पुनः सच्चाई की खोज की। बाइबिल बहुत महत्वपूर्ण है।

यदि हमारे पास परमेश्वर का वचन –उसका हमारे लिए प्रेमपत्र – नहीं होता तो हम जीवन में दिशाहीन हो जाते।

107

उत्तरी इटली में हम बाईबिल में विश्वास करने वाले वॉलडेन्सियेन्स का इतिहास पाते हैं। ये लोग पवित्र शास्त्र के छोटे हिस्सों को हाथ से लिखते थे और उन्हें अपने बच्चों को देते थे। उनके वस्त्रों में सिले हुए इन बाईबिल पदों के साथ बच्चे यूरोप के महान नगरों में घूमते थे। इन बाइबिल पदों को वे बाजारों और युनिवर्सिटियों में बनाये नये मित्रों के साथ बांटते थे।

२२ - इतने सारे चुनाव

108

पकड़े जाने पर परिणाम बहुत भयानक होता था – उन्हें खम्बें से बांध कर जला दिया जाता था। यद्यपि बहुत से लोगों ने अपना जीवन खो दिया, फिर भी वॉलडेन्सियेन्स इसे सुअवसर समझते थे जिससे परमेश्वर का कार्य होता रहे।

२२ - इतने सारे चुनाव

109

वेल्डेन्सीएन्स के बाद प्राग में जॉन हस्स नामक एक धर्म सुधारक हुआ जो बाइबिल का विद्यार्थी था। हस्स ने अपने मित्र जेरोम के साथ मिलकर यह पाया कि कलीसिया या किसी व्यक्ति की आज्ञा मानने से अधिक महत्वपूर्ण परमेश्वर की आज्ञा का पालन था।

110

चूंकि उन्होंने कलीसिया की रीतियों का पालन करने की बजाय आज्ञा पालन पर दृढ़ रहने और परमेश्वर के कहे पर विश्वास करने का निश्चय किया इसलिये उन्हें जलाकर मार डाला गया। उनकी राख भूमध्यसागर में बहने वाली नदी में डाल दी गई। इसी प्रकार धर्म सुधार आन्दोलन अपने स्रोत से निकल कर पूरे संसार में फैल गया।

111

हस्स और जेरोम को खम्बे से बांध कर जला दिये जाने के बाद जर्मनी में मार्टिन लूथर ने केवल अनुग्रह द्वारा उद्धार के विषय बाइबिल सत्य को खोज लिया।

112

कुछ लोगों ने प्रश्न किया, "ऐसा क्यों है कि लूथर ने उन सभी बाइबल सच्चाइयों को पुनः नहीं खोजा जो अन्धकार युग में खो गयीं थीं?" और बाइबिल कहती है,

२२ - इतने सारे चुनाव

113

(मूलपाठः यूहन्ना १६:१२)

"मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।"

यूहन्ना १६:१२

114

बाइबिल के सत्यों को पुनः प्राप्त करने में समय लगा। यह एक प्रक्रिया थी।

अंधकार युग में यीशु के विश्वास को खोने में हमें सैकड़ों वर्ष का समय लगा।

और इन सच्चाईयों को पुनः खोजने में भी वर्षो लगने थे।

115

लूथर की मृत्यु के बाद उसके विश्वासियों ने उसकी शिक्षाओं को लेकर लूथरन चर्च का गठन किया। उनके लिए धर्म सुधार का कार्य लूथर की मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया।

116

जर्मनी से हम जनेवा और स्विटजरलैण्ड की यात्रा करते हैं और जॉन केल्विन नाम के एक बाइबिल विद्यार्थी को पाते हैं जिसने अपने अध्ययन में

२२ - इतने सारे चुनाव

२२ - इतने सारे चुनाव

117

पाया कि मसीहियों को न केवल अनुग्रह और क्षमा प्राप्त करना और अनुग्रह के सिंहासन के सामने साहस से जाना चाहिए किन्तु उनके लिए मसीह में बढ़ना भी महत्वपूर्ण है।

118

इसलिए केल्विन ने वृद्धि का सिद्धान्त सिखाया, जिसे कुछ लोग पवित्रीकरण कहते हैं।
जब हम यीशु को स्वीकार करते हैं वह हमें पाप पर जय पाने की शक्ति देता है।

119

जॉन केल्विन की मृत्यु के बाद उसके शिष्यों ने उसकी शिक्षाओं को लेकर प्रेसबीटेरियन चर्च का गठन किया।
इस प्रकार आप देखते हैं कि सत्य जो एक बार अन्धकार युग में खो गया था उसे स्थिरता से पुनः खोजा जा रहा था।

120

कैलविन के समय के बाद उत्तरी यूरोप के अनेक भागों में मसीहियों का एक समूह था जिन्होंने बाइबिल का अध्ययन किया, और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बच्चों पर छींटें देकर बपत्तिसमा देने के बजाय

२२ - इतने सारे चुनाव

121

यीशु के नमूने पर व्यक्ति के निर्णय पर और डुबकी द्वारा दिया जाना चाहिए। वे लोग एनाबेपटिस्ट कहलाये।

122

डुबकी द्वारा बपतिस्मा जैसा यीशु का हुआ था बाइबिल कि एक बहुत महत्वपूर्ण सच्चाई है जो अन्धकार युग में खो गयी थी। यह पाप के लिए मर जाने और परमेश्वर के साथ जीने का प्रतीक है।

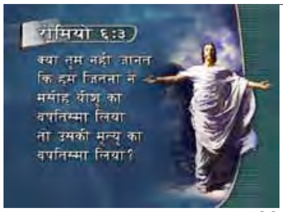

123

(मूलपाठः रोमियो ६:३,४)
"क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?

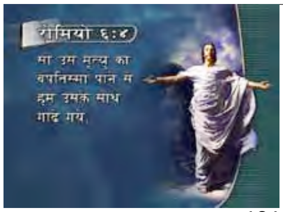

124

सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाढ़े गये,

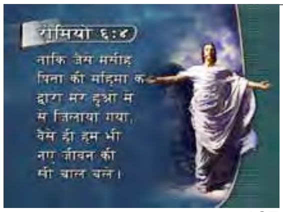

125

ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।"

रोमियो ६:३,४

126

और यीशु के समान बपतिस्मा प्राप्त करने के लिये,

२२ - इतने सारे चुनाव

२२ - इतने सारे चुनाव

127

हमें उसके विषय सीखना ही चाहिए,

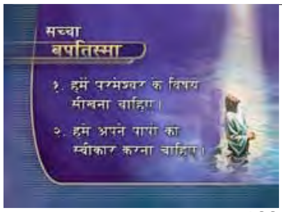

128

हमें अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए,

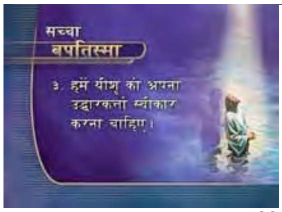

129

और यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करना चाहिए। अनेक एनाबेपटिस्टों को अपना जीवन खोना पड़ा क्योंकि उनका विश्वास था कि उन्हें यीशु के पद चिन्हों पर चलना चाहिए और उसी के समान बपतिस्मा लेना चाहिए।

130

इस प्रकार बैपटिस्ट चर्च का गठन हुआ।

131

(मुलपाठ: मत्ती २८:१८, १९)
"यीशु ने उनके पास आकर कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।

132

इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ,

२२ - इतने सारे चुनाव

133

और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

मत्ती २८:१८, १९

134

यीशु ने अपनी कलीसिया को आदेश दिया कि जाएँ और शिक्षा दें और बपतिस्मा दें और चेला बनायें। धर्मसुधारक बैपटिस्ट इस आदेश को मानते और पूरा करते रहे, जैसे हम आज करते हैं!

135

आप देखते हैं कि इनमें से प्रत्येक धर्म सुधारक उन सच्चाईयों को पुनः खोज रहे थे जो अन्धकार युग में खो गयी थीं।

जैसे-जैसे उन्होंने इन सच्चाईयों को पुनः खोजा वैसे-वैसे उनके अनुयायियों ने विशेष समूह बना लिये जो बाद में मुख्य प्रोटेस्टेन्टस समुदाय जैसे लूथरन, प्रेसबीटेरियन्स, और बैपटिस्ट आदि के नाम से जाने गए।

136

अन्त में इंग्लैण्ड में जौन वैसली नाम के एक व्यक्ति ने अपनी बाइबिल का अध्ययन आरम्भ किया।

२२ - इतने सारे चुनाव

137

उसके भाई चार्ल्स ने यीशु के विषय सुन्दर गीत लिखे और उन्होंने इन्हें चर्च में गाना उचित समझा। उन्होंने यह भी पाया कि केवल उद्धार के मुफ्त उपहार को स्वीकार करना, परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी रहना, और बपतिस्मा लेना और अनुग्रह में बढ़ना ही काफी नहीं था परन्तु परमेश्वर के वचन के आधार पर पवित्र बनना भी महत्वपूर्ण था। जॉन वैसली एक महान सुधारक था और जब उसकी मृत्यु हुई तो उसके अनुयायियों ने उसकी और दूसरे सुधारकों की शिक्षाओं को लेकर मैथोडिस्ट चर्च का गठन किया।

138

फिर संसार के विभिन्न भागों में, जैसे दक्षिण अमरीका, उत्तरी अमरीका, और युरोप में लोग यीशु के दूसरे आगमन के विषय में अध्ययन करने लगे।

139

उत्तरी अमरीका के विलियम मिलर नामक व्यक्ति ने यूहन्ना १४ अध्याय के यीशु की प्रतिज्ञाओं का अध्ययन किया। उसने दानिय्येल की भविष्यवाणियों को समझ कर यह जाना कि यीशु का आना बहुत निकट था।

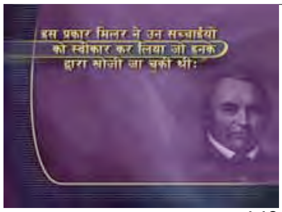

140

यह समझते हुए कि

२२ - इतने सारे चुनाव

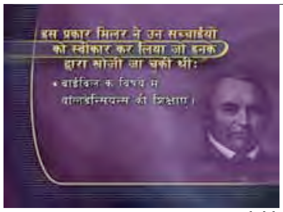

141

वॉलडेन्सियेन्स ने बाईबिल के विषय में क्या सिखाया और

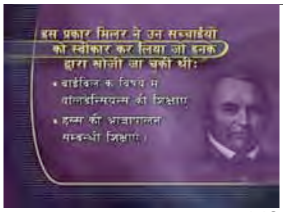

142

हुस्स ने आज्ञापालन के विषय जो सिखाया,

143

लूथर ने अनुग्रह के विषय जो सिखाया,

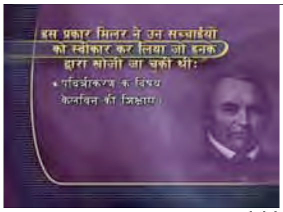

144

कैलविन ने पवित्रीकरण या वृद्धि के विषय जो सिखाया,

145

एनाबेपटिस्टस ने बपतिस्में के विषय जो सिखाया,

146

और वैसली ने जो पवित्रता के विषय सिखाया, मिलर ने इन सब में एक बहुत महत्वपूर्ण सिद्धान्त जोड दियाः मसीह के दूसरे आगमन की निकटता।

२२ - इतने सारे चुनाव

147

मिलर के बाद आगमन आन्दोलन चलता रहा। उसके मित्रों ने यह भी पाया कि जब लोग मरते हैं तो पुनरुत्थान की प्रतीक्षा में वे यीशु में सो जाते हैं। जैसा कि बाइबिल बहुत स्पष्टता से सिखाती है, हम पुनरुत्थान के उस क्षण तक सोते हैं जब तक हमें कब्र से बाहर आने के लिए पुकारा नहीं जाता। क्या ही महिमामय सुबह होगी जब बिछड़े हुए प्रियजन फिर मिलेंगे।

148

आरम्भ के एडवेंटिस्टों ने बाइबिल में पायाः

149

१. मृत्यु एक नींद है।

150

२. यीशु शीघ्र आ रहे हैं।

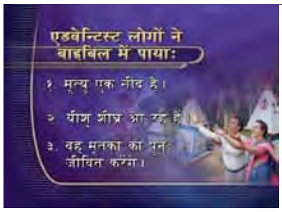

151

३. वह पुनरुत्थान पर मृतकों को पुनः जीवित करेंगेः

२२ - इतने सारे चुनाव

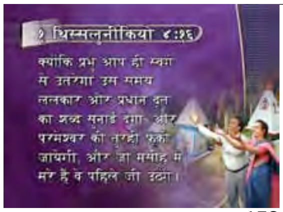

152

(मूलपाठः १ थिस्सलुनीकियो ४:१६)

"क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जायेगी, और जो मसीह में मरे हैं वे पहिले जी उठेंगे।"

१ थिस्सलुनीकियो ४:१६

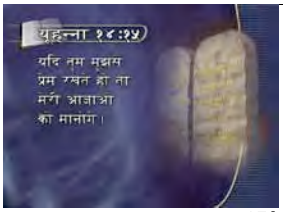

153

(मूलपाठः यूहन्ना १४:१५)

विलियम मिलर के समय के बाद मसीह के दूसरे आगमन के विश्वासियों ने यूहन्ना १४:१५ में यीशु के शब्दों को भी पायाः "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

आप देखते हैं हम सभी को यीशु के साथ प्रेम पूर्ण सम्बन्ध रखने की चाहत होनी चाहिए। क्योंकि हम उससे प्रेम करते हैं हम उसकी सभी आज्ञाओं का पालन करना चाहेंगे।

उनमें से केवल कुछ नहीं, किन्तु प्रत्येक आज्ञा।

२२ - इतने सारे चुनाव

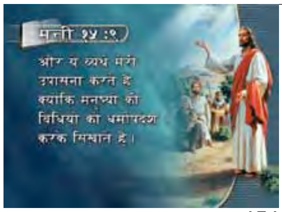

154

(मूलपाठः मत्ती १५:९)

ध्यान दें यीशु ने मत्ती १५:९ में क्या कहाः "और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते है।"

आज यह कितना सत्य है।

लोग मनुष्यों की आज्ञाएं और सिद्धान्त सिखाते हैं।

155

किन्तु इसका कोई सार नहीं कि मनुष्य क्या कहता है। सार इसमें है कि परमेश्वर क्या कहता है।

156

जब उपासना की बात आती है तो हमें परमेश्वर की उपासना सब्त के दिन करनी चाहिए जो उसने हमारे लिए अलग किया है।

यह एक विशेष दिन है जो उसने हमें दिया है। इन सच्चाईयों का अध्ययन करने वाले लोगों ने मिलकर सेवेन्थ - डे एडवेन्टिस्ट चर्च का गठन किया।

यशायाह ५८:१३,१४ में यह पूर्व घोषणा हुई थी कि एक आन्दोलन परमेश्वर की व्याख्या में आई दरार की मरम्मत करने के लिए होगा। यह संदर्भ उसी विशेष दिन के विषय बात करता है:

२२ - इतने सारे चुनाव

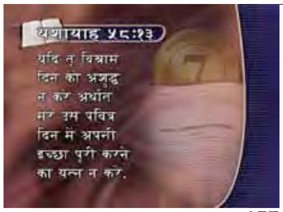

157

(मूलपाठः यशायाह ५८:१३, १४)

"यदि तू विश्राम दिन को अशुद्ध न करे अर्थात मेरे उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा पूरी करने का यत्न न करे,

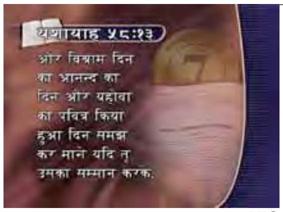

158

और विश्राम दिन को आनन्द का दिन और यहोवा का पवित्र किया हुआ दिन समझ कर माने यदि तू उसका सम्मान करके,

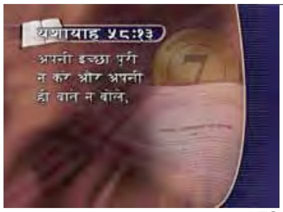

159

अपनी इच्छा पूरी न करे और अपनी ही बाते न बोले,

160

तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा;

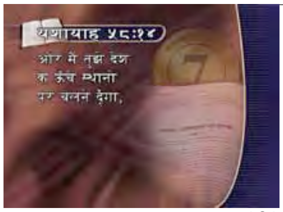

161

और मैं तुझे देश के ऊँचे स्थानो पर चलने दूँगा,

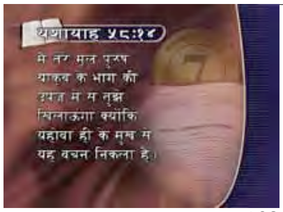

162

मै तेरे मूल पुरुष याकूब के भाग की उपज में से तुझे खिलाऊंगा क्योंकि यहोवा ही के मुख से यह वचन निकला है।"

२२ - इतने सारे चुनाव

163

प्रभु स्पष्ट रूप से बताता है कि हमे उस दिन काम नहीं करना चाहिए।
हमें उस दिन व्यवसाय नहीं करना चाहिए।
हमें उस दिन अपनी ही प्रसन्नता नहीं खोजनी चाहिए।

164

यह एक पवित्र दिन है। जब हम सब्त में परमेश्वर को प्रथम स्थान देंगे तो हमारा अनुभव प्रसन्नता भरा होगा। सब्त उल्लास का दिन है। परमेश्वर हमसे कुछ ले नहीं रहा है; वह हमें एक विशेष आशीष दे रहा है। वह कहता है कि वह हमें पृथ्वी के ऊँचे स्थानों पर चलायेगा। कितनी आशीषें वह हमें देगा अगर हम उसे अपने जीवन में पहला और सर्वोतम स्थान दें, उसका अनुशरण करें, और उसके पवित्र सब्त को मानें।

165

प्रत्येक सच्चाई की, जो परमेश्वर ने हमें बाईबिल में बताई है, शैतान ने एक झूठी नकल बनाई है।

166

परमेश्वर कहता है कि जब हम मरते हैं तब हम कब्र में सो जाते हैं। शैतान झूठ कहता है कि मरने पर हम स्वर्ग या नरक या पाप मोचन स्थान को जाते हैं।

२२ - इतने सारे चुनाव

167

परमेश्वर कहता है कि बपतिस्मा डुबकी द्वारा है। शैतान कहता है यह छींटे द्वारा हो सकता है। परमेश्वर ने हमें स्वास्थ्य के नियम दिए हैं।
शैतान कहता है कि स्वास्थ्य के नियम मिटा दिये गये।
प्रत्येक सच्चाई के लिए एक झूठ है। यह भ्रम पैदा करता है।

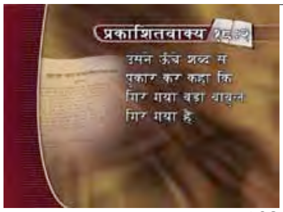

168

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १८:२)
प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इसके विषय बोलती है :
"उसने ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा कि गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा है,

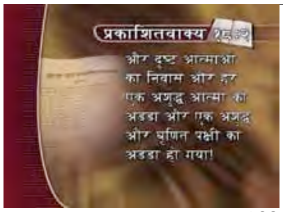

169

दुष्ट आत्माओं का निवास और हर एक अशुद्ध आत्मा का अडडा और एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का अडडा हो गया!"
प्रकाशितवाक्य १८:२
भविष्यवाणी में बाबुल का अर्थ एक धार्मिक गड़बड़ी से है।"
और यहां प्रार्थना पर ध्यान दीजिए।

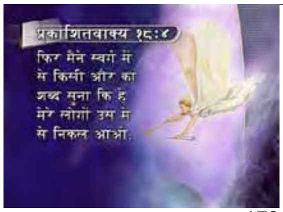

170

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १८:४)
"फिर मैने स्वर्ग में से किसी और का शब्द सुना कि हे मेरे लोगों उस में से निकल आओ,

२२ - इतने सारे चुनाव

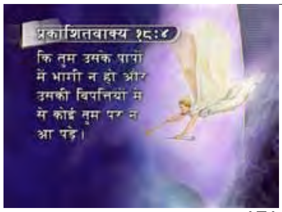

171

कि तुम उसके पापों में भागी न हो और उसकी विपत्तियों में से कोई तुम पर न आ पड़े।"

प्रकाशितवाक्य १८:४

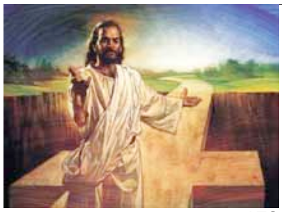
172

परमेश्वर अपने लोगों को गड़बड़ी में से बाहर आने के लिए बुला रहा है कि वे उसके पापों के भागी न हों।

मित्रों, यीशु आपको अभी बुला रहे हैं।

यीशु के लिये निर्णय करने का यही समय है!

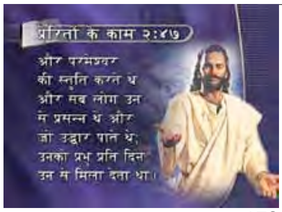

173

(मूलपाठः प्रेरितों के काम २:४७)

परमेश्वर के वचन पर ध्यान दीजिएः "और परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उन से प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे; उन को प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था।"

प्रेरितों के काम २:४७

174

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १२:१३)

"क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास क्या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया

175

और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।"

१ कुरिन्थियों १२:१३

२२ - इतने सारे चुनाव

176

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १:१८)

"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है,

177

परन्तु हम उद्धार पाने वालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।"

१ कुरिन्थियों १:१८

२२ - इतने सारे चुनाव

178

जैसा कि हमने आज रात सीखा है यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि यीशु ने अपने जीवन और शिक्षाओं द्वारा उस सच्चाई को प्रकट किया जिसे वह चाहता था कि उसके अनुयायी जानें और पालन करें। हमने यह देखा है कि शैतान किस तरह सत्य और मसीह की कलीसिया के साथ युद्ध करता रहा है। मसीह ने अपनी कलीसिया को जो सच्चाई दी है उसे शैतान सताता, भ्रष्ट करता, और उसका झूठा रुप प्रस्तुत करता आया है। हमने अपनी बाइबिल के अध्ययन और इतिहास से देख लिया है कि मसीह अपने लोगों का उस सत्य की ओर अगुवाई कर रहा है जिसे उसने अपनी कलीसिया को दिया था। वह धार्मिक गड़बड़ी में से अपने लोगों को उस सच्चाई में बुला रहा है जो उसके पवित्र कार्य द्वारा प्रकट हुई है। क्या आप अभी दूतों की पुकार का उतर देना चाहेंगे, "हे मेरे लोगों, उस में से निकल आओ।" क्या आप इसी वक्त परमेश्वर की उस कलीसिया का एक भाग नहीं बनना चाहेंगे "जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते और यीशु पर विश्वास रखते हैं"?

जो ठीक है उसे करने के लिये हमें बाबुल में से बाहर बुलाया गया है। क्या आप अपने यीशु को प्यार नहीं

करते? वे शीघ्र आ रहे हैं हमको उन स्वर्गीय घरों में ले जाने के लिये जो वे हमारे लिए तैयार कर रहे हैं। क्या आप सारे रास्ते भर उसके पीछे चलना नहीं चाहते?

२२ - इतने सारे चुनाव

२३ - आने वाले संकट में बचाव

1

अन्तिम ७ विपत्तियों से कैसे बचें।

2

स्थान था मिस्र – अर्थात अपने समय का सर्वाधिक सभ्य राष्ट्र। वर्ष – १४४५ ईसा पूर्व।

पिछले २१५ वर्षो तक इस्राएली वहां बन्धुवाई में रहे थे। अन्तिम शताब्दी कड़वी दासता की थी। मित्रवत फिरौन जो यूसुफ को जानते थे और उसके प्रशंसक थे वे बहुत पहले ही मर चुके थे।

3

नये शासकों ने इस्राएलियों की तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या को देश की सुरक्षा के लिए खतरे के रुप में देखा। इस बात से भयभीत होते हुए कि युद्ध की स्थिति में इस्राएली मिस्र के शत्रुओं से मिल सकते थे मिस्रियों ने इस्राएलियों को बलपूर्वक दास बना लिया।

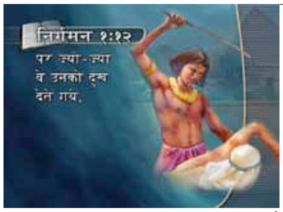

4

(मूलपाठः निर्गमन१:१२)

किन्तु बाइबिल बताती है, "पर ज्यों -ज्यों वे उनको दुख देते गये,

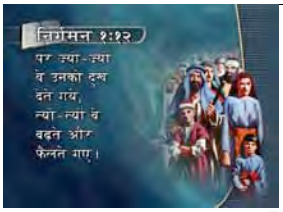

5

त्यों -त्यों वे बढ़ते और फैलते गए।"   निर्गमन १:१२

२३ - आने वाले संकट में बचाव

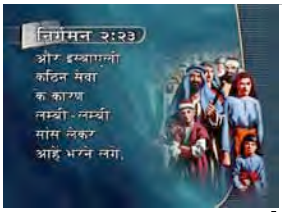

6

(मूलपाठः निर्गमन २:२३,२४)

"और इस्त्राएली कठिन सेवा के कारण लम्बी -लम्बी सांस लेकर आहें भरने लगे,

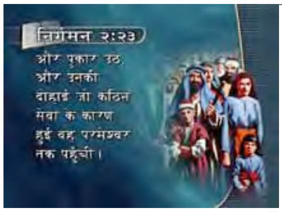

7

और पुकार उठे, और उनकी दोहाई जो कठिन सेवा के कारण हुई वह परमेश्वर तक पहुँची।

8

और परमेश्वर ने उनका कराहना सुनकर अपनी वाचा को, जो उसने अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ बांधी थी, स्मरण किया।"

निर्गमन २ : २३, २४

9

४०० से भी अधिक वर्ष हो चुके थे जब परमेश्वर मे अब्राहम से उसके वंश और उनके छुटकारे के विषय में वाचा बांधी थी। अब अन्तः वह समय आ ही गया। परमेश्वर तैयार था और उसके छुडाने जाने वाले भी तैयार थे !

10

वे अर्थात परमेश्वर और मूसा किसी महल में नहीं किसी विशाल शुण्डाकार स्तम्भ की छाया में नहीं, किन्तु बाहर मिधान के रेगिस्तान में एक जलती झाडी के पास मिले।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

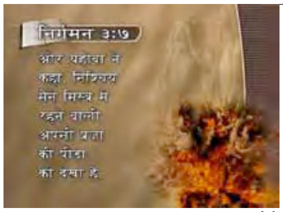

11

(मूलपाठः निर्गमन ३:७-८)

"और यहोवा ने कहा, निश्चिय मैने मिस्त्र में रहने वाली अपनी प्रजा की पीड़ा को देखा है,

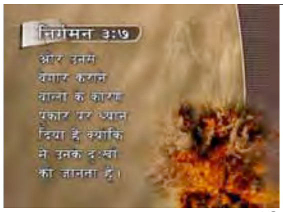

12

और उनसे बेगार कराने वालों के कारण पुकार पर ध्यान दिया है क्योंकि मैं उनके दुःखों को जानता हूँ।

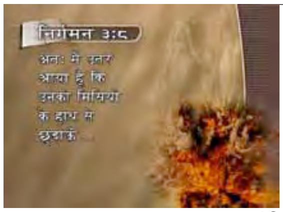

13

अतः मैं उतर आया हूँ कि उनको मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊँ ..."

निर्गमन ३:७, ८

मूसा से बोलते हुए परमेश्वर ने कहाः

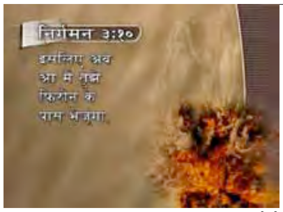

14

(मूलपाठः निर्गमन ३:१०)

"इसलिए अब आ मैं तुझे फिरौन के पास भेजूंगा

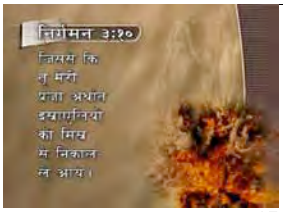

15

जिससे कि तू मेरी प्रजा अर्थात इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आये।"

निर्गमन ३:१०

२३ - आने वाले संकट में बचाव

२३ - आने वाले संकट में बचाव

16

मूसा को मिस्र राजमहल छोड़े हुए ४० वर्ष हो चुके थे। मिस्र की भाषा बोले उसे ४० वर्ष हो चुके थे। यथार्थ में इस पूरे समय में उसने एकान्त रेगिस्तान में भेड़ों की देख -रेख की थी। वह आत्म विश्वास अब जाता रहा जो मिस्र में एक युवा राजकुमार के रुप में उसे प्राप्त था। बाईबिल कहती है

17

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम ७:२२)

"और मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या की शिक्षा दी गयी थी और वह बातों तथा कार्यो दोनों में सामर्थी था।"

प्रेरितों के काम ७:२२

18

किन्तु रेगिस्तान में मूसा ने मात्र नम्रता ही नहीं सीखी उसने भेड़ों की देखभाल करने के द्वारा धैर्य और कोमलता सीखी। अब परमेश्वर ने अनुभव किया कि मूसा इस्राएल को छुडाने के लिए और उसके लोगों की पिता समान देखभाल करने के लिए तैयार था। मूसा ने नम्रता से परमेश्वर के आदेश का पालन किया और जो बात उस समय असंभव प्रतीत होती थी, स्वीकार कर ली।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

19

इस महान कार्य को पूरा करने में मूसा की सहायता हेतु परमेश्वर ने उसके बडे भाई हारुन जो मिस्र में एक दास था - उसको बाहर जाने और मूसा से मिलने का आदेश दिया। हारुन न केवल उसे नैतिक समर्थन देगा, किन्तु परमेश्वर ने उसे मूसा का प्रवक्ता भी नियुक्त किया, क्योंकि मूसा ने अनेक वर्षो से मिस्री भाषा नहीं बोली थी।

20

दोनो भाई परमेश्वर के भेजे गये दूत होने का दावा करते हुए फिरौन के महल में गये। उन्होंने परमेश्वर के नाम में बातें की और उसकी महान सामर्थ के विषय में बताया। घमंडी सम्राट की अभिमान भरी दृष्टि एक क्षण के लिए इस अस्वभाविक दृष्य में अवश्य खो गयी होगी। उसके सामने दो भाई खड़े थे, एक दीन मिद्दानी चरवाहा जो अभी भी अपनी छड़ी थामें खड़ा था और दूसरा स्थानीय इब्रानी दास, दोनों ही परमेश्वर जिसकी वे सेवा करते थे के महान सामर्थ की घोषणा कर रहे थे। जब हारून ने कहा कि वे यहोवा की ओर से एक संदेश ले कर आये थे कि फिरौन उसके लोगों को जाने दे, फिरौन ने घृणा से नाक सिकोड़ी।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

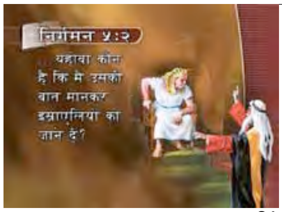

21

(मूलपाठ: निर्गमन ५:२)

"... यहोवा कौन है कि मै उसकी बात मानकर इस्राएलियों को जाने दूँ?

22

मैं यहोवा को नहीं जानता और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूँगा।" निर्गमन ५:२

हजारों दास जो उसकी इच्छानुसार बेगारी के लिए उपलब्ध थे उन्हें जाने देने की फिरौन की निश्चय ही इच्छा न थी। हारुन के निवेदन की कठोर प्रतिक्रिया हुई। राजा ने इस्राएलियों पर काम का बोझ और बढ़ा दिया।

23

किन्तु शीघ्र ही परमेश्वर फिरौन पर अपनी महान शक्ति प्रकट करने वाला था और अपना परिचय देने वाला था। मूसा और हारुन द्वारा फिरौन को चेतावनी दी गयी थी कि जब तक वह उसके लोगों को बंधुवाई से मुक्त नहीं करेगा, परमेश्वर मिस्र पर एक के बाद एक विपत्तियाँ डालेगा। तब फिरौन के लिए परमेश्वर का सन्देश था:

24

(मूलपाठ: निर्गमन ७:१७)

"इससे तू जान लेगा कि मै यहोवा हूँ।" निर्गमन ७:१७

२३ - आने वाले संकट में बचाव

25

अधिक देर न हुई थी कि विपत्तियां आनी आरम्भ हो गई। पूरी दस। हर विपत्ति के आने से पूर्व मूसा और हारून ने फिरौन को आने वाले न्याय के विषय इस आशा से चेतावनी दी कि वह आप और अपनी प्रजा को विनाश से बचाने के लिए परमेश्वर के लोगों को मुक्त करने का फैसला करेगा।

किन्तु फिरौन हठ पर अड़ा रहा। और परमेश्वर के वचन के अनुसार विचित्र संकट मिस्रियों पर आये।

26

(दृश्य)

पहली, नील नदी जिसे मिस्री एक देवता के समान पूजते थे, हारुन के जल पर छड़ी मारते ही लहू में बदल गयी। सारी मच्छलियाँ मर गयीं और मिस्र का समस्त जल सात दिन के लिए लहू बन गया। किन्तु फिरौन ने परमेश्वर के लोगों को मुक्त करने से इन्कार कर दिया!

27

दूसरी, मेंढकों की विपत्ति ने भूमि को ढक दिया। लाखों मेंढक भोजन में, बिस्तरों में, और प्रत्येक जगह फैल गए। फिर भी हठी राजा ने इस्राएल को जाने देने से इन्कार कर दिया।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

28

इसके बाद कुटकियों की विपत्ति आयी किन्तु घमण्डी शासक लोगों को जाने देने के लिए सहमत नहीं हुआ। ध्यान दीजिए कि पहली तीन विपत्तियाँ इब्रानियों और मिस्रियों दोनो पर आयीं। परन्तु अन्तिम सात विपत्तियाँ केवल मिस्रियों पर ही आई।

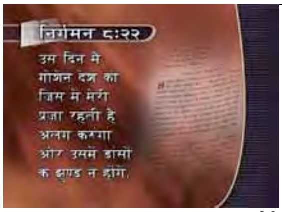

29

(मूलपाठः निर्गमन ८:२२-२३)
"उस दिन मैं गोशेन देश को जिस में मेरी प्रजा रहती है अलग करूंगा और उसमें डांसों के झुण्ड न होंगें,

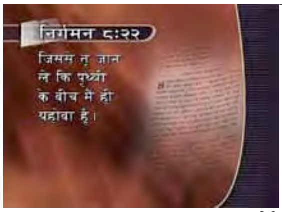

30

जिससे तू जान ले कि पृथ्वी के बीच मैं ही यहोवा हूँ।

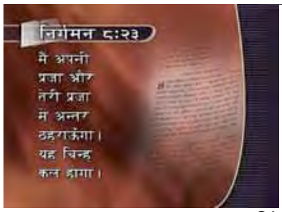

31

मैं अपनी प्रजा और तेरी प्रजा में अन्तर ठहराऊँगा। यह चिन्ह कल होगा।"
निर्गमन ८:२२,२३

32

इसके बाद डांसों की विपत्ति आई जिससे फिरौन का भवन भर गया।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

33

डांसों के बाद सर्वाधिक भयानक महामारी ने देश में फैल कर मैदान में पाये गये सब पशुओं को नष्ट कर दिया। अब तक फिरौन काफी जिज्ञासु हो गया था। क्या इब्रानियों के भी पशु मारे गये थे या जैसा मूसा ने घोषणा की थी, वे सुरक्षित थे?

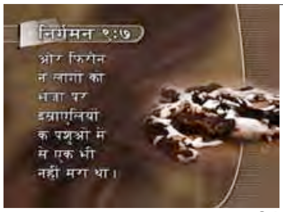

34

(मूलपाठः निर्गमन ९:७)

"और फिरौन ने लोगों को भेजा पर इस्राएलियों के पशुओं में से एक भी नहीं मरा था।

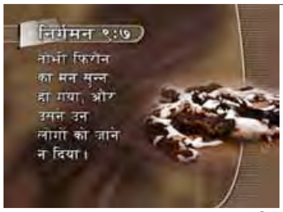

35

तौभी फिरौन का मन सुन्न हो गया, और उसने उन लोगों को जाने न दिया।"

निर्गमन ९:७

36

छठी विपत्ति मनुष्य और पशुओं पर फोड़े लेकर आयी किन्तु फिर भी हठी सम्राट ने इस्राएलियों को मुक्त करने से इन्कार कर दिया।

37

अगली भविष्यवाणी ने ओलों की विपत्ति की पूर्ण घोषणा की।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

38

(दृश्य)

तब परमेश्वर ने वचन दिया कि वे सब जो स्वयं को और अपने पशुओं को सुरक्षित रखेंगे वे नहीं मरेंगे। समाचार शीघ्र ही पूरे देश में फैल गया, और बहुत से मिस्रियों ने अपने पशुओं सहित स्वयं को सुरक्षित कर लिया। गर्जन और बिजली की चमक के साथ ओले आए और वे सब जो इसके लिए तैयार न थे मर गए!

39

(दृश्य)

मिस्रियों ने स्पष्ट देख लिया था कि पृथ्वी परमेश्वर के नियन्त्रण में थी, और उनकी एक मात्र सुरक्षा उसकी आज्ञा मानने में ही थी। कुछ क्षणों के लिए फिरौन के मन में परमेश्वर की आज्ञा मानने और उन लोगों को जाने देने का विचार आया किन्तु जैसे ही विपत्ति समाप्त हुई उसकी यह इच्छा भी जाती रही।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

40

(दृश्य)

मूसा ने फिरौन को चेतावनी दी कि यदि उसने इस्राएलियों को जाने न दिया तो अगली विपत्ति टिड्डियों का झुण्ड होगा। अधिक विपत्तियों के विचार से भयभीत होकर फिरौन के सलाहकारों ने उससे दासों को जाने देने का आग्रह किया, किन्तु राजा ने फिर भी इन्कार कर दिया। और जैसा कहा गया था टिड्डियाँ आ गयीं।

41

इसके उपरान्त तीन दिन तक गहन अंधकार छाया रहा, किन्तु विद्रोही फिरौन स्वर्ग के परमेश्वर का अनादर करता रहा।

42

मूसा ने कहा कि एक और अन्तिम और भयानक विपत्ति मिस्रियों पर डाली जाएगी। एक नाश करने वाला दूत आधी रात को देश में से होकर निकलेगा और मिस्रियों के पहिलौठों को, चाहे वे मनुष्य के हों या पशुओं के, मार डालेगा।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

43

(दृश्य)

पुनः इस्राएलियों को बचा लिया जाना था। किन्तु इस बार इस्राएली होना या गोशेन में रहना ही पर्याप्त नहीं था। मृत्यु के दण्ड से बचने के लिए प्रत्येक परिवार को एक मेम्ने का वध करने का और परमेश्वर में उनकी भक्ति और विश्वास के प्रतीक स्वरुप उसका कुछ लहू दरवाजे की चौखट पर लगाने का निर्देश दिया गया था। और परमेश्वर ने वचन दिया:

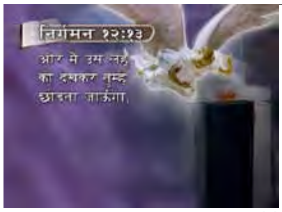

44

(मूलपाठः निर्गमन १२:१३)

"और मैं उस लहू को देखकर तुम्हें छोड़ता जाऊँगा,

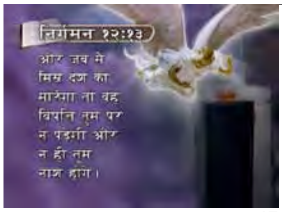

45

और जब मै मिस्र देश को मारूंगा तो वह विपत्ति तुम पर न पडेगी और न ही तुम नाश होगे।" निर्गमन १२:१३

46

कैसा यह दृश्य होगा उस रात। हजारों इस्राएली परिवार और अनेक मिस्री अपने दरवाजों पर खड़े देख रहे थे, जब पिता ने लहू का बर्तन एक हाथ में लेकर और जूफे की टहनी दूसरे हाथ में लेकर चौखट पर लहु छिड़का। और कल्पना की जा सकती है कि उस रात सर्वाधिक चिन्तित दिखने वाले हर परिवार के पहलौठे बच्चे ही थे।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

47

(मूलपाठः निर्गमन १२:२९)

"ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश के सब पहिलौठों को मार डाला,

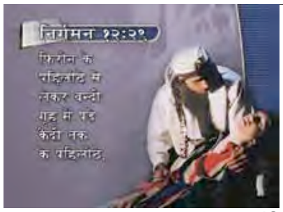

48

फिरौन के पहिलौठे से लेकर बन्दी गृह में पड़े कैदी तक के पहिलौठे,

49

तथा पशुओं के सब पहिलौठे।"

निर्गमन १२:२९

50

तब भी परमेश्वर के निर्देश के अनुसार जितने घरों की चौखट पर लहू छिड़का गया था उनमें से एक पर भी यह विपत्ति नहीं आई।

51

पूरे मिस्र देश में रोने वालों का स्वर सुना जा सकता था। और कपकपाते घुटनों के साथ फिरौन ने याद किया कि किस प्रकार उसने इस्राएलियों के परमेश्वर का उपहास किया था और उसके विरोध में नथुने फड़फड़ाए थेः

२३ - आने वाले संकट में बचाव

52

(मूलपाठः निर्गमन ५ :२)

"यहोवा कौन है मै उसकी बात मान कर इस्राएलियों को जाने दूँ?"

निर्गमन ५ :२

अब वह जान चुका था। नम्रता से उसने और उसके सलाहकारों ने दोनो इस्राएली भाइयों को बुलाया और उनसे इस्राएलियों को शीघ्र ले जाने और मिस्र देश छोड़ने का आग्रह किया क्योंकि डरते थे कि कहीं सब न मर जाएँ।

53

(दृश्य)

आधी रात होते ही परमेश्वर के लोग, जिन्होंने उसे अपने छुड़ाने वाले के रूप में चुन लिया था, मुक्त कर दिये गये। और परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उन्होने उस घड़ी के लिये तैयारी की थी। पांव में जूते और देह पर वस्त्र पहिने वे उस महान निर्गमन के लिये तैयार थे। वे प्रतिज्ञा के उस देश की ओर प्रस्थान कर रहे थे!

54

"अच्छा" आप कह सकते हैं कि यह एक मनोरंजक कहानी है, किन्तु इसका हम बीसवीं सदी में रहने वालों के लिये क्या महत्व हो सकता है?" यह महत्वहीन प्रतीत हो सकती है किन्तु है नहीं। यथार्थ में, यह इससे अधिक महत्वपूर्ण नहीं हो सकती थी।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

55

आप जानते हैं कि नये नियम में हम अन्तिम घटनाओं का विवरण देने वाली भविष्यवाणियाँ पाते हैं –वे घटनाएँ जो पृथ्वी पर घटित होंगी। ये भविष्यवाणियाँ पूरी तरह स्पष्ट कर देतीं हैं कि एक बार विनाशकारी स्तर पर पुनः विपत्तियाँ पड़ेंगी।

56

जी हाँ, बाईबिल की भविष्यवाणी के अनुसार इतिहास दोहराया जायेगा। इस बार दस विपतियाँ नहीं किन्तु सात, और जिसके बाद परमेश्वर के लोगों का छुटकारा होगा। मिस्र से नहीं, किन्तु एक विद्रोही ग्रह से।

57

किन्तु जिस प्रकार इस्राएलियों ने मिस्र से छुटकारे से पूर्व भारी दुःख के समय को सहन किया था और मिस्रियों पर विपत्तियाँ पड़ती हुई देखी थी,

58

उसी प्रकार परमेश्वर के लोग सात अन्तिम विपत्तियों को मसीह के आगमन से पूर्व दुष्टों पर आते हुए देखेंगे। दानिय्येल भविष्यवक्ता इस कष्ट के समय का वर्णन करता है:

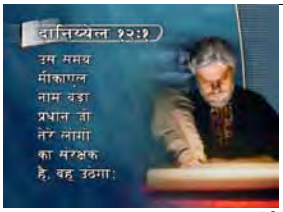

59

(मूलपाठः दानिय्येल १२:१)

"उस समय मीकाएल नाम बड़ा प्रधान जो तेरे लोगों का संरक्षक है, वह उठेगा;

२३ - आने वाले संकट में बचाव

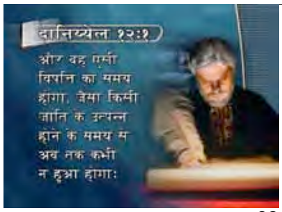

60

और वह ऐसी विपत्ति का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से अब तक कभी न हुआ होगा:

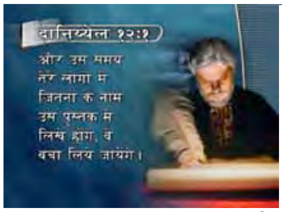

61

और उस समय तेरे लोगों में जितनों के नाम उस पुस्तक में लिखे होंगे, वे बचा लिये जायेंगे।"
दानिय्येल १२:१

62

"सनातन सुसमाचार" सम्पूर्ण संसार में प्रचार किया जा चुका होगा। दूसरे स्वर्गदूत की पुकार "बाबुल से निकल आओ" (या उपासना की झूठी पद्धति से निकल आओ) दी जा चुकी होगी। और प्रत्येक मनुष्य के लिए तीसरा स्वर्गदूत घोषणा करता है:

63

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य १४:९-१०)
"यदि कोई उस पशु और उसकी मूरत की पूजा करे और अपने माथे पर या हाथ पर उसकी छाप लगवाये,

64

तो वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पियेगा।"
प्रकाशितवाक्य १४:९, १०

२३ - आने वाले संकट में बचाव

65

नाशवान मनुष्यों को सम्बोधित यह बाइबिल की सर्वाधिक भयानक चेतावनी है। किन्तु जब तक विचाराधीन विषय पृथ्वी वासियों के सामने स्पष्ट न कर दिये जायें और उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं अथवा मनुष्यों की आज्ञाओं में से एक को चुनने का अवसर न दिया जाये, तब तक कोई भी न तो पशु की छाप लेगा और "न परमेश्वर के
प्रकोप की मदिरा पीएगा।"

66

किन्तु जब यह सब पूरा हो जाएगा तो मनुष्य के लिए अनुग्रह का द्वार सदा के लिए बन्द हो जाएगा।

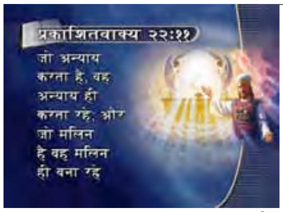

67

और यह गंभीर घोषणा की जायेगी: "जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन है वह मलिन ही बना रहे:

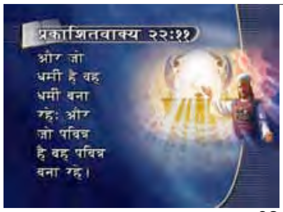

68

और जो धर्मी है वह धर्मी बना रहे: और जो पवित्र है वह पवित्र बना रहे।"

प्रकाशितवाक्य २२:११

२३ - आने वाले संकट में बचाव

69

हमारे महायाजक के रुप में मसीह का कार्य समाप्त हो चुका है। प्रत्येक मुकदद्में का अनन्त जीवन या अनन्त मृत्यु के लिये निर्णय हो चुका है। परमेश्वर के अनुग्रह का द्वार बन्द है। अब पृथ्वी के रहने वाले, दानिय्येल भविष्यवक्ता के कथन के अनुसार 'संकट के समय' का अनुभव करेंगैं।

70

और सुनिये, मित्र, जब तक विपत्तियाँ समाप्त नहीं हो जातीं परमेश्वर अपने लोगों को नहीं उठाएगा।
वे अन्त तक पृथ्वी पर ही होंगे। वे इस्राएलियों के समान विपत्तियों से बचाये जायेंगे, किन्तु वे कष्टों और दुखों से मुक्त न होंगे। प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह संकट का समय होगा।

71

और मित्र, पृथ्वी के इतिहास के इस काल का सर्वाधिक स्पष्ट वर्णन इसकी सम्पूर्ण वास्तविकता को नहीं बता सकता जब दुष्ट परमेश्वर के क्रोध की दयाविहीन मदिरा का प्याला पीते हैं।
यूहन्ना को दशन में इस भयानक संकट का समय दिखाया गया था जो यीशु के आने और उसके लोगों के उद्धार से ठीक पहले आयेगा।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

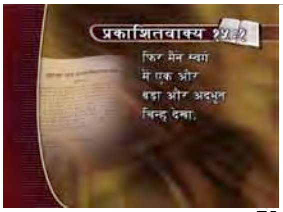

72

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १५ :१)

"फिर मैंने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिन्ह देखा,

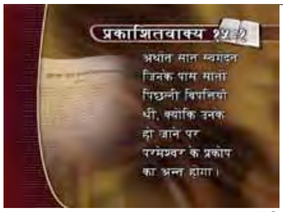

73

अर्थात सात स्वर्गदूत जिनके पास सातों पिछली विपत्तियाँ थीं, क्योंकि उनके हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का अन्त होगा।"

प्रकाशितवाक्य १५ :१

और यूहन्ना ने पुनः लिखाः

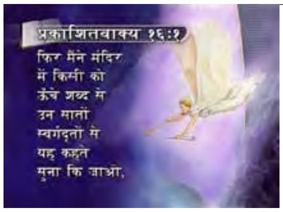

74

(मूलपाठः प्रकाशित व्याक्य १६ :१)

"फिर मैंने मंदिर में किसी को ऊँचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों से यह कहते सुना कि जाओ,

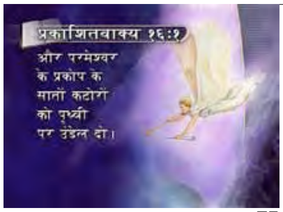

75

और परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उंडेल दो। "

प्रकाशितवाक्य १६ :१

२३ - आने वाले संकट में बचाव

76

"किन्तु" आप पूछते हैं, ये भयानक विपत्तियाँ क्या हैं जो सात स्वर्गदूतों द्वारा दुष्टों पर उंडेली जानी है? " यह एक अच्छा प्रश्न है। जब हम इन विपतियों के विषय पढ़ते हैं तो आप इनके और मिस्र पर पड़ीं विपतियों के बीच एक चौकाने वाली समानता पायेंगे। आइए पढ़ें कि यूहन्ना पहिले स्वर्गदूत के विषय में क्या कहता है:

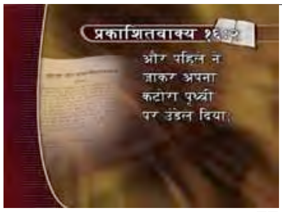

77

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:२)
"और पहिले ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उंडेल दिया;

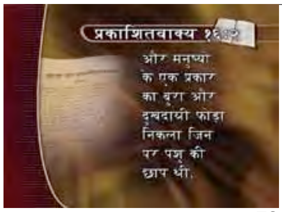

78

और जिन मनुष्यों के एक प्रकार का बुरा और दुखदायी फोड़ा निकला जिन पर पशु की छाप थी,

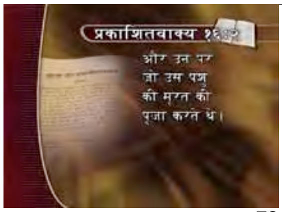

79

और उन पर जो उस पशु की मूरत की पूजा करते थे।" प्रकाशितवाक्य १६:२

80

संभवतः ये फोड़े उन फोड़ों और फफोलों के समान हैं जो मिस्रियों पर उनकी सातवीं विपति के दौरान निकले। या वे कुछ उन फोड़ों के समान हो सकते थे जैसे अय्यूब ने सहन किए थे।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

81

क्या आप ऐसी विपत्ति के प्रभाव की कल्पना कर सकते हैं? विद्यालय बन्द हो जायेंगे।

82

उद्योग और कारखाने बन्द हो जाएंगे।
दुकानें खुल नहीं पायेंगी।

83

आपातकालीन इलाज चाहने वाले लोगों से अस्पताल भरे होंगे, किन्तु अधिकतर डाक्टर और नर्से भी उसी कष्ट से पीड़ित होंगे।
और तब, जब लोग अपने घावों से पीड़ित होंगे तब उन पर दूसरी विपति टूट पड़ेगी!

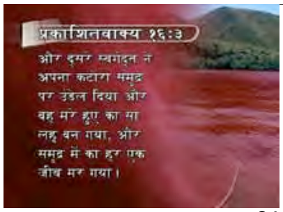

84

(मुलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:३)
"और दूसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा समुद्र पर उंडेल दिया और वह मरे हुए का सा लहू बन गया, और समुद्र में का हर एक जीव मर गया।"
प्रकाशितवाक्य १६:३

२३ - आने वाले संकट में बचाव

२३ - आने वाले संकट में बचाव

85

क्या दृश्य होगा और क्या ही दुर्गंध होगी, जब सड़ते समुद्री प्राणी किनारों पर बहकर आ जाएंगे। लोग किनारों पर से शीघ्र भागने के चक्कर में एक दूसरे से ठोकर खा रहे होंगे। किन्तु तीसरी विपत्ति दूसरी से काफी मिलती -□जुलती है।

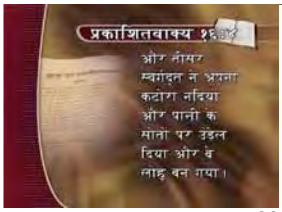

86

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:४)
"और तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा नदियों और पानी के सोतों पर उंडेल दिया और वे लोहू बन गया।"
प्रकाशितवाक्य १६:४

87

थोड़ा सोचिए!
एक व्यक्ति पानी पीने के लिए टोंटी खोलता है और पानी के स्थान पर लहू निकलता है!
कैसा परिणाम होगा!
क्या इससे बुरा भी कुछ हो सकता है?
ये सात विपत्तियाँ अति पीढ़ादायक और भयानक हो सकती हैं, किन्तु परमेश्वर का यह न्याय पूर्णतया उचित ठहराया गया है। क्योंकि स्वर्गदूत घोषणा करता हैः

२३ - आने वाले संकट में बचाव

88

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:५-६)

"तू न्यायी है हे प्रभु क्योंकि तूने इन बातों का न्याय किया है।

89

क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों और नबियों का लहू बहाया था,

90

और तूने उन्हें लोहू पिलाया।"

प्रकाशितवाक्य १६:५,६

इस समय दुष्ट प्यास के मारे मर रहे हैं और उनके पास पीने के लिए केवल लहू है। किन्तु जो धार्मिकता से चलते हैं उनके लिये प्रतिज्ञा की गई है:

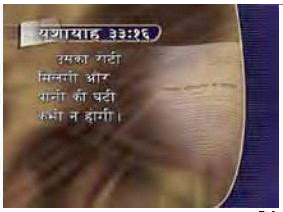

91

(मूलपाठः यशायाह ३३:१६)

"... उसको रोटी मिलेगी और पानी की घटी कभी न होगी।"

यशायाह ३३:१६

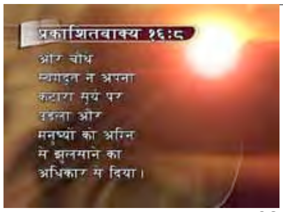

92

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:८ -९)

और तब बाइबिल कहती है कि: "और चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा सूर्य पर उंड़ेला और मनुष्यों को अग्नि से झुलसाने का अधिकार उसे दिया।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

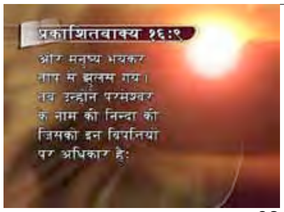

93

और मनुष्य भयंकर ताप से झुलस गये। तब उन्होंने परमेश्वर के नाम की निन्दा की जिसको इन विपत्तियों पर अधिकार है:

94

परन्तु मन न फिराया कि उसे महिमा दें।"

प्रकाशितवाक्य १६:८,९

तब पांचवे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा पशु के मुख्यालय पर उंड़ेल दिया:

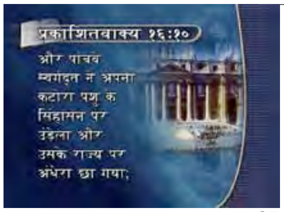

95

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य १६:१०-११)

"और पांचवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा पशु के सिंहासन पर उंड़ेला और उसके राज्य पर अंधेरा छा गया;

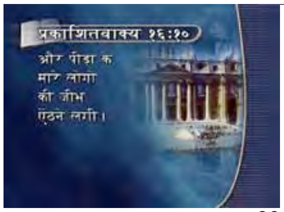

96

और पीड़ा के मारे लोगों की जीभ ऐंठने लगी,

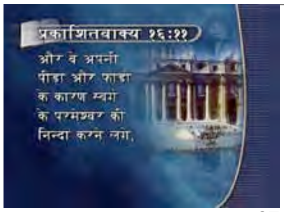

97

और वे अपनी पीड़ा और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की निन्दा करने लगे,

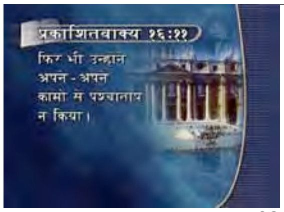

98

फिर भी उन्होंने अपने- अपने कामों से पश्चाताप न किया।"

प्रकाशितवाक्य १६:१०,११

२३ - आने वाले संकट में बचाव

99

इस पद में हम पाते हैं कि ये विपतियाँ न तो विश्वव्यापी हैं और न ही तुरन्त प्राण घातक, क्योंकि यहाँ हम पाते हैं कि जो पांचवी विपति के अधीन है वे अभी भी प्रथम विपति के फोड़ों से पीड़ित हैं। लगता है कि विपतियाँ एक साथ आने के बजाय एक के बाद दूसरी आती हैं क्योंकि उनका प्रभाव एक से दूसरे तक बना रहता है। छठी विपति पर हर-मगिदोन की बड़ी लड़ाई आती हैः

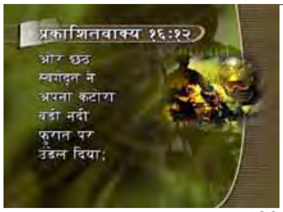

100

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:१२ -१४)
"और छठे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा बड़ी नदी फुरात पर उंडेल दिया

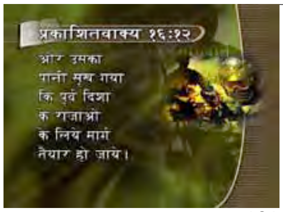

101

और उसका पानी सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो जाये।

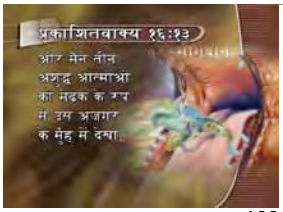

102

और मैंने तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढक के रूप में उस अजगर के मुँह में देखा,

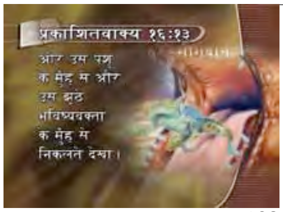

103

और उस पशु के मुँह से और उस झूठे भविष्यवक्ता के मुँह से निकलते देखा।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

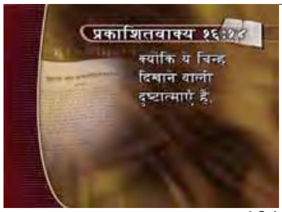

104

क्योंकि ये चिन्ह दिखाने वाली दुष्टात्माएँ हैं,

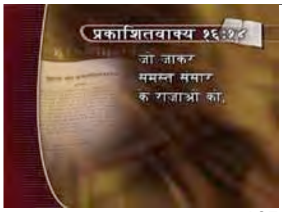

105

जो जाकर समस्त संसार के राजाओं को,

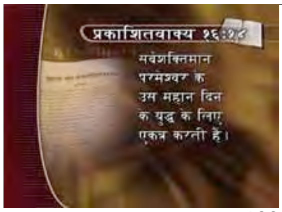

106

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस महान दिन के युद्ध के लिए एकत्र करती हैं।"

प्रकाशितवाक्य १६:१२-१४।

और प्रकाशितवाक्य १६:१६ कहती है:

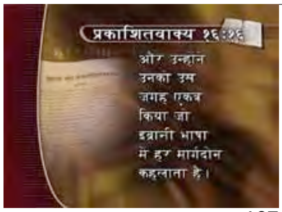

107

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य १६:१६) "और उन्होंने उनको उस जगह एकत्र किया जो इब्रानी भाषा में हरमगिदोन कहलाता है।"

इस अन्तिम संघर्ष में पूरे संसार को भाग लेना है।

यूहन्ना ने लिखा:

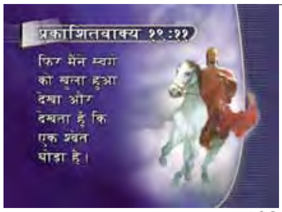

108

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य १९:११, १४ -१५)

"फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ देखा और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है।

109

और उसका सवार विश्वास योग्य और सत्य कहलाता है और धार्मिकता से न्याय और युद्ध करता है ...

२३ - आने वाले संकट में बचाव

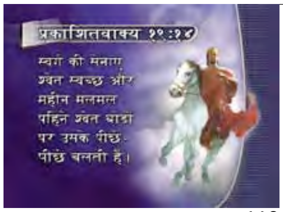

110

स्वर्ग की सेनाएं श्वेत स्वच्छ और महीन मलमल पहिने श्वेत घोड़ों पर उसके पीछे -पीछे चलती हैं।

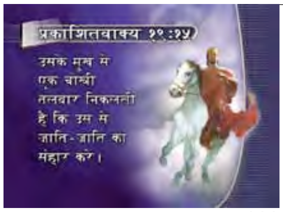

111

उसके मुख से एक चोखी तलवार निकलती है कि उस से जाति -जाति का संहार करे।

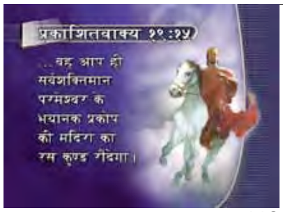

112

...वह आप ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की मदिरा का रस कुण्ड रौंदेगा।"
प्रकाशितवाक्य १९:११, १४, १५

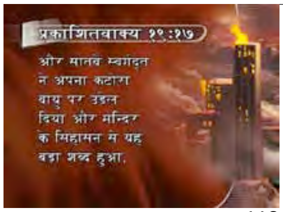

113

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:१७, १८, २० -२१)
"और सातवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा वायु पर उंडेल दिया और मन्दिर के सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ,

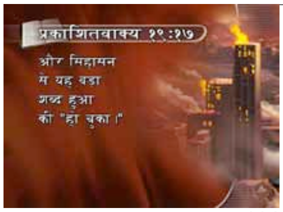

114

और सिंहासन से यह बड़ा शब्द हुआ की "हो चुका।"

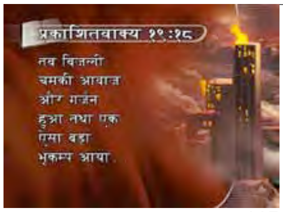

115

तब बिजली चमकी आवाज और गर्जन हुआ तथा एक ऐसा बड़ा भूकम्प आया...

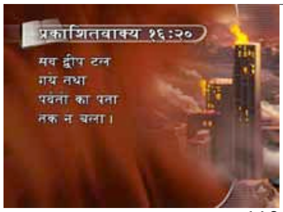

116

सब द्वीप टल गये तथा पर्वतों का पता तक न चला।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

117

मन -मन भर वजन के ओले आकाश से मनुष्यों पर गिरने लगे :

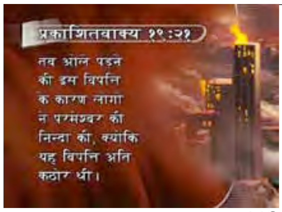

118

तब ओले पड़ने की इस विपत्ति के कारण लोगों ने परमेश्वर की निन्दा की, क्योंकि यह विपत्ति अति कठोर थी।"

प्रकाशितवाक्य १६:१७, १८, २०, २१

119

अधिकतर विद्वान एक मन का वजन ५६ पाउंड बताते हैं। ऐसी ओला वृष्टि से होने वाले विनाश की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

120

किन्तु बाइबिल कहती है कि प्रभु आप ही क्लेश में विघ्न डालेगा जब वह अपने लोगों को विद्रोही ग्रह से स्वतन्त्र कराने हेतु स्वर्ग की सेनाओं के साथ सवार होकर निकलेगा

121

"किन्तु," आप पूछते हैं, "जब विपत्तियाँ गिरनी आरम्भ हो जाती हैं तो मुझे परमेश्वर की सुरक्षा का निश्चय कैसे हो सकता है?" केवल एक ही रास्ता है।

२३ - आने वाले संकट में बचाव

122

आपने देखा कि जो लोग मिस्र की अन्तिम विपत्ति से बचाये गये थे उन्होंने परमेश्वर में एक छुड़ाने वाले के रूप में अपना विश्वास और भक्ति का प्रदर्शन मेम्ने के लहू को अपने दरवाजों की चौखटों पर छिड़क कर किया। जब मृत्यु का दूत उनके घरों को छोड़कर निकल गया, तो वे विनाश के मध्य भी सुरक्षित थे। उन्होंने परमेश्वर के आदेशों का पालन और आवश्यक तैयारी की थी।

123

और पुनः परमेश्वर के लोग विपतियों के आने पर बचा लिये जायेंगे यदि उन्होंने परमेश्वर के मेम्ने के बलिदान को स्वीकार कर लिया है और उसके लहू से अपने पापों से शुद्ध हुए हैं।

124

अपने जीवनों से हम आज चुन रहे हैं कि हम किस ओर होंगे– परमेश्वर की ओर या उस विद्रोही दूत की ओर। और मित्र, जब नाश करने वाले दूत अपना काम आरम्भ कर देंगे तो पक्ष बदलने के लिए बहुत देर हो चुकी होगी। अनुग्रह का द्वार सदैव के लिए बन्द हो चुका होगा। क्या आप अभी अपने आपको परमेश्वर की ओर और यीशु के लहू की शरण में ला सकते हैं? सबसे अधिक दुःख भरे शब्द जो मनुष्य बोलेंगे वे यिर्मयाह ८:२० में पाए जाते हैं:

२३ - आने वाले संकट में बचाव

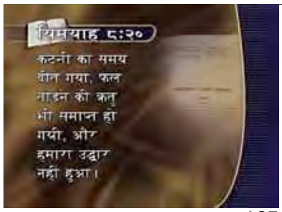

125

(मूलपाठः यिर्मयाह ८:२०)
"कटनी का समय बीत गया, फल तोड़ने की ऋतु भी समाप्त हो गयी, और हमारा उद्धार नहीं हुआ!"

126

एक आस्ट्रेलियाई लकड़हारे की कहानी बतायी जाती है जिसने अपनी झोपड़ी जंगल के किनारे बनाई। यह छोटी होते हुए भी उसके लिए घर थी। एक दिन जब वह काम से घर लौटा,

127

तो वह यह देखकर अत्यन्त दुखित हुआ कि उसका घर सुलगती लकड़ियों का ढेर बन गया था। वहाँ जली हुई लकड़ी के टुकड़े और एकाध धातु के काले टुकड़े शेष रह गये थे। वह बाहर गया जहाँ उसका मुर्गियों का दड़बा रखा था।

128

वहाँ उसे केवल राख का एक ढेर और कुछ जले हुए तार मिले। निरुद्देश्य हो कर उसने मलबे को खोदना आरम्भ किया। उसने अपने पैरों की ओर देखा तो उसे जले हुए पंखों का एक ढेर दिखाई दिया। उसने उसमें ठोकर मार दी। और सोचिए, कि उसे क्या मिला?

२३ - आने वाले संकट में बचाव

129

चार छोटे मुर्गी के बच्चे वहाँ से निकल आये जिनके प्राण अपनी प्रेमी माँ के पंखों तले आश्चर्यजनक तरीके से बच गए थे। अति सुन्दर और सार्थक भाषा में परमेश्वर हमें बताता है कि विपतियों के समय वह अपने प्रत्येक बच्चे के लिये क्या करना चाहता है:

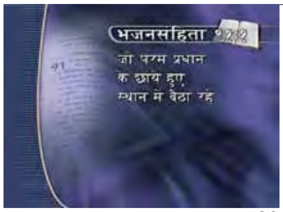

130

(मूलपाठ: भजनसंहिता ९१:१, ४)
"जो परम प्रधान के छाये हुए स्थान में बैठा रहे

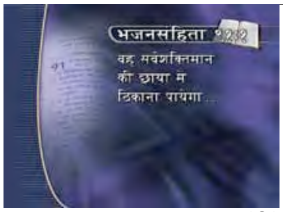

131

वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पायेगा ...

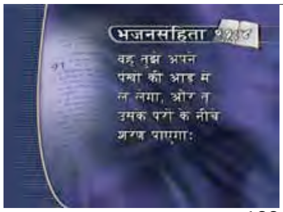

132

"वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा, और तू उसके परों के नीचे शरण पाएगा:

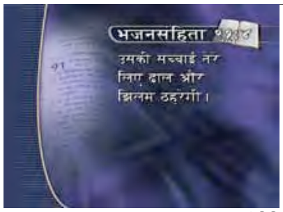

133

उसकी सच्चाई तेरे लिए ढाल और झिलम ठहरेगी।"
भजनसंहिता ९१:४
जी हाँ, जो उसके पीछे चलने का निर्णय करते हैं उनके लिये परमेश्वर ने अद्‌भुत आश्वासन दिये हैं:

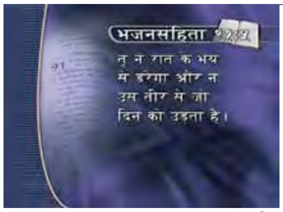

134

"तू न रात के भय से डरेगा और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है;

२३ - आने वाले संकट में बचाव

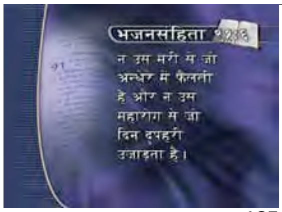

135

न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी उजाड़ता है।

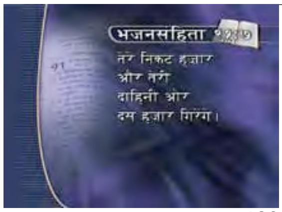

136

तेरे निकट हज़ार और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे।

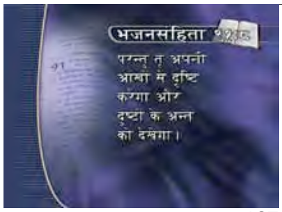

137

परन्तु तू अपनी आंखों से दृष्टि करेगा और दुष्टों के अन्त को देखेगा।

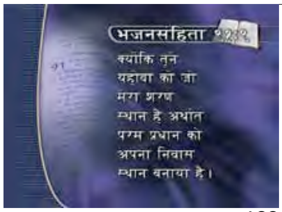

138

क्योंकि तूने यहोवा को जो मेरा शरण स्थान है अर्थात परम प्रधान को अपना निवास स्थान बनाया है;

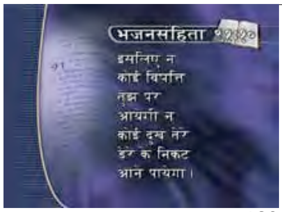

139

इसलिए न कोई विपत्ति तुझ पर आयेगी न कोई दुख तेरे डेरे के निकट आने पायेगा।

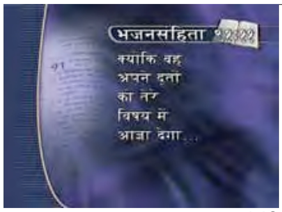

140

क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा ..."

भजनसंहिता ९१:५ -११

२३ - आने वाले संकट में बचाव

141

(दृश्य)

क्या कुछ इससे भी अधिक आश्वासन देने वाला हो सकता है? क्या आप सर्वशक्तिमान के परों के नीचे शरण लेना नहीं चाहेंगे ताकि उन भारी विपत्तियों से बच सकें? आपका स्वर्गीय पिता संकट और विनाश के समय में आपकी सुरक्षा करना चाहता है।

142

जब आप अपना जीवन उसे देते हैं तो वह एक मुर्गी के समान जो अपने छोटे बच्चों को अपने पंखों में समेट लेती है आपको सुरक्षित रखने में समर्थ होगा। निर्णय आपका है। मुझे पूरा विश्वास है कि परमेश्वर आपका यह निर्णय स्वंय बनाना चाहेगा जिससे आप उसके साथ अनन्त काल तक रह सकें, किन्तु वह ऐसा नहीं कर सकता। केवल आप ही हैं जो यह निर्णय ले सकते हैं। अब और प्रतीक्षा मत कीजिए। यह निर्णय अभी, इसी समय ले लीजिए।

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

1

जब शैतान और अधिक बहका नहीं सकेगा

2

उत्तरी ध्रूव में अन्वेषण करने वालों का एक समूह एक पत्थरीले उजाड़ द्वीप पर फंस गया। उनकी सामग्रियाँ शीघ्र ही समाप्त हो रहीं थीं। वे अपना अंतिम भोजन खा चुके थे। उनका ईधन खत्म हो रहा था। तापमान शीघ्रता से गिर रहा था और वे ठंड के कारण जम रहे थे। वे जान गए थे कि मृत्यु शीघ्र आने वाली है। जब वे आशा छोड़ चुके थे तभी,

3

उनमें से एक ने क्षितिज में धुएं के छोटे से बादल को बहते हुए देखा। किसी ने उनके रेडियो के संकेत को सुन लिया था। सहायता आ रही थी। जीवित रहने के लिए उन्हें क्षितिज पर धुएं के छोटे से बादल की आवश्यकता थी। लम्बा भयानक स्वप्न समाप्त होने वाला था। शीघ्र ही वे बचाने वाले जहाज में सुरक्षित होंगे, और फिर जल्दी ही अपने घर पर होंगे।

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

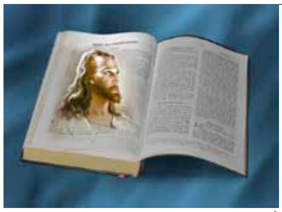
4

बाईबिल की अंतिम पुस्तक प्रकाशितवाक्य यह बताती है कि मदद रास्ते में है। हम भी शीघ्र ही मुक्त हो जाएंगे। पाप का वह लम्बा भयानक स्वप्न समाप्त हो जाएगा। हम मुक्त हो जाएंगे, और शैतान बन्दीगृह में होगा। हम स्वतंत्र किए जाएंगे, और शैतान बांध लिया जाएगा। हम यीशु से मिलने आसमान पर उठा लिए जाएंगे, और शैतान इस पृथ्वी पर अकेलेपन की जंजीरों से बांध दिया जाएगा। हम अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे और शैतान और उसके अनुयायी अनन्त विनाश के दण्ड की आज्ञा को प्राप्त करेंगे।

5

(दृश्य)

कभी-कभी कोई न्यायाधीश किसी अपराधी को उसके अपराध के प्रति समाज का रोष प्रकट करने के लिए बहुत लम्बी सज़ा सुना देता है। तीन या चार आजीवन कारावास या ९९ वर्ष की सजा बूढ़े अपराधी को दी जाती है यह जानते हुए कि वह इतनी सजा नहीं भुगत सकता।

6

परन्तु न्यायाधीश द्वारा घोषित दण्ड समाज के पक्ष में और जघन्य अपराधों के लिये दिया जाता है।

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

7

क्या आप जानते हैं कि वह समय शीघ्र आने वाला है जब न्यायाधीश १००० वर्षों का दण्ड सुनाएगा और अपराधी को प्रतिदिन उसे सहना पड़ेगा?

8

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य २०:१-३)

इन शब्दों को बाइबिल से सुनिए: "फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिस के हाथ में अथाह कुंड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी।"

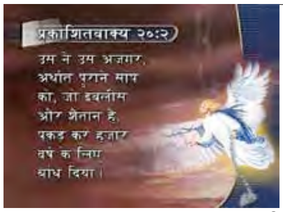

9

उस ने उस अजगर, अर्थात पुराने सांप को, जो इबलीस और शैतान है, पकड़ कर हजार वर्ष के लिए बांध दिया;

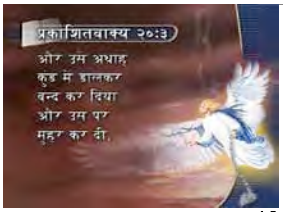

10

और उसे अथाह कुंड में डालकर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी,

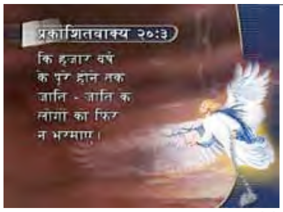

11

कि हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति - जाति के लोगों को फिर न भरमाए।

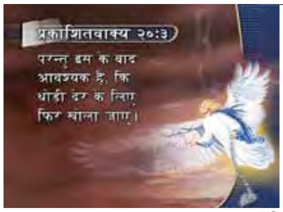

12

परन्तु इस के बाद आवश्यक है, कि थोड़ी देर के लिए फिर खोला जाए।"

प्रकाशितवाक्य २०:१-३

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

13

हम यहाँ पाते हैं कि परमेश्वर के पास सारे समय के सबसे बड़े अपराधी की सजा के लिए एक योजना है -- ऐसा अपराधी जो इस पृथ्वी पर किए गए प्रत्येक पाप और अपराध में सम्मिलित हो। परन्तु समय शीघ्र आने वाला है जब वह १००० वर्षो के लिए बन्दी बना दिया जाएगा। इन हजार वर्षो का समय विश्व का सबसे अधिक दु:खी, निर्जन, और उजाड़ समय होगा। इस अवधि को शताब्दी भी कहते हैं।

14

क्या है शताब्दी?

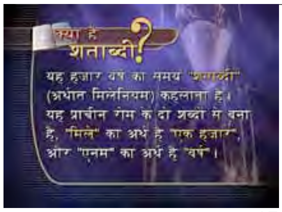

15

यह हजार वर्ष का समय "शताब्दी" (अर्थात मिलेनियम) कहलाता है, यह प्राचीन रोम के दो शब्दों से बना है, मिले का अर्थ है "एक हजार" और एनम का अर्थ है "वर्ष।"

16

भविष्यवाणी कहती है कि शैतान बांध दिया जाएगा

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

17

एक हजार वर्ष और तब वह थोड़ी देर के लिए छोड़ दिया जाएगा संसार को यह दर्शाने के लिए कि १००० वर्षों के बाद भी वह नहीं बदला -- वह अब भी वही शैतान है। हमें इस भविष्यवाणी को समझने की और पूर्णरूप से इसके महत्व को देखने की आवश्यकता है। देखें कि यह किस प्रकार आरम्भ होती है और किस प्रकार इसका अंत होता है और इस अवधि के बीच क्या होता है।

18

मुझे कुछ कहने दीजिए और तब मैं आगे उस कथन की सच्चाई को सिद्ध करूंगा।
यह शताब्दी दो पुनरुत्थानों के द्वारा जुड़ी हुई है:

19

१) उस अवधि के आरम्भ में जीवन का पुनरुत्थान, और

20

२) उस अवधि के अन्त में दण्ड का पुनरुत्थान।

21

(मूलपाठः यूहन्ना ५:२५)
एक दिन जब यीशु मृत्यु के विषय में अपने शिष्यों को उपदेश दे रहे थे, उन्होंने कहाः "मैं तुम से सच - सच कहता हूँ वह समय आता है और अब है,

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

22

जब मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे।"

यूहन्ना ५:२५

आप यहाँ पाते हैं कि मृतक उसकी आवाज सुनेंगे और जीवित हो जाएंगे। इसका अर्थ यह है कि सभी मृतक जीवित हो जाएंगे। मैं जानता हूँ कि आप में से कुछ लोगों को आश्चर्य होगा, क्योंकि आप ने सोचा होगा कि केवल धर्मी मृतक जी उठेंगे। ध्यान दीजिए मसीह ने किस प्रकार इसी अध्याय को २८ और २९ पद में विस्तृत किया है:

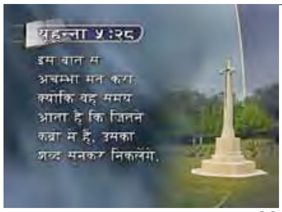

23

(मूलपाठ: यूहन्ना ५:२८, २९)

"इस बात से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे,

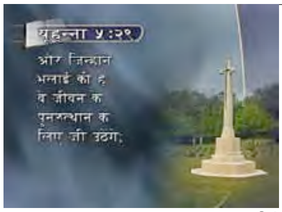

24

"और जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे;

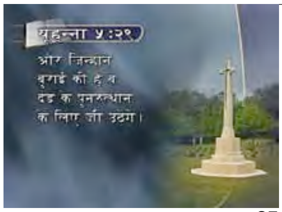

25

और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे।"

यूहन्ना ५: २८, २९

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

26

(दृश्य)
दो पुनरुत्थानों पर ध्यान दीजिए। पहला, उनका पुनरुत्थान जिन्होंने अच्छा किया है, और दूसरा, उनका जिन्होंने निन्दा के कार्य किए।

27

सुनिए, बाइबिल उन लोगों के लिए प्रथम पुनरुत्थान के बारे में क्या कहती है:

28

(मूलपाठ: प्रकाशित वाक्य २०:५,६)
"यह तो पहला पुनरुत्थान है।"

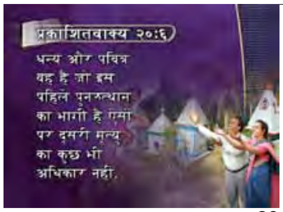

29

धन्य और पवित्र वह है जो इस पहिले पुनरुत्थान का भागी है ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं,

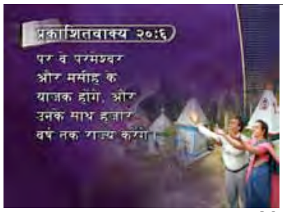

30

पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उनके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे।"
प्रकाशितवाक्य २०:५,६

31

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों में जो कहा है उस से यह मेल खाता है।
ध्यान दीजिए वह मसीह के दूसरे आगमन का किस प्रकार वर्णन करता है

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

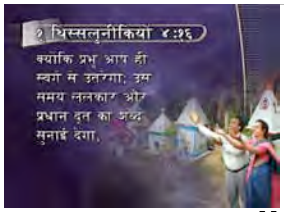

32

(मूलपाठः १ थिस्सलुनीकियों ४:१६, १७)

"क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा,

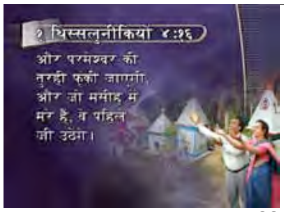

33

और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे।

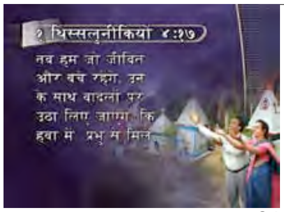

34

तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें,

35

और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।"

पद १६, १७

36

पुनरुत्थान का क्या ही तेजस्वी वर्णन है।

आप ध्यान देंगे कि जो मसीह में मरे हैं वे पहले जी उठेंगे, और तब मसीह के अनुयायी जो जीवित होंगे वे उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें!

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

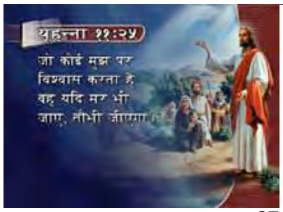

37

(मूलपाठः यूहन्ना ११:२५)

और उस दिन यीशु के द्वारा की गई प्रतिज्ञा पूरी होगी, "जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।"

यूहन्ना ११:२५

38

हाँ, जब मसीह वापस आएंगे तब धर्मी मृतक अपनी कब्रों से जीवित होंगे और उठा लिए जाएंगे।

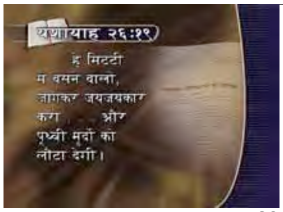

39

(मूलपाठः यशायाह २६:१९)

यशायाह इस आनन्दमय घटना का वर्णन करता है "... हे मिटटी में बसने वालों, जागकर जयजयकार करो ... और पृथ्वी मुर्दो को लौटा देगी।"

यशायाह २६:१९

क्या ही तेजस्वी दिन होगा वह!

40

माताएँ अपने मृत बच्चों से फिर मिलेंगीं। पति और पत्नी फिर मिलेंगे। पुत्र और पुत्रियाँ अपने माता -पिता से फिर मिलेंगे!

कितना संवेदनशील और भावुक होगा वह दृश्य!

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

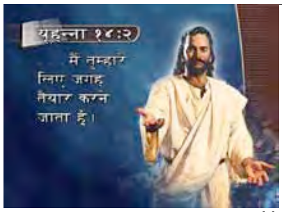

41

(मूलपाठः यूहन्ना १४:२, ३)
तब वह अदभुत प्रतिज्ञा जो मसीह ने बहुत पहले की थी, पूरी हो जाएगीः "मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ।

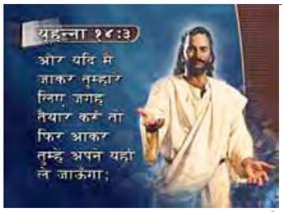

42

और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा;

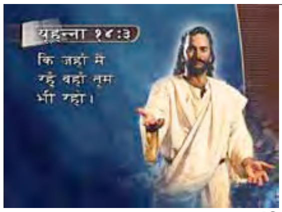

43

कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।"
यूहन्ना १४:२, ३
यही है वह जगह जहाँ उद्धार पाये हुए लोग एक हजार वर्ष तक का समय बिताएंगे।

44

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २०:६)
हम क्या कर रहे होंगे? यूहन्ना हमें बताता है "धन्य और पवित्र वह है जो इस पहिले पुनरुत्थान का भागी है ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं,

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

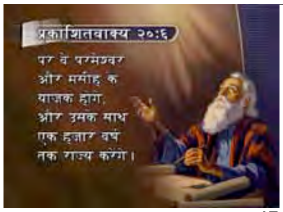

45

पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ एक हजार वर्ष तक राज्य करेंगे।"

प्रकाशितवाक्य २०:६

मसीह और उसके अनुयायियों की संगति के अकथनीय आनन्द के अतिरिक्त यूहन्ना हमें और अधिक परिज्ञान कराता है कि १००० वर्ष के दौरान वे क्या कर रहे होंगे।

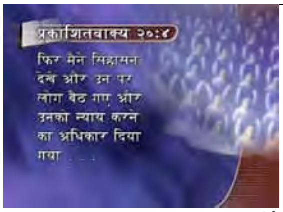

46

(मूलपाठ : प्रकाशित वाक्य २०:४)

"फिर मैने सिंहासन देखे और उन पर लोग बैठ गए और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया।"

प्रकाशितवाक्य २०:४

ब्रह्माण्ड के सर्व बुद्धिमान और सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने दुर्बल स्त्री को पतित दूतों और बिना उद्धार पाए लोगों का न्याय करने के पवित्र कार्य में शामिल किया है।

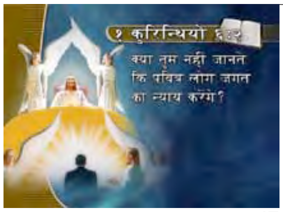

47

(मूलपाठः १. कुरिन्थियो ६:२)

पौलुस कहता है; "क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे?"

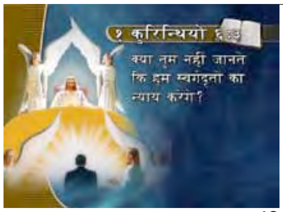

48

क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे?"

१. कुरिन्थियो ६:३

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

49

यह अन्ततः स्पष्ट हो जाएगा कि परमेश्वर न्यायी, भला और सच्चा है। हजारों वर्षो तक शैतान ने परमेश्वर पर अन्यायी, निर्दयी और पक्षपाती होने का आरोप लगाया है। एक हजार वर्षो के लिए ये विचार थमकर परमेश्वर के चरित्र को सम्पूर्ण सृष्टि के समक्ष सही ठहरा देगा। परन्तु हमें दुष्ट स्वर्गदूतों तथा दुष्ट पापियों का न्याय करने की क्या आवश्यकता है क्या मसीह के आगमन से पहले ही उनका न्याय नहीं हो चुका होगा?

50

सत्य है लेकिन क्या आपने कभी कल्पना की है कि स्वर्ग में से किसी ऐसे व्यक्ति को देखकर आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी जिसे आपकी राय में नाश होने वालों में होना चाहिए था?

आप को परमेश्वर के न्याय की निष्पक्षता पर सन्देह हो सकता है।

51

नाश हो चुके लोगों के जीवन के लेख इन एक हजार वर्षो के बीच खोले जायेंगे तथा अत्यन्त छुपे हुए रहस्य और प्रत्येक दिमाग में संजोये गये उद्देश्यों पर से पर्दा उठ जाएगा।

परमेश्वर का प्रेम और न्याय सही ठहराया जाएगा।

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

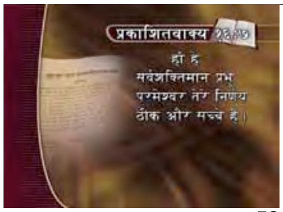

52

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १६:७)

जीवन लेखों के जांच करने वालों की केवल एक ही प्रतिक्रिया होगीः "हाँ, हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे निर्णय ठीक और सच्चे हैं।"

प्रकाशितवाक्य १६:७

53

आप सोच रहे होंगे कि उनका क्या हुआ जिन्होंने उद्धार को स्वीकार नहीं किया लेकिन मसीह के आगमन के समय जीवित थे। प्रकाशितवाक्य का १९ वाँ अध्याय मसीह के दूसरे आगमन और उद्धार-रहित लोगों के विनाश का वर्णन करता हैः

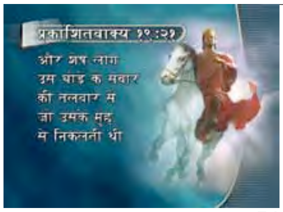

54

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य १९:२१)

"और शेष लोग उस घोड़े के सवार की तलवार से जो उसके मुंह से निकलती थी

55

मार डाले गए..."

प्रकाशितवाक्य १९:२१

56

उद्धार रहितों के लिए कोई रास्ता नहीं कि वे मसीह और उसके सब पवित्र दूतों के आगमन की महिमा के सामने ठहर सकें।

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

57

एक स्वर्गदूत यीशु की कब्र पर आया और रोमी सिपाही मृतक समान हो गए।

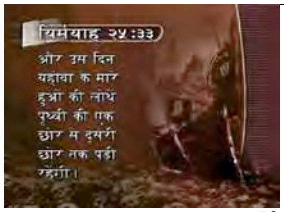

58

(मूलपाठः यिर्मयाह २५:३३)

बाइबिल कहती है कि "और उस दिन यहोवा के मारे हुओं की लोथें पृथ्वी की एक छोर से दूसरी छोर तक पड़ी रहेंगी।

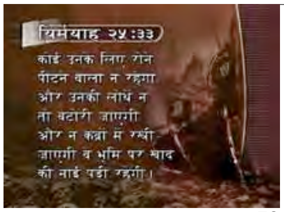

59

कोई उनके लिए रोने पीटने वाला न रहेगा और उनकी लोथें न तो बटोरी जाएंगी और न कब्रों में रखी जाएंगी वे भूमि पर खाद की नाई पड़ी रहेगी।"

यिर्मयाह २५ : ३३

60

मसीह के दूसरे आगमन के समय पर धर्मियों का पुनरुत्थान होता है और वे मसीह से बादलों में मिलने के लिए उठा लिए जाते हैं,

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

61

और उद्धार रहित लोग उसके आगमन के तेज से, और "उस तलवार से जो उस के मुंह से निकलती है।" मारे जाएंगे।

कोई पूछेगा कि "उन उद्धार-रहित मृतकों का क्या होगा जो उस समय कब्रों में होंगे?"

उत्तर प्रकाशितवाक्य के २०वें अध्याय के पाचवें पद में पाया जाता हैः

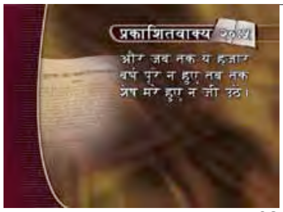

62

(मूलपाठः प्रकाशित ाक्य २०:५)

"और जब तक ये हजार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठें..."

63

पहेली सुलझने लगी है यीशु मसीह के वापस आने पर क्या होगा इस की बड़ी तस्वीर साफ होने लगी हैः

64

ये वे घटनाएं हैं जो मसीह के दूसरे आगमन के समय घटती हैं

65

१. यीशु सब स्वर्गदूतों के साथ आयेंगे।

(मती २५ :३१)

66

२. जो मसीह में मरे हैं वे पहिले जी उठेंगे।

१. थिस्सलुनिकियो ४:१६

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

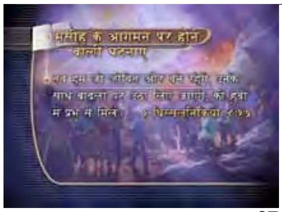

67

३. तब हम जो जीवित और बचे रहेगें, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में
प्रभु से मिले।

१. थिस्सलुनिकियो ४:१७

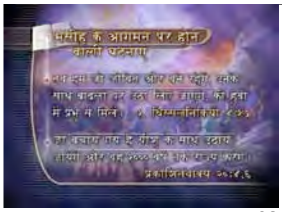

68

४. जीवित धर्मी यीशु के साथ स्वर्ग जाते हैं और उनके साथ १००० वर्ष तक राज्य करते हैं।

प्रकाशितवाक्य २०:४,६

69

५. उद्धाररहित मसीह के आगमन की चमक से मर जायेगें।

यिर्मयाह २५:३३

70

६. दुष्ट मृतक तब तक नहीं जिलाये जाते जब तक एक हजार वर्ष पूरे न हो जाएं।

प्रकाशितवाक्य २०:५

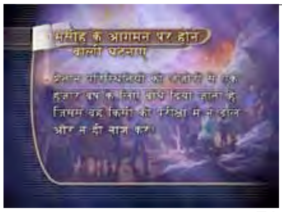

71

७. शैतान परिस्थितियों की जंजीरों से एक हजार वर्ष के लिए बांध दिया जाता है जिससे वह किसी को परीक्षा में न डाले और न ही नाश करे!

यिर्मयाह ४ २३-२६

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

72

धर्मी स्वर्ग में हैं और सब दुष्ट मर चुके हैं!

अब कोई नहीं है हर जगह विनाश ही विनाश है।

यिर्मयाह ४ : २३–२६

73

पृथ्वी शैतान की जेल बन जाती है बाइबल बताती है कि शैतान १००० वर्ष के लिए अथाह कुण्ड में डाल दिया जाता है।

वह कैसे बंधा है?

परिस्थितियों की जंजीरों से जो उसे १००० वर्ष तक किसी को भी परिक्षा में डालने और नाश करना असंभव बना देती है।

74

जिन्होंने पृथ्वी पर अपने जीवन में शैतान का अनुसरण किया वे मसीह के आगमन पर या तो मर जाएंगे या वे १००० वर्ष पूरे होने तक कब्रों में ही रहेगें।

75

उद्धार पाये हुए १००० वर्ष के लिए मसीह के साथ रहेगें।

76

शैतान के पास परीक्षा में डालने और पथ भ्रष्ट करने के लिए केवल उसके दुष्ट दूत हैं और वे ६००० वर्ष में उतने बुरे बन चुके हैं जितना वह स्वयं है।

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

77

यह पृथ्वी उस की जेल बन जाती है। वह दिखाना चाहता था कि वह संसार पर कैसे शासन करेगा, इसलिए उसने आदम हव्वा को धोखा देकर उनसे अधिकार ले लिया। किन्तु अब सब लोग जान जायेंगे कि वास्तव में वह किस प्रकार का शासक है!

78

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २०:३)
आपको याद होगा कि प्रकाशितवाक्य कहता है "और उसे अथाह कुण्ड में डाल कर बन्द कर दिया जायेगा और उस पर मुहर लगा दी जायेगी,

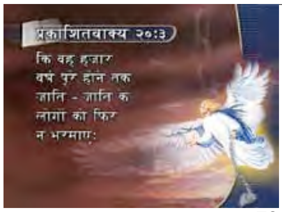

79

कि वह हजार वर्ष पूरे होने तक जाति -जाति के लोगों को फिर न भरमाएः

80

और उसके बाद अवश्य है कि थोड़े समय के लिए वह खोला जाए।" अथाह कुण्ड का अर्थ बाईबिल का मूल शब्द पाताल है या अथाह गड्ढा। यह वही शब्द है जो पुराने नियम में संसार की उस सुनसान स्थिति का वर्णन करने के लिए किया गया है, जबकि परमेश्वर ने इस सुन्दर संसार की रचना नहीं की थी।

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

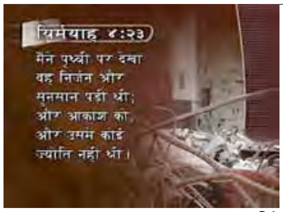

81

(मूलपाठः यिर्मयाह ४:२३)
"मैंने पृथ्वी पर देखा वह निर्जन और सुनसान पड़ी थी ; और आकाश को, और उसमें कोई ज्योति नहीं थी।"
यिर्मयाह ४:२३

82

हाँ, संसार एक उजड़ा स्थान या अथाह कुण्ड था! यह अन्धकार का स्थान हो जाएगा अब ध्यान दीजिए कि इस समय की पृथ्वी के विषय यिर्मयाह और क्या कहना चाहता है :

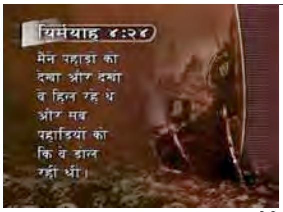

83

(मूलपाठः यिर्मयाह ४:२४-२५)
"मैंने पहाड़ों को देखा और देखो वे हिल रहे थे और सब पहाड़ियों को कि वे डोल रहीं थीं।

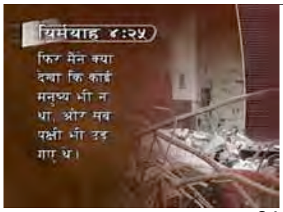

84

फिर मैंने क्या देखा कि कोई मनुष्य भी न था, और सब पक्षी भी उड़ गए थे।"
यिर्मयाह ४:२४,२५
आप देखेंगे कहा गया कि "कोई मनुष्य भी नहीं था।"

85

(मूलपाठः यिर्मयाह ४:२६)
यिर्मयाह पुनः कहता है कि "मैंने देखा, और, देखो उपजाऊ देश जंगले,

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

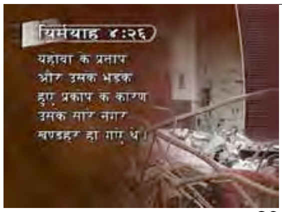

86

यहोवा के प्रताप और उसके भड़के हुए प्रकोप के कारण उसके सारे नगर खण्डहर हो गए थे।"

२६,२७ पद।

87

निश्चय ही ऐसा स्थान १००० वर्ष की छुटटी बिताने के लिए एक भयानक स्थान होगा। क्या आप ऐसा नहीं मानते? शैतान और दुष्ट दूतों के पास अन्धकार वीरान एकान्त ग्रह पर इधर उधर भटकने और परमेश्वर के विरुद्ध अपने विद्रोह के परिणामों पर चिन्तन करने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं होगा।

88

अब आइए, हम उन घटनाओं पर पुनर्विचार करें जो १००० वर्ष के दौरान घटने वाली हैं:

89

१ पृथ्वी निर्जन और उजाड़ है।

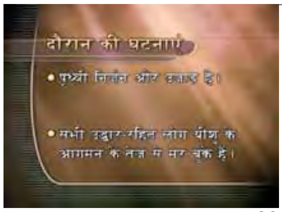

90

२. सभी उद्धार रहित लोग यीशु के आगमन के तेज से मर चुके हैं।

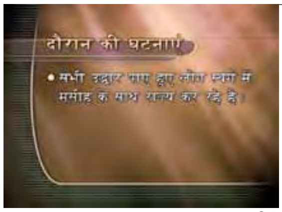

91

३. सभी उद्धार पाए हुए लोग स्वर्ग में मसीह के साथ राज्य कर रहे हैं।

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

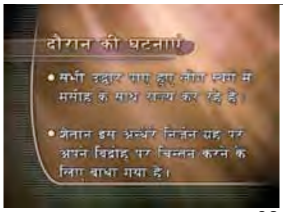

92

४. शैतान इस अन्धेरे निर्जन ग्रह पर अपने विद्रोह पर चिन्तन करने के लिए बांधा गया है।

93

क्या शैतान बदलेगा?

उन दूतों का क्या होगा जिन्होंने शैतान का विद्रोह में साथ दिया?

क्या वे पुनः उसके पीछे चलने का निर्णय करेंगे या वे अब मसीह के पीछे चलेंगे? परमेश्वर का १००० वर्ष को अपने समय चक्र में रखने के कारणों में एक कारण है कि परमेश्वर इस विश्व को दिखाना चाहता है कि शैतान, उसके दूतों, और उनका पीछा करने वालों को यदि पुनः अवसर भी दिया जाए तब भी वे वही निर्णय करेंगे और अपने उसी स्वामी के पीछे चलेंगे।

94

चाहे उन्हें उद्धार की योजना को स्वीकार करने के हजारों अवसर भी क्यों न दिए जाएं फिर भी वे उसको स्वीकार नहीं करेगें।

95

बाइबिल उनके चुनाव के बारे में क्या कहती है?

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

96

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २०:७,८) उत्तर प्रकाशितवाक्य २०:७,८ में दिया गया है कि "और जब हजार वर्ष पूरे हो जाएंगे तो शैतान को कैद से छोड़ दिया जाएगा

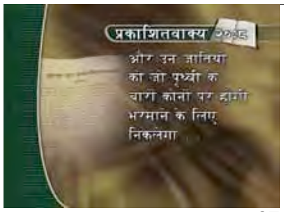

97

और उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों कोनों पर होंगी भरमाने के लिए निकलेगा...

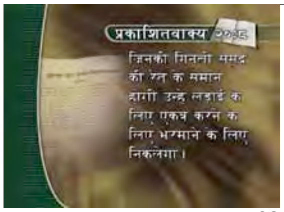

98

जिनकी गिनती समुद्र की रेत के समान होगी उन्हें लड़ाई के लिए एकत्र करने के लिए भरमाने के लिए निकलेगा।"

प्रकाशितवाक्य २०:७, ८

शायद आप सोच रहें होंगे कि इस लड़ाई में जाने वाले ये सब लोग कहाँ से आयेंगे।

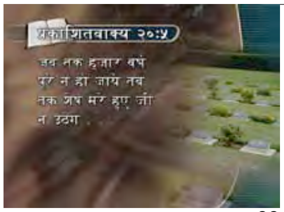

99

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २०:५)

याद रखें हमने प्रकाशितवाक्य के २०वें अध्याय और ५वें पद में पढ़ा

"जब तक हजार वर्ष पूरे न हो जाये तब तक शेष मरे हुए जी न उठेंगे।"

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

100

जी हाँ, शेष मृतक या उद्धार रहित मृतक एक हजार वर्ष का समय समाप्त होने के बाद दंड के पुनरुत्थान में जी उठते हैं।

यह क्या ही दृश्य होगा कि आदम से लेकर दूसरे आगमन तक के सभी दुष्ट बहुत बड़ी संख्या में जी उठेंगे।

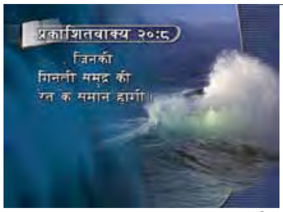

101

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २०:८)

यूहन्ना कहता है "जिनकी गिनती समुद्र की रेत के समान होगी।"

प्रकाशितवाक्य २०:८

102

ठीक इसी समय १००० वर्ष का समय समाप्त होने पर पवित्र नगरी नया यरुशलेम मसीह और उद्धार प्राप्त लोगों के साथ इस पृथ्वी पर उतरेगा। बाईबिल कहती है कि यही नगरी शैतान के क्रोध का निशाना बन जाएगी।

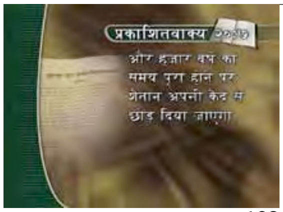

103

(मूलपाठः प्रकाशिताक्य २०:७,८)

"और हजार वर्ष का समय पूरा होने पर शैतान अपनी कैद से छोड़ दिया जाएगा,

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

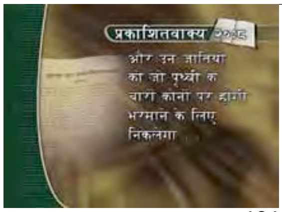

104

और उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों कोनो से होंगी भरमाने के लिए निकलेगा---

105

लड़ाई के लिए एकत्र करने के लिए निकलेगा।"

प्रकाशितवाक्य २०:७,८

106

अब शैतान और उसके दुष्ट दूत दुष्टों को पुनः भरमाने के लिए निकलेगें वह बिल्कुल नहीं बदलता!

उद्धार रहित शैतान को पुनः अपना नेता चुनेगें!

शैतान उनकी एक बड़ी सेना बना कर नये यरुशलेम को बलपूर्वक छीनने के लिए लेकर जायेगा।

यह पृथ्वी की अन्तिम लड़ाई है!

विद्रोह की अगुवाई में विशाल सेना आगे बढ़ती है!

107

आइए पढ़ें कि बाइबिल के अनुसार क्या होगाः

108

(मूलपाठ : प्रकाशित्तवाक्य २०:९)

"और वे सारी पृथ्वी पर फैल कर पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगरी को घेर लेंगे।

109

और आग स्वर्ग से उतर कर उन्हें भस्म कर देगीं।"

प्रकाशितवाक्य २०:९

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

110

लड़ाई समाप्त हुई! कितने दु:ख की बात है कि ऐसा होने की आवश्यकता नहीं थी! शैतान का क्या होगा? बाईबिल हमें बताती है:

111

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य २०:१,१४,१५)
"उन्हें भरमाने वाला शैतान आग और गन्धक की झील में डाला गया...

112

मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह दूसरी मृत्यु है।

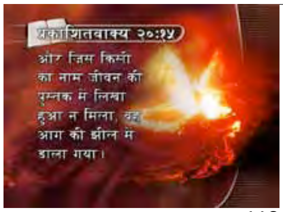

113

"और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।"
प्रकाशितवाक्य २०:१०, १४, १५
पतरस ने यह आग दर्शन में देखी और लिखा :

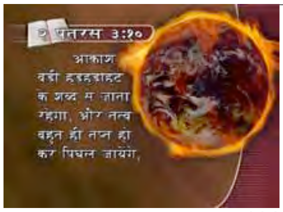

114

(मूलपाठ: २ पतरस ३:१०)
"... आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त हो कर पिघल जायेंगे,

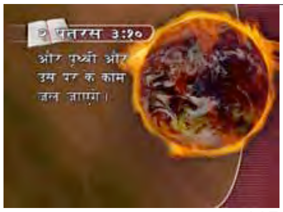

115

और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे।"
२ पतरस ३:२०
शैतान उसके दुष्ट दूत और पापी हमेशा के लिए समाप्त हो जाएंगे!

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

116

हमारे रिश्तेदार, मित्र या जान पहचान वाले हमेशा के लिए जाते रहेंगे जिन्हें हम अत्यधिक प्रेम करते हैं वास्तव में हम रोयेंगे। नहीं तो यह कैसे हो सकता था?

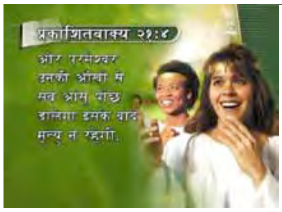

117

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २१:४)

परन्तु अच्छा समाचार यह है कि "और परमेश्वर उनकी आँखों से सब आंसू पोंछ डालेगा इसके बाद मृत्यु न रहेगी,

118

और न शोक, न विलाप, न पीड़ा, रहेगी पहली बातें जाती रहेंगी।"

प्रकाशितवाक्य २१:४

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

119

उद्धार पाए हुओं के लिए परमेश्वर क्या ही महिमामय अनन्त की प्रतिज्ञा करता है।

परमेश्वर उनके लिए जो उससे प्रेम करते हैं और उसके पीछे चलने के इच्छुक हैं एक स्वर्गलोक का निर्माण कर रहा है जिसकी महिमा और सुन्दरता की मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता। और सोचने के लिए कि दुष्ट भी इसका आनन्द ले सकते थे, लेकिन कीमत बहुत अधिक लगी।

वे मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता चुनने के लिए तैयार नहीं थे। मेरे मित्र उस दिन आप कौन से समूह में होंगे? यदि वह दिन आ जाये तो दल बदलने के लिए समय नहीं मिलेगा। १००० वर्ष के आरम्भ में जब यीशु आते है तब तक बहुत देर हो चुकी होगी यदि आप बिना चेतावनी के अचानक मर जायें तबभी देर हो चुकी होगी। सम्पूर्ण निश्चय के लिए कि आप एक हजार वर्ष के अन्त में धर्मियों के मध्य होंगे इसके लिए एक ही मार्ग है कि आप आज ही अपना दिल और जीवन पूरी तरह से यीशु को दे दें।

२४ - जंजीरों में जकड़ी बुराई

120

यदि आप अपना जीवन पूरी तरह यीशु को देना चाहते हैं, मैं चाहूंगा कि आप विशेष प्रार्थना के लिए आगे आएं।

यदि आप के जीवन में कोई समस्या है इसी समय विशेष प्रार्थना के लिए आगे आएं।

यदि कोई आदत है जिस पर आप विजय प्राप्त करना चाहते हो प्रार्थना के लिए आगे आएं।

यीशु आपकी सुनेगें। यीशु उत्तर देगें। मैं एक मिनट प्रतीक्षा करुंगा, लेकिन आप आयें और अभी आगे आएं।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

1

स्वर्ग वास्तविक है

2

एक छोटी लड़की की कहानी बतायी जाती है, जो अपने जीवन भर शहर में रहती रही। शहर के चकाचौंध प्रकाश के कारण उसने कभी तारे नहीं देखे थे। एकबार गर्मियों में उसकी माँ उसे छुटटी पर गाँव ले गई।

3

संध्या के समय सूर्यास्त के बाद आकाश में सितारे हीरों के समान जगमगाने लगे। छोटी लड़की ने आश्चर्य से ऊपर देखा। वह तारों जड़े आसमान की सुन्दरता को देखकर अति प्रसन्न हुई। उसने कहा, "ओह माँ, यदि स्वर्ग बाहर से इतना सुन्दर है तो अन्दर से कितना सुन्दर होगा।

4

(दृश्य)

स्वर्ग के विषय ने संसार भर के स्त्री पुरुषों का सदियों से ध्यान आकर्षित किया है। स्वर्ग वास्तव में कैसा है?

क्या यह वास्तव में कहीं है भी?

यदि हाँ तो कहाँ है और कैसा है?

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

5

कुछ लोग स्वर्ग में विश्वास नहीं करते कुछ लोग कहते हैं कि तीन या सात स्वर्ग हैं।

कुछ कहते हैं कि मरने पर इंसान स्वर्ग को जाता है।

6

कुछ लोग कहते हैं - नहीं पहले इंसान पाप मोचन स्थान में जाता है और उसके बाद शायद स्वर्ग में।

7

कुछ कहते हैं स्वर्ग कोई वास्तविक स्थान नहीं किन्तु केवल एक मानसिक दशा है।

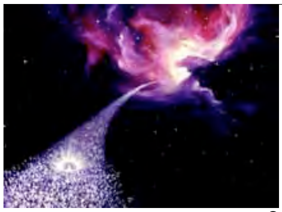
8

कुछ ऐसे भी हैं जो विश्वास करते हैं कि अन्त में सब लोग स्वर्ग में जाएंगे। कुछ कहते हैं कि केवल थोड़े से लोग ही वहाँ पहुँच सकते हैं। कितनी अधिक गड़बड़ी है। कितने मतभेद है!

9

(दृश्य)

स्वर्ग के विषय में इतने अलग अलग विचार क्यों हैं? जबकि बाइबिल इसे एकदम स्पष्ट करती है तो इतने अलग अलग विचार और सिद्धान्त क्यों हैं?

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

10

क्या आप जानते हैं कि वास्तव में बाइबिल स्वर्ग के विवरणों से भरी पड़ी है? परमेश्वर चाहता है कि हम स्वर्ग के विषय में जानें ताकि वहाँ होने के लिए दृढ़ फैंसला करें! स्वर्ग कोई गुप्त स्थान नहीं है जिसे परमेश्वर ने हमसे छुपा रखा हो।

11

बहुत -सी बड़ी इमारतों में एक ऐसी चाबी होती है जो प्रत्येक ताले और प्रत्येक दरवाजे में लग सकती है।

12

इमारत के मालिक के पास वह चाबी होती है जिसे मास्टर चाबी कहा जाता है। उस एक ही चाबी से सब दरवाजे खुलते हैं।

13

परमेश्वर के पास एक मास्टर चाबी है जिससे स्वर्ग के सभी रहस्य खुलते हैं और वह मास्टर चाबी है बाइबिल हमारी जानकारी का एक मात्र विश्वास योग्य जानकारी स्रोत। सौभाग्य से हमें मानवीय सिद्धान्तों और विचारों पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। हमे स्वर्ग के वास्तविक सत्य के विषय में किसी भ्रम में रहने की आवश्यकता नहीं है।

14

प्रेरित पतरस ने जानकारी के इस स्रोत के बारे में लिखा।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

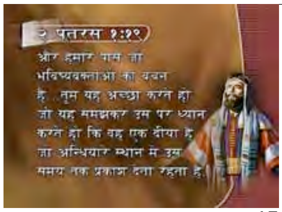

15

(मूलपाठः २ पतरस १:१९)

"और हमारे पास जो भविष्यवक्ताओं का वचन है। तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है जो अन्धियारे स्थान मे उस समय तक प्रकाश देता रहता है,

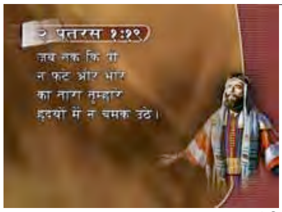

16

जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे।"

२ पतरस १:१९

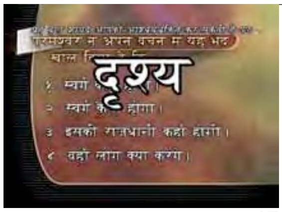

17

परमेश्वर ने अपने वचन में यह भेद खोल दिया है कि

स्वर्ग कहाँ होगा

स्वर्ग कैसा होगा

इसकी राजधानी कहाँ होगी

वहाँ लोग क्या करेंगे

वहाँ किस प्रकार के लोग होंगे

उद्धार पाए हुए लोग कहाँ रहेंगे

इसकी राजधानी कैसी होगी

18

अब आइये परमेश्वर की मास्टर चाबी बाइबिल को लेकर उस वास्तविक भविष्य को खोजें जो परमेश्वर ने अपने अनुयायियों के लिए तैयार किया है।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

19

बाइबिल की अन्तिम पुस्तक प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर ने स्वयं ही यूहन्ना के समक्ष भविष्य की तस्वीर प्रकट की है। यूहन्ना ने जो देखा उसका वर्णन किया है:

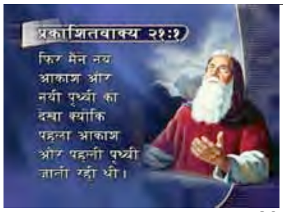

20

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य २१:१,२)

"फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी।

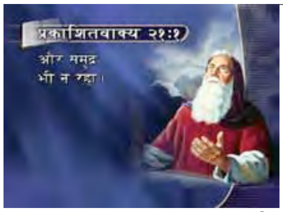

21

और समुद्र भी न रहा।

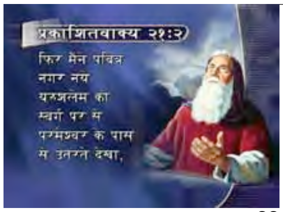

22

फिर मैंने पवित्र नगर नये यरुशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा,

23

और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।"

प्रकाशितवाक्य २१:१,२

24

कुछ दृश्य विवाह दिवस के लिए तैयार दुल्हिन जैसी सुन्दरता और प्रसन्नता प्रस्तुत करते हैं!

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

25

केवल यूहन्ना ने ही यह स्वर्गीय निवास नहीं देखा। परमेश्वर के सभी भविष्यवताओं ने इसके बारे में युगों से जाना है। सुनिए:

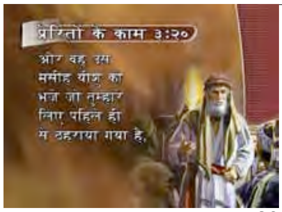

26

(मूलपाठ: प्रेरितों के काम ३:२०,२१)
"और वह उस मसीह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिए पहिले ही से ठहराया गया है,

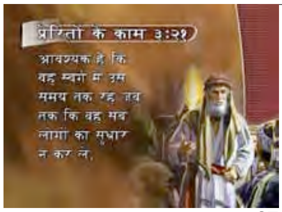

27

आवश्यक है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब लोगों का सुधार न कर ले,

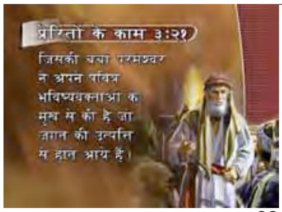

28

जिसकी चर्चा परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुख से की है जो जगत की उत्पत्ति से होते आये हैं।"
प्रेरितों के काम ३:२०,२१

29

परमेश्वर किसकी पुनः स्थापना करने वाला है?
परमेश्वर प्रत्येक उस वस्तु की पुनः स्थापना करने वाला है जो आदम और हव्वा ने खो दी थी!
जब पृथ्वी अपने सृष्टिकर्ता के हाथों से निकली तब वैभव पूर्ण, त्रुटिरहित, और वर्णन से अधिक सुन्दर थी।

30

आदम और हव्वा के घर, अदन की वाटिका को सृष्टिकर्त्ता ने स्वयं ही बनाया और सजाया था।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

31

उन्हें पूरी तरह स्वास्थ्य, प्रेम, आनन्द, और परमेश्वर के साथ आमने-सामने की संगति प्राप्त थी। सब कुछ शान्ति और अनुरुपता में था। यदि वे परमेश्वर के निर्देशों का पालन करते, तो न तो वे कभी बीमार होते और न ही मरते।

32

और उसके निर्देश थे "अदन की वाटिका के वर्जित वृक्ष के फल को मत खाना, नहीं तो तुम मर जाओगे।"

33

किन्तु उन्होंने उसी पेड़ में से खाया। एक प्रेमी और दयालु परमेश्वर की सुनने की अपेक्षा उन्होंने एक निर्दयी, धोखेबाज, और विद्रोही स्वर्गदूत शैतान की सुनी।

34

इसके बाद उन्होंने अपने जीवन में पहली बार दोष, लज्जा, और भय का अनुभव किया। पृथ्वी के इतिहास में यह सबसे अधिक शोकपूर्ण दिन था। अपने आज्ञा उल्लंघन द्वारा उन्होंने अपना वाटिका का घर, पृथ्वी पर अधिकार, और जीवन के पेड़ तक की पहुँच -- सब कुछ खो दिया। जीवन के पेड़ का फल न खा पाने के कारण उनकी मृत्य निश्चित थी।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

35

अब उनके पास अनन्त जीवन नहीं था। उनकी प्रसन्नता, प्रेम, और सृष्टिकर्ता के साथ संगति समाप्त हो गई थी। हमारा सिद्ध संसार पाप के शाप से रोगी हो गया। पृथ्वी दु:ख, पीड़ा, बीमारी और मृत्यु का घर बन गई। अब स्वामी नहीं, आदम और हव्वा दास बन चुके थे।

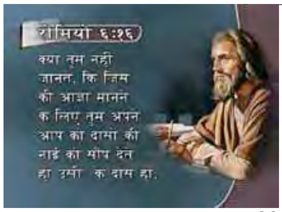

36

(मूलपाठः रोमियो ६:१६)
पौलुस कहता है कि "क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिए तुम अपने आप को दासों की नाई को सौंप देते हो उसी के दास हो,

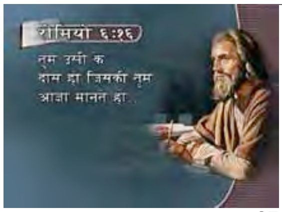

37

तुम उसी के दास हो जिसकी तुम आज्ञा मानते हो?"
रोमियो ६:१६
लेकिन एक प्रेमी और दयालु परमेश्वर समझता था। सर्प ने आदम और हव्वा को धोखा दिया था। परमेश्वर उनसे इतना अधिक प्रेम रखता था कि वह अपने गलती करने वाले बच्चों को आशा रहित नहीं छोड़ सकता था।

38

वाटिका के द्वार पर परमेश्वर ने आदम और हव्वा से प्रतिज्ञा की कि एक दिन उसका पुत्र, "स्त्री का वंश" आएगा और उनके लिए मरेगा ताकि वे परमेश्वर के परिवार से जुड़ सकें और अनन्त जीवन पा सकें।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

39

(मूलपाठः उत्पत्ति ३:१५)

"और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच और तेरे और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करुंगा;

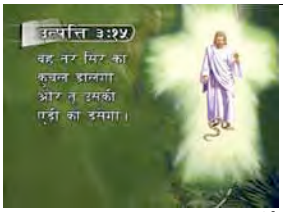

40

वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा।"

उत्पत्ति ३:१५

41

जैसे पीढ़ियां गुजरीं और पृथ्वी पर लोगों की संख्या बढ़ी, वैसे पाप भी बढ़ता गया। मानव जाति ने परमेश्वर और उसकी प्रतिज्ञा को लगभग पूरी तरह भुला दिया।

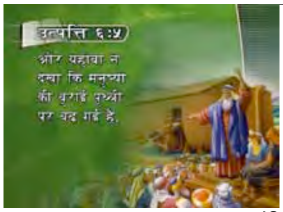

42

(मूलपाठः उत्पत्ति ६:५)

लोग दुष्ट और दुराचारी हो गये "और यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है,

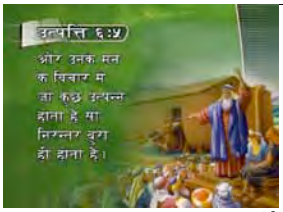

43

और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है।"

उत्पत्ति ६:५

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

44

अन्ततः परमेश्वर के लिए पृथ्वी पर जीवन सुरक्षित रखने के लिए यह आवश्यक हो गया कि दुष्टों का जल प्रलय द्वारा नाश किया जाए।

केवल आठ लोग बचे! जल प्रलय के बाद बहुत पीढ़ियाँ नहीं बीती थी कि मनुष्य पुनः नष्ट हो गए।

45

पृथ्वी पर पवित्र लोगों को बचाए रखने के लिए परमेश्वर ने कसदियों के मूर्तिपूजक और भ्रष्ट लोगों में से अब्राहम और उसके परिवार को बुलाया। उसका परिवार यदि उस शहर में रहता तो निश्चय ही वह भी दुष्ट हो जाता।

46

(मूलपाठः उत्पत्ति १२:१,२)

यहोवा ने अब्राहम से कहा, ".. अपने देश अपने घर और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा।"

47

"मैं तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊँगा मै तुझे आशीष दूंगा और तेरा नाम बड़ा करुंगा और तू आशीष का मूल होगा।"

उत्पत्ति १२:१,२

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

48

अब्राहम अपने कसदियों के घर के सुख विलास को छोड़ने के लिए तैयार था। वह नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा था किन्तु उसने उसकी एक झलक देख ली थी जो परमेश्वर ने उसके लिए रखा था।

49

(मूलपाठ: इब्रानियों ११:९,१०)
"विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किये हुए देश में जैसे पराये देश में परदेसी रहा,

50

इसहाक और याकूब समेत जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे तम्बुओं में वास किया।"

51

क्योंकि वह उस स्थिर नेववाले नगर की बाट जोहता था जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है।"
इब्रानियों ११:९, १०
वह सब जो आदम और हव्वा ने खोया था, परमेश्वर ने अब्राहम और उसके परिवार को देने का वचन दिया।

52

सभी युगों के भविष्यवक्ताओं ने विश्वास किया और सब वस्तुओं की पुनः स्थापना की आशा की।
परमेश्वर की सूची में बाइबिल के कुछ विश्वास के नायकों को

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

53

इब्रानियों के अध्याय ११ में अब्राहम, हनोक, नूह, हाबिल, इसहाक, रहाब, दाउद, और शमूएल इत्यादि महान विश्वासी लोगों में से कुछ नाम हैं। इन्होंने आदम और हव्वा से खोई हुई अच्छी वस्तुओं की पुनः स्थापना की परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया। ध्यान दीजिए कि इनके विषय में बाइबिल क्या कहती है:

54

(मूलपाठः इब्रानियो ११:१३, १६)
"ये सब विश्वास ही की दशा में मरे और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुए नहीं पाई पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया ---

55

पर वे एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं इसीलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता,

56

सो उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है।"
इब्रानियो ११:१३,१६

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

57

यशायाह जो मुक्तिदाता सम्बन्धी भविष्यवक्ताओं में सबसे महान था, परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए पुनःस्थापना का रोमांचकारी वर्णन प्रस्तुत करता है। आइए हम उन वस्तुओं पर एक दृष्टि डालें जो परमेश्वर ने यशायाह पर प्रकट कीं।

58

(मूलपाठ: यशायाह ६५:१७)
"क्योंकि देखो मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करता हूँ :

59

और पहली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगे।"
यशायाह ६५:१७

60

(मूलपाठ: यशायाह ६०:१८)
और फिर: "तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और तेरे सिवानों के भीतर उत्पात व अन्धेर की चर्चा न सुनाई पड़ेगी;

61

परन्तु तू अपनी शहर पनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखेगी।"
यशायाह ६०:१८

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

62

(दृश्य)

सोचिए, वहां कोई अपराध नहीं होगा। केवल शान्ति और सौहार्द! यह कितनी सुखदायी बात है कि हमारी सुरक्षा और बचाव के लिए किसी हथियार की आवश्यकता नहीं होगी। कोई बलात्कारी और चोर नहीं होंगे!

क्या उन सोने की गलियों में बिना किसी आक्रमण या लूट की चिन्ता किये हुए टहलना आश्चर्यजनक नहीं होगा? लेकिन यही सब कुछ नहीं है जो भविष्यवक्ता हमें बता सकते हैं। सुनिए।

63

(मूलपाठः यशायाह ११:६)

"तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा करेगा ...

64

और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा।"

यशायाह ११:६

65

अब सुनिए बाइबिल पृथ्वी ग्रह के विषय में और क्या कहती है जब पृथ्वी पूर्णरुप से अपनी असली वाली सुन्दरता में स्थापित हो जाएगीः

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

66

(मूलपाठः यशायाह ३३:२४)

"कोई निवासी न कहेगा कि मैं रोगी हूं..."

यशायाह ३३:२४

कोई दिल का दौरा कोई एलर्जी नहीं, सदैव के लिए केवल पूर्णरूप से स्वस्थ!

क्या यह महान समाचार नहीं है?

67

(मूलपाठः यशायाह ३५ :५)

"तब अन्धों की आखें खोली जाएंगी ..."

यशायाह ३५ :५

इसमें कोई संदेह नहीं कि पहले जो अंधे थे वे पहले यीशु का चेहरा देखना चाहेंगें! ओह, कितना महान दिन होगा वह उनके लिए जो अन्धे थे!

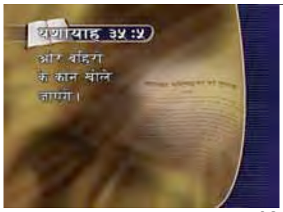

68

(मूलपाठः यशायाह ३५ :५ ,६)

"और बहिरों के कान खोले जाएंगे।"

यशायाह ३५ :५

69

"तब लंगड़ा हरिण के तरह उछलेगा ---"

यशायाह ३५ :६

कोई पहियों वाली कुर्सी नहीं! कोई बैसाखी नहीं! सबकी स्वस्थ देह होगी।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

70

(मूलपाठः यशायाह ३५:६)

"...और गूंगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे।"

वे केवल बोलेंगे ही नहीं किन्तु जयजयकार करेंगे!

कितना खुशी का दिन होगा वह! लेकिन इससे भी अधिक आश्चर्यजनक समाचार है!

71

(मूलपाठः यशायाह ३५:१)

"जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे मरुभूमि मगन होकर केसर की नाई फूलेगी।"

यशायाह ३५:१

नई पृथ्वी कितनी सुन्दर जगह होगी!

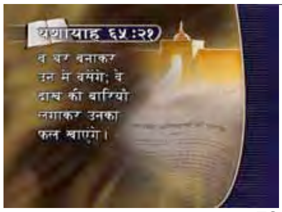

72

(मूलपाठः यशायाह ६५:२१,२२)

"वे घर बनाकर उन में बसेंगे;

वे दाख की बारियाँ लगाकर उनका फल खाएंगे।

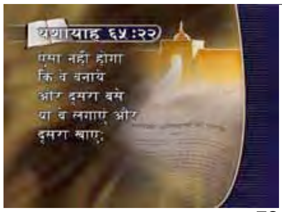

73

ऐसा नहीं होगा कि वे बनाये और दूसरा बसे या वे लगाएं और दूसरा खाए;

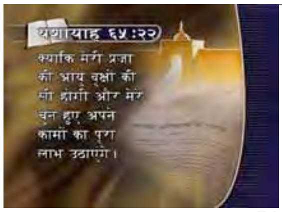

74

क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे।"

यशायाह ६५:२१,२२

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

75

निश्चय ही ऐसा लगता है कि स्वर्ग वास्तविक लोगों के साथ वास्तविक स्थान होगा जो वास्तविक काम करेंगे, है कि नहीं?

वास्तव में हमारे सबके अपने नाम होंगे और लोग हमें जानते होंगे!

76

(मूलपाठः यशायाह ६५ :२२,२३)

"क्योंकि जिस प्रकार नया आकाश और नयी पृथ्वी जो मैं बनाने पर हूँ मेरे सम्मुख बनी रहेगी, यहोवा की यही वाणी है,

77

उसी प्रकार तुम्हारा वंश और तुम्हारा नाम भी बना रहेगा यहोवा की यही वाणी है।"

यशायाह ६६:२२

78

"फिर ऐसा होगा कि एक नये चांद से दूसरे चांद के दिन तक और एक विश्राम दिन से दूसरे विश्राम दिन तक,

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

79

समस्त प्राणी तेरे सामने दण्ड़वत करने को आया करेंगे। यहोवा की यही वाणी है।"

यशायाह ६६:२३

नयी पृथ्वी परमेश्वर और उसकी प्रजा के लिए एक प्रसन्नता और आनन्द का स्थान होगी।

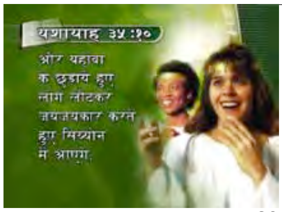

80

(मूलपाठः यशायाह ३५:१०)

"और यहोवा के छुड़ाये हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे,

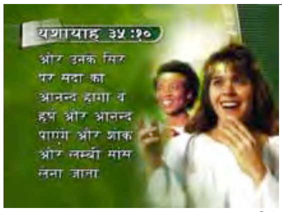

81

और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा वे हर्ष और आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी सांस लेना जाता रहेगा।"

यशायाह ३५ : १०

क्या यह उत्तेजक नहीं लगता?

82

यह अद्भुत आनन्दमय उत्सव होगा जब उद्धार पाए हुए प्रत्येक सब्त को पवित्र नगर में जयजयकार करने गाने और संगति के लिए आएंगे।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

83

यीशु ने कहा वे हममें से प्रत्येक के लिए भवन बनवा रहे है। हम उसका आनन्द तो लेंगे ही, किन्तु यशायाह कहता है कि हम भी घर बनायेंगे! ऐसा लगता है कि शायद हमारा एक घर शहर से बाहर होगा जिसे हम स्वयं बनायेंगे। पर प्रत्येक सप्ताहान्त हम नयी पृथ्वी के मुख्य नगर में जायेंगे और नगर में बने अपने घर का प्रयोग करेंगे।

84

(दृश्य)

बाइबिल में स्वर्ग की तस्वीर साफ है परमेश्वर नया स्वर्ग और नयी पृथ्वी बनायेगा। पवित्र नगर नया यरुशलेम परमेश्वर के पास से स्वर्ग से नीचे उतरेगा। पृथ्वी विद्रोह ग्रह पाप पतित नये विश्व की राजधानी बन जाएगी।

आपको आश्चर्य हो सकता है किन्तु यह पृथ्वी उद्धार पाये हुओं का आनेवाला घर बनना है। यीशु ने ऐसा ही कहा था।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

85

(मूलपाठः मत्ती ५:५)

"धन्य है वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।"

मत्ती ५:५

परमेश्वर इस पृथ्वी ग्रह को पुनः सिद्धता की अवस्था में लायेगा और वह क्या ही महिमामय नई पृथ्वी होगी।

86

संभवतः आपको यीशु की अदभुत प्रतिज्ञाओं में से कुछ याद होंगी जो उन्होंने स्वर्ग वापस लौटने से पूर्व अपने चेलों और अपने सभी युगों के मानने वालों को दिया :

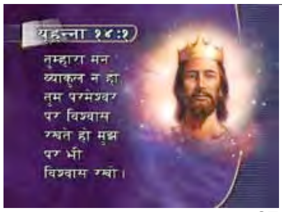

87

(मूलपाठः यूहन्ना १४:१-३)

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।

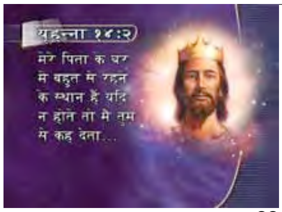

88

मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं यदि न होते तो मै तुम से कह देता ...

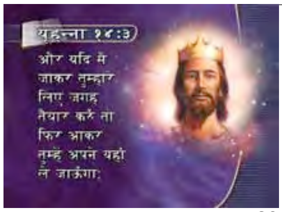

89

और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करुँ तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा;

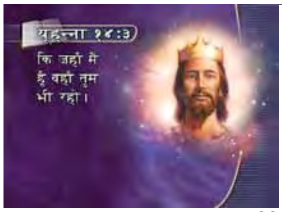

90

कि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी रहो।"

यूहन्ना १४:१-३

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

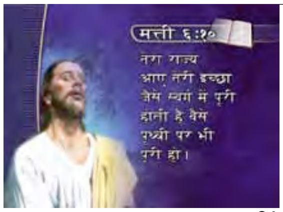

91

(मूलपाठः मत्ती ६:१०)

नमूने की प्रार्थना जो यीशु ने अपने चेलों को सिखाई कहती है, "तेरा राज्य आए तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी पूरी हो।"

मत्ती ६:१०

यहाँ हम देखते हैं कि यीशु हमसे सब वस्तुओं की पुनःस्थापना के लिए प्रार्थना करने के लिए कहते हैं।

92

अब आइए उस शोभायमान नगर के विषय में और विस्तार से देखें जो यूहन्ना ने पतमुस टापू पर दर्शन में देखा। ऐसा लगता है जैसे भविष्यवक्ता उस पवित्र नगर की महिमा व्यक्त करने के लिए शब्द खोजने में कठिनाई अनुभव कर रहा था। बाइबिल कहती है किः

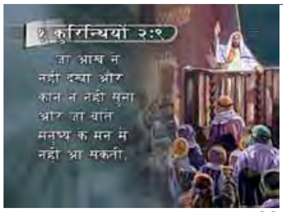

93

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों २:९)

"...जो आंख ने नहीं देखा और कान ने नहीं सुना और जो बातें मनुष्य के मन में नहीं आ सकती,

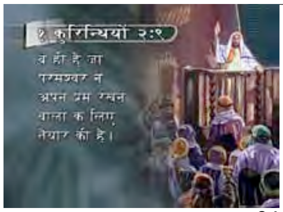

94

वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार की है।"

१. कुरिन्थियों २:९

एक मिनट रुकिए। अधिकतर लोग अगले पद को नहीं पढ़ते जो कहता है,

२५ - सर्वोत्तम आने वाला है!

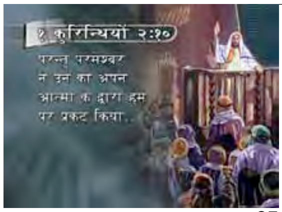

95

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों २:१०)

"परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रकट किया..."

96

आपने देखा कि परमेश्वर ने इन बातों को पवित्र आत्मा के द्वारा भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया और उन्होंने हमारे लिए लिखा। कोई संदेह नहीं कि उसमें से आधा भी नहीं बताया गया है!

97

मित्रों, यूहन्ना, यशायाह और सारे भविष्यवक्ताओं के साथ ऐसा ही रहा। यह पूर्णतया सत्य है कि इन बातों का आधा भी नहीं बताया गया! जब यूहन्ना पवित्र नगर का विवरण खोलता है तो कल्पना सा लगता है। किन्तु यह परमेश्वर का वचन है! जैसा यूहन्ना ने देखा वैसा ही वर्णन किया।

98

(दृश्य)

यूहन्ना कहता है कि उसने नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी को देखा और समुद्र भी न रहा। तब उसने पवित्र नगर नये यरुशलेम को स्वर्ग से उतरते देखा।

उसके बाद नगर के विषय में सब कुछ हमें बताता है।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

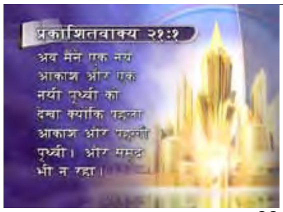

99

(मूलपाठ: प्रकाशितवाक्य २१:१-३, ११, १७,२१)

"अब मैंने एक नये आकाश और एक नयी पृथ्वी को देखा क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी। और समुद्र भी न रहा।"

प्रकाशितवाक्य २१:१

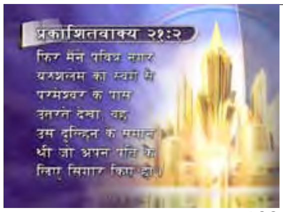

100

"फिर मैंने पवित्र नगर यरुशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास उतरते देखा, वह उस दुल्हिन के समान थी जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो।"

प्रकाशितवाक्य २१ : २

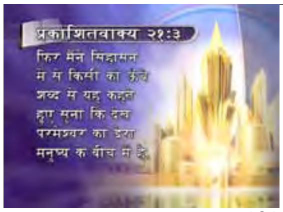

101

"फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना कि देख परमेश्वर का डेरा मनुष्य के बीच में है,

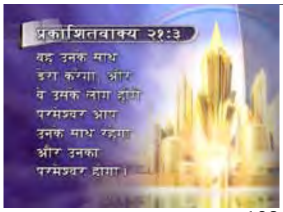

102

वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा।"

प्रकाशितवाक्य २१:३

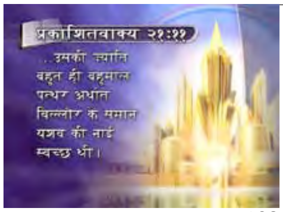

103

"...उसकी ज्योति बहुत ही बहुमोल पत्थर अर्थात बिल्लौर के समान यशब की नाई स्वच्छ थी।"

प्रकाशितवाक्य २१:११

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

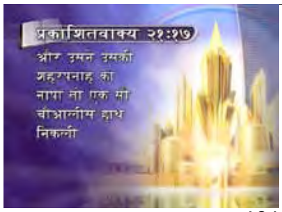

104

"और उसने उसकी शहर पनाह को नापा तो एक सौ चौआलीस हाथ निकली..."

(पद १७)

105

"और बारहों फाटक बारह मोतियों के बने थे..."

इस प्रकार वहाँ के फाटक मोतियों के हैं!

(पद २१)

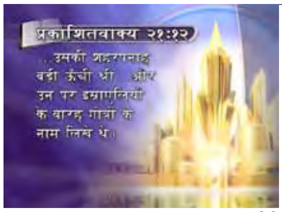

106

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २१:१२,२१, २३)

"...उसकी शहरपनाह बडी ऊँची थी... और उन पर इस्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे।"

(पद १२)

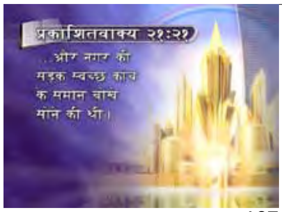

107

"...और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की थी।" (पद २१)

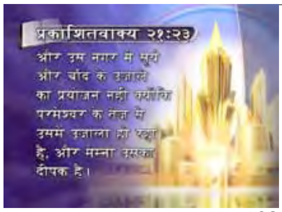

108

"और उस नगर में सूर्य और चाँद के उजाले का प्रयोजन नहीं था क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें उजाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है।"

(पद २३)

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

109

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २२:१,२, ५)

"... बिल्लौर की सी झलकती हुई जीवन के जल की नदी दिखाई जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर।"

110

"...नदी के इस पार और उस पार जीवन का पेड़ था उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे और वह हर महीने फलता था ..."

111

"और फिर रात न होगी..."

प्रकाशितवाक्य २२:५

परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस मुख्य नगर नये यरुशलेम में होगा।

112

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २२:३)

"और फिर श्राप न होगा लेकिन परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा ..."

प्रकाशितवाक्य २२:३

और सबसे अधिक अद्भुत उपहार प्रकाशितवाक्य २१:४ में पाया जाता है:

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

113

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २१:४)

"और वह उनकी आँखों से सब आंसू पोंछ डालेगा और फिर इसके बाद मृत्यु न रहेगी और न शोक,

114

न विलाप न पीड़ा रहेगी, पहली बातें जाती रहीं।"

प्रकाशितवाक्य २१:४

शायद आप सोच रहे होंगे कि पवित्र नगर कितना बड़ा होगा।

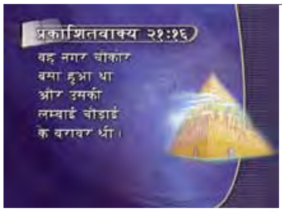

115

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २१:१६)

यूहन्ना नगर के आकार के बारे में ठीक ठीक विवरण देता है

"और वह नगर चौकोर बसा हुआ था और उसकी लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी।

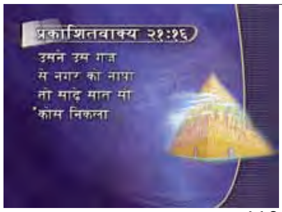

116

उसने उस गज से नगर को नापा तो साढ़े सात सौ कोस निकला।"

प्रकाशितवाक्य २१:१६

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

117

(एक कोस अंग्रेजी मील का आठवां भाग होता है इस प्रकार १२,००० कोस लगभग २४०० किलोमीटर होगा)। प्राचीनकाल में नगरों की नाप उनकी शहरपनाह की दूरी से की जाती थी। इस प्रकार नगर की प्रत्येक साइड लगभग ६०० किमी. या ३७५ मील के लगभग होगी। शायद आप यह सोच रहे होंगे कि क्या यह नगर सभी उद्धार पाए हुओं के लिए काफी हो पाएगा।

118

टोकियो शहर में लगभग ३५० लाख लोग रहते हैं।

119

ग्रेटर न्यूयार्क शहर में २०० लाख से अधिक लोग रहते हैं।

120

सीयोल और मैक्सिको शहर में अलग अलग २०० लाख लोग रहते हैं।

121

एक गणितज्ञ ने हिसाब लगाया कि नये
यरूशलेम में बीस खरब लोग रह सकते हैं! दूसरे शब्दों में, वहाँ उन सब लोगों के लिए स्थान होगा जो भी वहाँ होना चाहता है।

किन्तु इतने अदभुत स्थान में हम क्या करने में व्यस्त होंगे?

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

122

(दृश्य)

ना कोई अपराध, ना कोई बीमारी, ना कोई भूख, ना कोई प्यास, या रोग नहीं वहाँ केवल शान्ति और सौहार्द हमेशा रहेगा!

ऐसा लगता है कि हम बहुत से काम करेंगे: गाँव में हम अपने सपनों का घर बनाएंगे और अपने बाग लगायेंगे।

123

सृष्टि के रहस्यों को खोलने के लिए सृष्टिकर्त्ता यीशु वहाँ होगा।

हम सदैव नयी बातें सीखेंगे।

हम जब चाहें यात्रा कर सकेंगे।

124

अपने मित्रों और प्रियों के साथ समय बिता सकेंगे।और प्रत्येक सब्त हमारे प्रभु के साथ संगीत के विशेष समय में हम स्वर्गदूतों और यीशु के साथ परमेश्वर की महिमा में जयजयकार करेंगे। आप पूछ सकते हैं हम कैसे निश्चित हो सकते है कि हम वहाँ हो सकते हैं ? उत्तर साधारण है। क्योंकि बाइबिल -हमारी मुख्य चाबी कहती है :

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

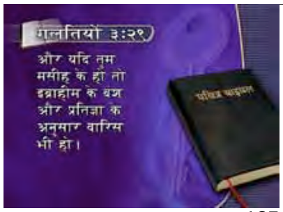

125

(मूलपाठः गलतियों ३:२९)
"और यदि तुम मसीह के हो तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।"
गलतियों ३:२९

126

दूसरे शब्दों में, यदि आप यीशु को उद्धारकर्त्ता स्वीकार करें तो परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा अब्राहम को दी वह आपके लिए भी होगी।
जब हम बाइबिल का अध्ययन करते हैं तो यह जानना रुचिकर लगता है कि

127

प्रथम तीन अध्याय बताते हैं कि परमेश्वर ने किस प्रकार संसार को बनाया और आदम और हव्वा के लिए स्वर्गीय घर बनाया। परन्तु आदम और हव्वा ने उसे खो दिया।

128

बाइबिल के अन्तिम तीन अध्याय हमें आदम और हव्वा ने जो कुछ खोया उसे पुनः स्थापित करने की परमेश्वर की योजना का पूर्वालोकन करवाते हैं। एक आनेवाला सुन्दर समय जहाँ हमारे प्रिय सपने साकार होंगे।

२५ - सर्वोत्तम आने वाला है!

129

कई वर्ष पूर्व एक नाव जो भेड़ों को ले जा रही थी कोहरे के कारण उत्तरी समुद्र में रास्ता भूल गई। नाव तीन दिन तक निरुद्देश्य भटकती रही। भेड़ें जो नाव पर थीं उन्होंने बासी घास खाना छोड़ दिया। उन्होंने नाव के एक किनारे पर मिमयाना आरम्भ कर दिया। वे लगातार मिमयाती रहीं। कप्तान और नाव के कर्मचारी अत्यधिक अचम्भित थे। वे सोच रहे थे कि वे कैसे भटक गये। शीघ्र ही कोहरा हट गया। नाव स्कॉटिश किनारे से कुछ ही गज दूर थी। भेड़ों ने ताजी कटी हुई घास को सूंघ लिया था जो स्कॉटिश मैदान में पड़ी थी। उन्होंने कई दिन पुरानी घास जिसे उनके मालिक खिलाने की कोशिश कर रहे थे, खाने से इन्कार कर दिया।

२५ - सर्वोतम आने वाला है!

130

(दृश्य)

जब हमें स्वर्ग की सुगन्ध मिल जाती है, हम अपनी प्राथमिकताएँ व्यवस्थित करते हैं। जब हमें अनन्त जीवन की सुगन्ध मिल जाती है तो शेष सब कुछ के लिए स्वतः स्थान बन जाता है हमें दूसरी धरती की चाह हो जाती है। हम अनन्त के किनारे पर पहुँचना चाहते हैं। क्या आप स्वर्ग के लिए ललायित हैं? क्या आप वहाँ होना चाहते हैं? क्या आप के हृदय की इच्छा मसीह के साथ सदैव महिमा में रहने की है? क्या आप कहना चाहेंगे, "हाँ प्रभु, मैं तेरे साथ होना चाहता हूँ। मेरी इच्छा है कि तेरे साथ हमेशा हमेशा तक रहूँ?"

131

(मूलपाठः प्रकाशितवाक्य २२:१७)

परमेश्वर आपको निमंत्रण देता हैः "आत्मा और दुल्हिन कहती है, ' आओ' ।"

प्रकाशितवाक्य २२:१७

132

इसे टालिए नहीं!

आप परमेश्वर के आश्चर्यजनक कल के एक हिस्सा बन सकते हैं।

उसे अपने हृदय में आमन्त्रित करें और स्वर्ग आपका घर बन जायेगा!

२५ - सर्वोतम आने वाला है!